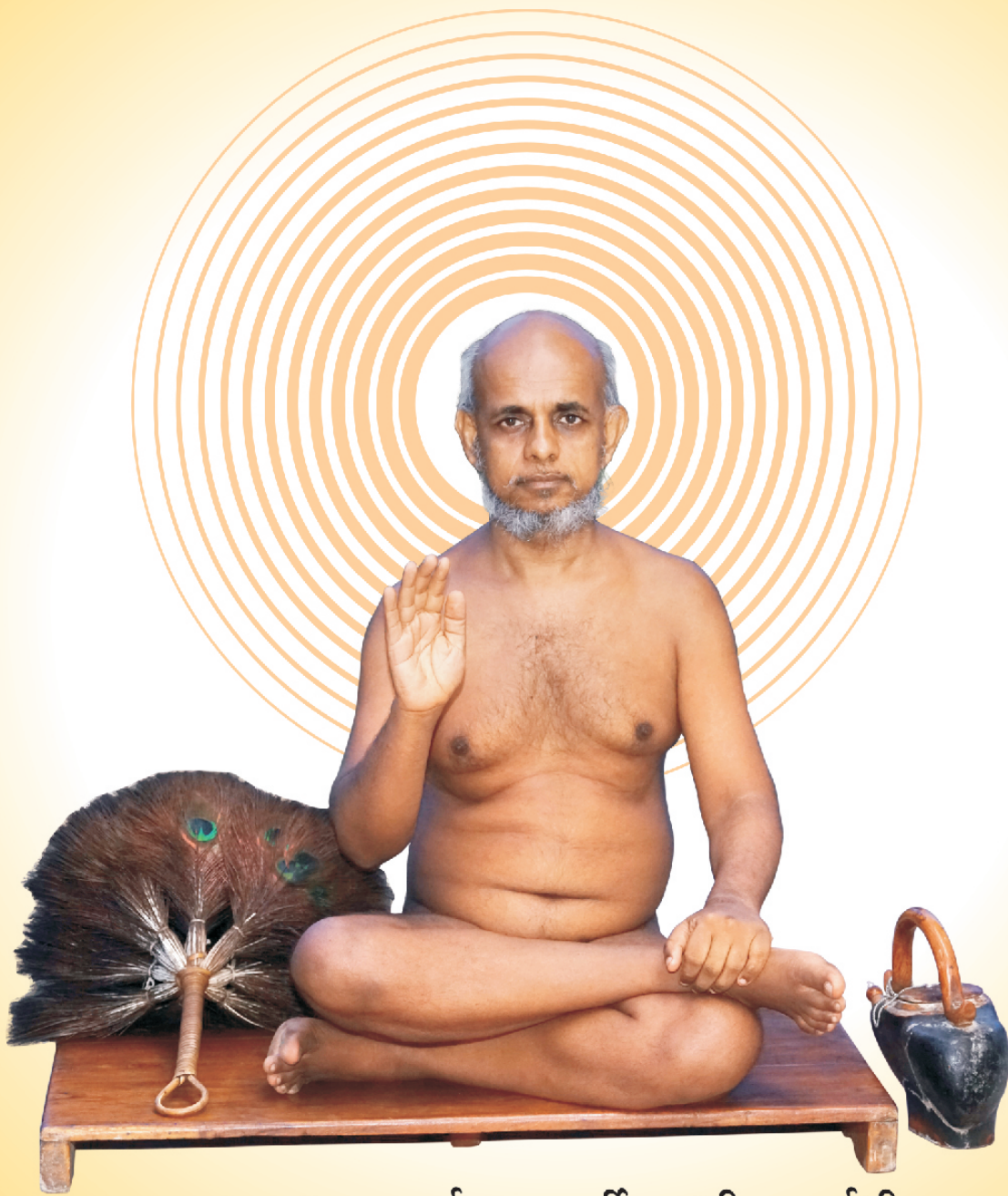




परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री
सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर
सुविधि-परिवार के द्वारा आयोजित
जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19-03-1971

* मुनिदीक्षा-11-05-1989

* आचार्यपद- 20-06-2004

पट्टाधीशपद- 24-12-2010 (20-06-2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:-

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी-जुलाई 2004) (अक्षयज्योति-अक्तूबर 2004)



महापुराण

भाग 4

ग्रन्थकर्त्ता

महाकवि पुष्पदन्त जी

अनुवादक

श्री देवेन्द्रकुमार जैन

सम्पादक

श्री पी. एल. वैद्य

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ

18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया

लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

(परम्परानायक)



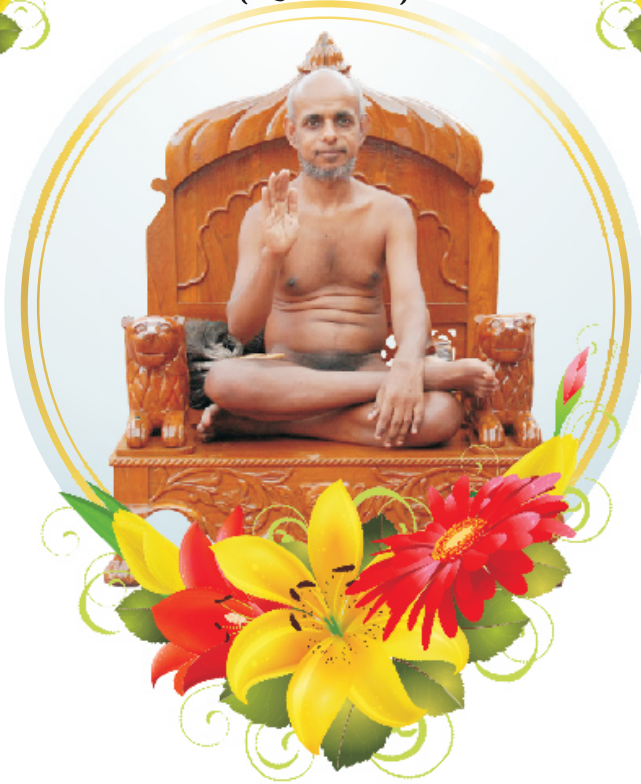
परम पूज्य चारित्र-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(तृतीय पट्टाधीश)



परम पूज्य सिद्धान्त-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)



परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

(द्वितीय पट्टाधीश)



परम पूज्य तीर्थभक्त-शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि-परिवार

महाकइपुष्पयंतविरइउ
महापुराणु

[महाकवि पुष्पदन्त-विरचित महापुराण]

चतुर्थ भाग

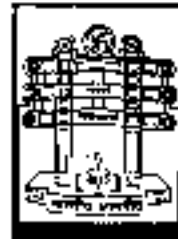
तीर्थंकर मुनिसुव्रत एवं नमि का जीवन-चरित
(सन्धि 68 से 80)

अपभ्रंश मूल - सम्पादन

डॉ. पी. एल. वैद्य

हिन्दी - अनुवाद

डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन, इन्दौर



भारतीय ज्ञानपीठ

अनुवादकीय

(प्रथम संस्करण, 1983 से)

महाकवि पुष्पदन्त के 'महापुराण' का यह चौथा खण्ड, वस्तुतः मूल रचना के दूसरे खण्ड का एक अंश है। सन्धि 68 से 80 तक 13 सन्धियों के इस भाग को स्वतन्त्र चौथे खण्ड के रूप में प्रकाशित करने का कारण यह है, कि आम पाठकों को पुष्पदन्त द्वारा विरचित 'रामायण काव्य' स्वतन्त्र रूप से उपलब्ध हो जाए। 68वीं सन्धि में बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ का चरित है, क्योंकि इन्हीं के तीर्थकाल में राम, लक्ष्मण और रावण, जो क्रमशः आठवें नारायण, वासुदेव और प्रतिवासुदेव हैं, उत्पन्न हुए।

ग्रन्थ का अगला खण्ड पाँचवाँ होगा, जिसमें 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ और नौवें नारायण वासुदेव और प्रतिवासुदेव (बलराम, कृष्ण और कंस) का वर्णन है।

प्राचीन भारतीय साहित्य को, विशेषतः प्राकृत और अपभ्रंश के क्षेत्र में उपलब्ध साहित्य को व्यवस्थित करने और अनुपलब्ध साहित्य को प्रकाश में लाने की दिशा में भारतीय ज्ञानपीठ जो काम कर रहा है वह सचमुच सराहनीय है। इस काम के लिए वह, तब तक सम्मान के साथ जाना और माना जाएगा जबतक यह देश है और उसमें प्राचीन भाषाओं की साहित्य-कृतियों को जानने की उत्सुकता रखनेवाले लोग रहेंगे। जो रहेंगे ही।

इस अवसर का उपयोग करते हुए, मैं ज्ञानपीठ के न्यासधारियों और खासकर उसके अध्यक्ष समाजरत्न साहू श्रेयांस प्रसाद जी तथा प्रबन्ध-न्यासी श्री अशोक जैन से यह अपील करना चाहूँगा (हालाँकि मैंने उन्हें देखा नहीं है, और न उनकी रुचियों की मुझे जानकारी है) कि वे इसके लिए कुछ अधिक धन की व्यवस्था कर सकें तो अच्छा है। क्योंकि, अभी अपभ्रंश के महाकवि स्वयम्भू के *रिद्वणेमिचरिउ* का प्रकाशन नहीं हो सका है। मैं दो साल पहले उसके एक खण्ड (यादवकाण्ड) को सम्पादित करके दे चुका हूँ। परन्तु शायद प्रकाशन बजट की सीमाओं के कारण हर वर्ष उसका प्रकाशन रुक जाया करता है। *रिद्वणेमिचरिउ यउमचरिउ* के बराबर महत्वपूर्ण, बल्कि कई बातों में उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। उसमें समग्र महाभारत की कथा है। *यउमचरिउ* का मूल भाग 1960 के आस-पास सम्पादित होकर उपलब्ध था, जबकि *रिद्वणेमिचरिउ* अभी-अभी सम्पादन की प्रक्रिया में है। इसके दूसरे काण्ड भी सम्पादित होकर तैयार हैं, लेकिन जबतक पहला काण्ड नहीं छप जाता तबतक दूसरे काण्ड की 'प्रेस कापी' तैयार करने का कोई औचित्य नहीं है। अलावा इसके कुन्दकुन्दाचार्य के, जो जैनों की आध्यात्मिक विचारधारा के पुनःप्रवर्तक आचार्यों में महत्वपूर्ण हैं, ग्रन्थों का वैज्ञानिक सम्पादित संस्करण एक शृंखला में उपलब्ध नहीं है। भाषिक दृष्टि से उसका अध्ययन आज तक नहीं हुआ, व्युत्पत्तिमूलक शब्दकोश आदि बातें तो बहुत दूर की हैं। कुन्दकुन्दाचार्य की भाषा अकेली नहीं है, वह उस भाषा से जुड़ी है

जिसमें भूतबली पुष्पदन्त और धरपेणाचार्य ने षट्खण्डागम की रचना की है। अतः उसकी भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन वस्तुतः पूरे युग की भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन है। इसी प्रकार श्वेताम्बरों के आगमों की प्राकृत के भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन के निष्कर्षों का प्रकाशन एक ऐतिहासिक आवश्यकता है। उसके बाद आती है शौरसेनी और गुर्जराष्ट्री प्राकृतों की पवृत्तियों के वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता। इस देश में सम्प्रदायों के मिलन और विश्व मानवतावाद की बातें बहुत होती हैं, परन्तु ऐसे महानुभाव कितने हैं जो इस दिशा में गहरी रुचि रखते हैं ? जो हैं उनमें से अधिकांश के पास साधनों का अभाव है। अतः उन साधन-सम्पन्न श्रीमानों, संस्थापकों से मेरा अनुरोध है कि भाषा के खाते में जो कुछ उनके पास है उसे यदि पूरी प्रामाणिक व्यवस्था के साथ वे उपलब्ध करा सकें, तो यह उनका अविस्मरणीय प्रदेय होगा। ऐसा किसी पर कोई दबाव नहीं है, सिर्फ अनुरोध ही कर सकता हूँ।

प्रस्तुत कृति के प्रकाशन के लिए मैं सदा की तरह ज्ञानपीठ के निदेशक भाई लक्ष्मीचन्द्र जी, ग्रन्थमाला सम्पादक श्रद्धेय पं. कैलाशचन्द्र जी और डॉ. ज्योतिप्रसाद जी के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। ज्ञानपीठ के प्रकाशन अधिकारी डॉ. गुलाबचन्द्र जैन ने शीघ्र प्रकाशन के लिए जो अथक प्रयास किया है उसके लिए वे साधुवाद के सच्चे पात्र हैं।

—देवेन्द्रकुमार जैन

15 अगस्त, 1983

114 उषा नगर,

इन्दौर-425 009

आलोचनात्मक मूल्यांकन

हिन्दी साहित्य के प्रथम प्रामाणिक इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ मानते हुए, उक्त अपभ्रंश को प्राकृताभास हिन्दी कहने के पक्ष में थे। उनके अनुसार, तान्त्रिकों और योगमार्गी बौद्धों द्वारा रचित पद्यों (दोहों) में यही भाषा प्रयुक्त है। इसके अलावा, इस अपभ्रंश और 'पुरानी हिन्दी' का प्रचार शुद्ध साहित्य या काव्य-रचनाओं में भी 1050 से 1375 तक (भोज से लेकर हुम्मीरदेव तक) पाया जाता है। इस प्रकार सवा तीन सौ वर्ष के इस काल के प्रथम डेढ़ सौ वर्ष के भीतर लिखित रचनाओं की स्पष्ट प्रवृत्ति का निश्चय करना कठिन है। अतः यह अनिर्दिष्ट लोकप्रवृत्ति का काल है। उसके बाद मुसलमानों के आक्रमण शुरू होने पर उनकी प्रतिक्रिया से हिन्दी साहित्य में एक प्रवृत्ति उभरती है, जो काफी बँधी हुई है। रीति शृंगार आदि के अलावा यह प्रवृत्ति चारण या राजाश्रित कवियों द्वारा निबद्ध अपने आश्रयदाता राजाओं के पराक्रमपूर्ण चरितों या गाथाओं में लक्षित होती है। यह प्रबन्ध-काव्य परम्परा ही रासो-काव्य या वीर-गाथा काव्य कहलाई। कुल मिलाकर 'आदिकाल' के दो भेद हैं : 1. अनिर्दिष्ट काल 2. वीर-गाथा या रासो काल। भाषा के बारे में शुक्ल जी का कहना है कि इन काव्यों की भाषा परम्परागत है, उस समय की बोलचाल की भाषा नहीं है। उसमें प्राकृत की रुढ़ियाँ हैं। वह तत्कालीन बोलचाल की भाषा से लगभग दो सौ वर्ष पुरानी भाषा है।

आदिकाल के अन्तर्गत शुक्ल जी, अपभ्रंश (देवसेन, पुष्पदन्त, सिद्धों की रचनाओं, हेमचन्द्र द्वारा उद्धृत दोहों की भाषा) और देशी भाषा (रासो काव्यों की भाषा) का उल्लेख करते हैं। आचार्य शुक्ल ने अपने उक्त विचार 1929 में उस समय व्यक्त किये थे जब अपभ्रंश साहित्य प्रकाश में नहीं आया था। परन्तु 1960 तक अपभ्रंश के स्वयंभू और पुष्पदन्त जैसे शीर्ष कवियों की रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी थीं। फिर भी डॉ॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उनका विचार इसलिए नहीं किया क्योंकि यह साहित्य हिन्दी प्रदेश में लिखा गया साहित्य नहीं है। बड़े विस्तार से उन्होंने इस बात का विचार किया है कि ऐसा क्यों हुआ। उनका कहना है कि गाहड़वार राजाओं ने (वैदिक धर्म मानने के कारण) देशभाषण के कवियों को आश्रय नहीं दिया; वसरे, इस प्रदेश में वर्जनशील ब्राह्मण समाज का प्रभाव था। हो सकता है उनका कहना सही हो, परन्तु उससे उपलब्ध साहित्य के अध्ययन न करने का औचित्य सिद्ध नहीं होता। क्योंकि भाषा मानसून की तरह ऊपर ही ऊपर उड़कर नहीं निकल जाती, किनारों को छूने के लिए उसे मध्य में से गुजरना होता है। मध्यदेश उसमें अछूता नहीं रह सकता, वह अछूता रहा भी नहीं। सूर, तुलसी, कबीर, जायसी की रचनाएँ इसका सबूत हैं। आखिर ब्रज और अवधी एकदम पैदा नहीं हो गईं। यदि डॉ॰ द्विवेदी अध्ययन करते तो कम से कम उन्हें इस निष्कर्ष पर नहीं पहुँचना पड़ता कि हिन्दी साहित्य का आदिकाल विरोधों और स्वतो वक्तो व्याघातों का काल है। या उन्हें यह नहीं लिखना पड़ता कि 'इस युग में एक ओर अीर्ष्य जैसे बड़े-बड़े कवि हुए, जिनकी रचनाएँ अलंकृत काव्य-परम्परा की सीमा पर पहुँच गई थीं। दूसरी ओर, अपभ्रंश में ऐसे कवि हुए जो अत्यन्त सरल और संक्षिप्त शब्दों में अपने मनोभावों को प्रकट करते थे। यह बात 'नीपद्यकाव्य' के श्लोकों और 'सिद्ध-हेम-व्याकरण' में आये दोहों की तुलना से स्पष्ट हो जाएगी।'

मेरे विचार में, इसमें अन्तर्विरोध की कोई बात नहीं। श्रीहर्ष की भाषा की तुलना पुष्पदन्त की अपभ्रंश से करने पर यह स्वतः स्पष्ट हो जाएगा।

पुष्पदन्त के दो नमूने उद्धृत हैं—

“वीरं अविहित्य सामयं
सीहं हयसर सामयं
बूसिय सेतिय सानयं
बिद्वितियं हिसामयं”

एक सरल नमूना—

“पर उवयारि स जीवउ बेंतह
वीष्णुदरणु विहसणं संतहं ।
गणितल किचि भनिय महीभंडलि
हरिगुण कहा हई आहंडलि ।”

(महापुराण 85/17)

इसमें विरोध कहाँ है? विरोध तुलनीयों के गलत चयन में है।

आलोच्ययुग में दूसरा विरोधाभास यह है कि एक ओर उसमें दिग्गज आचार्य हुए तो दूसरी ओर निरक्षर सभ्य जिनके द्वारा ज्ञान प्रचार के बीज बोए गए। परन्तु ऐसा किस युग में नहीं हुआ? क्या आज ऐसा नहीं है? वास्तव में यह बीज बोने का नहीं, फसल काटने का काल है। बुद्ध और महावीर ने लोकभाषाओं में उपदेश देकर ऊँचा तत्त्वज्ञान आम जनता को सुलभ कराने की जो परम्परा डाली थी, या बीज बोये थे वे इस युग में अंकुरित पल्लवित होकर झाड़ बन चुके थे। और फिर आत्मज्ञान के लिए साक्षर या पढ़ा लिखा होना इस देश में कतई जरूरी नहीं रहा। पढ़े-लिखे भी मूर्ख हो सकते हैं और निरक्षर भी आत्मज्ञानी।

यह कितनी अजीब बात है कि आचार्य द्विवेदी इस युग को अन्धकार का युग मानें और लिखें, ‘अन्धकार के इस युग को प्रकाशित करने वाली जो भी चिनगारी मिल जाए, उसे जलाए रखना चाहिए क्योंकि वह एक बहुत बड़े आलोक की संभावना लेकर आई होती है। उसमें युग के संपूर्ण मनुष्य को उद्भासित करने की क्षमता होती है।’ चिनगारी से द्विवेदी जी का अभिप्राय मध्यदेश में लिखी गई छोटी-मोटी रचना से है: ‘हमें घर की चिनगारी चाहिए, पड़ोस की धधकती आग से कोई मतलब नहीं।’ आखिर क्यों? क्या घर की चिनगारी ही पूर्ण मनुष्य को प्रकाशित कर सकती है, पड़ोस की आग नहीं? वास्तव में डॉ० द्विवेदी चाहते थे कि हिन्दी वाले अपभ्रंश और अवहट्ठ या देव्य मिश्रित अपभ्रंश के साहित्य का गहन अध्ययन करें परन्तु प्रश्न था कि हिन्दी अनुवाद के बिना वह करे कौन? भारतीय ज्ञानपीठ ने सचमुच इस दिशा में बहुत बड़ा ऐतिहासिक कार्य किया है।

पुष्पदन्त की रसकथा

आदिपुराण (महापुराण 1-37 संधियाँ) की रचना के बाद कवि पुष्पदन्त का मन कई कारणों से सृजन से उचट जाता है। मंत्री भरत यदि हाथ जोड़कर उनके सामने बैठकर घरना नहीं देते तो शायद ही कवि महापुराण का शेष भाग लिखता। भरत अपने अनुरोध से कवि को मना लेते हैं और पुष्पदन्त बीस

तीर्थंकरों (अजितनाथ से लेकर मुनिसुव्रत तक) का वर्णन करने के बाद रामकाव्य की रचना करते हैं। रामायण के सृजन क्षणों में पुष्पदन्त का मन आशा और उत्साह से फिर भर उठता है, क्योंकि इसमें बलदेव (राम) और वासुदेव (लक्ष्मण) के गुणों का कीर्तन है। कवि अपनी बुद्धि के विस्तार के अनुसार उनका वर्णन करता है। यद्यपि वह कलिकाल की दुरवस्था से खिन्न है, दुर्जनों के स्वभाव का वह भुक्तभोगी है, फिर भी, भरत के अनुरोध पर सृजन के अपने संकल्प को पूरा करने के लिए वह तैयार है।

कवि एक बार फिर अपनी लाचारी की याद दिलाता हुआ कहता है : प्राचीन कवियों की पंक्ति में होना तो बहुत दूर की बात, मेरे पास कोई सामग्री नहीं है। अपभ्रंश में रामायण के कर्ता कवि स्वयंभू महान् हैं, जो हजारों लोगों से सम्मानित हैं। दूसरे कवि हैं चतुर्मुख जिन्होंने रामायण की रचना की है, जिनके चार मुख हैं मेरा तो एक ही मुख है और वह भी खंजित, वह भी दुष्टता से भरा हुआ :

‘मद्गु एषकु तं पि नृहुं खंजियउ’
‘विहिणा पेसुण्णउ’ मंजियउ’।’

हो सकता है मेरा कहा विद्वानों को समझा न जने। फिर भी मैं उससे अपने छोटपन की क्षमा मांगते हुए, काव्य रचना प्रारम्भ करता हूँ। मेरा विश्वास है कि रामकथा के कुछ प्रसंग विषयों को आकर्षित किए बिना नहीं रह सकते। ये हैं—राम का यश, लक्ष्मण का पुरुषार्थ और सीता का सतीत्व।

कवि कहता है कि जिस तरह जलविन्दु कमलपत्र पर मोती की शोभा को धारण करता है, उसी तरह उत्तम आश्रय पाकर काव्य शोभा पाता है—

‘जलविन्दु व पोमपत्ति थियउ’
मृताहलवण्णु समुच्चहइ
आसयगुणेण कण्णु वि सहइ ।’ 69/2

जिन घटनासूत्रों की बुनावट में कवि राम के यश, लक्ष्मण के पुरुषार्थ और सीता के सतीत्व के रंगों को उभारता है, वे हैं सीता का अपहरण, हनुमान् का गुणविस्तार, कपटी सुग्रीव का मरण, तारापति (सुग्रीव) का उद्धार, सवण समुद्र का संतरण और निशाचर कुल का नाश। कवि सीता के अपहरण को केन्द्र में रखकर ही उक्त सूत्रों को बुनता है। पुष्पदन्त के रामायण-सृजन का दूसरा महत्वपूर्ण बिन्दु है—भरत का भक्ति-भाव और नाना रसभावों से युक्त राम-रावण युद्ध।

69वीं संधि

दूसरी जैन रामायणों की तरह, पुष्पदन्त भी अपनी रामायण राजा श्रेणिक और गणधर गौतम के संवाद से प्रारम्भ करते हैं, यद्यपि, उनकी रामकथा गुणभद्राचार्य की परंपरा पर आधारित है, जो विमल-सूरि के ‘पञ्चमचरिय’ की रामकथा से भिन्न है। इससे स्पष्ट है कि समान स्रोत होने पर भी रामकथा के कवि विभिन्न घटनाओं प्रभावों को ग्रहण करते रहे हैं, या उनकी नई व्याख्या करते रहे हैं। उनका संबंध श्रेणिक-गौतम संवाद से जोड़ना एक पौराणिक रूढ़ि मात्र है।

गुणभद्राचार्य की रामकथा में राम का सीता से विवाह जनक के पशुयज्ञ से जुड़ा हुआ है। सगर का आख्यान भी यज्ञसंस्कृति से जुड़ा हुआ है, जो उदाहरण के रूप में प्रस्तुत है। काव्य के रंगमंच पर जो पात्र आते हैं या जो घटनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं, वे जैन दार्शनिक विश्वास के अनुसार पूर्वजन्म के नेपथ्य से

शुरू होती हैं। अपने तीसरे जन्म में राम और लक्ष्मण, विजय और चन्द्रचूल के रूप में मित्र थे। रत्नपुर के राजा प्रजापति का बेटा चन्द्रचूल था। मंत्री के पुत्र का नाम विजय था। भर-जवानी में उन्होंने युवा सेठ श्रीदत्त की पत्नी कुबेरदत्ता का अपहरण कर लिया। प्रजा के विरोध करने पर राजा ने दोनों को जंगल में लेजाकर वध का आदेश दिया। मंत्रियों और पौरजम्हों के कहने पर मारने के बजाय, उन्हें गहन जंगल में ले जाया गया। वहाँ मंत्री ने जैन महामुनि महावल से दोनों कुमारों का भविष्य पूछा। मुनि ने कहा—दोनों बालक तीसरे भव में बलराम और भारद्वाज होंगे। तब उन दोनों ने जैनदीक्षा ग्रहण कर ली। एक बार तप करते हुए उन्होंने मधुसूदन और पुरुषोत्तम का वैभव देखकर निदान किया कि जैन तप का यदि कोई प्रभाव हो, तो मुझे भी अगले जन्म में यह सब वैभव प्राप्त हो। विजय मरकर सनत्कुमार देव हुआ, उसका नाम स्वर्णचूल था। इधर चन्द्रचूल मणिचूल नाम का देवता हुआ। स्वर्ग से च्युत होकर उनमें से मणिचूल काशी के राजा दशरथ की सुबला रानी का पुत्र राम हुआ। और, स्वर्णचूल दूसरी रानी कैकेयी से लक्ष्मण नाम का पुत्र हुआ। बड़े होने पर उनकी घाक दूर-दूर फैल चुकी थी। गोरे और काले रंगवाले ये दोनों कुमार ऐसे लगते थे मानो राजा दशरथ कृपी गरुड़ के प्वेत और काले दो पंख हों। संख्यातीत काल बीतने पर दशरथ को काशी से अयोध्या आना पड़ा था। इसी बीच दशरथ के पुत्र भरत और शत्रुघ्न भी उत्पन्न हुए।

राजा जनक ने यज्ञ की रक्षा और सीता के स्वयंवर का जो निमंत्रण भेजा उसमें राम भी आमंत्रित थे। दशरथ के पास भी लिखित पत्र आया। उसमें लिखा था कि जो इस परम कृत्य वाले यज्ञ की रक्षा करेगा, उसे मैं अपनी सुकन्या सीता दूँगा। मंत्री बुद्धिविशारद ने पत्र का समर्थन करते हुए यज्ञ की रक्षा को परम कर्तव्य बताया। दूसरे मंत्री अतिशयभक्ति ने इसका विरोध करते हुए राजा सगर का उदाहरण दिया। उसने कहा कि चारण नगर के राजा सुमोधन की रानी अतिथि की सुंदर कन्या सुलसा के स्वयंवर में अयोध्या का राजा सगर पहुँचा। कन्या की माँ अतिथि उसे अपने भाई के पुत्र मधुपिंगल को देना चाहती थी। तब सगर के पुरोहित मंत्री ने झूठा सामुद्रिक शासन बनाकर उसे घरती में गड़वा दिया। एक किसान को वह मिला। द्विजवर के रूप में मंत्री वहाँ पहुँचा और उसने अलग अर्थ किया कि जो मधुपिंगल को विवाह मंडप में प्रवेश देगा उसकी कन्या विधवा हो जाएगी। मधुपिंगल सज्जा के कारण वहाँ से भाग गया। बूढ़े सगर ने कन्या से विवाह कर लिया। मधुपिंगल ने जैनदीक्षा ले ली। एक दिन नगर में भिक्षा के लिए जब मधुपिंगल घूम रहा था वहाँ उसे सगर के कण्टजाल का पता चला। उसने आक्रोश में आकर यह निदान बाँधा कि सगर मेरे हाथ से मरे यदि जैन तप का कोई प्रभाव हो। वह मरकर असुरेंद्र का बाहन घानी भैंसा हुआ, साठ हजार भैंसाओं का अधिपति। विनवर के धर्म को स्वीकार करते हुए भी वह क्षमाभाव के बिना दुर्गति में गया। उसे ज्ञात हो गया कि किस प्रकार वह सगर के द्वारा ठगा गया। उसने मन-ही-मन कहा कि देखें अयोध्या का राजा यह अब कैसे बचता है। वह सालंकायण नाम का वेदमंत्रों का उच्चारण करनेवाला ब्राह्मण बन गया, श्रेष्ठ मुनियों को दूषित करनेवाला और हिंसक।

इसी बीच, पर्वतक की कथा शुरू होती है। विप्रवर क्षीरकदंब के तीन शिष्य थे, एक उसका बेटा पर्वतक जो पढ़ने में कमजोर था, दूसरा राजा बसु और तीसरा नारद। एक दिन वे वन में गये। क्षीरकदंब ने वहाँ एक जैनमुनि से उनका भविष्य पूछा। उन्होंने कहा कि नारद सर्वार्थसिद्धि जाएगा, और बाकी दो नरक, यज्ञ के फल के कारण। क्षीरकदंब की पत्नी राजा बसु को पीटने से बचाती है। वह उसे बर देता है। आचार्याणी उसे भविष्य के लिए सुरक्षित रखती है। वह पति से सगड़ा करती है कि वह नारद को विशेष पढ़ाते हैं, अपने लड़के को नहीं। क्षीरकदंब विविध प्रयोगों द्वारा पत्नी को बताता है कि नारद जन्म से प्रतिभाशाली है, जबकि पर्वतक मंदबुद्धि है। अन्त में क्षीरकदंब नारद को परिवार सौंपकर जैन हो गया। वह मर कर स्वर्ग गया। बहुत दिनों बाद नारद और पर्वतक में 'अज' शब्द के अर्थ की लेकर विवाद हुआ गया। नारद

के अनुसार अज का अर्थ तीन साल का पुराना जो था, जबकि पर्वतक के अनुसार बकरा। लीगों ने पर्वतक को नगर से निकाल दिया। पर्वतक सालकायण का शिष्य हो गया। वे दोनों अयोध्या नगरी पहुँचे। पशुयज्ञ का प्रचार करते हुए तथा यज्ञ में होमे गए पशुओं को साक्षात् देव बताते हुए, राजा सगर को उन दोनों ने धोखा दिया। उनके बहकावे में आकर राजा ने अपनी पत्नी सुलसा भी यज्ञ में होम दी। पत्नी के वियोग से दुखी होकर सगर ने एक दिन जैन मुनि से पूछा, 'क्या पशुओं का वध धर्म है?' उन्होंने कहा कि निश्चय ही अहिंसा से धर्म होता है और हिंसा से अधर्म। सगर के पूछने पर मुनि ने बताया कि सातवें दिन उसके ऊपर बिजली गिरेगी। सगर ने आकर पर्वतक से कहा। उसने जैनमुनि की निंदा की। असुरेन्द्र ने राजा को नभ में मुनि सुलसा देवी के दर्शन करा दिए। सगर दुगुने उत्साह से यज्ञ में लग गया। अन्त में राजा सगर पर गाज गिरती है और वह मारा जाता है। असुरेन्द्र ने एक बार फिर कपट भाव किया और राजा वसु को स्वर्ग के विमान में स्थित बताया।

सगर का मन्त्री आनंदित हुआ। उसने कहा कि मूर्खों ने यज्ञ की निंदा की। उसने भी राजसूय यज्ञ किया, विद्याधर दिनकर ने उसे आड़े हाथों लिया और राजा के एक मास के होम को नष्ट कर दिया। महाकाल के विस्तार को भी नष्ट कर दिया। नारद का मन आनंदित हुआ। असुरेन्द्र ने घोषणा की कि पर्वतक तुम नाश को प्राप्त मत होओ। तूम चारों तरफ जिनप्रतिमाएँ स्थापित कर दो जिससे विद्याधर विद्याएँ प्रवेश न कर पाएँ। वे दोनों नरक गये। असुरेन्द्र ने लीगों से कहा कि उसने अपना बदला ले लिया।

70 वीं संधि

अतिशयमति मंत्री के हित वचन सुनकर राजा दशरथ का मिथ्या दर्शन नष्ट हो गया। उसने जैन धर्म ग्रहण कर लिया। राजा के मंत्री महाबल ने पुत्रों का प्रताप देखने के लिए, उन्हें यज्ञ में भजने का प्रस्ताव रखा। राजा दशरथ ज्योतिषी से राम लक्ष्मण के भविष्य के बारे में पूछता है। वह बताता है कि वे दुनिया को सतानेवाले रावण को मारकर विजयी होंगे। दशरथ भुवनविख्यात रावण के बारे में पूछता है। पुरोहित कहता है कि नागपुर में राजा नरदेव था। उसने दीसा ले ली। आकाश में जाते हुए चपलवेग और विचित्र-केतु विद्याधरों को देखकर उसने निदान बाँधा कि तप के प्रभाव में मेरा इन विद्याधरों जैसा ऐश्वर्य हो। विजयार्थ पर्वत की दक्षिण श्रेणी में मेघ शिखर में सहस्रगीव नाम का राजा था। वह झगड़ा करके वहाँ से त्रिकूट नगर में आ गया। उसने लंका का निर्माण कराया। बीस हजार वर्ष उसने उस नगरी का पालन किया। शतशीव ने पन्चीस हजार वर्ष। पंचदशशीव बीस हजार वर्ष जीकर मर गया। पुलस्त्य पन्द्रह हजार वर्ष। उसकी पत्नी मेघलक्ष्मी की कोख से राजा नरदेव रावण के रूप में उत्पन्न हुआ। उसका कोई प्रतिमूल नहीं था। राजा मय ने अपनी कन्या मन्दोदरी से उसका विवाह कर दिया। एक दिन आकाशमार्ग से जाते हुए उसने ध्यान में लीन मणिवती को देखा। रावण की मति चंचल हो गई। उसने कन्या को ध्यान से विचलित करना चाहा। क्रुद्ध हो मणिवती ने यह निदान बाँधा कि अगले जन्म में वह उसकी कन्या होकर उसकी ही मृत का कारण बने। अगले जन्म में वह मन्दोदरी की कन्या हुई। ज्योतिषियों की भविष्यवाणी सुनकर रावण ने उसे मारना चाहा। परन्तु मारीच ने मन्दोदरी को समझाकर उसे मंजूषा में रखवाकर मिथिलानगर के उद्यान में गड़वा दिया। एक किसान को वह मंजूषा मिली जिसे उसने बनपाल को दे दी। उससे वह राजा जनक को दी गई। जनक ने उसे अपनी पत्नी को दे दिया। सीता जब बड़ी हो गई तो उसके स्वयंवर के सिलसिले में राजा दशरथ ने राम लक्ष्मण को वहाँ भेजा। राम ने उससे विवाह कर लिया। वे उसे विनीतपुरी (अयोध्या) से आए। वसंत के आने पर अयोध्या में वसंत क्रीड़ा की धूम मच गयी। राम ने पिता से अनुमति लेकर परंपरागत वाराणसी पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार राम, लक्ष्मण और सीता काशी में रहने लगे।

71 वीं संधि

कलहप्रिय नारद ने जाकर रावण से कहा, 'सीता जैसी अनिन्द्य सुन्दरी तुम्हारे योग्य है।' रावण सीता को समझाने के लिए पहले अपनी बहन चंद्रनखा को भेजता है। लेकिन वह असफल लौटती है और उल्टे रावण को ही समझाती है। रावण उसे मना कर, पुष्पक विमान में जा बैठता है।

72 वीं संधि

रावण मारीच को लेकर वाराणसी गया। उस समय राम और सीता वसंतक्रीड़ा के अनंतर वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहे थे। रावण वहाँ पहुँचा। उसने कपटपट्यं उसका अपहरण का निश्चय किया। मारीच सोने का मृग बनकर दौड़ता है, राम पीछे-पीछे दौड़ते हैं। बहुत दूर ले जाकर मारीच संकेत करता है और इधर रावण सीता का अपहरण कर लेता है। वह उसे ले जाकर नंदन वन में रखता है और विद्याधरियों से उसकी समझाने के लिए कहता है। सीता विलाप करती है। वह रावण के प्रस्ताव को ठुकराती है।

73 वीं संधि

सीता के अपहरण से दुखी राम मूर्छित हो जाते हैं। दशरथ स्वप्न में सीता के अपहरण की बात जानकर इसकी सूचना राम को देते हैं। विद्याधर सुग्रीव और हनुमान् राम से भेंट करते हैं। सुग्रीव अपना परिचय देते हुए, अपनी समस्या उनके सामने रखता है कि उसके भाई बालि ने उसे निकाल कर उसकी पत्नी ले ली है। हनुमान् सीता का पता लगाने का आश्वासन देते हैं। सम्मेषशिखर पर जाकर वे सिद्धकुंद जिनालग की पूजा करते हैं। हनुमान् लंका के लिए कूच करते हैं। वह भ्रमर का रूप धारण कर लंका नगरी में प्रवेश करते हैं। वहाँ वह रावण को सिंहासन पर स्थित देखते हैं।

इधर अनुचरों को सीता के शरीर का दस्त्र मिलता है। वहाँ सीता में आसक्त रावण का किसी भी काम में मन नहीं लगता। वह सीता को समझाता है। सीता उसे मुँहतोड़ उत्तर देती है। मंदोदरी रावण को समझाती है। मंदोदरी सीता को उसके पैरों के कुछेक विशेष चिह्नों से पहचान लेती है।

हनुमान् सीता से भेंट करते हैं और प्रत्यभिज्ञान के साथ राम का संदेश देते हैं। वह राम के वियोग की भी स्थिति के बारे में बताते हैं। हनुमान् सीता को आश्वासन देते हैं। राम का वृत्तान्त मिलने पर सीता मंदोदरी के अनुरोध पर भोजन करती है। हनुमान् राम के पास सीता का संदेश लेकर पहुँचते हैं।

74 वीं संधि

हनुमान् बिस्तार से सीता के वियोग का वर्णन करते हैं। राम की पंचांगमंत्रणा। राम एक बार फिर रावण के पास दूत भेजते हैं। हनुमान् दुबारा दूत बनकर जाते हैं। राम बिस्तार से दूत को समझाते हैं। हनुमान् लंका में प्रवेश करते हैं। उनके सौंदर्य को देखकर लंका की विद्याधरियों का मन विचलित हो उठता है। हनुमान् रावण को समझाते हैं। रावण इसे रंडा कहानी कहकर दूत की बात टाल देता है। रावण के विभिन्न सामंत भी अपनी-अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

75 वीं संधि

हनुमान् लौटकर आते हैं। इधर लक्ष्मण बालि से युद्ध करते हैं। हनुमान् अपने दौत्य का प्रतिवेदन प्रस्तुत करता है। राम से मिलने के लिए बालि का दूत आता है। वह कहता है कि यदि राम सुग्रीव को निकाल बाहर करें, तो बालि उनकी अधीनता स्वीकार करने के लिए तैयार है। वह सीता को

वापस ला सकता है। राम ने कहा यदि वह अपना हाथी देता है तो वही इस मित्रता का कारण हो सकता है। राम ने दूत के साथ अपना आदमी भेजा। बालि के राजमंत्री ने उससे कहा—राजा बालि हाथी नहीं, असि-प्रहार देगा। दूत ने वापस आकर, कानों को कटु लगनेवाले वे शब्द राम से कहे। राम स्वयं को कठिन स्थिति में पाते हैं, इधर कुआ उधर खाई। लक्ष्मण और हनुमान् उस पर चढ़ाई करते हैं। बालि-बध।

76 वीं संधि

राम लंका पर चढ़ाई के लिए प्रस्थान करते हैं। विभीषण रावण को समझाता है। सेना और युद्ध का वर्णन।

77-78 वीं संधि

हनुमान् के न लौटने पर राम की चिन्ता। विभीषण उन्हें समझाता है। युद्ध का वर्णन। रावण विभीषण को बुरा-भला कहता है। युद्ध का वर्णन। लक्ष्मण के द्वारा रावण का बध। मंदोदरी का विलाप। विभीषण भी पश्चात्ताप करता है। उसके अनुसार रावण का एक ही दोष है कि उसने जैनधर्म का आदेश न मानते हुए परस्त्री का अपहरण किया। राम रावण का दाह संस्कार करते हैं। पुष्पदन्त का कथन है कि दूसरे की स्त्री से राग होने पर सभी हलके समझे जाते हैं। विभीषण को राजपट्ट बाँधा जाता है।

79 वीं संधि

उसके बाद राम पृथ्वी का परिभ्रमण करते हुए, कोटिशिला पहुँचते हैं। लक्ष्मण कोटिशिला उठाते हैं। दोनों भाई गंगा के किनारे-किनारे चलते हैं और उसके उद्गम स्थान पर पहुँचते हैं। वहाँ उन्होंने पटमंडप ताने। लक्ष्मण ने समुद्रपर्यन्त अपना रथ हाँका। वे मगध देश आए। वहाँ उनका अभिषेक किया गया। और भी कई कीमती वस्तुएँ उपहार स्वरूप प्राप्त हुईं। समुद्र के किनारे-किनारे जाकर वरतनु को, फिरसिंधु को जीतकर प्रभास तीर्थ को जीता। फिर म्लेच्छ दिशा के समस्त शत्रुओं को जीता। विजयार्घ्य की दोनों श्रेणियों को जीत कर, हतमातंग विद्याधर की कन्याएँ ग्रहण कीं। देव दिशा के म्लेच्छ खंड को जीतकर, भूमिमंडल पर अपना राजदंड घुमाकर वे अयोध्या लौट आए। वहाँ राजा राम लक्ष्मण का अभिषेक हुआ। वे दोनों इन्द्र की लीला करते हुए रहने लगे। उन्हीं दिनों शिवगुप्त मुनि का नंदनवन में आगमन होता है। वे जैनधर्म का उपदेश देते हैं। जैन दृष्टिकोण से वे संसारचक्र का विचार करते हैं, दूसरे दार्शनिक के मतों का खंडन भी। उपवेश सुनकर राम श्रावक व्रत धारण कर लेते हैं। लक्ष्मण ने एक भी व्रत ग्रहण नहीं किया। दशरथ के मरने पर भरत और शत्रुघ्न साकेत में अधिष्ठित हुए। राम और लक्ष्मण वाराणसी गए। राम का पुत्र विजयराम हुआ, उनके सात पुत्र और हुए। लक्ष्मण का पुत्र पृथ्वीवन्द्य था। उसके और भी पुत्र हुए। बहुत समय बीतने पर पृथ्वी पर अनिष्ट लक्षण प्रकट हुए। राम ने दान दिया और जिन पूजा की। लक्ष्मण की मृत्यु। राम और सीता का शोक। राम ने चार घातिया कर्मों का नाश किया, देवताओं ने पुष्पों की वृष्टि की। राम को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। परमार्थवादी लोग यही कहते हैं कि घन किसी के साथ नहीं जाता। धरती रूपी राक्षसी ने किस-किस को नहीं खाया!

रामकथा की पृष्ठभूमि

पुष्पदन्त की रामकथा में कथा कम, काव्य-तत्त्व अधिक है। कवि मनुष्य की भौतिक इच्छाओं की निस्समयता, तप-त्याग और नैतिक मूल्यों का चित्रण तत्कालीन सामन्तवादी पृष्ठभूमि में करता है। जीव का अपना कर्म ही उसके सुख-दुःख, बन्धन और मोक्ष के लिए उत्तरदायी है। चूँकि कर्म का कर्ता और

भोक्ता वह खुद है इसलिए वर्तमान में वह जो है उसके लिए वह खुद जिम्मेदार है। जैन दर्शन का यह सिद्धान्त कवि के सृजन का आधारभूत सिद्धान्त है जो उसके चरित्र-चित्रण और घटनाओं के वर्णन में प्रतिबिम्बित है। यह होते हुए भी उनकी कविता के कुछ भौतिक मूल्य भी हैं जिन्हें रामकथा के पात्र जीते हैं और जिन के प्रति कवि का संवेदनशील लगाव है। कवि के रामकाव्य के आध्यात्मिक मूल्य परम्परा से प्राप्त हैं, पहले से निर्धारित हैं और जिनके अनुसार पात्र अपना जीवन जीते हैं और जी रहे हैं। जो उद्देश्य है और वह उसे कलात्मक अभिव्यक्ति देना ही कवि का उद्देश्य है।

पुष्पदन्त ने जिस परम्परागत रामकथा को चुना है और उसे जिस रूप में काव्य के साँचे में ढाला है, उसमें सामन्तवाद के आदर्शों की स्पष्ट छाप है। उदाहरण के लिए, राम और लक्ष्मण ने पूर्वकालीन तीसरे भव में, जब वे राजपुत्र और मंत्री-पुत्र थे, युवा सेठ की पत्नी कुबेरदत्ता का अपहरण किया था। प्रजा के विरोध करने पर दोनों की फाँसी होती, परन्तु वृद्धजनों के बीच-बचाव के कारण वे बच गए, और जैन तप करके वे बलभद्र और नानुदेव हुए। उन्हें फाँसी पर नहीं लटकाए जाने का दूसरा कारण महाबल मुनि का यह भविष्य-कथन रहा है कि दोनों तीसरे जन्म में महापुरुष होने वाले हैं। प्रश्न है कि यदि भविष्य कथन में यह बात निकलती कि वे दोनों महान् की जगह सामान्य पुरुष या आम आदमी होने वाले हैं तो क्या राज्य मृत्युदण्ड माफ कर देता? दूसरा निष्कर्ष यह है कि भोग सत्ता का दुरुपयोग करने के लिए ही सत्ता में जाते हैं। सत्ता का सुख ठोस, ज्वरदन्त और मम्मोहक है। चाहे वह सामन्तवाद हो या प्रजातन्त्र, राज-पुरुष और उनके निकट के लोग सुरा-सुन्दरी में लिप्त रहते रहे हैं। लिप्त तो दूसरे भी हैं। पर्याप्त लिप्त होना बहुत बुरा भी नहीं है। परन्तु जिसके हाथ में सत्ता होती है (चाहे धन की हो या राज्य की) उन्हें मनो-रंजन के क्षेत्र और साधन अधिक सहजता से मुलभ होते हैं। हो सकता है राम-लक्ष्मण ने अपने तीसरे भव में वह सब न किया हो जो कर्म फल विश्वासी जैन कवियों ने उनके साथ जोड़ दिया है, सत्-असत् कर्म का फल बताने के लिए। लेकिन जब हम राम के वर्तमान जीवन में उतार-चढ़ाव देखते हैं तो सोचते हैं कि उसका कोई न कोई कारण जरूर रहा होगा। संसार में अचानक कुछ भी घटित नहीं होता, कारण कार्य बनता है और कार्य कारण। कारण-कार्य की इस शृंखला का नाम ही संसार है। प्रत्येक दर्शन इस शृंखला की व्याख्या अपने ढंग में करता है। जैन-दर्शन ने भी इसकी व्याख्या कर्म-सिद्धान्त के आधार पर की है। इसका उद्देश्य यह बताना है कि व्यक्ति जो कुछ करता है उसका फल उसे ही भोगना पड़ता है। उसमें किसी की भागीदारी नहीं हो सकती। राज्य की तरह राज्य का वर्तमान जीवन भी उसके पूर्व कर्मों का फल है। रागद्वेष की क्रिया-प्रतिक्रियाएँ जन्म-मरणचक्रों तक चलती हैं।

पुष्पदन्त की रामकथा में कंकेशी के वरदान, राम का वनवास, सीता की अग्नि परीक्षा, राम द्वारा सीता का निर्वासन, राम लवणांकुश, जटायु, वनवाचा आदि प्रसंग नहीं हैं। एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु यह है कि राजा दशरथ की स्वप्न में रावण द्वारा सीता के अपहरण का आभय मिल जाता है जिसकी सूचना वे राम को भेज देते हैं। विभीषण को लंका का राजा बनाकर राम लक्ष्मण और सीता के साथ दिग्विजय पर निकलते हैं, जो लक्ष्मण के अर्धचक्रवर्ती बनने के लिए जरूरी है। उसकी यह दिग्विजय, भरत चक्रवर्ती की दिग्विजय से मिलती-जुलती है।

चरित्र-चित्रण

दशरथ — पुष्पदन्त के अनुसार, दशरथ जन्मतः जैन नहीं थे। प्रारम्भ में वे हिंसक यज्ञों में विश्वास रखते थे। अपने मन्त्री अतिशयन्त्रि के, जो जैन थे, समझाने पर उन्होंने जैन धर्म स्वीकार किया।

उनका महत्त्व यही है कि वे राम-लक्ष्मण के पिता हैं। लक्ष्मण कंकेयी से उत्पन्न है, इसलिए भरत को राजपाट दिलाने के लिए वर माँगने और उससे सम्बन्धित घटनाएँ पुष्पदन्त की रामायण में नहीं हैं। मन्त्री के उपदेश से यद्यपि दशरथ का मिथ्यादर्शन दूर हो जाता है फिर भी मन्त्री महाबल के अनुरोध पर वे राम-लक्ष्मण को मिथिला भेज देते हैं। परम्परा से प्राप्त काशी के छिन जाने पर दशरथ के मन में कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। राम के अनुरोध करने पर वे सीता सहित राम-लक्ष्मण को वाराणसी भेज देते हैं। स्वप्न में सीता के अपहरण का आभास पाकर, वे इसकी सूचना राम को भेजकर अपने कर्तव्य की दृतिश्री समझ लेते हैं।

जनक—जनक का चरित्र भी स्पष्ट रूप से उभरकर नहीं आता। सीता उनकी पालित कन्या है। वह मिथिला नगरी के राजा है, जो यह सोचते हैं कि यज्ञ में पशु वध से स्वर्ग मिलता है। यज्ञ की रक्षा करना उनके लिए सम्भव नहीं है। इसलिए उन्होंने दूसरे राजाओं सहित दशरथ के पास यह पत्र भेजा कि जो विद्याधरों से यज्ञ की रक्षा करेगा उसे वे पृथ्वीपुत्री सीता देंगे। बद्ध स उपहारों और लेख के साथ दूत दशरथ के पास आया। राम के शत्रुओं का विनाश करने पर जनक सीता का विवाह राम से कर देते हैं।

राम—जैन पुराणों के अनुसार, राम आठवें बलभद्र हैं। वे कौशल्या के नहीं, सुबला के पुत्र हैं। सुन्दर शरीर होने से उन्हें राम कहा गया। जिस समय राम का सुबला से जन्म हुआ तभी कंकेयी से लक्ष्मण का। कवि ने दोनों के शौर्य और सौन्दर्य का वर्णन एक साथ किया है। एक हिमगिरि के शिखर के समान है तो दूसरा अंजन गिरि के शिखर की तरह। दोनों गंगा और यमुना के प्रवाहों की तरह हैं। राम के तीरों के प्रसार को देखकर दुश्मन कांप जाते हैं। शस्त्र और शास्त्र दोनों में उनका समान अभ्यास है। मन्त्री महाबल और चतुरंग सेना के साथ राम जनकपुरी जाते हैं, विद्याधरों से यज्ञ की रक्षा करने के साथ वे हिसक यज्ञ की निम्ना करते हैं। जनक राम को सीता अर्पित कर देते हैं। राम के साथ सीता ऐसी प्रतीत होती है जैसे धवल मेष के साथ बिजली। कुछ दिन राम और लक्ष्मण मिथिला में रहते हैं। इस बीच पिता दशरथ के दूत भेजने पर राम, वधू के साथ अयोध्या आते हैं। सबसे पहले वे जिन-प्रतिमा की पूजा करते हैं। प्रसन्न होकर दशरथ सात दूसरी कन्याओं का राम के साथ विवाह कर देते हैं। इसी प्रकार सोलह कन्याओं से लक्ष्मण का विवाह किया गया। वसन्त ऋतु के बाद राम, दशरथ से कहते हैं कि परम्परा से प्राप्त वाराणसी नगरी अपने अधिकार में कर लेना उचित है। पिता के सामने वे राजनीति शास्त्र का लम्बा-चौड़ा बखान करते हैं। अन्त में पिता की अनुमति पाकर राम लक्ष्मण एवं सीता को साथ ले आ वाराणसी पहुँचते हैं। नगर की वनिताओं पर उनके कामतुल्य सौन्दर्य की तीव्रतर प्रतिक्रिया होती है। धीरोदात्त कुलीन सामन्त राजाओं की तरह लक्ष्मण के साथ राम का नगर में प्रवेश होता है। दही, अन्न और सरसों स्वीकार करते हुए दोनों भाई राज्यालय में प्रविष्ट होते हैं। किसी को प्रिय वचन से, किसी को उपहार से, किसी को रण के उद्भट शब्द से, किसी को उपकार से, किसी को नौकरी देकर सभी को संतुष्ट करते हैं। इस प्रकार दोनों भाई किसी को प्रेम से, और किसी को बाहुबल से अपने अधीन करते हैं। कितने ही वनपालों और माण्डलीक राजाओं को जीत लेते हैं।

नारद के उकसाने पर रावण मारीच की सहायता से सीता के अपहरण की योजना के साथ वाराणसी के उद्यान में पहुँचता है, जहाँ राम वसन्त-ऋतु के अनन्तर वृक्ष की छाया में सीता के साथ विश्राम कर रहे थे। उन्हें देखकर रावण को लगता : “विश्व में एक मात्र राम कृतार्थ हैं कि जिनके पास सीता जैसी सुन्दर स्त्री है।” राम मायावी स्वर्ण मृग को पकड़ने के लिए दौड़ते हैं और इधर रावण सीता को उड़ा ले जाता है। लम्बा रास्ता चलने से थके हुए राम जब लौटते हैं, तो शाम की ढलता हुआ सूरज उन्हें परदार (रावण) की तरह दिखाई देता है। लक्ष्मण के यह कहने पर कि जब आप मृग के पीछे गए थे और मैं सरोवर में था, तभी

से सीता वन में नहीं है। यदि वह जीवित है (हिंसक पशु यदि उन्हें नहीं खा गया हो) तो यह आपका प्रबल पुण्य माना जाएगा। राम मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़ते हैं। उपचार के बाद होश में आने पर सीता के बिना उन्हें कुछ भी अच्छा नहीं लगता। वह वन्य प्राणियों और पेड़-पौधों से सीता के बारे में पूछते हैं। खोज करने वाले अनुचरों को बांस पर टंगा सीता का उत्तरीय मिलता है, जिसे लाकर वे राम को देते हैं। राम उसे छाती से लगाते हैं और अपनी आँखें पोंछते हैं। वनारण्य के स्वप्नदर्शन से यह मालूम होने पर कि सीता का अपहरण रावण ने किया है, भरत और शत्रुघ्न भी उनकी सहायता के लिए वहाँ पहुँचते हैं।

राम का दूत बनकर गए हुए हनुमान् सीता से राम के बारे में कहते हैं: वह तुम्हारे वियोग में दुबले हो गए हैं। वे प्रतिदिन आपकी याद करते हैं। वह न तो बोलते हैं और न किसी चीज में उनका मन रमता है। वह किसी स्त्री की देखते तक नहीं। तुम्हारा ध्यान वह उसी तरह करते हैं जैसे योगीश्वर शाश्वत सिद्धि का। हनुमान् राम और सीता के मिलन की अंतरंग पहचान बताते हैं। उससे स्पष्ट है कि दोनों में एक दूसरे के प्रति प्रगाढ़ प्रेम था। हनुमान् जब सीता की कुशलवार्ता लेकर आते हैं तो देखते हैं कि दुर्ग के भीतर राम 'हा सीते, हा सीते' चिल्ला रहे हैं और अपनी छाती पीट रहे हैं—

“हा सीप सीप सकलुण् कण्ठु
णिय करयलेण ऊव सिव हण्ठु”

हनुमान् को देखकर वह पूछते हैं—“क्या मेरे बिना, मूर्छित होकर त्यक्त प्राण वह गिरी पड़ी है या मृत्यु को प्राप्त हो गई है? वह कुशलवार्ता लाने वाले हनुमान् का प्रगाढ़ आलिंगन करते हैं। पंचांग-मंत्रणा के बाद, राम एक बार फिर हनुमान् को दूत बनाकर भेजते हैं। रावण की चुनौती स्वीकार कर राम लंका पर चढ़ाई के लिए प्रस्थान करते हैं। विभीषण के मिलने पर राम कहते हैं कि यदि चित्त से चित्त मिल जाय तो पराया भी भाई के समान हितकारी है। इसके विपरीत भाई यदि निरय बेर बढ़ाता है तो वह दुश्मन है। युद्ध में रावण माया के बल से सीता के सिर को काटकर राम के सामने डालता है। राम सीता की मरा हुआ जानकर मूर्छित हो जाते हैं। कठिनाई से होश में आते हैं। लक्ष्मण के द्वारा रावण के मारे जाने पर, आनन्द से उद्बेहित राम रोमांचित हो उठते हैं। वे लोगों की मनोकामनाओं को पूरा करते हैं। कवि कहता है कि राम के समान कोई नहीं है जिन्होंने रावण की मृत्यु होने पर विभीषण को राज्य दिया और सुधियों तथा सुभटों का प्रतिपादन किया।

पुष्पवंत की रामायण में सीता के अपहरण या रावण के नन्दनवन में रहने के कारण लोक में कोई सुरसुरी नहीं उत्पन्न होती। और, न स्वयं राम के मन में इस बात को लेकर उथल-पुथल है कि रावण ने सीता का अपहरण किया। बल्कि राम के आवेष्ट से अंगद हनुमान् आदि अज्ञोक वन में जाकर सीतादेवी की प्रशंसा कर केशव की विजय की सूचना देते हैं और उन्हें से आते हैं। सीता राम से मिलती है। कवि उपभाषे हैं—

“आणिय नितिय बेसि बलहबुवउ, असरतरंगिणि जाइ सभुवहु ।
हेमसिद्धि णावइ रससिद्धउ, केवसणागरिद्धि णं मुद्धु ।
दिग्बभानि आणिय परमत्तहु, वर-कइमइ णं पडियसरवहु ।
चिरासुद्धि णं चाइमुणिवहु, णं संपुण्णकीति छणयवहु ।
अं वर मोखलसिद्धि अरहंतहु, बहुगुणसंपय णं गुणवंतहु । 78/27

—मानो गंगा समुद्र से जा मिली हो, स्वर्णसिद्धि रससिद्धि से मिल गई हो; मानो केवलज्ञान की श्रद्धा बुद्ध से, दिव्यवाणी परमार्थ से जा मिली हो; मानो पंडित समूह से श्रेष्ठ कविबुद्धि मिल गई हो; भव्य मुनियों की नित्यबुद्धि मिल गई हो, या फिर पूर्णचन्द्र को सम्पूर्ण कान्ति । मानो अरहन्त से श्रेष्ठ मुक्ति लक्ष्मी जा मिली हो, या गुणवान् को मानो बहुगुण संपत्ति मिल गई हो ।

राम रोती हुई मंदोदरी को समझाते हैं, शोक विह्वल इन्द्रजीत को धीरज बंधाते हैं, रावण के समस्त भाइयों को बुलाकर, नागरिकों की शंका दूर कर, महामंत्रियों से विचार-विमर्श कर, विघ्नकारी तत्त्वों का उन्मूलन कर, जिनेन्द्र का अभिषेक कर, यज्ञ और विविध दान कर, शत्रु और मित्र के प्रति मध्यस्थ भाव धारण कर, सामन्तों को अपने पक्ष में यथायोग्य निमंत्रित कर, गृहों और ब्राह्मणों आदि की पूजा कर, धर्म का पालन कर और अधर्म से डरकर, राम विभीषण को लंका के राज्य पर आसीन कर देते हैं, उन्हें राजपट्ट बांध देते हैं । राम के विजयाराम तथा सात और पुत्र होते हैं । पश्चात् राम दुस्वप्न देखते हैं । वे शान्ति विधान करते हैं । लक्ष्मण की मृत्यु से राम शोक मग्न हो उठते हैं और अंत में शिवगुप्त मुनि से श्रावक व्रत और फिर बीसा ग्रहण कर भोक्ष प्राप्त करते हैं ।

राम का अन्तर्द्वन्द्व—हनुमान् और सुग्रीव को शरण देने के कारण, जब बालि युद्ध की चुनौती देता है तो राम की स्थिति 'इस ओर कुंआं और उस ओर खाई' वाली हो जाती है । इधर बालि उधर रावण । एक तो सूर्य और फिर श्रीराम काल ! एक तो तम और दूसरे मेघजाल ! एक तो अश्व और फिर कवच से युक्त ! एक तो यम और फिर पूर्णकाल ! एक तो साप और दूसरे विषैली दृष्टि ! एक तो शनि और दूसरे वृष्टि ! एक तो दुर्धर दक्षमुख विरुद्ध है, और दूसरे बालि क्रुद्ध है ! 'मित्र क्षीण हैं और शत्रु बलवान हैं !'

(75/4)

हनुमान् सीता की कुशलवार्ता के प्रसंग में राम से कहते हैं—

“जबवणकंतहु , जेव वसंतहु ।
सुधरइ कोइल, धीरसे हल ।
जिनगुण जाणइ, तिहु तुह जाणइ ।
तुह सा राणी, जंति समाणी ।
भक्तहु रक्तहु, लगु वि न मुक्तहु ।
कुल हर जूति व, धम्मपविति व ॥” (74/1)

—जिस तरह नववन से सुन्दर वसंत को कोयल याद करती है, उसी तरह वह तुम्हें याद करती है । जिस तरह जानकी धीरता से धरती और जिनगुण को जानती है वैसे ही तुम्हें जानती है । तुम्हारी वह रानी शांति के समान भक्तों को अच्छी लगती है । वह कुलधर की एक क्षण को भी नहीं छोड़ी जाती युक्ति और धर्म की पवित्रता की तरह है ।

सीता—पुष्पदन्त के अनुसार सीता रावण की पुत्री है, पूर्वभव की, विद्यासाधना में रत मणिवती नाम की । पूर्वभव में काम पीड़ित रावण ने उसका ध्यान विचलित करना चाहा था, तब तपस्विनी कन्या ने यह निदान बाँधा था कि वह अगले जन्म में इस कामान्ध की बेटी के रूप में जन्म ले और इसकी मौत का कारण बने । अनिष्ट की आशंका से रावण शैशव अवस्था में उसे मंजूषा में रखवाकर मारीच के जरिए जनकपुरी के उद्यान में गड़वा देता है । वनवास लाकर उसे राजा जनक को देता है । जनक उसे बेटी की तरह पालते हैं । सीता अविद्य सुन्दरी है । उसकी सुन्दरता पर कवि सारे सौन्दर्य-उपमान निछावर कर देता है । धनुष की प्रत्यंघा चढ़ा देने पर, राम से उसका विवाह होता है ।

सीता का वास्तविक चरित्र तब शुरू होता है जब नारद मुनि के उकसाने पर रावण सीता के अपहरण की योजना बनाता है। सबसे पहले चन्द्रनखा दूती बनकर सीता के पास आती है। उसे देखकर वह विद्याधरी कहती है कि रूप में सीता के सामने उर्वशी और रंभा भी कुछ नहीं हैं। चन्द्रनखा राम को पुष्पवान मानती है। पूछने पर वह स्वयं को वनवास की माँ बताती है। वह जानना चाहती है कि उन्होंने पूर्व जन्म में कौन-सा व्रत किया जिससे इतनी सुन्दर हुई, वह भी उस स्वाधीन जीवन को साधेगी। सीता उससे कहती है—तुम नारीत्व क्यों चाहती हो? रजस्वला होने पर वह चंडाल के समान है। वह अपने कुटुम्ब का स्वामित्व प्राप्त नहीं कर सकती। किसी कुल में पैदा होती है और बड़ी होने पर किसी दूसरे कुल में ले जाई जाती है। स्वजनों के वियोग पर रोती है, आँसू बहाती है। मंत्रणा के समय किसी को अच्छी नहीं लगती। जब तक जीती है पराधीन जीती है। दुर्भंग, दुष्ट, दुर्गंध, दुराशय, अंधा, बहरा, रोगी, गूँगा, क्रोधी, निर्धन, कुटिल जैसा भी पति मिलता है नारी को उसी को मानना होता है। दूसरे का पति कितना ही बड़ा हो, वह पिता के समान है। विधवा होने पर मूढ़ मूढ़ा कर तप करना पड़ता है। बचपन में पिता रक्षा करता है, जवानी में पति रक्षा करता है, बुढ़ापे में बेटा रक्षा करता है, ताकि वह कोई छोटा काम न कर बैठे। भोजन और सोने में उसे दूसरे के अधीन रहना पड़ता है। इसलिए तुम महिलापन को क्यों मांगती हो? यह सुनकर चन्द्रनखा अपना सा मुँह लेकर रावण के पास जाकर कहती है—सीता अपने व्रत से नहीं टल सकती। भले ही घरती अपने स्थान से डिग जाए। रावण के अपहरण करने पर सीता मूर्छित हो जाती है, स्वर्णपुत्तलिका की तरह वह घरती पर पड़ी है। सुधीजनों की याद से उसकी वेदना दुगुनी बढ़ जाती है। सीता यद्यपि निश्चेतन हो जाती है फिर भी उसका वस्त्र नहीं ढलता। जार की चंचल दृष्टि आखिर कहां ठहरेगी? कवि कहता है कि सती और सुभट के मजबूती से बंधे हुए वस्त्र (परिकर) हाथ से नहीं छूटते। मौत का अवसर आ जाने पर भी दोनों का परिकर बन्ध नहीं छूटता—

“वह शिवसणु सद्गहि सुहृद्गु करासि न विपद्गुह ।

मरणि सभावद्विह परियरिविहि विहि वि न फिट्गुह ॥” 72/7

रावण उसको इसलिए नहीं छूता क्योंकि उसे अपनी विद्या के चले जाने का डर है।

दूतियों द्वारा रावण की प्रशंसा किये जाने पर, सीता उन्हें सूखे समझकर चुप रहती है। रावण को चक्रस्तन की प्राप्ति होने पर भी सीता डरती नहीं। राम की खबर मिलने तक वह भोजन छोड़ देती है। हनुमान् जब उनसे राम का सन्देश कहते हैं तो वह समझती है कि उसे भोजन कराने के लिए शत्रु का यह कूट-कपटजाल है। लेकिन हनुमान् के गूढ़ अभिज्ञान वचन सुनकर वह विश्वास कर लेती है कि यह रामदूत है, और भोजन कर लेती है। वह मंदोदरी से कहती है कि उसके जीते-जी उसे राम के पास भेज दिया जाए। अंत में तपश्चरण कर वह सोलहवें स्वर्ग जाती है।

भरत और लक्ष्मण—यद्यपि पुष्पदन्त ने प्रस्तावना में कहा है, कि इसमें (उनकी रामकथा में) राम का पश और लक्ष्मण का पौरुष है। परन्तु लक्ष्मण के चरित्र का पूर्ण विकास नहीं हो सका है। इसी प्रकार कवि राम और रावण के युद्ध को अनेक रसभाव का उत्पादक और भक्ति से भरे भरत के चरित्र का कारण मानता है, परन्तु उसमें भरत का चरित्र कहीं नहीं दिखाई देता। फिर पुष्पदन्त द्वारा रामकथा में राम का वनवास है ही नहीं। राम लक्ष्मण के साथ अपने पूर्वजों को पुनः अपने आधिपत्य में लेने के लिए जाते हैं, जहां नारद के कहने पर रावण सीता का अपहरण करता है। इसकी सूचना दशरथ राम को भेज देते हैं। परंपरागत रामकथा के जिन प्रसंगों को पुष्पदन्त ने विस्तार दिया है, वे हैं—सीता अपहरण, हनुमान् के गुणों का विस्तार, कपटी सुग्रीवराज का मरण, तारा का उद्धार, लवण-समुद्र का संतरण और राक्षस वंश का विनाश।

शृंगार, ऋतु और प्रकृति वर्णन

राष्ट्रों के राजा और राज की निष्पत्ति के सम्बन्ध में राजा जनक, सीता को राम के लिए दे देते हैं। हलधर सीता को ऐसे ग्रहण करते हैं, मानो जलधर ने बिजली को पकड़ लिया हो। मानो परमात्मा ने त्रिभुवन लक्ष्मी को ग्रहण किया हो, मानो चन्द्रमा से कुसुममाला विकसित हुई हो। दशरथ दूत भेजकर राम को अयोध्या बुलाते हैं। राम सीता के साथ अयोध्या आकर धी, दूध और धाराजलों से जिनेश्वर प्रतिमा का अभिषेक करते हैं। राजा दशरथ संतुष्ट होकर सात दूसरी कन्याओं से राम का विवाह कर देते हैं तथा लक्ष्मण का सोलह दूसरी कन्याओं से। इसी पुष्ट भूमि में वसंत ऋतु का आगमन होता है। कवि कहता है मानो वसन्त राम-लक्ष्मण का विवाह देखने आया हो।

वसन्त का यह रूप देखिए—'अभिनव सहकार वृक्षों से महकता हुआ, कलाली की तरह मधु धाराओं से बहता हुआ, हेमन्त की प्रभुता को समाप्त करता हुआ, दसों विधाओं में अपने चिह्नों को प्रेषित करता हुआ, नवाँकुरों से चमकता हुआ, पल्लवों से हिलता हुआ, सुन्दर बावड़ियों के जलरूपी शीर को हटाता हुआ, नीचे शैवाल तीर, सूर्य के तीक्ष्ण प्रताप और दिनों की सम्बाई को बिखाता हुआ, असोक वृक्षों की पत्र-ऋद्धि, मोक्ष (वर्जुन) वृक्षों की कुष्ठ फागुन के द्वारा मोक्षसिद्धि (पत्र क्षरण) प्रकट करता हुआ, बाजल पक्षियों के शरीरों को छाया करता हुआ, वनलक्ष्मी के ओस रूपी आँसुओं को पोंछता हुआ, तिलक वृक्षों के पत्रों में तिलक बिलास करता हुआ, लतारूपी कामनियों में रस उत्पन्न करता हुआ, प्रियों के अभिलाषा कवच को चीरता हुआ, कनेर पुष्पों के पराग से धूसरित करता हुआ, मानिनियों के मानगिरि को चूर करता हुआ, मँडराती हुई अमरमाला से गुनगुनाता हुआ, उत्तुंग वृक्षों पर दिनों को गँवाता हुआ, मन्दार कुसुमों के पराग से महकता हुआ, रमण की अभिलाषा के बिलास से धूमता हुआ।'

कवि कहता है कि जो अभी तक वन में खुपचाप विवरण कर रहा था वह सुन्दर कोकिल अब मधु का सेवन कर रहा है और बार-बार आलाप कर रहा है। मतवाला कौन प्रलाप नहीं करता ?

(70/4)

वसन्त की उन्मादकता में राम का अपनी प्रेयसियों के साथ क्रीड़ा करने का दृश्य अनोखा ही है—

"वीणा बज रही है, आपानक पिया जा रहा है। प्रियजनों के चित्त साधे जा रहे हैं। सप्ता स्वरों में मधुर गाया जा रहा है। निरन्तर गहरा प्रेम बढ़ रहा है। पराग से प्रचूर मल्लिका पुष्पों की माला बाँधी जा रही है। सुगन्धित द्रव्यों का छिड़काव किया गया है। नूपुरों की झंकार की तरह मयूर नाच रहे हैं। जहाँ अमर भ्रमण कर रहे हैं ऐसे दमनक पुष्पों के वर में फूलों की सेंज पर सोया जा रहा है। कामदेव अपने पुष्प तीरों को साध रहा है और लपटियों के बह्मपन को नष्ट कर रहा है। रुठी हुई ध्यारी को मनाया जा रहा है, उसे काम की सुखद पीड़ा दी जा रही है। सरोवर की जलक्रीड़ा से शरीरों को सिंचित किया जा रहा है, पंखों से केशर मिश्रित जल छोड़ा जा है। दिखाई पड़ने वाले अंगों से रस बढ़ रहा है। प्रणयिनियों के सूक्ष्म कटिचन्द्र गीले हो रहे हैं। नील कमलों की मालाओं के ताड़न से, सुन्दर खिले हुए पलाश वृक्षों से प्रज्वलित तथा जिसमें प्रिय-प्रियतमों अपनी इच्छानुसार एक-दूसरे को मना रहे हैं ऐसा वसन्त तेजी से बढ़ रहा है।" (70/15)

रावण की दूती जब वाराणसी पहुँचती है, तो उसके निकट स्थित तन्दन वन इस प्रकार दिखाई देता है—

"जिसमें धरती वृक्षों की जड़ों से अवरुद्ध है, आकाश पुष्प-पराग से धूसरित है। जहाँ वृक्ष-शाखाओं पर बन्दर क्रीड़ा कर रहे हैं; ताड़ और तमाश के वृक्ष आसमान को छू रहे हैं। जहाँ बिल्व चिन्ता और पुष्प

वृक्षों के दल हैं, जिसमें हिरनों ने दाँतों से अंकुरों को कुतर डाला है, जहाँ स्वच्छ और प्रकंपित जलकण उछल रहे हैं, जो अगुछ और देवदार वृक्षों से गधन है, जिसमें वृक्षों की रगड़ से आग निकल रही है, विणाओं के मुख सुरभित धुएँ की गन्ध से सुवासित हैं, अशोक वृक्षों के पत्ते हिल-डुल रहे हैं, हवा से प्रेरित माधवी-लता के पत्र धरती पर उड़ रहे हैं, जहाँ कौर, कुरर, कारण्ड बाल-लताओं के घरों में कजरव कर रहे हैं, अलकों की तरह जहाँ अमर सपूत उड़ रहा है, जो विविध केलिगृहों से विराट है, जहाँ मनुष्य केतकी के पराग से सुवासित हो उठे हैं, जिसमें विद्याधर, पक्षेन्द्र और दानवेन्द्र की समांतर क्रीड़ा हो रही है।" (71/12)

कवि रावण की दूती के माध्यम से लक्ष्मण की प्रेम-क्रीड़ा का शब्दचित्र इस रूप में खींचता है—

"कोई एक मयूर के साथ हास्य-मूर्खक नृत्य करती हुई लोगों के नयनों को भाती है, मृगाल के अंत में स्थित भ्रमरों की पंख से अलंकृत तथा दोनों पार्श्व भागों पर रखा हुआ कमल ऐसी शोभा देता है जैसे कामदेव का बाण हो, जिसे वह देवों और मनुष्य के हृदय को विदारण करने के लिए दिखा रही है। हंस के साथ जाती हुई कोई अपनी गति का लीला-विलास भी भूल जाती है। भौंरा किसी के कतरल पर आकर क्या बैठ जाता है वह मूर्ख अपने को गतदल पर बैठा हुआ मान रहा है! किसी के निकट आ लगा हुआ हरित उससे दीर्घ कटाक्ष की माँग करता है। किसी ने कमल को अपने कान पर धारण कर लिया है पर नेत्रों से विजित होने के कारण बेचारा मुरझा गया है। किसी ने नील गारुगों की किङ्किणियों से युक्त लता का कटिसूत्र बांध रखा है। किसी एक ने जाकर जबर्दस्ती राम को पकड़ लिया और उन्हें पराग पिजरित (पीला) कर दिया मानो संघ्या राग ने चांद को पीला कर दिया हो। या फिर शारदीय मेघ शोभित हो उठा हो। किसी ने जुही का फूल उपहास में दिया। किसी ने अपना सरस मुख दिखाया। जाति कुसुम को जातिवाला क्यों कहा जाता है जबकि उसका आनन्द सैकड़ों भ्रमर उठाते हैं फिर भी आदरणीया वह उसे अपने सिर पर बाँधती है! अपना मतलब सघने पर सभी लोग मोह में पड़ जाते हैं। कोई धूर्त भ्रमरी मोहरे के पुष्प को छोड़कर अपनी देह हिलाकर गुनगुनाकर सर्वांग सुरभित प्रिय मरुवक पर जा बैठती है।" (71/13)

"कोई दर्पण में चमकत हुए अपने दाँतों के साथ कुंद पुष्पों को देखती है। अपनी देहगंध से मौलथी पुष्प की ओर अग्रों के संबंध से बिम्बाफल की परीक्षा करती है। कोई फूले हुए सहकार वृक्ष को देखती है, कोई बाला वामुदेव के साथ बाहुयुद्ध चाहती है। नवकलियों से गतवाला और बोलता हुआ निष्कपट शुक्र वियोग दुःख को कुछ भी नहीं मानता। मन को कुपित करनेवाले उसे उसने कसकर पकड़ लिया, इती से वह (शुक्र) मुख में (चोंच में) लाल रंग का हो गया। कोई शुभ करनेवाली, हाथ में इक्षुबंध लिये हुए ऐसी प्रतीत होती है, मानो विषम धनुष को धारण किये हुए हो। कोई पुष्पमाला का इस प्रकार संचार करती है, मानो कामदेव तीरों की पंक्तियाँ दिखा रहा हो। कोई पलाश पुष्पों को इकट्ठा करती है, और लक्ष्मण के लिए जगहार में देती है। स्निग्ध साल कुटिल और तीक्ष्ण वे ऐसे मालूम होते हैं, मानो वसंत रूपी सिंह के नख हों। कोई काली कोयल को देखती है और पूछती है। दूसरी हँसकर उत्तर देती है कि लोगों के विरहानल के धुएँ से काली यह इस समय भी बोल रही है। इसका मधुर मधु में रत विष दोनों ही प्रवासियों के मानस को आहत करता है। यदि आज मुझ से लक्ष्मण रमण करता है तो कोयल का यह प्रलाप मुझे सुख देता है।"

"सीता की अंजुलियों के पानी से सींचा गया नील कमल पुष्प से पवित्र राम के उर पर ऐसा प्रतीत होता है, मानो दर्पणतल में मृग से लांछित पूर्ण चन्द्र शोभित हो। श्याम नारायण (लक्ष्मण) ने किसी महासती को इस प्रकार सींच दिया, मानो मेघ ने वनस्पती को सींच दिया हो, मानो वह (नाभि का) रोमावली रूपी अंकुर को छोड़ रहा हो, मानो वह मुखकमल से खिल गई हो। कोई सघन स्तन रूपी फल-संपदा को दिखाती है। जैसे कामदेव की सुन्दर लता हो। बार-बार सींचे जाने पर वह, जिसमें कपूर के कण

उछल रहे हैं, ऐसे नीलापूर्वक हँसती है। प्रिय के हाथों से नहलाई गयी किसी की चोली का सूत्रजाल टूट जाता है, शिथिल गीला वस्त्र गिर जाता है, वह लजा जाती है, और पानी में अपना अंग छिपाती है। कोई लक्ष्मण के मुख की कान्ति से श्याम रक्त कमल को काला देखती है, सखियों को दिखाकर अपना विचार बताती है। कोई कानों से लग कर कहती है, हे ललित ! इसे सींचो यह पद्मावती है। जिससे यह आदरणीय विरहिणी जीवित रह सके इसे केशर का लेप दो। हे देव, इसे वक्षस्यल से पीड़ित करो।

यह सुनकर मानश्रेष्ठ कुमार ने एक को वस्त्र के अंचल से पकड़ लिया तथा एक और दूसरी के स्तनों पर थोड़ा-थोड़ा मुसकाते हुए उसने जलयंत्र से जल छोड़ा दिया।" (71/15-16)

स्त्रियों के प्रकार

सुन्दर वर या वधू पाने की चाह मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति है, जो मानव-मात्र में पाई जाती है। भारत की पितृप्रधान संयुक्त परिवार प्रथा में (राजपरिवारों को छोड़कर) वर-वधू के चयन का अधिकार परिवार के प्रमुख को था। परिवार के स्तर और वर-वधू के भावी सुखी जीवन की दृष्टि से सम्बन्ध तय करते समय जिन बातों पर विचार किया जाता रहा है उनमें एक बात यह भी थी कि सामुद्रिक शास्त्र के लक्षणों के अनुसार वर और कन्या उपयुक्त हैं या नहीं। कभी-कभी इसका दुरुपयोग भी होता था। दुरुपयोग करने-वाले हर युग में रहे हैं। राजा सगर की घटना इस बात का बड़ा दिलचस्प उदाहरण है कि किस प्रकार साटुकार मंत्रियों द्वारा सत्ता-प्रमुख उल्टू बनाए जाते रहे हैं। राजा सगर चारणमुगल नगर के राजा सुयोधन की कन्या सुलसा के स्वयंवर में जाता है। कन्या की माँ अतिथि अपने भाई के पुत्र मधुपिंगल से उसका विवाह करना चाहती है। इधर, सगर की दासी मंदोदरी कन्या को बरगला लेती है। जब यह पता चलता है कि कन्या मधुपिंगल को ही दी जाएगी, तो सगर का मंत्री एक चाल चलता है। वह एक कपट-वाक्य ताड़पत्र पर लिखकर चुपचाप मंजूषा में बन्दकर खेत में गड़वा देता है। दूसरे दिन हल चलाते समय किसान को वह मंजूषा मिलती है। वह राजा सुयोधन को दिखाई जाती है। उसे भली-भाँति पढ़ा जाता है। इतने में मंत्री ब्राह्मण के छत्र वेश में आकर अत्यन्त मीठे राग में राजा को समझाता है कि जो वर काना, बोना, पीला, अन्ध, गूंगा, लंगड़ा, निर्धन, दुर्बल, बुद्धिहीन, विह्वल, मान और सज्जा से रहित, रोग से पराजित, कोढ़ के कारण नष्ट शरीर, कटे हाथ-पैर वाला, निम्न काम करनेवाला, स्त्रियों और वच्चों की हत्या करने-वाला, कठोर, निर्दय, साधुकर्म की निन्दा करने वाला, जिसका अपयश बढ़ रहा हो, छोटे कुल वाला, बालसी, बूढ़ और कुत्सित देह वाला तथा दैन्य को प्राप्त हो ऐसे लोगों को तो कुल और धन से हीन कन्या भी नहीं दी जानी चाहिए। जो राजा पिंगल को विवाह के भंडप में जाने की अनुमति देता है वह अपनी कन्या के लिए वैधव्य और दुःख ही सायेगा।" (69/20-21)

ऊपर छोटे वर के जो लक्षण गिनाये गये हैं, उन्हें देखकर सामान्य आदमी भी अपनी कन्या ऐसे वर को नहीं देगा। लेकिन यह कहना कि पिंगल को कन्या देना उसके वैधव्य को बुलाना है, मंत्री का कपट कथन है।

सुनकर मधु पिंगल चुपचाप चल देता है और राजा सगर सुलसा से विवाह कर लेता है। जब रावण सीता पर अनुरक्त होता है तो भय उससे कहता है कि किसी स्त्री को अपने अधिकार में करने के पहले यह देख लेना जरूरी है कि वह भी अनुरक्त है या नहीं; और यह भी कि कामशास्त्र के अनुसार वह उपयुक्त है या नहीं। कामशास्त्र में स्त्रियों की चार जातियाँ बताई गई हैं भद्रा, मंदा, लता और हंसा। इनमें भद्रा सर्वांग सुन्दर होती है, जबकि मंदा मोटी, भारी और बड़े स्तनोंवाली। लता लम्बी, छरहरी, पत्ते की तरह दुबली होती है, जबकि हंसा ठिगनी और मांसल।

ऋषि, विद्याधर पक्ष, पिशाच आदि की स्त्रियों के कई प्रकार होते हैं। तापसी स्त्री सीधी और नासमझ होती है। खेचरी (विद्याधरी) मदिरा और फूलों की शौकीन होती है। पेशाबिनी तामांसक और घुमस्कड़। यक्षिणी घनकण के लोभ के अधीन होती है। सारंगी, मृगी, रिद्धनी, शशि, धृतराष्ट्रणी, महिषी, खरी और मदकरी—ये आठ युवतियाँ कही गई हैं। इनमें सारसी अपने स्तन-कलशों से प्रिय के वक्ष को प्रेरित करती है और उसके साथ को नहीं छोड़ती। मृगी अपने बान्धवों को दान देने से संतुष्ट होती है। डाँटे पर डरती है और गीत सुनती है। रिद्धणी पुत्र रूपी पात्र से दुखी रहती है, उसका कोए जैसा शब्द होता है और युद्ध से भयंकर स्थान को छोड़ देती है। शशि दुख की भाजन और निमीलित नेत्रों वाली होती है, निर्दय और दूसरे घर के कौर को देखने वाली। धृतराष्ट्रणी कमलों के सरोवर में कीड़ा करनेवाली; महिषी भयंकर क्रोध के भावेन में बोलने वाली। खरी खेलती हुई हँसती है, कहकहा लगाकर किए गये हाथ और पाव के प्रहार को सहन करती है। मदकरी मांस खानेवाली, मजबूत पकड़वाली, साहस दिखानेवाली और कुकर्म का निर्वाह करनेवाली होती है।

कवि पुष्पदन्त ने देशी स्त्रियों का भी उल्लेख किया है—मालवी स्त्री शिव चाहनेवाली होती है। वाराणसी में उत्पन्न होनेवाली बनवासिनी स्वभाव से लम्पट और दुष्ट बोलनेवाली होती है। अनुददेश की स्त्री मंदगामिनी होती है, उसका पहला काम दूसरे के घन को छीनना है। दिन की मर्यादा बाँधकर रतिरस का संभ्रान कर तब कामकीड़ा करती है। सिंधु देश की स्त्री प्रिय के घर में शोभित होती है और अपने प्रिय को प्राण और धन दोनों अर्पित कर देती है। कोशल देश की स्त्री का भाव मायावी होता है। सिन्धु देश की बाला को रति के गुण से पाया जा सकता है। द्रविड़ देश की स्त्री को दन्त और नखच्छद से पाया जा सकता है। आंध्र महिला परिपूर्ण रस से चौंक जाती है। सुन्दर आलाप से लाट देश की स्त्री लजा जाती है। उड़ीसा देश की स्त्री कामविज्ञान से भेदन करने योग्य है। कर्लिंग देश की महिला उपचार का प्रयोग करती है। रत्न देश की स्त्री झुलक और रूखी होने पर भी रंजन करती है। सौराष्ट्र की स्त्री बुरबुर मात्र से संतुष्ट हो जाती है। गुजरात देश की स्त्री अपने काम में दक्ष होती है। महाराष्ट्र देश की स्त्री को कितना भी अनुशासित किया जाए तब भी उसका धूर्तपन दिखाई देता है। कोंकण देश की स्त्री को कुछ भी दिया जाए, वह उसका विचार करती हुई क्षीण होती रहती है। पाटलिपुत्र की स्त्री प्रसन्न काम लीलाओं का प्रदर्शन करनेवाली, जाँघ पर जाँघ रखनेवाली होती है। पारियात्र की महिला पुरुष के अनुकूल या प्रतिकूल कुछ भी व्यवसाय करनेवाली होती है। हिमवत देश की महिला कुछ मंत्र बीजाक्षर जानती है जिससे वर उसके पैरों पर आ पड़ता है। मध्यदेश की नारी कला का घर होती है तथा कमल की तरह कोमल होती है। (71/6,7,8)

प्रकृति के विचार से भी युवतियाँ तीन प्रकार की होती हैं—वात, कफ और पित्त के भेद से। पित्त-प्रकृति वाली वात-वात में रुठती है। उसे दिन-प्रतिदिन धूर्तता से संतुष्ट करना चाहिए। पीले नखोंवाली बुद्धिमान और गोरी को कोमलता से रतिविह्वल करना चाहिए। यदि वह उन्नत स्तनों और उत्तम अंगवाली समझो तो शीतल आलिंगन देना चाहिए। जिसकी शीतल गन्ध हो, श्वेत दुपट्टा हो उसे भी शीतल आलिंगन देना चाहिए। श्लेष्म प्रकृतिवाली श्यामल उज्ज्वल वर्णवाली होती है, अभिनव कदली के अंकुर के समान कोमल। दोष देख लेने पर वह निश्चय से चूक जाती है। फिर इस जन्म में वह कभी भी पास नहीं पहुँचती। उसे सरय, वनय और दाम से ग्रहण करना चाहिए, नहीं तो उसके अंग को नहीं छूना चाहिए। जिसका रति-जल से भरपूर कोमल कटितल है, दुग्ध-रहित शरीर का सुन्दर सौरभ, लाल नाखून, सुन्दर हाथ-पैर हैं ऐसी सुन्दरी साधारण सूरत में आदर करनेवाली होती है। वात प्रकृतिवाली विलासिनी, श्याम और कठोर होती है। खूब खाती है और खूब बोलती है। उसके साथ कठोर प्रहारों और गम्भीर शब्द से रमण किया जाय

तभी उसकी कामाग्नि शान्त होती है। प्रकृति की भिन्नता के आधार पर इनके भी मन्व, तीक्ष्ण तीक्ष्णतर तथा विशुद्ध-अशुद्ध आदि भेद होते हैं।

यज्ञ-संस्कृति

नारद, पर्वतक और राजा वसु आचार्य क्षीरकदंब के शिष्य हैं। इनकी कथा तत्कालीन यज्ञ-संस्कृति और शिक्षा-व्यवस्था पर प्रकाश डालती है। पर्वतक आचार्य का पुत्र है। पढ़ने में निहायत कमजोर। आचार्य-पत्नी पति से झगड़ा करती है: 'तुमने अपने बेटे को कुछ नहीं सिखाया, दूसरे के बेटों को विद्वान बना दिया।' यह सुनकर आचार्य कहते हैं: 'अमरों को गंध लेना, बगुलों को मछली पकड़ना किसने सिखाया? हंसों को नीर-क्षीर विवेक की शिक्षा किसने दी? शुभे! तुम्हारा बेटा जड़बुद्धि है जबकि यह नारद स्वभाव से ही पटु है। आचार्य दोनों से विविध प्रयोग करवाकर अपना कथन सिद्ध कर देते हैं। उस जमाने में पुस्तकों के बजाय, प्रकृति निरीक्षण और सहज तर्क से शिक्षा दी जाती थी। आचार्य ही शिक्षक और परीक्षक दोनों थे। बहुधा वह निष्पक्ष होता था। उस समय 'लाइन' की भी प्रथा थी। गुरु राजपुत्र की भी पिटाई से नहीं चूकता था। एक दिन आचार्य क्षीरकदंब ने छड़ी से राजा वसु की जमकर पिटाई कर दी, यदि पत्नी नहीं बचाती तो उसका कबूतर निकल जाता। क्षीरकदंब, अन्त में, पुत्र पर्वतक और पत्नी दोनों नारद को सौंपकर तथा राजा वसु से कहकर जिनदीक्षा ग्रहण कर लेते हैं। बहुत दिन बाद 'अज' शब्द के अर्थ को लेकर दोनों में विवाद हो जाता है। नारद के अनुसार, 'अज' का अर्थ तीन साल पुराना जो है जबकि पर्वतक के अनुसार 'बकरा'। नारद के अर्थ के समर्थक दूसरे अहिंसक बुद्धजीवियों ने पर्वतक को आवस्ती से निकाल बाहर कर दिया। लगता है, यज्ञ-संस्कृति के विरोध का मुख्य कारण उसमें होने वाला पशुबध था। अण-मानित और क्रुद्ध पर्वतक की नील समालवन में सालंकायण विप्र से भेट होती है। वह एक शिलातल पर बैठा हुआ पेड़ की छांव में अपवित्र शास्त्र पढ़ रहा था। वास्तव में वह पूर्व जन्म का मधुपिंगल था, जिनका विवाह बुआ की लड़की सुलसा से होनेवाला था। परन्तु राजा सगर का मंत्री झूठे सामुद्रिक शास्त्र की रचनाकर, उसे लक्षणहीन बताकर, सगर से सुलसा का विवाह करवा देता है। हताश मधुपिंगल जैन मुनि बन जाता है। बाद में वस्तुस्थिति मालूम होने पर वह प्रतिशोध की भावना से प्राण त्याग कर स्वर्ग में असुरेन्द्र का वाहन बनता है। सगर से बदला लेने के लिए वह झूठी धुति का पाठ करता हुआ साथी की खोज में है। सालंकायण पर्वतक को पूर्व जन्म का गुरुभाई बताकर कहता है: मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ, मैं चाहता हूँ कि तुम्हें यह विद्या सौंपकर निश्चिन्त हो जाऊँ—

हृदं कंचुड अञ्जु परह सरसि

नियविज्जइ पइं जि अलंकरसि। (69/29)

पर्वतक उसका शिष्य बन जाता है। सालंकायण कपटनीति और मंत्रशक्ति से राजा सगर और उसकी पत्नी सुलसा को यज्ञ में होम कर अपना बदला चुका लेता है। इस प्रकार व्यक्तिगत रागद्वेष के कारण यज्ञों की हिंसा और भी विकृत हो गई। नारद अयोध्या पहुँचकर इसका विरोध करता है। उसका तर्क है कि यदि ऐसा वेद, जो पशु मारने, हड्डियाँ चूर-चूर करने, चमड़े को छेदने-भेदने का विधान करता है, प्रशस्त है और ऋषियों के द्वारा देखा गया है, तो खड्ग (गेंडा) वेद क्यों नहीं? कुचिवेकी! जा जा, हट यहाँ से।

“वणसरहं मारंतु णट्ठयहं चूरंतु

अम्माहं छिबंतु अम्माहं भिबंतु।

इतिविदुः सुपसत्सु जह वेउ परमतसु ।

तह खगु कि णेय, जजआहि कुविचेय ।" (69/32)

वेद मूलतः ज्ञान को कहते हैं, वह जिस ग्रंथ में हो वह भी वेद कहा जाता है। नारद का कहना है कि 'वेद' हिसाबूलक नहीं हो सकता। उनका दूसरा तर्क यह है कि यदि 'वेद' पुरुषकृत नहीं है, तो प्रश्न उठता है कि वर्ण (क ख ग घ ङ आदि) आकाश में उत्पन्न होते हैं या मनुष्य के मुख में? यदि आकाश में स्फुरित होते हैं तो अक्षर कहाँ? बिन्दु कहाँ? अर्थ कहाँ और छन्द कहाँ? जिसमें मन ने प्रयत्न किया है, ऐसे मनुष्य के मुख के बिना उक्त चीजें (अक्षर, बिन्दु आदि) पैदा नहीं हो सकते। कहाँ कार्य और कहाँ कारण? कहाँ ज्ञान और कहाँ ज्ञेय? कहाँ आकाश में कमल हाँ सकता है? कहाँ निरूप में शब्द हो सकता है? अरे दूसरों का मांस निगलनेवाले द्विज (सभी नहीं) वेद में हिसा कैसे?

“जई पोरिसेओ बि, णउ होइ भणु तो बि ।

अण्णअभुणि गयणि कि फुरइ शरवयणि ।

अण्णअरइ कहि बिबु कहि अत्थु, कहि छंदु ।

कय मणपयसेण, सिणु पुरिसयसेण ।

कहि हेउ कहि वेउ, कहि णाणु कहि णेउ ।

कहि गयणि अरविबु णीळवि कहि सद्धु ॥” (69.32)

नारद का उक्त तर्क वस्तुतः पुष्पदन्त का तर्क है जो एक भाषा वैज्ञानिक तर्क है। 'वेद' उच्चारित या लिखित ज्ञान का नाम है जो वर्णों (स्वरों और व्यंजनों) वाला है, वर्ण (ध्वनि) आकाश में नहीं, मनुष्य के मुँह में ही स्फुटित होते हैं। वे अपने आप नहीं होते, स्थान और प्रयत्न के योग से ध्वनि की उत्पत्ति मानवमुख में होती है। (पुरुषवक्त्रेण)। मनुष्यमुख से ध्वनि के उच्चारण के पूर्व मन प्रयत्न करता है। भाषा का आधार ध्वनि है। ध्वनि के उत्पन्न होने की उक्त व्याख्या ध्वनि-उत्पत्ति की पुष्पदन्त की भाषा व्याख्या से पूरी मेल खाती है—

“आत्मा बुद्ध्या समेत्यर्थान्, मनो युङ्क्ते विवक्षया ।

मनः कायान्निमाहन्ति स प्रेरयति माद्यतम् ॥”

अर्थात् आत्मा बुद्धि से अर्थों को इकट्ठा करती है और बोलने की इच्छा से मन को प्रेरित करती है। मन कायाग्नि को उद्बुद्ध करता है, वह हवा (प्राणवायु) को प्रेरित करता है। उससे स्वर पैदा होता है। इससे स्पष्ट है कि भाषा अभिव्यक्ति की मानसिक प्रक्रिया है। पुष्पदन्त का तर्क है कि वेद चाहे लिखित हों या उच्चारित, अक्षरात्मक होने से वह पौष्टिक है। कहने का अभिप्राय यह कि धर्म का निर्णायक तत्त्व मनुष्य का विवेक है। धर्म का काम धारण करना है। जो चेतना का संहार करनेवाला हो, वह धर्म नहीं हो सकता।

“होईअहिसह धम्म

हिसह पाउणिस्तउ”

(महापुराण 69/30)

मनुष्य की पवित्रता की कसौटी

मनुष्य की पवित्रता उसके आचरण की पवित्रता है। "यदि गंगा का जल पवित्र है तो वह मल-मूत्र क्यों बनता है ? गंगा का स्नान यदि पापों का हरण करनेवाला है तो फिर मछलियों को मोक्ष क्यों नहीं होता ? यदि मिट्टी देह में लगाने से अंधकार दूर होता है तो सुअर को स्वर्ग विमान में होना चाहिए ? यदि मृगचर्म धर्म से उज्ज्वल है तो मृग समूह को दुनिया में श्रेष्ठ होना चाहिए ? इसलिए जो द्विज मांस खाता है, वह श्रेष्ठ नहीं हो सकता। यदि दूध (दर्भ) से धर्म होता है तो मृगकुल धरती में क्यों भटकता फिरता है ? वह रात दिन घास चरता है, फिर इन्द्र के विमान में क्यों नहीं प्रवेश करता ? गाय या काकपंख के स्पर्श से अथवा सोकर उठने पर भी देखने से यदि पाप नष्ट होते हैं और लोग प्रवर (देव/बड़े) बनते हैं तो बैलों और कौओं को स्वर्ग में देव होना चाहिए ? निष्कर्ष यह कि मनुष्य की पवित्रता की कसौटी जिसका कर्मकाण्ड नहीं बल्कि दूसरे को अपने समान समझना है—

‘जो पर अप्पाण्ड समुत्पन्न’

दूती प्रसंग और नारी मूल्य

मारीच के परामर्श पर, रावण अपनी बहन चन्द्रनखा को सीता के पास दूती बनाकर भेजता है। वाराणसी के निकट चित्रकूट वन में सीता को देखकर पहले तो विद्यधारी चन्द्रनखा सोचती है कि सीता मान को चूर-चूर करने वाली उर्वशी, गोरी, तिलोत्तमा और रंभा से भी अधिक रूपवती है, वह काम की सज्जिका है। यह विचारती हुई वह भीष्ट बड़िया बन जाती है और युवतियों का मनोरंजन करने लग जाती है। एक राती पूछती है—“तुम कौन हो ! किस लिए यहाँ आई ? क्या देख रही हो ? चित्रलिखित की तरह क्यों रह गई हो।” उत्तर में दूती कहती है—“मैं यहाँ के वनपाल की माँ हूँ। यह बताओ कि पूर्वभ्रम में तुमने क्या व्रत किया था जिससे तुम्हें यह रूपराशि मिली ? मैं उस व्रत को करना चाहती हूँ।” यह सुनकर सीता ने उसे डाँटा, “तुम स्त्रीत्व क्यों चाहती हो ? यह तो सबसे खराब है। रजस्वलाकाल में वह चंडाल की तरह है। उसे कभी अपने वंश का स्वामित्व नहीं मिलता। किसी एक कुल में उत्पन्न होती है और बड़ी होने पर किसी दूसरे के द्वारा ले जाई जाती है। स्वजन के निधन पर आठ-आठ आँसू बहाती है। जब घर में कोई मंत्रणा की जाती है तो कोई उससे नहीं पूछता। जब तक वह जीती है वह परवश जीती है। फिर उसे जैसा भी पति (अभागा, दुष्ट, दुर्गन्धयुक्त, दुराशयी, अंधा, बहरा, पागल, गुँगा, असहिष्णु, निर्धन और कुटिल) मिले उसी को स्वीकारना पड़ता है। उधर चाहे जन्मवर्ती हो या इन्द्र, कुलगुणधारी स्त्री होकर उसे पिता-पुत्र मानना चाहिए। अपनी कुल मर्यादा का उल्लंघन करना ठीक नहीं। इस नारी जीवन से क्या ? विधवा पन में सिर घुटाओ और तपश्चरण से स्वयं को वशिष्ठ करो। मूक बचपन में पिता रक्षा करता है, जबानी में पति रक्षा करता है, उसी प्रकार बुढ़ापे में बेटा रक्षा करता है जिससे वह कुल में कलंक न लगाए। उसका घुमना-फिरना दूसरों के अधीन है। घर यानी सोने और खाने के जेलखाने से महिला की मुक्ति नहीं। बुढ़ापे के समय बुढ़ी होने पर जो महिलापन अत्यन्त अभागा होता है, उसमें आग लगे, वह तुमने क्यों माँगा ?” सीता की यह प्रतिक्रिया सुनकर दूती का मुख स्याह हो जाता है। वह समझ जाती है कि सीता के चरित्र का खंडन संभव नहीं। इसके दृढ़ संकल्प के सामने मेरी धूर्तता नहीं चल सकती। वह नो दो ग्यारह हो जाती है। यह तो हुआ एक पक्ष। उक्त कथन का दूसरा पक्ष यह है कि इसमें मध्ययुगीन भारतीय नारी (कुलीन) की स्थिति और पीढ़ा की यथार्थ अभिव्यक्ति तो है परन्तु उसका समाधान आध्यात्मिक है। (महापुराण 72/22)

रावण का सामंतवादी दृष्टिकोण

प्रेम प्रसंग में बहने से बढ़कर विषयसन्तोष दूती दूसरी नहीं हो सकती, हालाँकि सभी बहनें दूती नहीं होतीं। रावण चन्द्रनखा की बात भी नहीं मानता यद्यपि वह कहती है कि चाहे रागद्वेष विनेन्द्र को नष्ट कर दे परन्तु तুম सीता जैसी सती का उपभोग नहीं कर सकोगे।" रावण का उत्तर है, "जो अच्छा लगे उसे अवश्य वश में करना चाहिए। क्या सांप के भय में नागमणि की छोड़ दिया जाए? वह सीता के सतीत्व में विश्वास नहीं करता। उसका तर्क है कि सज्जन की सज्जनता, पुरिष की प्रभुता, पहाड़ की हरियाली और सती का सतीत्व, दूर तक रहते हुए ही सुगने में अच्छे लगते हैं। पास आने पर वे तार-तार खण्डित दिखाई देते हैं—

“अवसु नि वसि किञ्जद जं रुच्यद,
कि विसमद्वयद फणिमणि मुच्यद
अससह सिरिकूरेण पवच्यद ।
सुहिसयत्तणु पुरिसपहुत्तणु,
गिरिमसिणत्तणु सहहि सइत्तणु ।
दूरयरत्तणु सुणंसहं भंगउं,
पासि असेसु नि वरिसियभंगउं ।”

(महापुराण 71/21)

सीता को देखकर रावण की प्रतिक्रिया है कि जो ऐसे स्त्रीरत्न का भोग नहीं करता उसे घरबार छोड़कर मुनि होंकर वन में चले जाना चाहिए।

रावण जब सीता से कहता है : “राम-लक्ष्मण की बात छोड़ो, दशरथ भी मेरा दास था। जब सिर का झुड़ा मणि उपलब्ध हो, तो पैरों के आभूषण का क्या करना? नौकर की स्त्री को देह का क्या गोख? खड़ाऊँ की मणिमण्डन से क्या? मेरी दासों होते हुए भी तू महादेवी हो सकती है। जाती हुई लक्ष्मी को हाथ मत दे !” तो इसमें नारी के प्रति उसके सामंतवादी दृष्टिकोण की स्पष्ट झलक भिजती है।

कवि और प्रकृति का आश्रय

स्वर्णमृग दिखाकर रावण जब सीता का अपहरण करता है तो पुष्पदंत का कविहृदय सीता के चरित्र की दृढ़ता की तुलना उस सुभट से करता है जो अंतिम क्षण तक अपने परिकर को नहीं छोड़ता (72/7)। पति के वियोग से अस्तव्यस्त सीता विधिवश, रावण के हाथ से छूटकर पहाड़ी प्रदेश में स्थलित हो जाती है, उस समय वह ऐसी प्रतीत होती है, जैसे स्वर्णनिर्मित पुतली हो—

“णं वाउल्लिय कामघडिय ।” (72/7)

किर बेहोश होने पर भी उसका हाथ परिधान से नहीं हटता। जार (रावण) की चंचल दृष्टि उस पर कैसे घूम सकती है?

“परिहाणु ण तो वि ताहि डलइ,
अल जार विट्ठि कहि परिघुलइ ।”

फिर भी परस्त्री का लोभी वह दुष्ट वहाँ आ धमकता है। गाँव का कुत्ता कभी लज्जित होता है ?

अब प्रकृति की प्रतिक्रिया देखिए :

“गिरते हुए, अपने लाल कोपलों से दूध रो रहा है कि हे रावण, तू दूसरे की स्त्री क्यों लाया ? वन अपनी शाखाएँ उठाकर कह रहा है कि हाय नारीरत्न का मरण का पहुँचा ! अमर कान के पास गुन-गुना कर कहता है, हे स्वामी, यह अनुचित है। रावण परस्त्री के सुख की इच्छा करता है यह देखकर शुक देवी तजर करके चला जाता है। जैसे वह भी रावण से उद्विग्न हो। कोयल भी विलाप करती हुई कहती है—आदरणीय रावण, तुम सीता से तभी रमण करो यदि तुम अपना अपयश मुझ जैसा काला चाहते हो। लोक-प्रिय हंसावलि कहती है—तुम्हारी कीर्ति मेरे समान सफेद है। इस स्त्री का उपभोग कर तुम उसे मैला मत करो और लंकापुरी के ऐश्वर्य को नष्ट मत करो। लाल-लाल कोपलों वाला आभूषण ऐसा मालूम हो रहा है, मानो राजा के अन्याय की ज्वाला से मारकत हो उठा हो—

“रावण, कि आणिय परजुवइ
तव नुपसिन्हंसुएहि वषइ ।
बगु नाइ करइ साहुदरनु
हा पसउं नारिरयणभरण ।
असि कण्ठासज्जउ सज्जुवइ
पहु एउं अजुए, नाइ भजइ ।
इच्छइ वससिउ पररसणि सुहुं
कणइल्लउ अंकि बि जाइ मुहुं ।
अं सो बि निवहु उअवेइमउ ।
कोइसु बिलबंतु व आइयउ ।
वृजसु महु अहणिहु सहहि जइ
बइवेहि भबारा रमहि तइ ।
हंसावलि तवइ व सोमायेय
मइं ओही तेरी किशि सिय ।
मा मइलहि माणिवि एह तिय
मा नासहि लंका उरिहि सिय ।
अंबउ सोहिपल्लवललिउ
अं निव अण्णायसिहि अलिउ । (72/8)

सत्तापुरुष द्वारा नैतिक मूल्यों की खुली अवमानना पर कवि केवल आक्रोश व्यक्त कर सकता है, या कभी-कभी उसकी छाया प्रकृति में देखता है, जैसा कि हिन्दी की नई कविता में हो रहा है।

सूक्तियाँ, लोकोक्तियाँ

ग्यारह सन्धियों का काव्य होते हुए भी पुण्यवन्त का यह रामायण काव्य (गोम चरित) भाषा और शैली की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध है। उसमें सूक्तियाँ और लोकोक्तियों की भरमार है। उदाहरण के लिए कुछेक सूक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

प्रजापति राजा कहता है—जो व्यक्ति अज्ञानी और व्याय का विध्वंस करनेवाला है, वह अपने को राज्यधर क्यों कहता है ?

अपनी प्रशंसा करना गुण का दूषण है । मिथ्यादर्शन तप का दूषण है । नीरस प्रदर्शन नट का दूषण है । व्याकरण रहित काव्य कवि का दूषण है । गुणों और दुष्टों को पालना धन का दूषण है । द्विविधामरण व्रत का दूषण है । जोर से बोलना मुक्ती का दूषण है । चुगली और विच्छिन्न बुद्धि पंक्ति का दूषण है । राजा का मूर्ख और आलसी होना लक्ष्मी का दूषण है । पाप करना और छोटे मार्ग में चलना जनता का दूषण है । अकारण हँसना गुरु का दूषण है । बेटे का दुर्व्यस्त होना कुल का दूषण है । (69/7)

“अक्षरहर्षे किञ्जड कञ्जरड
जा सा शिद्वहृण कामु मद ।” (69/9)

—जो कार्य की गति अति शीघ्र की जानेवाली है, वह कितने दाह उत्पन्न नहीं करती ?

“गुरु चवद एव किर कित्तडव
मह तिहुपण सारक्ष जेतडव ।” (69/19)

—मन्त्री कहता है—यह तो कितना है, मेरे लिए तो यह त्रिभुवन सरसों के बराबर है ।

“जहि कंकु रायहंसु व गणिड
एरंड कप्प खखु व भणिड ।
जहि गुणवंतु वि बोसिहल्ल समु
तहि जे निरप्यति वयणविरमु ।” (72/11)

—जहाँ बगुले को राजहंस समझा जाता हो और एरंड को कल्पवृक्ष कहा जाता हो, जहाँ गुणों को दोषवाला कहा जाता हो वहाँ जो चुप रहते हैं, वे विद्वान हैं ।

“वारिज्जड दुक्को केण णियड ।” (73/19)

—आई हुई नियति को कौन टाल सकता है ?

“हा कट्ठु-कट्ठु कणं जडिड
माणिककु असेउभमज्झि पडिड ।” (74/11)

—खेद है कि काठ को सोने से जड़ दिया गया । माणिक्य गन्दी जगह गिर गया ।

“को मग्गड रयंघओ एसिमाण दुरगं ।” (74/12)

—कौन पापान्ध (आत्मरक्षा के लिए) गाड़ों का दुर्म चाहेंगा ?

“को रंडकहाणिमाउ सुणइ” (74/12)

—कौन रावों की कहानियाँ सुनता है ?

“धुत्तहि किञ्जड कासड पंडर ।” (69/33)

—धूलों द्वारा कासा पीला किया जाता है ।

करुणांत काव्य

रामायण का अन्त करुण और शोकपूर्ण है । रावण के निधन पर, रनिवास इन शब्दों में आर्तनाद कर उठता है—

“हा भसार हार मणरंजन,
हा भालयल-तिलय जयणंजन ।
हा करफंसअणियरोमंजुय,
आलिगणकीलाभूसियभुय ।
पहं विणु जगि बसास अं जिञ्जड,
सं परकुवससमूह सहिञ्जड ।
हा पिययम भणंतु सोपाधर,
कंडड गिरवसेसु अंतेउय ।” (78/22)

विभीषण का शोक भला किसके हृदय को द्रवीभूत नहीं कर देगा ! वह अपनी छाती पीट-पीटकर रोता है—

“हाय मैंने यह क्या भयंकर काम किया ! अब सरस्वती शास्त्र की रचना नहीं कर सकती, अब कीर्ति दसों दिशाओं में नहीं घूमेगी । विजयलक्ष्मी आज विधवापन को प्राप्त हो गई । शक्ति का प्रवर्तन आज समाप्त हो गया । अब इन्द्र बरकर नहीं चलेगा । अब चन्द्र अपनी कांति के साथ होगा । अब सूरज आकाश में खूब चमकेगा । आज कपीन्द्र आराम से सोएगा ।” (78/23)

रामायण : कवि का प्रतिनिधि काव्य

जैसा कि कहा जा चुका है ‘महापुराण’ कई चरित-काव्यों का संकलन ग्रन्थ है । ‘नाभेय चरित’ पुष्पदंत का बृहद् चरित-काव्य है, उसमें उनकी प्रतिभा पूर्ण निखार पर है । परन्तु दूसरे चरित-काव्यों में भी उनकी सृजनात्मकता और उसके तत्त्वों का समावेश है ।

जब पुष्पदन्त कहते हैं कि ‘रामायण या पौमचरित (पद्मचरित) को कहते हुए मैं अपनी बुद्धि के विस्तार में कभी नहीं कहूँगा और मंत्री भरत के अस्पृधित वचन का निर्वाह कहूँगा’, तो इसका अर्थ है कि रामायण के वर्णन में वह अपनी प्रतिभा का सर्वोत्तम प्रयोग करेंगे । एक बार फिर, कवि रामकथा के पूर्व कवियों का स्मरण करता है और आत्म-विनय एवं दुर्जननिन्दा के साथ विद्वत्-सभा से क्षमायाचना पूर्वक ‘रामकथा’ प्रारम्भ करता है । वह यह भी कहता है कि जब सुकवि (कवि और कवि) द्वारा प्रकाशित मार्ग पर चलते हुए रावण भी चौंक जाता है, तो राम के धम्मगुण (धर्म और धनुष के गुण) के शब्द को सुनकर, अमुख दुर्जन कहीं पहुँच सकता है ? भंगिमा में कवि बता रहा है कि वह पूर्व कवियों द्वारा प्रकाशित काव्य-मार्ग पर चलकर ही रामायण की रचना कर रहा है । वह यह भी कहता है कि “मैं तो जिनवर के चरण-कमलों का भ्रमर हूँ । मेरे द्वारा गुनगुनाया यह यद्यपि निरर्थक है, फिर भी यह सुनने में कोमल, कानों को सुख देनेवाला और मानिनी स्त्रियों और जिणुओं के मुखों को विकसित करनेवाला है ।”

रामायण की काव्य-शैली अलंकृत शैली है। प्रारम्भ में ही रत्नपुर के राजा प्रजापति का वर्णन है—

“जें बड़ें जित्तउं जमकरणु
जें सरथें जिश सरासइ वि
अ बुद्धिइ जिसउं जसइ वि” (69/4)

ध्यान दें कि ‘जित्त’ की जगह ‘जित्त’ भूत कृदन्त (जित्त के ‘त’ को अनावश्यक द्वित्व) का प्रयोग सर्वत्र है। ‘येन’ का ‘जें’ और ‘बुद्ध्या’ का ‘बुद्धिइ’। अपभ्रंश में ऐसा कठोर नियम नहीं है कि मध्यम व्यंजन का लोप हो ही। हिन्दी ‘जीता’ का ‘जित्तउं’ से सीधा सम्बन्ध है। दोनों में सामान्यभूत में कृदन्त क्रिया का ही प्रयोग है वह भी कर्म वाच्य में। करण कारक की ‘ने’ संस्कृत विभक्ति इन/एन का विकास है। जे/जेन/येन से ‘जिसने’ के विकास की कथा यह है कि आगे चलकर संस्कृत के यस्य/तस्य/अस्य के बचे हुए रूप (जिस/उस/इस) मूल सर्वनाम की तरह प्रयुक्त होने लगे और उनमें विभक्ति या परसर्ग का प्रयोग जरूरी हो गया।

इस प्रकार अलंकृत शैली में होते हुए भी पुण्डरीत की भाषा सरल है, छोटे-छोटे वाक्यों में सारा-बाहिरता है। कवि की निरलंकृत सरल शैली का एक दूसरा नमूना देखिए—

“अथेनु निवारइ को निहिर
को रमखइ आचंतउं नरणु ।
जगि कासु ण बुक्कइ जमकरणु
कु वि अगाइ कु वि पछइ भरइ
बइवस-बंतंतरि पइसरइ ॥” (69/8)

और अब थमक और श्लेष वाली शैली देखिए—

“जहिं सालि रमण कीला हरइ,
अह सालि धण छेतंतरइ ।
जहिं सालि कमल छणइ सरइ,
जहिं सालिहिमाइ अवसरइ ॥” (69/11)

तिङ्गन्त क्रिया में भी ‘त’ सुरक्षित है—

“ते सत्थु सुणति गुणति धणु,
मउचेय मुयति ण बइरि सर ॥” (69/13)

इसी प्रकार कृदन्त क्रिया में भी ‘त’ सुरक्षित है—

“सोहइ वसंतु जगि पइसरंतु
अहिण्य साहारहिं महमहंतु ॥” (70/14)

और यह स्यात्मक शैली का उदाहरण भी देखिए—

“अजइ वीणा पिअइ पाण,
पियमाणुस भिसं साहीण ।

गिण्डइ मटुरं सरा सरालं,
वह पेम्स पसरइ असरालं ।" (70/15)

संस्कृत के 'अजलतर' से विकसित 'असराल' की तुलना कबीर के प्रयोग 'न सोइए असराल' से कीजिए, और देखिए—

"अणुगिण्डइ रुसंति पिधल्ली,
वाकिण्डइ कंठप्पसुहेल्ली ।" (70/15)

पुष्पक विमान के वर्णन की सीली निराली है—

"सारयाऊरियायाससंकास बहुज्जलुत्सोवयं
हेमघंटाविसट्टं तटंकारसंतासियासागयं ।" (72/1)

और, पुष्पदन्त की यह गैली जो उन्हें स्वयं अत्यन्त प्रिय रही है—

"वणु बीसइ जिम्भलभरिय सर,
सीयहि जोवणु निच मटुरसर ।
वणु बीसइ संवरंस कमलु,
सीयहि जोवणु धरमुहकमलु ।" (72/2)

राम वन में सीता के विषय में पूछ रहे हैं—

"सइ काणणि रहुवई हिंडमाणु,
पुच्छइ वणि मिगइं अयाणसाणु ।
रे हंस-हंस सा हंसगमण
पइं बिठ्ठी कट्यइ बिजलरमण ।" (73/4)

जितभक्ति की सरस गैली, जिसमें क्रिया का प्रयोग नहीं है—

"ण भीएसु कंखा, न णिडा न भुक्खा ।
न सण्हा न सोओ, न राओ न रोओ ।" (73/9)

जब कभी भारतीय आर्यभाषा के विकास के सन्दर्भ में यह तर्क दिया जाता है कि प्राकृत की तुलना में संस्कृत कृत्रिम भाषा थी। इसी प्रकार अपभ्रंश काव्य की भाषा थी, बोलचाल की नहीं। कोई भाषा न तो कृत्रिम होती है और केवल काव्य की भाषा होती है। संस्कृत की तुलना में प्राकृत कितनी ही सहज व्यापार वाली भाषाएँ हों, उस वचन-व्यापारों की भी अपनी भाषागत व्यवस्था होती है। इसी प्रकार संस्कृत कृत्रिम भाषा नहीं है, परन्तु जो भाषा बोलचाल में थी (वह कौन थी इसका विवेचन विद्वान् अपने-अपने कोण से करते हैं) उसे संस्कारित किया गया, यानी समय-प्रवाह और प्रयोग के कारण आनेवाली विभिन्नताओं में उसे स्थिरता प्रदान की गई।

विषय-सूची

ग्रन्थलक्षणी संधि

1-11

बीसवें तीर्थंकर मुनिमुद्रत की वन्दना । हरि वर्मा का जिनदीक्षा लेना और मृत्यु उपरान्त प्राणत स्वर्ग में जन्म लेना । इन्द्र द्वारा कुबेर को राजगृह में नगरी के निर्माण का आदेश, नगरी का निर्माण । रानी सोमदेवी का सोलह स्वप्न देखना । प्राणत स्वर्ग के देव का रानी के गर्भ में तीर्थंकर के रूप में अवतरित होना । पाँचों करुणानकों का उल्लेख । वैराग्य । हाथी का पूर्वभव-स्मरण । मुनिमुद्रत का आहार ग्रहण करना । इन्द्र द्वारा ज्ञान की प्राप्ति । केवलज्ञान की प्राप्ति । इन्द्र द्वारा समवसरण की रचना । चतुर्विध संघ का वर्णन । मुनिमुद्रत को निर्वाण की प्राप्ति । हरिषेण का चरित । हेमाश्व का चरित । मोक्ष की प्राप्ति ।

उत्तमहत्तरणी संधि

12-43

राम कथा की प्रस्तावना । राजा श्रेणिक का गौतम स्वामी से प्रश्न पूछना । गौतम गणधर का कथा प्रारंभ करना । मलय देश और रत्नपुर का वर्णन । राजा प्रजापति । चन्द्रचूल और विजय का जन्म । राजपुत्र और मन्त्रिपुत्र के अत्याचार । राजा द्वारा दोनों का घर से निष्कासन, मृत्युदण्ड का आदेश । नीति कथन । मन्त्रियों द्वारा बीच-बचाव । जैन मुनि का उपदेश । भविष्य वाणी । चन्द्रचूल और विजय का निदान बाँधना । दोनों का स्वर्ग में देव होना । काशी देश का वर्णन । राजा दशरथ का वर्णन । स्वर्णचूल और मणिचूल देवों का क्रमशः राम और लक्ष्मण के रूप में सुवला और कैकेयी के गर्भ में आना । बलभद्र राम और नारायण लक्ष्मण का वर्णन । दशरथ का अयोध्या नगरी में प्रवेश । भरत और शत्रुघ्न का जन्म । मिथिला के राजा जनक द्वारा पशु-यश और सीता के स्वयंवर में सम्मिलित होने का निमन्त्रण । दूतों का उपहार लेकर आना । मन्त्री अतिशयमति द्वारा यज्ञ का विरोध, राजा सगर का आक्षेप । राजा सगर का वारण-युगल नगर के राजा सुयोधन की कन्या सुलता के स्वयंवर में जाना । रास्ते में भ्राय मन्दोदरी का विवाह के लिए भड़काना । सुयोधन की पत्नी अतिथि का अपने भाई तृणपिंग के पुत्र मधुपिंगल से कन्या के विवाह करने का प्रस्ताव । सगर के मन्त्री की कपट चाल । झूठा ज्योतिषशास्त्र बनाकर मधुपिंगल को अवमानित होकर चले जाने के लिए विवश करना । उसका विरक्त होकर जिनदीक्षा ग्रहण कर लेना । निदान पूर्वक मरकर, उसका स्वर्ग में असुर होना । राजा सगर की धूर्तता जानकर उसके मन में प्रतिशोध की भावना का उत्पन्न होना । उसका राजकायण ब्राह्मण

वनकर वेद पढ़ते हुए अयोध्या के वन में पहुँचना । क्षीरकदम्ब का वृत्तान्त । राजा वसु, पर्वतक, और नारद का उनसे विद्या ग्रहण करना । क्षीरकदम्ब का वसु को पीटना । गुरु पत्नी द्वारा उसे बचाना । वसु को सिंहासन की प्राप्ति । पर्वतक का प्रायोगिक परीक्षा में असफल रहना । पत्नी का पति को उलाहना देना । पति क्षीरकदम्ब का अपनी पत्नी को समझाना कि उसका बेटा जड़ मूर्ख है । 'अज' शब्द को लेकर विवाद । पर्वतक का निर्वासन । उसका सालंकायण का सहायक बन जाना । सालंकायण और पर्वतक का मिलकर राजा सगर से बदला लेना । यज्ञ में दोनों को होम देना । नारद का अयोध्या जाकर यज्ञ का विरोध करना । नारद का यह तर्क कि यज्ञ-कर्म से शान्ति नहीं होती ।

सत्तरवीं संधि

44-63

मन्त्री की अच्छी वाणी सुनकर राजा का मिथ्यादर्शन नष्ट होना । राजा दशरथ का पुरोहित से रावण का पूर्वभव पूछना । सारसमुच्चय देश के नागपुर नगर के राजा नरदेव द्वारा दीक्षा लेकर तपश्चरण करना । विद्याघर अपलवेग को देखकर निदान-पूर्वक मरना और स्वर्ग में देव होना । विजयाश्रम पर्वत के मेघ शिखर का राजा सहस्र-ग्रीव का खिन्न होकर त्रिकूट पर्वत पर आ बसना । उसकी वंश-परम्परा का अंतिम राजा पुलस्त्य का गद्दी पर बैठना । उसकी पत्नी मेघलक्ष्मी से रावण का जन्म । रावण के प्रताप का वर्णन । एक बार पत्नी सहित उसका पुष्पक विमान में विहार करना । विद्या सिद्ध करती हुई मणिवती पर आसक्त होना । विघ्नों से परेशान होकर मणिवती का इस संकल्प के साथ मरना 'मैं पुत्री होकर इसकी मौत का कारण बनूँ ।' मन्दोदरी के गर्भ से रावण की पुत्री सीता के रूप में उसकी उत्पत्ति । अपमर्क होने पर रावण द्वारा उसे मंजूषा में रखकर मिथिला नगरी के उद्यान में गड़वा दिया जाना । किसान को हल चलाते हुए कन्या मिलना और राजा जनक के पास उसका पहुँचना । जनक द्वारा सीता का पालन-पोषण । सीता के सौन्दर्य का वर्णन । राम से सीता का विवाह । अयोध्या आगमन । राम का सात अन्य कन्याओं से विवाह । वसन्त का आगमन । वसन्तक्रीड़ा । काशी देश के लिए प्रस्थान । काशी पर आधिपत्य । राम-लक्ष्मण के रूप-सौन्दर्य को देखकर नगरवनिताओं की प्रतिक्रियाएँ और कामुक अनुभाव ।

अष्टादशवीं संधि

64-83

नारद का वर्णन । नारद का रावण को भड़काना । रावण की प्रशंसा । राम से सीता के विवाह की नारद द्वारा सूचना देना । रावण द्वारा आक्रमण की योजना बनाना । कलहप्रिय नारद का प्रस्थान । मारीच और विभीषण का रावण को समझाना । काम-शास्त्र के अनुसार स्त्रियों के विविध प्रकारों का वर्णन । दूती के रूप में बहिन चन्द्रनखा को भेजना । काशी के निकट त्रिकूट उद्यान का वर्णन । राम-लक्ष्मण की अन्तःपुर के साथ क्रीड़ा । जल-क्रीड़ा । उधर सीता के अनिन्द्य सौन्दर्य को देखकर चन्द्रनखा का मुग्ध होना । वृद्धा बन कर सीता से बातचीत । सीता के नारीविषयक विचार । चन्द्रनखा की वापसी । विरोध के बावजूद रावण का काशी के लिए प्रस्थान ।

बहत्तरवीं संधि

84-95

पुष्प विमान का वर्णन । चित्रकूट और सीता के जीवन का सुलनात्मक वर्णन । राम की प्रशंसा । स्वर्णमृग की चेष्टाएँ । राम का उसका पीछा करना । रावण का राम के रूप में छल से सीता का अपहरण । लंका के लिए प्रस्थान । सीतादेवी की प्रतिक्रिया । धन्य-प्राणिमों और प्रकृति की प्रतिक्रिया । विद्याधरियों का सीतादेवी को फुसलाना । सीता का कड़ा उत्तर । सीता की प्रतिज्ञा कि लेखपत्र से प्रिय की खबर मिलने पर ही वह भोजन ग्रहण करेगी । लक्ष्मण को शक की प्राप्ति ।

तिहत्तरवीं संधि

96-125

स्वर्णमृग की रीढ़ से राम की नापसी और सन्ध्या का आगमन । सन्ध्या का वर्णन । सीता की खोज । वन-जन्तुओं और पौधों से सीता के बारे में पूछना । राम की सीता का उत्तरीय मिलना । दशरथ द्वारा राम की सीतापहरण की सूचना । दो विद्याधरों का आकर बालि का वृत्तान्त कहना । सिद्धकूट जिनालय में जिनेन्द्रदेव की वन्दना । नारद का भविष्य-कथन । राम द्वारा सुग्रीव को सहायता का वचन देना । हनुमान् का दौत्य वर्णन । समुद्र का वर्णन । त्रिकूट पर्वत का वर्णन । लंका का वर्णन । सिंहासन पर आरुढ़ रावण का वर्णन । हनुमान् का भ्रमर बनकर रावण को समझाना । विद्याधरियों और वन की शोभा का वर्णन । वनश्री और सीता की कान्तिविहीन श्री की सुलना । हनुमान् का आक्रोश और प्रतिक्रिया । रावण की काम-अवस्थाओं का चित्रण । रावण का सीता के सामने झींगे मारना । रावण को मंदोदरी द्वारा समझाना । मंदोदरी को वास्तविकता का पता चलना । सीता की प्रतिक्रिया । हनुमान् की सीता से भेंट । अंगूठी और लेख का समर्पण । हनुमान् द्वारा अपना परिचय । अभिज्ञान के प्रमाण देना ।

षष्ठत्तरवीं संधि

126-141

लंका से हनुमान् की वापसी और राम से निवेदन । राम द्वारा हनुमान् की प्रशंसा । आक्रमण की तैयारी । पंचांग मन्त्र का विचार । फिर से दूत भेजे जाने का निश्चय । पुनः हनुमान् को दूत बनाकर भेजा जाना । हनुमान् को राम द्वारा समझाना कि विभीषण से किस प्रकार मिलना है । हनुमान् का लंका में प्रवेश । लंका की बनिसाओं पर उसके रूप की प्रतिक्रिया । विभीषण से भेंट । विभीषण द्वारा रावण से हनुमान् की भेंट कराना । रावण का हनुमान् के साथ अमर व्यवहार । हनुमान् द्वारा सीता की वापसी पर जोर देना । रावण के गर्वोक्ति पूर्ण वचन । आवेगपूर्ण उत्तर-प्रत्युत्तर । हनुमान् की चुनौती ।

एकहत्तरवीं संधि

142-153

हनुमान् की वापसी और दौत्य कार्य की रपट राम के सामने प्रस्तुत करना । बालि के दूत का आगमन । राम की दुविधा । राम का बालि के पास दूत भेजना । बालि का संधि करने से इंकार कर देना । बालि का हनुमान् को पाटकारना । घमसान लड़ाई । राम की जीत । किष्किंधा नगरी में प्रवेश । किष्किंधा नगरी का वर्णन । शरद् ऋतु का आगमन । राम द्वारा विद्याओं की सिद्धि ।

छिहत्तरवीं संधि

154-165

सेना का कूच । प्रस्थान का वर्णन । समुद्रतट पर पड़ाव । रावण और विभीषण का संवाद । विभीषण का राम से मिलना । विभीषण की राम से भेंट । हनुमन् का नन्दन वन में प्रवेश । नन्दनवन का वर्णन । ध्वंस का वर्णन । लंका को जला कर हनुमान की वापसी ।

सत्तहत्तरवीं संधि

166-180

रावण के पक्ष के प्रमुखों द्वारा विद्याओं की सिद्धि । साधना पर होने वाले उपसर्ग । चक्रवात का वर्णन । विद्याधरों द्वारा राम को विद्याओं का दिया जाना । युद्ध के लिए प्रस्थान । मदगज का वर्णन । रावण की प्रतिक्रिया । रावण की तैयारी । सेना के विभिन्न अंगों की गतिविधियाँ । वीरांगनाओं की प्रतिक्रियाएँ । आम-सामने लड़ाई । मायावी युद्ध ।

अठहत्तरवीं संधि

181-211

युद्ध के नगाड़ों का बजाना । वीरांगनाओं द्वारा विदाई । उनकी प्रतिक्रिया और वीर पतियों से अपेक्षाएँ । राम और रावण की सेनाओं में भिड़न्त । धुभटों की प्रतिक्रियाएँ । मारकाट का वर्णन । रावण और विभीषण में वचन-प्रतिवचन । राम और रावण में द्वन्द्व । लक्ष्मण का चक्र उठाना । आकाश से कुसुम वृष्टि । रावण का वध । मन्दोदरी का विलाप । विभीषण का विलाप । उसके द्वारा इस सारे काण्ड के लिए नारद को दोषी ठहराना । राम का विभीषण को समझाना । रावण का दाह-संस्कार । शान्ति-कर्म । मन्दोदरी को सात्वना देना ।

उन्ध्यासीवीं संधि

212-225

पीठगिरि पर आसीन राम और वन की तुलना । राम के आदेश से लक्ष्मण का शिला उठाना । सौनन्द यक्ष का प्रवेश । लक्ष्मण को सौनन्दक तलवार भेंट करना । अर्द्धचक्रवर्ती बनने के लिए राम के साथ लक्ष्मण की दिग्विजय । राम और लक्ष्मण द्वारा मनोहर नामक वन में शिवशुप्त मुनि के दर्शन । मुनि द्वारा तत्त्वोपदेश । पूर्वभव कथन । लक्ष्मण का निधन । राम द्वारा जिनदीक्षा लेना । मुक्ति ।

अस्सीवीं संधि

226-242

नमीश्वर की वन्दना । वत्सदेश का वर्णन । राजा पार्थिव । रानी सती । पुत्र सिद्धार्थ । राजा पार्थिव द्वारा जिनमुनि के दर्शन हेतु सपरिवार जाना । तत्त्वोपदेश । पुत्र सिद्धार्थ को राजगद्दी देकर राजा का जिनदीक्षा ग्रहण करना । सल्लेखना विधि से मरकर अपराजित विमान में अहमेन्द्र होना । मिथिला का राजा विजय । गृहिणी वप्रिल । अहमेन्द्र का हकीसर्वे तीर्थकर नमीश्वर के रूप में वप्रिल के गर्भ में प्रवेश । गर्भ और जन्म-कल्याण । राज्याभिषेक, वैराग्य, तप-कल्याण । केवलज्ञान और सम्मोदशिखर पर निर्वाण । मुक्ति प्राप्ति । चक्रवर्ती जयसेन के चरित का वर्णन ।

परिशिष्ट

243-258

अंग्रेजी में टिप्पणियाँ और उनका हिन्दी रूपान्तर

महाकव-पुष्पयन्त-विरचयउ महापुराणु

अवुसठिभो संधि

जो तिस्थंकरु बीसमउ बीसु विसयविसवेयणिवारणि ॥
जोईसर जोईहि णमिउ¹ जो बोहिथु भवणवतारणि ॥ ध्रुवकं ॥

जो दिव्ववाणिगंगापवाहु
जो मोहमहाधणगंधवाहु
तणुगंधे जो सनु चंदणासु
जो पणमिउ² रामे लक्खणेण
जणु जेण णिहिउ सग्गापवणिग
जे³ मिच्छतुच्छधीरंमरत्त
जे धुम्मिरक्ख⁴ पीयासवेण
जे कयलालस मासासणेण
जे णारिहिदस⁵ आया रएण
सुद्धोयणि सुरगुरु कविल भीम

जो रोस हुयासणवारिवाहु ।
जो मोक्खणयरवहसस्थवाहु⁶ ।
पउणइ जो तेए चंदणासु ।
धम्मणेण अहिंसालक्खणेण ।
जो सरिसचित्तु रिउबंधु वणिग ।
दप्पिट्ठ दुट्ठ तिट्ठागरत्त ।
जे वद्धा गुरुक्कम्मासवेण ।
जे विरहिय परहियसासणेण⁷ ।
ते मुक्क जासु आया रएण⁸ ।
वयणेण विणिज्जिय जेण भीम ।

5

10

अइसठवीं संधि

जो बीसवें तीर्थंकर हैं, जो विषयरूपी विष के वेग को दूर करने के लिए गरुड़ हैं, जो योगीश्वर योगियों के द्वारा प्रणम्य हैं और जो संसार रूपी समुद्र के संतरण के लिए जहाज हैं ।

(1)

जो दिव्यवाणी रूपी गंगा के प्रवाह हैं, जो क्रोध रूपी अग्नि के लिए मेघ हैं, जो मोह रूपी महामेघ के लिए पवन हैं, जो मोक्ष रूपी नगर-पथ के लिए सार्थवाह हैं, जो शरीर की गन्ध से चन्दन के समान हैं, जो अपने तेज से चन्द्रमा का तिरस्कार करने वाले हैं, जो राम और लक्ष्मण के द्वारा प्रणम्य हैं जिन्होंने अहिंसा लक्षणवाले धर्म के द्वारा लोगों को स्वर्ग और मोक्ष में स्थापित किया है, जो शत्रुवर्ग और मित्रवर्ग में समान चित्त हैं; (ऐसे भी लोग हैं) जो मिथ्यात्व और ओछी (सांसारिक) बुद्धि के राग में अनुरक्त हैं, गर्वीले, दुष्ट और तृष्णा रूपी विष से युक्त हैं, मद्य पीने के कारण जिनकी आंखें धूम रही हैं, जो भारी कर्मों के आस्रव से बंधे हुए हैं, जो लालसा करने वाले हैं, जिसमें एक माह में आहार ग्रहण किया जाता है, ऐसे तथा दूसरों का कल्याण करने वाले जिन शासन से, जो रहित हैं, जो राग से नारियों के वचनों के अधीन हैं, वे भी उन मुनिसुव्रत तीर्थंकर के आचार के अनुष्ठान से मुक्त हुए हैं । जिन्होंने अपने भयंकर शब्दों से गीतम कपिल और भीम को जीत लिया है । ऐसे मुनिसुव्रत के समान दूसरा कोई नहीं है ।

- (1) 1. AP णविउ । 2. A 'बहे सत्थ' । 3. AP पणविउ । 4. AP जो । 5. AP धुम्मिरक्ख ।
6. AP add after this: जे विरहिय (P रहिय) सया वि आया रएण । 7. A वसु जाया ।
8. A जे मुक्क । 9. AP add after this: तेलोइयसुद्धाया रएण ।

तिहुयणि ण कोइ दीसइ समागु
णिच्चल परिपालिय सुब्बयासु

सण्णागु ज्ञासु अयासिवागु ;
पणवेप्पिणु तहु¹ मुणिसुब्बयासु ।

घत्ता—तहु जि कहंतइ वज्जरमि जेण विमुच्चमि दुग्गइदुक्खहु ॥

15

अट्ट वि कम्मइं णिट्ठिवि देहु सुएप्पिणु गच्छमि मोक्खहु ॥1॥

2

एत्थेव य कयकूरारिकं
तहि असिजलधारइ हरियछाउ
सो एक्कहि दिणि उज्जाणु पत्तु
अणगारणाणि परमत्थसवणु
सत्तंगसंगु सुइ णिहिउ रज्जु
तत्तउं तउ सहुं बहुपत्थिवेहि
होइवि एयारहुअंगधारि
तणुचाएं² मुउ हुउ प्राणइंदु³
तहु आउ बीससायरइं तेत्थु
सियलेसु चित्तपडिचारवंतु
णीससइ देउ दहमासएहि

भरहंगदेसि पुरि अत्थि चंप ।

जगु जेण कियउ⁴ हरिवम्मराउ⁵ ।

दिट्ठउ अणंतवीरिउ विरत्तु ।

वंदेप्पिणु णिसुणिवि धम्मसवणु ।

अप्पणु पुणु कियउं परलोयकज्जु ।

5

णिग्गंथमग्गपत्थियसिवेहि ।

अरहंतपुण्णपभारकारि ।

हरिवम्म सक्कंतिइ जिसचंदु ।

तणु भणु विहत्थि पुणु तिउणु हत्थु ।

अवहीइ णियइ पंचमघरंतु ।

10

पुणु बीसहि वरिससहसगएहि⁶ ।

जिनका सम्यग्दर्शन आकाश के समान अनंत है, जिन्होंने निश्चित रूप से सुव्रतों का परिपालन किया है, ऐसे उन मुनिसुव्रत को प्रणाम कर—

घत्ता—उन्हीं के कथांतर को कहता हूँ, जिससे मैं दुर्गति के दुःख से विमुक्त हो सकूँ, आठों कर्मों का नाश कर और शरीर का त्याग कर मोक्ष पा सकूँ ॥1॥

(2)

इसी भरत क्षेत्र के अंग देश में चंपा नाम की नगरी है। उसमें क्रूर शत्रुओं को कंपन उत्पन्न करने वाला हरिवर्मा नाम का राजा था। जिसने असिरूपी जलधारा से विश्व को कान्ति-हीन बना दिया था ऐसा वह एक दिन उद्यान में पहुँचा, वहाँ उसने अनंतवीर्य नामक विरक्त मुनि को देखा, जो परिग्रह से रहित, ज्ञानी तथा वास्तविक श्रमण थे। उनकी वन्दना कर और 'धर्म' का श्रवण कर पुत्र को सप्तांग राज्य देकर उसने स्वयं अपना परलोक का काम साधा दिगम्बर मार्ग से जिन्होंने कल्याण की प्रार्थना की है ऐसे बहुत-से राजाओं के साथ उसने तप किया। ग्यारह अंगों को धारण करते हुए, अरहंत के पुण्य का उत्कर्ष करते हुए शरीर छोड़कर, कान्ति में चन्द्रमा को जीतनेवाला वह हरिवर्मा प्राणत इन्द्र हुआ। वहाँ उसकी आयु बीस सागर थी। उसका शरीर तीन हाथ का था। श्वेत लेश्या से युक्त वह मनःप्रवीचार वाला था। अवधि-ज्ञान से वह पाँचवें नरक की भूमि तक देख सकता था। दस माह में वह स्वास लेता था तथा बीस हजार वर्ष बीतने पर—

10. P तुहु ।

(2) 1. AP कियउ । 2. P हरिवम्म । 3. A तणु चहवि मुउ । 4. AP पाणइंदु । 5. A वाससहसगएहि; P वाससहसगएहि ।

घत्ता—देउ मणेण जि आहरइ सुहमइं पोगलाइं रसरिद्धइं ॥
अयणमेत्तु जीविउ यियउ पयडइं जायइं कालहु चिधइं ॥2॥

3

ता तहु चरित्तु णिच्चफलेण	धणयहु भासिउ आहंडलेण ।
इह भरहि मगहरायगिहि ² दित्तु	पुरि वसइ राज णामे सुमित्तु ।
जिणपायपोमजुयरेणुलित्तु	हरिवंसकेउ कासवसुगोत्तु ।
अप्पडिमसत्ति णं सिद्धमंतु	किं वण्णमि सोमाएविकंतु ।
एयहं णंदणु जिणु सोक्खहेउ	होही प्राणयचुउ ³ देवदेउ ।
भो धणय धणय कल्लाणमित्त	एयहं दोहं मि करि पुरि विचित्त ।
ता रइय णयरि दावेणाहिवेण	दिप्पंते तवणिज्जे ⁴ णवेण ।
पासायपंतिरहचच्चरेहि	गयणयललगवगोउरेहि ⁵ ।
सरिसरणंदणवणजिणघरेहि	रविखज्जंती णियकिकरेहि ।

5

घत्ता—तहि सँउहहु सत्तमि तलि घणधनमंडलहारबिलंबिणि ॥
सुहु सोवती सयणयलि पेच्छइ सिविणय रायणियंबिणि ॥3॥

10

4

मत्तसिधुरं
हरिणराययं

सियधुरंधुरं ।
लच्छिकाययं ।

घत्ता—वह देव, मन से रस से समृद्ध सूक्ष्म पुद्गलों का आहार करता । जब उसका छह माह जीवन शेष रह गया, तो उसके अंत समय के चिह्न प्रकट होने लगे । ॥2॥

(3)

तब उसके चरित का कथन निश्चयपल इन्द्र ने कुबेर से किया—“इस भारत के मगध देश की राजगृह नगरी में सुमित्र नाम का राजा निवास करता है, जिनवर के चरण कमलों की धूल का प्रेमी, हरिवंश का ध्वज और कश्यप गोत्रीय । अप्रतिम शक्ति जो मानो सिद्धमंत्र हो । सोमदेवी के उस स्वामी का मैं क्या वर्णन करूं । प्राणत स्वर्ग से च्युत होकर वह देवदेव, इन दोनों के सुख का कारण जिनपुत्र होगा । हे कल्याणमित्र, धनद-धनद इन दोनों के लिए तुम पवित्र नगरी की रचना करो ।” तब कुबेर ने चमकते हुए नए स्वर्ण से नगरी की रचना की । प्रासाद पंक्तियों, रथ-चौरस्तों, आकाशतल को छूने वाले श्रेष्ठ गोपुरों, नदियों, सरोवरों, नन्दनवनों और जिन मंदिरों से अपने अनुचरों से वह नगरी रक्षित थी ।

घत्ता—उस नगर में प्रासाद के सातवें भाग पर, जिसके सधन स्तन मंडल पर हार झूल रहा ऐसी उस रानी ने शयनतल पर सुख से सोते हुए स्वप्नमाला देखी ॥3॥

(4)

मतवाला गज, श्वेत बैल, सिंह, लक्ष्मीमूर्ति, दृष्टि के लिए सुखद पुष्पमाला, चन्द्रविम्ब,

(3) 1. AP णिच्चफलेण । 2. A रायगिहु । 3. AP पाणयचुउ । 4. P तवणिज्जे तवेण । 5. P यले लग्ग । 6. P णिवकिकरेहि । 7. AP सउहहि ।

(4) 1. A लच्छिकामयं ।

फुल्लदाभयं	दिट्ठिकामयं ।	
चंदबिम्बयं	उययतंबयं ।	
चंडकिरणयं	मीणमिहुणयं ।	5
कुंभजुलयं	दलियकमलयं ² ।	
कमलवासयं	सुरहिवासयं ।	
अमयमाणिहि	अमरवारिहिं ।	
सीहभूसयं ³	दिव्वमासणं ।	
सिहरसुंदरं	इंदमंदिरं ।	10
धुयधयालयं	विसहरालयं ।	
णिहियतिमिरयं ⁴	रयणणियरयं ।	
कविलचलसिहं	जलियहुयवहं ।	

वक्ता—इय जोइवि सिविणय सइइ सुत्तविबुद्धइ भासितं दइयहु ॥

तेण वि तं तहि⁵ अविस्सययं जं फलु होसइ पुव्वविरइयहु ॥4॥ 15

5

तुह कुच्छिहि इच्छियगुणमहंति	होसइ सुत्त ¹ तिहुवणणाहु कंति ।	
सुरधणधारंचिइ रायगेहि	अच्छरहि पसाहिइ देविदेहि ।	
सावणतमबीयहि सवणरिक्खि	पंडुरु करि आयउ अंतरिक्खि ।	
देविइ दिट्ठउ समुहारविदि	पइसंतु संतु रयणिहि अणिदि ।	
हरिवाभु राउ जो प्राणइंदु ²	सइगन्धवासि थिउ ³ सो जिणिंदु ।	5
आयउ वंदइ सयमेव इंदु	किर कवणु गहणु तहिं सूरचंदु ।	

उदयकाल में आरक्त सूर्य, मीनयुगल, घटयुगल, जिसमें कमल विकसित हैं और जो सुरभि से वासित है ऐसा सरोवर, अमरों के द्वारा मान्य क्षीर समुद्र, सिंहों से भूषित दिव्य आसन, शिखरों से सुन्दर इन्द्रभवन, जिसमें ध्वज प्रकम्पित हैं ऐसा नागधर, अंधकार को नष्ट करने वाला रत्नों का समूह, कपिल (भूरे या बदामी) रंग की चंचल ज्वालाओं वाली प्रज्वलित आग ।

वक्ता—इन स्वप्नों को देखकर, सोते से जागकर सती ने अपने पति से कहा । उसने भी, पूर्वोपाजित पुण्य का जो फल होगा, वह उसे बताया ॥4॥

(5)

“इच्छित गुणों से महान् हे कान्ते, तुम्हारी कोख से त्रिभुवनस्वामी पुत्र होगा । राजगृह नगर के देवधन से अंचित, तथा अप्सराओं के द्वारा देवी की देह शुद्ध होने पर श्रावण कृष्ण द्वितीया के दिन श्रावण नक्षत्र में अंतरिक्ष से सफेद गज आया, देवी ने उसे अपने अर्निष्ट मुख-कमल में रात में प्रवेश करते हुए देखा । हरिवर्मा राजा जो प्राणत स्वर्ग का इन्द्र था, वह जिनेन्द्र के रूप में सती के गर्भवास में आकर स्थित हो गया । आया हुआ इन्द्र स्वयं वन्दना करता है, फिर वहाँ सूर्यचन्द्र के बारे में क्या कहना ? नष्ट कर दिया है मोहजालजिन्होंनेऐसे मल्लिनाथ तीर्थकर

2. A घरिकमलयं । 3. A सीहभूसियं । 4. A विहियं; P विहयं । 5. A तहु ।

(5) 1. A जिणु । 2. AP पाणइंदु । 3. P सो थिउ ।

गइ मल्लिदेवि ह्यमोहजालि
उपपणुणउ गिउ सबकेण तेत्थु
अहिंसिचिउ पंडुसिलायलमि
आणदें णन्विउ कुलिसपाणि
सुव्वउ मुणिसुव्वउ भणिवि णाहु

चउपणुणलवखवरिसंतरालि⁴ ।
तं मेरुमहागिरिसिहरु जेत्यु ।
पण्डु आणिउ गिहिउ समालम्भि ।
तहु वयणविणिग्गय दिव्ववाणि ।
गउ गिययणिवासहु तियसणाहु ।

10

घत्ता— वड्डइ देउ लहंतु पय लक्खणवंतु जणंतु सुहं जणि ॥
सालंकारु कंतिइ सहिउ कव्वविवेउ णाइ वरकइयणि ॥5॥

6

पहु वीससरासणमियसरीरु
परिणयमऊरवरकंठवणु
सत्तद्ववरिससहसाइ⁴ जाम
दहपंचसहासदहं धरित्ति
आहारु ण गेण्हइ जेय चारु
करि पुव्वतालपुरि आसि राउ
बंभणहं दितु मणिकणयदाणु
सुंयरइ सल्लइपल्लवदलाइं

पियवयणभासि गंभीरु धीरु ।
दहदहदहसहससमाउ वणु ।
थिउ कि पि बालकौलाइ ताम ।
भुजिवि जोइवि करिवरहु वित्ति ।
पइ णरविदहु वज्जरइ चारु ।
कुन्धिअमइ जणियकुपत्तभाउ ।
मुउ काणणि हुउ गउ गलियदाणु ।
सुंयरइ सीयलसरिसरजलाइं ।

5

के बाद, जीवन लाख वर्ष हो जाने पर उनका जन्म हुआ। इन्द्र उन्हें वहाँ ले गया कि जहाँ सुमेरु-पर्वत का शिखर था। पांडुशिला के अग्रभाग पर उनका अभिषेक किया गया। उन्हें घर लाया गया, और अपनी माता के सामने रख दिया गया। इन्द्र आनन्द से खूब नाचा, उसके मुख से दिव्य-वाणी निकली, नाथ को सुव्रत मुनिसुव्रत कहकर देवेन्द्र अपने निवास स्थान के लिए चला गया।

घत्ता—लक्षणयुक्त पद (चरण) लेते हुए, जनों में सुख उत्पन्न करते हुए, अलंकारों से युक्त तथा कान्ति से सहित देव उसी प्रकार बढ़ने लगते हैं जैसे श्रेष्ठ कविजन में काव्यविवेक बढ़ने लगता है ॥5॥

(6)

स्वामी का शरीर बीस धनुष प्रमाण सीमित था। वह प्रिय वचन बोलने वाले गंभीर-धीर थे। उनकी कान्ति तरुण मयूर के कण्ठ के रंग की थी। उनकी आयु तीस हजार वर्ष की थी। जब साढ़े तीन हजार वर्ष हुए, तब तक वह बाल क्रीड़ा में स्थित रहे। इस प्रकार पन्द्रह हजार वर्षों तक धरती का भोगकर, तथा गजवर की वृत्ति देखकर कि वह आहार नहीं करता है न तृणकमल लेता है, राजाओं के स्वामी वह यह सुन्दर बात कहते हैं कि पहिले यह हाथी तालपुर में अत्यंत खोटी बुद्धि वाला और अत्यंत कुपात्रभाव वाला राजा था। यह ब्राह्मणों के लिए मणि और सोने का दान देता था। मरकर वन में यह, जिसका मदजल गल रहा है, ऐसा हाथी हुआ।

4. AP add after this : वहसाहमासि पहु कसणपविख, दहमइ दिणि सरि थिइ सवणरिविख ।

5. P वरि । 6. A कंतिसहिउ ।

(6) 1. AP सत्तद्वसहसवरिसाइं ।

सुंदरइ करिणीकरलालियाइं
सुंदरइ सिसुमयगलकीलियाइं

गिरिगेरुययउद्धू लियाइं ।
करतालवद्धिदोलियाइं ।

10

घत्ता—एव कहैपिणु मुबकु गउ गउ सो विक्षहु कहि मि सइच्छइ ॥
अभइ सयणहं परियणहं णरणाहेण पबोल्लिउ पच्छइ ॥6॥

7

जहि णरणाह वि होति गय
तहि किं किज्जइ सिरिधरणु
किज्जइ¹ काणणि² पइसरिवि
सुररिसिहि वि सो तहि संघविउ
विजयहु रज्जु समप्पियउ
गउ सिवियइ अवराइयइ
ओइण्णउ³ जिणु नीलवणि
वइसाहइ⁴ दसमीदियहि
सवणि⁵ सहासैं सहं णिवहं
छट्ठुववासैं तवु गहिउं
भिव्वहि मुणि गउ रायगिहु
वसहसेणरायस्स धरि
जं पासुययसु लद्धु जिह

कालेण हय ।
जिणतवचरणु ।
थिरु⁶ मणु धरिवि ।
सक्के प्हविउ ।
तिणु कंप्पियउं⁷ ।
सुविराइयइ⁸ ।
तरुवेल्लिधणि ।
णिच्चंदवहि⁹ ।
जगबंधवहं ।
अमरहि महिउ ।
विच्छिण्णछिहु¹⁰ ।
थिउ पुण्णभरि ।
सं भोज्जु तिह ।

5

10

यह, सल्लकी लता के पल्लवदल की याद कर रहा है, वहाँ के शीतल नदी-सरोवर के जलों की याद कर रहा है, वह याद कर रहा है पर्वत की गेरुज से व्याप्त हथिनी के सूड़ों का लाड़; वह याद कर रहा है शिशुगजों की क्रीड़ाएं एवं सूंड और तालवृक्ष के आंदोलन ।

घत्ता—इस प्रकार कहकर, उन्होंने गज को मुक्त कर दिया । वह अपनी इच्छा से विध्याचल में कहीं भी चला गया । बाद में राजा ने स्वजनों और परिजनों के सामने कहा ॥6॥

(7)

जहाँ राजा भी समय के चक्र में पड़कर हाथी होते हैं वहाँ श्री को धारण करने से क्या ? जिनवर का तपश्चरण करना चाहिए, वन में प्रवेश कर और अपने मन को स्थिर कर । तब वहाँ लौकान्तिक देवों ने भी उनकी संस्तुति की । इन्द्र ने अभिषेक किया । राज्य को 'तिनका' समझा, और विजय के लिए, सौंप दिया, अत्यंत शोभित अपराजित शिविका में बैठकर, वह गए । जिन, वृक्षों और लताओं से सघन नीलवन में उतरे, और वैशाख कृष्णा दसवीं के दिन (जब कि चन्द्रमा पथ से जा चुका था) श्रावण नक्षत्र में एक हजार जगबंधु राजाओं के साथ, छठा उपवास करके उन्होंने तप ग्रहण कर लिया । देवों ने उनकी पूजा की । स्पृहा से रहित वह भिक्षा के लिए राजगृह गए । वृषभराजा के पुण्य से परिपूर्ण घर में जाकर स्थित हो गए । जैसा प्राशुकतर भोजन

(7) AP करीइ । 2. A काणणु । 3. AP मणु थिरु । 4. AP कंप्पियउ । 5. A रुइराइ । 6. A रुइराइ । 7. A रुइराइ । 8. A रुइराइ । 9. A रुइराइ । 10. A रुइराइ ।

भुंजिवि पुणु तेत्थाउ गउ	कयसुहिविजउ ¹⁰ ।	
खरतवतावे तत्ताहो ¹¹	सुविरत्ताहो ।	15
णव झीणइं णिम्मच्छरइं	संवच्छरइं ।	
आयउ पुणु तं तरुगहणु	वम्महमहणु ।	
दिववारिविख पक्खि कहिए	मासें सहिए ।	
णवमीदिणि चंपयहु तलि	धिउ धरणियलि ।	
पोसहजुयले गलियमलु	हूयउ सयलु ।	20
केवलविमलु अणंतयरु	सुरखोहयरु ।	

घत्ता—कोमलकरयलघत्तियहि¹² कुसुमहि चित्तलंतु गयणंगणु ॥
 णं चित्तवद्धु¹⁴ पसारियउ जलि यलि महियलि माइ ण सुरयणु ॥ 7 ॥

8

सहसकखे विरइउ समवसरणु	उवविट्ठु भडारउ तिजगसरणु ।	
चरु अचरु असेसु वि जणहु कहइ	तहिपसु वि चारु चारित्तु वहइ ।	
जाया देवहु रिसिवित्तिअरुह	अट्टारह गणहर मल्लिपमुह ।	
वहदोअंगइं रिसि जे धरंति	पंचसयइं ताहं वि वज्जरंति ।	
सिद्धियहं सहासइं एकवीस	तत्तिय केवल ओहीविहीस ।	5
वइकिरियहं दुसहस दोसयाइं	भुवणंतपसिद्धिहि संगयाइं ।	

उन्हें मिला, उसे उन्होंने उसी प्रकार ग्रहण कर लिया। जिन्होंने सुधियों की विजय की है, ऐसे वह, वहाँ से भोजन करके चले गए। अत्यन्त प्रखर तप से संतप्त, और अत्यन्त विरक्त उनके ईर्ष्या से रहित नौ साल व्यतीत हो गए। फिर कामदेव का मंथन करने वाले वह वृक्षों से गहन उसी वन में आए। वैशाख कृष्णा नौवीं के दिन श्रवण नक्षत्र में चंपक वृक्ष के सीचे धरणी-तल पर बैठ गए। दो प्रोषधोपवासों से नष्टमल वह सम्पूर्ण अनन्तानन्त देवों को क्षोभ करनेवाले केवलज्ञान से पवित्र हो गए।

घत्ता—कोमल हाथों से फेंके गए पुष्पों के द्वारा आकाश के प्रांगण को चित्रित करता हुआ देव समूह धरती, जल और थल में नहीं समा सका, मानो चित्रपट फैला दिया गया हो ॥ 7 ॥

(8)

देवेन्द्र ने समवसरण की रचना की। विजग की शरण आदरणीय उसमें बैठे। वह चर-अचर अशेष जन से कहते हैं, वहाँ पशु भी सुन्दर चरित्र का आचरण करता है। देव के मुनि वृत्ति वाले योग्य मल्लि प्रमुख अठारह गणधर थे। जो बारह अंगों को धारण करते हैं वे पाँच सौ कहे जाते हैं। शिक्षक इक्कीस हजार थे, और इतने ही केवलज्ञानी थे। अवधिज्ञान के ईश और विक्रिया-श्रद्धि को धारण करनेवाले दो हजार दो सौ थे। भुवनान्तर में प्रसिद्धि को प्राप्त, तथा अपने नय से परमर्तों का विध्वंस करनेवाले, वादी मुनि बारह सौ थे। सूक्ष्म सांपराय का नाश

10. A सुहिविजयो । 11. तस्यहो । 12. A सुविरत्त यहो । 13. AP 'वल्लियहि । 14. AP चित्तवद्धु ।

(8) 1. A ओहीविहीस ।

णियणयविद्धं सियपरमयाहं
पणदहसय पुणु मणपज्जयाहं
पण्णाससहासई संजईहि
मंदिरवयणारिहि तिणि लक्ख
हिंडेप्पिणु एव महीयलंति
फग्गुणतमदसमिहि सवणजोइ
रिसिसहसें सहं संमेयकुहरि

वाइहिं बारहसय संजयाहं ।
णासियसुप्पयरिउसंपयाहं ।
सावयह लक्खु ह्यदुम्मईहि ।
सुर तिरिय असंख गिरुद्धसंख ।
मासाउसेसि थिइ जीवियंति ।
णिसि पच्छिमसंशहि मुक्ककाइ ।
सिद्धउ थिउ जाइवि तिजगसिहरि^१ ।

10

पत्ता—अरसु अगंधु अवणमउ फाससद्वाज्जिउ गयरूवउ ॥

मुणिसुव्वउ महं दय करउ सुद्धु सिद्धु हुउ णाणसहावउ ॥ 8 ॥

15

9

णिब्बुइ सुव्वइ जो णिज्जियारि
हरिसेणु णाम तहु तणउं चरिउं
वरभारहवरिसि अणंततिरिथि
णरपुरवरि णाहु णराहिरामु
सुविसालविमाणि^२ विमाणसारि
इह खेत्ति भोयपुरि दीहवाहु
तहु देवि किसोयरि सुद्धसील

इह जायउ महिवइ चक्कधारि ।
णिसुणह पवित्तु परिहरिवि दुरिउं ।
गंधियकुगंधबंधणबहित्थि^३ ।
तउ करिवि हरिवि कलि कोहु कामु ।
संभूयउ अमर सणक्कुमारि ।
इक्खाउवंसि णिउ पउमणाहु ।
अइरा एरावयगमणलील ।

5

करने वाले मनःपर्ययज्ञानी पन्द्रह सौ थे । आधिकाएँ पचास हजार थीं । श्रावक एक लाख थे । अपनी दुर्मति का नाश करनेवाली तथा मन्दिर का व्रत ग्रहण करनेवाली श्राविकाएँ तीन लाख थीं । देव असंख्यात और तिर्यन्त्र संख्यात । इस प्रकार धरतीतल पर विहार कर, जब उनके जीवन की आयु एक माह बाकी रह गई, तो फागुन कृष्णा दसवीं के दिन श्रवण योग में रात्रि की पश्चिम संध्या में सम्मेलन शिखर पर, मुक्तकाय वह एक हजार मुनियों के साथ, सिद्ध हो गए और त्रिजग के शिखर पर स्थित हो गए ।

पत्ता—अरस, अगंध, अवर्ण, स्पर्श और शब्द से रहित और रूपरहित, मुनिसुव्रत तीर्थंकर; मुक्त पर दया करें कि जो शुद्ध सिद्धि और ज्ञानस्वभाव हो गए हैं ॥ 8 ॥

(9)

मुनिसुव्रत भगवान् के निर्वाण प्राप्त कर लेने पर, शत्रुओं को जीतनेवाला जो चक्रवर्ती राजा हुआ था उसका नाम हरिषेण था । अपने दुरित का नाश करने के लिए, तुम उसका पवित्र चरित्र सुनो । अनन्तनाथ के तीर्थकाल में उत्तम भारतवर्ष में, जो कुत्सित ग्रन्थों की रचना से मुक्त है, ऐसे नरपुरवर में मनुष्यों के लिए सुन्दर राजा तप कर तथा पाप, क्रोध और काम को दूर कर, विमानों में श्रेष्ठ विशाल नामक विमान में सनत्कुमार देव उत्पन्न हुआ । यहाँ भरतक्षेत्र में भोगपुर में दीर्घबाहु, इक्ष्वाकुवंशीय राजा पद्मनाभ था । उसकी, शुद्धचरित्र ऐरावत के समान

2. A महि डिडेप्पिणु इम महियलंति । 3. A सिद्धसिहरि ।

(9) 1. A 'कुगंधबंधण' । 2. AP 'विवाणि विवाण' ।

एयहं सो सुरु अंगरुहु जाउ	हेमाहु समाजुयपरिमियाउ ।	
हलवखणु बीसधणुप्पमाणु	कंतोइ चंदु तेएण भाणु ।	
गउ तेण समउं पिउ पुहुइवीरु ³	मणहरवणि णविवि अणंतवीरु ।	10
रिसि हूयउ ⁴ पहु पंकरुहणाहु	पुत्त ⁵ आयणिणिवि धम्म ⁶ साहु ।	

घत्ता—लइयइं पंचाणुव्वयइं पंच⁷ वि इंदियाइं णियमंतें ॥

आवेप्पिणु पुरु⁸ रज्जि थिउ पुण्णपहावे कालें⁹ जंतें ॥ 9 ॥

10

उप्पण्णउं पहरणु घरि रहंगु	पविदंडु चंडु रिउदिण्णभंगु ।	
णित्तिसु तहिं जि धवलायवत्तु	सिरिहरि कागणि मणि चम्मजुत्तु ।	
जणणहु केवलसिरि देहु ¹ पत्त	एक्कहिं खणि तणएं णिसुय वत्त ।	
जाइवि जिणु वंदिवि रसियवज्ज	घरु आविवि विरइय चक्कपुज्ज ।	
मंदिरवइ थवइ पुरोहु अवहं	सेणावइ णिज्जियवीरसमह ² ।	5
करितुरयणारिरयणाइं जाइ	विज्जाहरेहिं दिण्णाइं ताइं ।	
उल्लंघियाइं सायरजलाइं	संसाहियाइं धरणीयलाइं ।	
काराविय किणरखयरसेव	वसिकय अणेय गणवद्धदेव ।	

गमनलीला वाली अइर नाम की देवी थी। वह देव इन दोनों का पुत्र उत्पन्न हुआ। हेमाभ दस हजार वर्ष की आयु वाला। शुभ लक्षण उसका शरीर बीस धनुषप्रमाण था। वह कान्ति में चन्द्रमा और तेज में सूर्य था। पृथ्वीवीर पिता उसके साथ मनहर उद्यान में गया और अनन्तवीर को प्रणाम कर पद्मनाभ मुनि हो गया। पुत्र ने भी साधु धर्म सुनकर;

घत्ता—पाँच अणुव्रत ग्रहण कर लिये। तथा पाँचों इन्द्रियों का नियमन करते हुए, नगर में आकर राज्य में स्थित हो गया। पुण्य के प्रभाव से समय बीतने पर ॥१॥

(10)

उसे घर में प्रहरण चक्र उत्पन्न हुआ। शत्रुओं को घात देने वाला प्रचण्ड वज्रदण्ड, तलवार, वहीं पर धवल आतपत्र, भण्डार घर में कागणि चर्म युक्त मणि, पिता के शरीर को केवलश्री प्राप्त हुई। एक ही क्षण में पुत्र ने यह बात सुनी। जाकर जिन की वन्दना कर, तथा घर आकर जिसमें वाद्य बज रहे हैं, इस प्रकार चक्र की पूजा की। गृहपति, स्थपति, पुरोहित और जिसने वीर युद्ध जीता है ऐसा सेनापति, तथा जितने गज, तुरंग और नारीरत्न हो गए जो विद्याधरों ने दिये। उसने सागर जलों को पार किया और धरणीतलों को साध लिया। किन्तरो और विद्याधरों से

3. AP पुहुइवीरु । 4. AP जायउ । 5. A धम्मलाहु । 6. P पंचेंदियाइं । 7. P omits पुरु । 8. A जंतें कालें ।

(10) 1. A देहि । 2. A 'धीरसमह ।

महि हिडिवि खंडिवि वइरिमाणु आवेप्पिणु तं पुणु णिययठाणु ।
 कत्तिइ णंदीसरि सरकयंतु अहिसिचिवि अंचिवि अरुहु संतु । 10
 उववासिउ छणवासरि पसण्णु जावच्छइ णिसि णरवइ णिसण्णु ।
 घत्ता—इंदणीलणीलंगण ऋदिविबु ता गिलिउं विडप्पे ॥
 णहभायणयस्सि संणिहिउ घोट्टिउ दुद्धु व कसणे सप्पे ॥ 10 ॥

11

णं ठंकिउ अलिजूहेण कमलु णं पावे सुक्किउ छइउ विमलु ।
 संणिहिय विहाएण व विवित्ति मयणाहि धोयकलहोयवत्ति ।
 चित्तइ पहु^१ विहु गह्गत्थु जेम काले कउलेवउ हउं मि तेम ।
 सइ जामि हणमि दुक्कम्मजोणि महसेणहु ढोइवि सयलखोणि ।
 गउ पुहइणाहु वेरग्गभूरि सिरिमंतसालि सिरिणायसूरि । 5
 पणवेप्पिणु लइयउ तवोविहाणु तसथावरजीवहं अभयदानु ।
 से दिण्णउं जीवदयालुएण गिरिसिहरि सुहरु लंबियभुएण ।

सेवा कराई; अनेक गणबद्ध देवों को वश में किया । धरती पर परिभ्रमण कर बैरियों के मान का खंडन कर, कार्तिक मास को (अष्टाह्निका में) नंदीश्वर पर्व में कामदेव के शत्रु सन्त अर्हत् का अभिषेक और पूजा कर पूर्णिमा के दिन उपवास कर, राजा जब रात्रि में बैठा हुआ था—

घत्ता—इन्द्रनील के समान नीले शरीर वाले राहु ने चन्द्र बिम्ब को ऐसे निगल लिया, जैसे आकाश रूपी पात्र के तल में रखे हुए दूध को काले साँप ने पी लिया हो ॥ 10 ॥

(11)

मानो भ्रमर समूह ने कमल को ढक लिया हो, मानो पाप ने विमल पुण्य को आच्छादित कर लिया हो, मानो विधाता ने गोल-गोल धुले हुए चाँदी के पात्र में कस्तूरी को रख लिया हो । राजा सोचता है—जिस प्रकार चन्द्रमा राहु से ग्रस्त है, उसी प्रकार मैं भी काल से कवलित होऊँगा । लो मैं जाता हूँ और दुष्कर्मों की परंपरा का अन्त करता हूँ । महिसेन को समस्त भूमि देकर, वैराग्य से प्रचुर राजा चला गया । उसने सीमंत पर्वत पर श्रीनाग मुनि को प्रणाम कर तप-विधान अंगीकार कर लिया । उसने त्रसस्थावर जीवों को अभयदान दिया । जीवों के प्रति दयालु वह गिरि के शिखर पर बहुत समय तक, हाथ लम्बे कर सूर्य किरणों का भयंकर ताप सह-

(11) 1. A कलहोयवत्ति । 2. A इहु । 3. AP महिसेणहु ।

विसहेवि⁴ भीमु रविकिरणताड विद्ध⁵ सिवि मिच्छामोहभाड ।
तवदंसणणाणचरित्तरिद्धि आराहिवि गड सव्वत्थसिद्धि ।

घत्ता—हरिसेणहु भरहाहिवहु अहमिदत्तणु तं तहु सिद्धउं ॥

10

दिव्वसोक्खसंदोहयरु जं ण पुप्फदत्तेहिं वि सद्धउं ॥11॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाभव्वभरहाणुमणिए
महाकव्यपुष्पदन्तविरट्ठे महाकव्ये मुणिसुव्वयणिक्खाणं⁶ हरिसेण-
कहंउरं णाम अट्ठसट्ठिमो परिच्छेओ समत्तो⁷ ॥68॥

कर मिथ्या मोहभाव का नाश कर, तप-दर्शन-ज्ञान और चरित्र ऋद्धि की आराधना कर सर्वार्थ-सिद्धि को पा गया ।

घत्ता—हरिसेण और उस भरत राजा को वह अहमेन्द्रत्व सिद्ध हुआ, दिव्य सुख समूह को करने वाला जो सुख नक्षत्रों को भी प्राप्त नहीं हो सका ॥11॥

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का मुनिसुव्रत-निर्वाण हरिसेणकथांतर नाम का अड़सठवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥68॥

4. P विसहेवि मुणिवरु रवि । 5. A 'णिक्खाणगमणं । 6. P adds another पुष्पिका: मुणिसुव्वय-जिणदसमचक्कवट्ठि हरिसेण एतच्चरियं सम्मत्तं; K gives it in the margin in second hand.

एककूणहत्तरिमो संधि

मुनिसुव्वयजिणत्तिथि तोसियसुररामायणु ॥

हरिहलहरगुणथोत्तु जं जायउं रामायणु ॥छ॥

(1)

णियबुद्धिपवित्थरु ¹ णउ रहमि	लइ तं पि किं पि एवहिं कहमि ।	
णिव्वाहमि भरहब्भत्थियउं ²	परिपालमि पडिवण्णउं थियउं ।	
कलिकालें सुट्ठु गलत्थियउ	जणु दुज्जणु अण्णु वि दुत्थियउ ।	5
सामग्गि ण एक वि अत्थि महु	किर कवण ³ लोह चिरकइहिं ⁴ सहु ।	
कइराउ सयंभु महायरिउ	सो स ⁵ यणसहासहिं परियरिउ ।	
चउमुहहु चयारि मुहाइं अहिं	सुकइत्तणु सीसउ ⁶ काइं तहिं ।	
महु एककु तं पि मुहुं खंडियउं	विहिणा पेसुण्णउं मंडियउं ।	
भइं छंदु ण लक्खणु भावियउं	अप्पउं जणि हासउ पावियउ ।	10

उनहत्तरवो संधि

मुनिसुव्वत जिन तीर्थंकर के काल में देवांगनाओं को संतोष देनेवाला तथा नारायण और वलभद्र के गुणों के स्तोत्र से युक्त जो रामायण हुआ ।

(1)

अपनी बुद्धि के विस्तार से नहीं चूकते हुए, मैं उसे कुछ इस समय कहता हूँ । मैं भरत के द्वारा अभ्यर्थित का निर्वाह करता हूँ, और जो मैंने स्वीकार किया है उसका मैं पालन करता हूँ । मैं कलिकाल से अत्यन्त पीड़ित हूँ । लोग दुर्जन हैं, और मैं हीन स्थिति में हूँ । मेरे पास एक भी सामग्री नहीं है । मैं प्राचीन कवियों की पंक्ति में कैसे आ सकता हूँ ? एक महा आदरणीय कविराज स्वयंभू थे जो हजारों स्वजनों से घिरे हुए थे । एक चतुर्मुख थे, जिनके चार मुख थे । ऐसी स्थिति में मैं अपना सुकवित्व किस प्रकार कहूँ ? मेरा एक ही मुख है । वह भी खंडित । विधाताने मेरे साथ दुष्टता की । न तो मैंने छंदशास्त्र का और न लक्षणशास्त्र का विचार किया है । मैंने लोगों में उपहास पाया है । यद्यपि पण्डितों के हृदय में मैं प्रवेश नहीं कर पाऊँगा फिर भी

1. 1. P 'बुद्धि' वित्थरु । 2. P भरहब्भत्थियउ । 3. P कमण । 4. AP चिर कइहिं । 5. A सुयणसहासे; P सुयणसहासेहिं । 6. P सीसइ ।

बुहहियवइ जइ वि ण पइसरमि धिट्ठत्ते तइ वि कब्बु करमि ।
महु खमउ भडारी विउससह आयण्णहु रहुवइरायकह ।

घत्ता—सुकइपयासियमग्गि मणि बहमुहु वि चमक्कइ⁷ ॥

रामधम्मगुणसहि अमुहु⁸ पिसुणु कहि ठुक्कइ ॥1॥

2

जिणचरणकमलभसलें ⁹ झुणिउं	मइ एउ ² णिरत्थु वि रुणुरुणिउं ।
सुइपेसलु कण्णविइण्णसुहु	वियसावियमाणिणिडिभमुहु ।
सइ ³ लगाइ चित्ति वियक्खणहु	जसु रामहु पोरिसु लवखणहु ।
वइदेहिसइत्तणु भूसियउं	जलबिदु व पोमपत्ति ⁴ थियउं ।
मुत्ताहलवण्णु समुव्वहइ	आसयगुणेण कब्बु वि सहइ ।
जं विरइउं मंदमंदमईहिं	अम्हारिसेहिं जगि जइक्कईहिं ।
जं जगि पसिद्धु सीयाहरणु	जं अंजणेयगुणवित्थरणु ।
जं विइसुग्रीवरायमरणु	जं तारावइअब्भुद्धरणु ।
जं लवणसमुहसमुत्तरणु ⁵	जं णिसियरवंसहु खयकरणु ।

5

धृष्टता से काव्य की रचना करता हूँ। आवरणीय विद्वत्-सभा मुझे क्षमा करे। अब रघुपतिराज की कथा सुनिए।

घत्ता—सुकवियों के द्वारा प्रकाशित (सुकइ-सुकपि, सुकवि) मार्ग में रावण भी मन में डरता है, तथा राम के धनुष की डोर के शब्द वाले उस मार्ग में, खरदूषण आदि दुष्ट कैसे आ सकते हैं? (कवि का अभिप्राय यह है कि रामायण काव्य लेखन का मार्ग बड़े-बड़े कवियों द्वारा प्रकाशित है। उसमें राम के धर्म और धनुष का वर्णन है, अतः उसमें दुष्टों की पहुँच का प्रश्न नहीं उठता)।

(2)

जिन भगवान् के चरणकमलों के धमर द्वारा कहा गया यह (काव्य) मैंने व्यर्थ गुन-गुनाया। राम का यश और लक्ष्मण का पौरुष सुनने में मधुर कानों को सुख देने वाला तथा मानिनी स्त्रियों के शिशु मुख को विकसित करने वाला स्वयं विद्वानों के चित्त को खींच लेता है। इसमें सीता देवी का भूषित सतीत्व है। जिस प्रकार कमल (पद्मपत्र) पर स्थित पानी की बूंद मोती के सौंदर्य को धारण करती है, उसी प्रकार, पद्म पत्र (राम रूपी पात्र) पर अवलंबित मेरा काव्य, अक्षय गुण से शोभित होता है, हम जैसे अत्यन्त मन्द बुद्धिवाले जड़ कवियों ने जो राम काव्य की रचना की है, जग में जो सीता का हरण प्रसिद्ध है, जो हनुमान के गुणों का विस्तार है, जो कपटी सुग्रीव का मरण है, और जो सुग्रीव (तारापति) का उद्धार है, जो लवण-समुद्र का संतरण है, और जो निशाचर वंश का क्षय करने वाला है—

7. P चक्कइ। 8. A समुहु ।

(2) 1. AP 'भमरें'। 2. AP एत्थु। 3. A लइ। 4. P पोमवत्ति। 5. A 'समुहहं उत्तरणु'।

घत्ता—भरहु भक्तिभरासु^१ बहुरसभावजणेरउं ॥
तं आहासमि जुज्झु रावणरामहु^२ केरउं ॥२॥

10

3

जिणचरणजुयलसंणिहियमइ
णिरु संसयसल्लिउं मज्झु मणु
किं दहमुहु सहुं दहमुहहि हुउ
जो^३ मुम्मइ भीसणु अलुलबलु
किं अंचिउ तेण सिरेण हरु
किं तहु मरणावहु रामसर
सुरगीवपमुहु णिसियासिधर
किं अज्जु वि देव विहीसणहु
छम्मासइ णिहु^४ णेय मुयइ
किं महिससहासहि धउ लहइ
वम्भीयवासवयणिहि णडिउ

आउच्छइ पहु मगहाहिवइ ।
गोत्तमगणहर मुणिणाहु भणु ।
किर^५ जम्मे गरुयउ तासु सुउ ।
किं खउंसु किं सो मणु^६ खलु ।
किं वीसणयणु किं वीसकरु ।
किं दीहर धिर सिरिरमणकर ।
किं वाणर किं ते णरपवर ।
जीविउ ण जाइ जमसासणहु ।
किं कुंभयणु घोरइ सुयइ ।
लइ लोउ असच्चु सव्वु कहइ ।
अण्णाणु कुम्भगकूवि पडिउ ।

5

10

घत्ता—गोत्तम पोमचरित्तु^७ भुवणि पवित्तु पयासहि ॥
जिह सिद्धत्थसुएण दिट्ठउं तिह महुं भासहि ॥३॥

घत्ता—और जो भक्ति से भरे भरत के लिए अनेक रसों और भावों को उत्पन्न करने वाला है, ऐसे उस रावण-राम के युद्ध का मैं कथन करता हूँ ।

(3)

जिन भगवान् के चरणकमलों में अपनी बुद्धि को स्थिर करता हुआ मगधराज श्रेणिक पूछता है, “मेरा मन संशय से अत्यन्त पीड़ित है । इसलिए हे मुनियों के स्वामी गौतम गणधर, मुझे बताइये कि क्या रावण दस मुखों के साथ उत्पन्न हुआ था ? क्या जन्म से ही उसका पुत्र इन्द्रजीत उससे बड़ा था ? जो भीषण अतुल बल वाला सुना जाता है, क्या वह राक्षस था या दुष्ट मनुष्य ? क्या उसने अपने सिरों से शिव की पूजा की थी ? क्या उसके वीस नेत्र व वीस हाथ थे ? क्या राम के तीरे उसके मरण के कारण थे या लक्ष्मी का रमण करनेवाले लक्ष्मण के लम्बे स्थिर हाथ उसका वध करने वाले थे तथा पैनी तलवार धारण करनेवाले सुग्रीव आदिजन क्या खँदर थे या कि नरश्रेष्ठ ? हे देव, आज भी विभीषण का जीव यम शासन में नहीं जाता । क्या कुम्भकर्ण इतनी घोर नींद में सोता है कि छह महीने तक नींद नहीं छोड़ता ? क्या वह हजारों भैंसों से भी तृप्ति को प्राप्त नहीं होता ? लो सब लोग असत्य कहते हैं । वाल्मीकि और व्यास जैसे कवियों से प्रवंचित होकर अज्ञानी लोग कुमार्ग के कुएँ में पड़ते हैं ।

घत्ता—हे गौतम, इस संसार में आप पवित्र पद्मचरित्र को प्रकाशित कीजिए । सिद्धार्थ सुत (महावीर) ने जिस प्रकार से देखा है, वैसा मुझे बताइए ।

6. P भक्तियरामु । 7. AP रामणं ।

(3) 1. P किं जम्मे । 2. AP सो मुम्मइ । 3. A मणुवकुलु । 4. AP णेय णिहु । 5. APT पउमं ।

4

ता इंदभूइ गंभीरझुणि
इह भरहि भवावहारिणिलइ^२
मायंदगोंदगोंदलियसुइ^३
णिपीलिउच्छरससलिलवहि^४
मजरहि मलयदेशंदरइ
तहि वसइ पयावइ पयधरण
जें सत्थें जित्त सरासइ वि
जें रिद्धिइ जित्तउ सुरवइ वि
तहु रायहु णयणसुहावणिय
रूपेण सरिच्छी उव्वसिहि
सुउ चंदचूलु चंदु व उइउ

सेणियरायहु कह^१ कहइ मुणि ।
फुल्लियकणयारबउलतिलइ^३ ।
महमहियकलमकेयारजुइ^५ ।
संतुट्ठपुट्ठपंथियणिवहि ।
रयणउर भवणइइहयसरइ ।
जें दंढें जित्तउ जमकरणु ।
जें बुद्धिइ^७ जित्तउ भेसइ वि ।
जें भोए^८ जित्तउ रइवइ वि ।
णं बाणावलि मयणहु तणिय ।
गुणवंत कंत कंति व ससिहि ।
सिसुमंति मित्तु तेण वि लइउ ।

5

10

धत्ता—सो विजयकु पसिद्धु^९ णं ससिरवि मयणंगणि ॥

वेणिण वि सह खेलंति बद्धणेह घरपंगणि ॥४॥

(4)

तब गंभीर स्वर वाले गौतम गणधर मुनि राजा श्रेणिक से कथा कहते हैं—भव का नाश करने वालों (सर्वज्ञों) के स्थानभूत इस भरतक्षेत्र में, जिसमें कनेर, बकुल और तिलक के वृक्ष खिले हुए हैं, जहाँ आम्र वृक्ष समूह पर तोते बोल रहे हैं, जो महकते हुए धान के खेतों से युक्त हैं। जहाँ पेरे जाते हुए गन्नों के रसों के सलिलपथ (प्याउ) हैं, जहाँ पथिकजन संतुष्ट और पुष्ट हैं, ऐसे मलरहित मलय देश के, अपने भवनों की कान्ति से शरद की शोभा का अपहरण करने वाला रत्नपुर नगर है। उसमें प्रजापति राजा निवास करता है, जिसने दण्ड के बल पर यमकरण को जीत लिया था, जिसने शास्त्र से सरस्वती को भी जीत लिया, जिसने बुद्धि से बृहस्पति को भी जीत लिया, जिसने ऋद्धि से इन्द्र को भी जीत लिया, जिसने भोग में कामदेव को भी जीत लिया, ऐसे उस राजा की नेत्रों को सुहावनी लगने वाली रानी थी, जो मानो कामदेव की बाण-वलि थी। रूप में वह उर्वशी के (समान) थी। वह गुणवती कान्ता, चन्द्रमा की कान्ति के समान थी। उसका चन्द्र के समान चन्द्रचूल पुत्र उत्पन्न हुआ। उसे भी शिशु मन्त्री पुत्र मित्र के रूप में मिला।

धत्ता—आकाश में चन्द्रमा के समान वह विजय नाम से प्रसिद्ध था। गरस्पर बद्धस्नेह वे दोनों वर के आंगन में खेलते थे।

(4) 1. AP सइ। 2. A भवावहारि। 3. A 'कणियार'। 4. A मायंदगोच्छ^२; P मायंदगोंदि^३। 5. A केयारहुए। 6. A 'उच्छु'। 7. A बुद्धे। 8. P रूपे। 9. Poruits पसिद्धु।

5

तरुणीकडखोहविवेधमूढा¹ जोव्वणसिरीए सरीराहिरूढा² ।
 णिण्णट्ठदण्णिट्ठणिविकट्ठतुट्ठी³ चोराण जाराण चोराण गोट्ठी⁴ ।
 णं तावसा के वि अरहंतदिवखाइ ते बे वि ण चरंति रायस्स सिक्खाइ ।
 अण्णमि तब्बासरे⁵ तम्मि गण्णरम्मि णिद्धजग्गे दिण्णबहुदविणणियरम्मि ।
 गोसमवणिदेण वइसवणघरिणी⁶ जायस्य कलहस्स णं चारुकरिणी⁷ । 5
 विण्णाणवंतस्स संसारसारस्स सिरिदत्तणामस्स वणिवरकुमारस्स ।
 करधरियभिगारचुयवारिधारेण णियधीय रमणीय दिण्णा कुबेरेण ।
 बालेण बालालयं स त्ति गंतूण णमिऊण⁸ जय देव देव त्ति वोत्तूण ।
 केणावि पावेण रइरहसजुत्ती⁹ रूवं वरं वणिणयं वणिणउत्ती¹⁰ ।
 रेहंतराईवदलदीहणेत्ताइ ती¹¹ संणिहा का कुबेराइदत्ताइ । 10
 तं सुणिवि सिरुधुणिवि विद्धत्थधम्मेण¹² संचरिवि वियडं तुरं कूरकम्मेण ।
 वणिभवणि पइसरिवि बहुसहसहाएण¹³ हित्ता कुमारी धरणाहजाएण ।
 रोवंति वेवंति वरइत्तहत्थाउ णट्ठाउ¹⁴ णारीउ विलुलंतवत्थाउ ।

घत्ता—णिव परिताहि भणंत¹⁵ पुरि अण्णाउ कुमारहु ॥

गय तरुसाहाहत्य वणिवर रायदुवारहु ॥ 5 ॥

15

(5)

युवतियों के कटाक्षों-समूह के विक्षेप से मूढ़ यौवनश्री के शरीर पर अभिरूढ़ होने पर (युवक होने पर) तरुणियों के कटाक्षों के विक्षेप से विवेकशून्य, शरीर को आक्रान्त करने वाली यौवन रूपी लक्ष्मी, नष्ट दर्प से भरी निकृष्ट तुष्टि तथा भयंकर बिटों और चारों ओर की गोष्ठो (संगति) के कारण वे दोनों, राजा की शिक्षाओं का आचरण नहीं करते थे। उसी प्रकार, जिस प्रकार कोई तपस्वी अरहंत की शिक्षा का आचरण नहीं करते। एक दूसरे दिन उसी नगर में, जिसमें निर्धन लोगों को प्रचुर धन समूह दिया गया है, गौतम सेठ की वैश्रवणा गृहिणी से पुत्र उत्पन्न हुआ मानों सुन्दर हथिनी से बच्चा उत्पन्न हुआ हो। विज्ञान से युक्त संसार में श्रेष्ठ श्रीदत्त नाम के उस वणिक कुमार को कुबेर नाम के सेठ ने हाथ में धारण किये गए भिगार के गिरते हुए पानी की धारा के साथ अपनी सुन्दर कन्या दी। किसी मूर्ख ने शीघ्र बालक चन्द्रचूल के घर जाकर जयदेव-जयदेव कहकर नमस्कार किया। तब रति के वेग से युक्त उस वणिकपुत्री के श्रेष्ठ रूप का वर्णन किया। शोभित कमलदल के समान दीर्घ नेत्रों वाली कुबेर दत्ता के समान कोई भी स्त्री नहीं है। यह सुनकर धर्म को ध्वस्त करनेवाले उस क्रूरकर्मा चन्द्रचूल ने अपना सिर पीटा और शीघ्र ताबड़-तोड़ जाकर सेठ के घर में प्रवेश कर अनेक समर्थ सहायों के साथ उस राजा के

(5) 1. A कडखोहविवेधमूढा¹; P 'कडखोहविवेध' 2. A बुट्ठीइ। 3. AP ता वासरे। 4. A णविकुण। 5. A णी संणिहा। 6. A विद्धत्थकामेण। 7. A 'सहावेण। 8. P तट्ठाउ। 9. AP भणंता।

6

आडच्छिउ राए पडरयणु विष्णवइ णवंतु तसंततणु ।
 तुह तणुरुहु परदविणई हरइ परिणियउं कलत्तु ण उव्वरइ ।
 पइसरउं भडारा वियणु वणु अणेतहि जीवउ जाउ जणु ।
 ता राए पुरवरतलवरहु आएसु दिणु असिवरकरहु ।
 सिरकमलु विलुंचवि णिट्ठुरहु पेसहि तणुरुहु वडवसपुरहु ।
 अण्णाणु णायविद्धं सयरु खलु सो^१ किं वुच्चइ रज्जधरु ।
 जो दुट्ठु कट्ठु णिद्धम्मयरु सो खंडमि हउं अप्पणउं करु ।
 हियउल्लउं दुक्खें सल्लियउं ता पजरें मंतिहि^२ बोल्लियउं ।

घत्ता—णंदणु हणहुं ण जुत्तउं जइ सो मणहु ण रुच्चइ ॥

गिरिदुर्गमि कंठारि तो^३ दूरंतरि मुच्चइ ॥ 6 ॥

7

पहु भणइ जाउ कि तेण महु हउं णंदमि चिर धम्मेण सहं ।
 गुणदूसणु अप्पपसंसणउं तवदूसणु मिच्छादंसणउं ।

पुत्र ने वर के हाथ से रोती और कर्पिती हुई उस अस्त कुसारी का हरण कर लिया ।

घत्ता—तब अपने हाथ में वृक्ष की डालें लेकर वणिक्वर राजद्वार पर पहुँचे यह कहते हुए कि कुमार के अन्याय से नगरी की रक्षा कीजिए ।

(6)

पौरजन से राजा ने पूछा । काँपते हुए शरीर से नमस्कार करते हुए एक पौरजन बोला : “तुम्हारे पुत्र दूसरों के धन का अपहरण करते हैं, यहाँ तक कि विवाहित स्त्रियाँ भी उन से नहीं बचती हैं । हे आदरणीय जन (लोग), या तो विजय नगर में प्रवेश करें या अन्यत्र जाकर जीवित रहें ।” तब राजा ने हाथ में तलवार धारण करने वाले नगर कोतवाल को आदेश दिया कि उस निष्ठुर का सिरकमल काटकर पुत्र को यमनगर भेज दो । जो अज्ञानी न्याय का नाश करने वाला है, वह दुष्ट है, उसे राज्यधर क्यों कहा जाता है ? जो दुष्ट निन्दनीय और अधर्म करने वाला है उसे मैं हाथ से नष्ट करूँगा । उसका हृदय दुःख से पीड़ित हो उठा । इस बीच नगरप्रमुख और मंत्रियों ने कहा—

घत्ता—बेटे को मारना अच्छा नहीं । भले ही वह मन को अच्छा नहीं लगे । पहाड़ों से दुर्गम दूर जंगल में उसे छोड़ दिया जाए ।

(7)

राजा कहता है : वह मेरा पुत्र है, इससे मुझे क्या ? मैं चिरकाल तक धर्म से आनन्दित रहूँगा । अपनी प्रशंसा करना गुण के लिए दूषण है । मिथ्यादर्शन तप का दूषण है । तीरस प्रदर्शन करना

(6) 1. AP तसंततणु । 2. A परसरणु; P पइसरह । 3. P कि सो । 4. A महिवइ । 5. A ता ।

ण्डदूषणुं णीरसपेवखणउं¹ कइदूषणु कव्वु अलवखणउं ।
 धणदूषणु सढखलयणभरणु² वयदूषणु असमंजसमरणु³ ।
 रइदूषणु खरभासिणि जुवइ सुहिदूषणु पिसुणु विभिण्णमइ । 5
 सिरिदूषणु जइ सालसु णिवइ जणदूषणु पाउ पत्तकुगइ ।
 गुरुदूषणु णिवकारणहसणु⁴ मुणिदूषणु कुसुइससमब्भसणु ।
 ससिदूषणु भिगमलु मसिकसणु कुलदूषणु णंदणु दुव्वसणु ।

घत्ता—लइ जं तुम्हहं इट्ठु मइ वि⁵ तं जि पडिवण्णउं ॥

जाइवि कुलवुद्धेहि बालहं उत्तर दिण्णउं ॥7॥ 10

8

किं परकलत्तु उद्दालियउं उज्जलु अप्पाणउं मइलियउं ।
 किं वप्प सुदप्प कुसंगु किउ¹ परयारचोरकीलाइ थिउ ।
 कुद्धउ पिउ एवहि को धरइ तुम्हारउं जीविउ अवहरइ ।
 तं णिसुणिवि सिसु चवन्ति गहिरु अत्थंतु² णिवारइ को मिहिरु ।
 को रक्खइ आवंतउं मरणु जगि कासु ण दुव्वकइ जमकरणु । 5
 कु वि अग्गइ कु वि पच्छइ मरइ वइवसदंततरि पइसरइ ।
 मंतीसे³ करपल्लवधरिया सुय वेणि वि किंकरपरियरिया ।
 सत्तरविल्लगवत्तिदत्तसहणि पइसरि वि वेणि वि गिरिगहणि ।

नट का दूषण है। व्याकरण से शून्य काव्य कवि का दूषण है। कुटिल और दुष्ट लोगों का पालन करना धन का दूषण है। संदेह (शक्य) के साथ मरना व्रत का दूषण है। दुष्ट बोलना नव-युवती की रति (प्रेम) का दूषण है। कुगति को प्राप्त करने वाला पाप लोगों का दूषण है। अकारण हँसना गुरु का दूषण है। छोटे शास्त्रों का अभ्यास करना मुनि का दूषण है। और काला मृग-चिह्न चन्द्रमा का दूषण है, और दुर्ब्यसनी पुत्र कुल का दूषण है।

घत्ता—तो जो तुम लोगों को अच्छा लगे वही मैंने स्वीकार किया। तब कुलवृद्धों ने जाकर बालकों को उत्तर दिया।

(8)

तुमने दूसरे की स्त्री का अपहरण क्यों किया? तुमने उज्ज्वल अपने को कलंकित किया है। घमंडी, तुमने छोटी संगति क्यों की? दूसरों की स्त्रियों के दिलों को चुराने की शीड़ा में तुम क्यों लगे? तुम्हारे पिता इस समय क्रुद्ध हैं, उन्हें कौन रोक सकता है, वह तुम्हारे जीवन का अपहरण करेंगे? यह सुनकर कुमार गंधीर स्वर में कहता है कि डूबते हुए सूर्य को कौन बचा सकता है? आती हुई मौत से कौन बच सकता है? संसार में रोग किसके पास नहीं पहुँचता? कोई आगे और कोई पीछे मरता है। इस प्रकार यम की डाढ़ के नीचे प्रवेश करता है। मंत्री अनुचरों से घिरे हुए दोनों पुत्रों का हाथ पकड़कर उन्हें बड़े-बड़े वृक्षों में लगी हुई चंचल दावाग्नि से जलते हुए गहन वन में ले गया। गणनाथ के मुखिया कामदेव का बल नष्ट करने वाले गणनाथ-

(7) 1. AP णीरसु । 2. A सह खलयर । 3. AP असमंजसु । 4. A भसणु । 5. A जि ।

(8) 1. A सदप्पु । 2. A उदयंतु । 3. AP पल्लवि धरिया ।

गणणाहुहु हयवम्भहबलहु दक्खीवय णवंत^४ महाबलहु ।
 रायागमणायवियाणएण कुच्छियमइ धाडिय राणएण ।
 परमेसर ए णर भव्व जइ वर एवहिं तुहुं उद्धरहि तइ ।
 घत्ता—दुम्मइमलमइलेहिं कुंअरिहिं^५ कहिं जाएवउं ॥

अनि अल्लिअयु^६ तरवंत एहिं काइं पावेवउं ॥४॥

9

मुनि भणइएत्थु दिहि^१ करिवि तवे होहिंति सीरि हरि तइयभवे ।
 णामेण रामलक्खण विजई तं णिसुणिवि जाया तरुण जई ।
 गउ मंति णिहेलणु^२ पय णवइ णरणाहुहु वइयरु विण्णवइ ।
 वसुहाहिव तणुरुहु गिरिविवरि आरणिण णिहिय वणवासिघरि ।
 कासु वि सकम्मउग्गुग्गमहो^३ तणुदुक्खलक्खविहिसंगमहो^४ ।
 विसहावियदंडण^५ मुंडणइं^६ पंविदियदप्पविहंडणइं^७ ।
 णिवणयणइं मुक्कंसुयजलइं ओसासित्ताइं व सयदलइं ।
 हा हा मइं रुसिवि किं कियउं किं बालजुयलु दुक्खे हयउं ।
 अइरहसें किज्जइ कज्जरइ जा सा णिइहइ^८ ण कासु मइ ।
 मणु मंतें परियाणिवि पइहि अक्खिउ जिह पासि णिहिय जइहि ।

5

10

मुनिनाथ महाबल को नमस्कार करते हुए उसने उन्हें दिखाया और कहा कि हे परमेस्वर, राजनीति-शास्त्र के न्याय को जानने वाले राजा ने दुष्ट बुद्धि वाले इन दोनों कुमारों को निकाल दिया है। यदि ये दोनों शव्य जीव हों तो इस समय आप इनका उद्धार करें।

घत्ता—दुर्मति के मल से मैले ये कुमार कहाँ जायेंगे ? हे भगवन्, आप बताइये कि ये किस भव्यता को प्राप्त होंगे (इनका भविष्य क्या होगा) ?

(9)

मुनि कहते हैं कि ये यहाँ दीर्घ तप करके तीसरे भव में बलभद्र और नारायण होंगे। राम और लक्ष्मण के नाम से विजेता। यह सुनकर, वे दोनों युवा मुनि हो गए, मंत्री घर गया। वह राजा के चरणों में प्रणाम कर वृत्तान्त बताता है कि हे राजन्, दोनों कुमारों को पहाड़ के विवर में एक जंगल में वनवासी के घर छोड़ दिया गया है। शरीर के लाखों दुःखों और भाग्य के संगम से अपने कर्मों के उग्र उदय के कारण कोई भी व्यक्ति जिसमें दंड और मुंडन सहा गया है, ऐसे पाँचों इन्द्रियों के दर्प के विखंडनों को भोगता है। राजा की आँखें अश्रु धारा छोड़ती हुई ओस से भीगे हुए कमल दल के समान मालूम होती थीं (वह विलाप करने लगा) कि मैंने क्रुद्ध होकर यह क्या किया! क्यों मैंने अपने दोनों बच्चों को दुःख से मार डाला! जो कार्य में अत्यंत जल्दबाजी करती है, ऐसी वह बुद्धि किसे नहीं जलाती! राजा के मन को जानकर

4. AP णमंत । 5. AP कुमरहि । 6. P भयवंतहि ।

(9) 1. P बिहि । 2. A णिहेलणि पइ । 3. A उग्गुग्गमहो । 4. A दिहि । 5. AP दंडण । 6. P मुंडणहो । 8. AP णिइहइ ।

जिह् द्रोहिं मि लइयउं तवचरणु ता जायउं तायहु सिसुकरुणु ।
 कोमलतणु णीसारिवि घरहु णंदण पट्ठविवि⁹ वणंतरहु ।
 घत्ता—डहु बह्णिदिह रज्जु रज्जु जि पाउ णिरुत्तउं ॥
 रज्जमाण पमत्तउं¹⁰ ण सुणइ¹¹ जुत्ताजुत्तउं ॥9॥

10

णियगोत्तिउ¹ णियकुलि सणिहिउ वणु जाइवि राए तवु गहिउ ।
 भरहेण व अहिदिदिहि रिसहु पणदेवि चह्णवु मुणिवसहु ।
 गउ मोक्खहु अवखयसोक्खमइ धिउ णाणदेहु णिव्वाणपइ ।
 खग्गउरहु बहि कयधम्मकिसि आयावणजोए बालरिसि ।
 थिय जइयहुं तइयहुं महि जिणिवि महसूयणु समरंगणि हणिवि । 5
 सुप्पह पुरिसोत्तम दिट्ठं² पहि ससिचूलें चित्तिउं हिययरहि ।
 दीसइ णरणाहहु जेरिसउं महु होउ पट्ठतणु तेरिसउं ।
 मुउ³ सणकुमार⁴ हुउ रिसि विजउ सुरु णामु सुवण्णचूलु सइउ ।
 कमलप्पहि विमलविमाणवरि णिवतणउ मणिप्पहि अमरघरि ।
 मणिचूलु देउ जायउ पवरि कलहंसु व विलसइ कमलसरि । 10

मंत्री ने उसे यह बताया कि किस प्रकार उसने मुनि के पास बालकों को रख दिया है और किस प्रकार दोनों ने तप आचरण स्वीकार कर लिया है। यह सुनकर पिता को बालकों के प्रतिकरुणा उत्पन्न हो गई। वह कहता है कि कोमल शरीर वाले पुत्रों को घर से निकालकर वन के भीतर मैंने भेजा दिया !

घत्ता—पंडितों की निन्दा करनेवाले राज्य का नाश हो। निश्चय ही राज्य एक पाप है। राजमद में पागल होकर व्यक्ति अच्छे-बुरे का विचार नहीं करता।

(10)

अपने गोत्र के व्यक्ति को कुल परम्परा में स्थापित कर राजा ने वन में जाकर तप ग्रहण कर लिया और जिस प्रकार भरत ने ऋषभ तीर्थंकर की अभिवंदना कर दीक्षा ग्रहण की थी उसी प्रकार मुनिश्रेष्ठ महाबल को प्रणाम कर उसने भी दीक्षा ग्रहण की। अक्षय सुमति वाला वह मोक्ष चला गया तथा ज्ञानशरीर वह निर्वाण पद पर स्थित हो गया। खड्गपुर के बाहर धर्म की खेती करनेवाले बाल-ऋषि आतापन योगसे जब स्थित थे तब उन्होंने धरती जीतकर तथा युद्ध के प्रांगण में मधुसूदन को मारकर जानेवाले सुप्रभ और पुरुषोत्तम को रास्ते में देखा तो चन्द्रचूल अपने मन में सोचने लगा, जिस प्रकार को प्रभुता इस नरनाथ को दिखाई देती है मेरी भी वैसी प्रभुता हो। विजय मुनि मरकर सनत् कुमार स्वर्ग में स्वर्णचूल नाम का दयालु देव हुआ। कमलप्रभ नाम के विमल श्रेष्ठ विमान में तथा राजपुत्र (चन्द्रचूल) मणिप्रभ देव विमान में मणिचूल नाम का देव हुआ। वह ऐसे मालूम होता था जैसे कमल सरोवर में कलहंस शोभित हो रहा हो।

9. A पट्ठविय । 10. AP पमत्तु । 11. AP मुणइ ।

(10) 1. AP णियणत्तिउ । 2. A दिट्ठि । 3. A मूए । 5. AP सणकुमारे ।

घत्ता—अं अणिमाइगुणेहि बहुविहवेण⁵ णिउत्तउं ॥

तं दिवि दीहरु कालु बिहि मि दिव्वु सुहुं भुत्तउं ॥10॥

11

सरवरमरालचविखयभिसइ ¹	इह भरहवरिसि कासीविसइ ।	
जहि सालिरमणकीलाहरइं	जहि सालिघण्णछेत्त तरइं ।	
जहि सालिकमलछण्णइं सरइं	जहि सालिहियाइं व अबखरइं ।	
सिसुहसपयइ मयरंदरइ	गोहणइं चरंतइं पइ जि पइ ।	
रोमंयंतइं ² संतुट्ठाइं	दीसंति हरियतणपुट्ठाइं ।	5
उच्छुरसु जंतणालीरुहसिउ	दक्खारसु पिज्जइ मुहरसिउ ।	
ओयणु सीयलु दहिओल्लियउं	फणिवेल्लिपत्तपत्तलि थियउं ।	
जहि जिम्मइ पहिययणहि पवहि	देसियठक्करिजंपणरवहि ।	
ओहामिय अलयाउरिसिरिहि	जणभरियहि वाणारसिपुरिहि ³ ।	
तहिं दसरहु दसदिसिणिहियजसु	णिवसइ णिउ जियरिउ थिरु सवसु ।	10

घत्ता—कुवलयबंधु वि णाहु णउ दोसायर जायउ ॥

जो इक्खाउहि वंसि णरवइरूढिइ⁴ आयउ ॥ 11 ॥

घत्ता—जो अणिमा गुणों के द्वारा अनेक प्रकार के वैभव से युक्त है, स्वर्ग में ऐसे लम्बे समय तक उन दोनों ने दिव्य सुख का भोग किया ।

(11)

इस भारतवर्ष में काशी नाम का देश है, जो सरोवर के हंसों के द्वारा आस्वादित कमलनियों से युक्त है । जहाँ स्त्रियों और पुरुषों के रमण करने के लिए क्रीड़ा-घर हैं । जहाँ शालि घान्य के तरह-तरह के खेत हैं । जहाँ भ्रमरों से युक्त कमलों से सरोवर आच्छादित हैं । जो लिखे हुए अक्षरों के समान हैं । हंसों के छोटे-छोटे बच्चों के पैर जहाँ पराग में सने हुए हैं । जहाँ पग-पग पर गोधन चर रहे हैं । और जो संतुष्ट होकर जुगाली करते हुए हरे घास से पुष्ट शरीर वाले दिखाई देते हैं । जहाँ यंत्रनलियों से गिरा हुआ गन्ने का रस तथा मुंह को मीठा लगने वाला द्राक्षारस पिया जाता है । दही से मिला हुआ ठंडा भात नागवेली के पत्तों की पत्तल पर रखा हुआ है । जो देशी ढक्का और जंपाण वाद्यों के शब्दों के साथ प्याऊ पर पथिकजनों के द्वारा खाया जाता है । जिसने अलका नगरी की शोभा को पराजित कर दिया है । जो जनों से व्याकुल है । ऐसी वाराणसी नगरी में दशों दिशाओं में अपने यश का विस्तार करने वाला शत्रुओं का विजेता स्वाधीन, स्थिर राजा दशरथ निवास करता है ।

घत्ता—वह राजा कुवलय बन्धु यानी चन्द्रमा था । और (दूसरे पक्ष में) धरती मंडल का स्वामी अर्थात् चन्द्रमा पर वह दोषाकार नहीं था और जो नरवरों से प्रसिद्ध इक्ष्वाकु कुल में उत्पन्न हुआ था ।

5. A बहुविहवेण ।

(11) 1. A 'चालियभिसए' । 2. P रोमंयंतइं पसुसंतुट्ठाइं । 3. AP वाराणसि । 4. A 'रूढि आयउ' ।

12

करगेज्जु मज्जुं उत्तुंगथणि
सिविणंतरि पेच्छइ उग्गमिउ
संसि कुमुयकोसवित्थारयह
सुविहाणइ कंतहु भासियउं
तुह होसइ तणुरुहु सीरहह
अण्हि दिणि सग्गहु अवयरिउ
मघरिक्खयदि⁵ गौरयदिसिहि
देविइ णवमासहि सुउ जणिउ
करिवरलोहियपक्वालियउ⁶
माहहु मासहु सियपढमदिणि
मणिचूलु देउ दसरहरयइ
जोइउ लक्खणलक्खं कियउ

तहुं सुबल¹ णाम बेल्लह धरिणि² ।
रवि सहसकिरणु णहयलि भमिउ ।
गज्जंतु जलहि जुज्जियमयर ।
तेण वि तहु गुज्जु पयासियउं ।
हलि चरमदेहु णं तित्थयर । 5
सुरु³ कणयचूलु उयरइ⁴ धरिउं ।
फागुणि तमकालिहि तेरसिहि ।
तणुरामु रामु राएं भणिउ ।
सिविणंतरि⁷ सीहु णिहालियउ ।
सविसाहि⁸ जसाहिउ पहु भुवणि⁹ । 10
सुउ अवह¹⁰ वि जायउ केक्कयइ ।
सो ताएं लक्खणु कोक्कियउ ।

धत्ता—बेणि वि ते गुणवन्त भुयबलतासियदिगय ॥

णाइं सियासियपक्ख पत्थिवगरुडहु णिगय ॥12॥

(12)

उसकी सुबला नाम की प्रिय गृहिणी थी । ऊँचे पयोधरों वाली जिसका मध्य भाग मुट्ठी से पकड़ा जा सकता है । एक रात वह स्वप्न में देखती है कि उगा हुआ हजारों किरणोंवाला सूर्य आकाश तल में घूम रहा है । उसने देखा कुमुदों के कोषों का विस्तार करने वाला चन्द्रमा, गरजते हुए समुद्र में लड़ा हुआ मीन युगल । दूसरे दिन सुन्दर प्रभात में उसने पति से यह बात कही । उसने भी उसका रहस्य उसे बताया कि तुम्हारा बलभद्र हलधर चरम शरीरी पुत्र होगा । वैसे ही जैसे तीर्थंकर । दूसरे दिन स्वर्ग से अवतरित हुए स्वर्णचूल देव को उस रानी ने अपने पेट में धारण किया । जब चन्द्रमा मघा नक्षत्र में स्थित था, दिशा निर्मल थी, ऐसी फागुन वदी तेरस को नौ माह पूरे होने पर देवी ने पुत्र को जन्म दिया । शरीर से सुन्दर होने के कारण राजा ने उसका नाम राम रखा । फिर कैकयी ने गजवर के रक्त से लिप्त सिंह को स्वप्न में देखा, माघ मास में विशाखा नक्षत्र से युक्त शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन राजप्रासाद में दशरथ में अनुरक्त कैकयी से मणिचूल नाम का देव दूसरे पुत्र के रूप में हुआ । पिता ने उसे लाखों लक्ष्मणों से युक्त देखकर उसका नाम लक्ष्मण रख दिया ।

धत्ता—गुणवान अपने बाहुबल से दिग्गजों को सताने वाले वे दोनों ऐसे मालूम होते थे मानो दशरथ राजा रूपी गरुड़ के काले और सफेद दो पंख निकल आये हों ।

(12) 1. A सुबल । 2. AP रमणि । 3. AP सुउ । 4. A उयर; P उवरें । 5. A रिक्खे चदे; P रिक्खि इदे । 6. P पच्चालियउ । 7. P सुविणंतरि । 8. AP सविसाहु । 9. AP भवणि । 10. P जायउ अवह वि ।

13

रेहंति वे वि बलएव हरि
 णं गंगाजउणाजलपवह²
 णं पुण्ण मणोरह सउजणहं
 अवरोप्पह णिह णिम्मच्छराहं
 सहसाहं बिहि मि णिहेसियइ¹
 पण्णारहचावइं तूमतणु
 पुरवाहिरि उववणसंठियहु
 अवलोइवि रामहु सरपसरु
 करि आउहु जं लक्खणु धरइ
 णं तुहिणगिरिदंजणिसिहरि¹।
 णं लच्छिहि कीलारमणवह³।
 णं वम्मवियारण दुज्जणहं।
 तेरहवारहसंवच्छराहं।
 परमाउसु जइवरभासियइ⁴।
 ते सत्थु सुणंति गुणंति धणु।
 विद्धंतहु जयउक्कंठियहु।
 मउ चेय मुयंति ण वइरि सरु।
 तहु परपहरणु जि ण संचरइ।

5

घत्ता—कंपइ महि-संचारें ससरसरासणहत्थहं ॥

10

संकइ जमु⁵ जमदूउ को णउ तसइ समत्थहं ॥ 13 ॥

14

रिसहाहिवसंताणाइयहं
 संखापरिवज्जिय पुरिस गय
 तहि अण्णहु¹ कहि जीवियकहइ
 सिरिभरहसयररायाइयहं।
 अहमिद वि जहि कालेण मय।
 लइ अत्थमियइ² पत्थिवसहइ।

(13)

वे दोनों बलभद्र और नारायण इस प्रकार शोभित होते थे मानो हिमगिरि और नीलगिरि पर्वत हों, मानो गंगा और जमुना के जल प्रवाह हों, मानो लक्ष्मी की श्रीड़ा करने के पथ हों, मानो सज्जनों के पुण्य मनोरथ हों, मानो दुर्जनों के मर्म का भेदन करने वाले हों। एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या भाव से रहित जब तेरह वर्ष बीत गये तो सहसा उन्हें परम आयु वाले मुनिवरों के द्वारा कहे गये उपदेश दिये गये। पन्द्रह धनुष प्रमाण ऊँचे शरीर वाले वे दोनों शास्त्र सुनते हैं। और धनुष पर बोरी चढ़ाते हैं। नगर के बाहर उपवन में स्थित, विध्वंस करते हुए जय के लिए उत्साहित राम के तीरों के प्रसार को देखकर शत्रु अपनी मद चेतना छोड़ देता है, वह तीर नहीं छोड़ता। जब लक्ष्मण अपने हाथ में हथियार लेता है तो दुश्मन का हथियार काम नहीं करता।

घत्ता—तीर-धनुष हाथ में लेकर जब वे चलते हैं तो धरती काँप जाती है। यम शंका करने लगता है। और यमदूत भी। समर्थ लोगों से कौन अस्त नहीं होता !

(14)

विश्वनाथ की कुल परम्परावाले श्री भरत और सगर के गोत्र वाले राजाओं में से जहाँ असंख्य लोग चले गये, (औरों की तो क्या) अहेमेन्द्र जहाँ काल के द्वारा मारा जाता है वहाँ दूसरों के जीवन क्या से क्या ? राज्यसभा के अस्त होने पर हरिषेण के स्वर्ग जाने पर हजारों

(13) 1. AP तुहिणगिरिदं नीलसिहरि। 2. A 'जलपवाह; P 'जलणिवहु। 3. A 'रमणगह; P 'रवणवहु। 4. A णिहेसियउ। 5. A भासियउ। 6. A जम।

(14) 1. A अण्ण वि कहि; P अण्णहि कि। 2. A अइ अत्थमिए; P लइ अत्थमिए।

सत्त्वत्थसिद्धि हरिसेण गइ	दिणमाणे ³ वरिसहं सहसहइ ⁴ ।	
भुयसुइदिणाउ जायविजइ	पुण्णइ पंचुत्तरवरिससइ ।	5
असुरिदे विद्धं सियसयरि	दहरहु ⁵ पइट्ठु ⁶ उज्झाणयरि ।	
परियाणिवि तणयहुं तणउं बलु	हुउ महियलि सयलु वि खलु विबलु ।	
सहुं पुत्तहि जायधरारइहि	सुपरिट्ठिउ पहु णियसंतइहि ।	
तहिं सुहुं णिवसंतहु णरवइहि	उप्पण्णउ संतोसु व जइहि ।	
अण्णेक्कहि भरहु पसण्णमणु	अण्णेक्कहि धरिणिहि सत्तुहणु ।	10
महिवइ संपुण्णमणोरइहि	चउहि वि जणेहि परबलमहहि ।	
सोहइ पुत्तहि सकयायरहि	णं भूमिभाउ चउसायरहि ।	

धत्ता—मिहिलाणयरिहि⁸ ताम णामे जणउ णरेसर ॥

पसुवहकम्मे सग्गु चितइ जण्णहु अवसर ॥ 14 ॥

15

महु मेरउ रक्खइ को वि जइ	वसुहासुय दिज्जइ तासु तइ ।
तं णिसुणिवि संते जंपियउं	जसु णामे तिहुयणु कंपियउं ।
सो जासु ण जाउहाणु ¹ गहणु	जसु लहुवभाइ भड्डु महमहणु ।
सो रक्खइ ² धुवु काकुत्थु तिह	खेयरहि ण हम्मइ होमु जिह ।

वर्षों का समय बीत गया। उनके पुत्रजन्म के दिन से लेकर विजय से युवत एक सौ पाँच वर्ष पूरे होने पर, असुरेन्द्र द्वारा राजा सगर के ध्वस्त होने पर, राजा दशरथ ने अयोध्या नगरी में प्रवेश किया। पुत्रों के बल को जानकर धरतीतल के सारे दुष्ट बलहीन हो उठे, जिनकी धरती में अनुरक्ति है ऐसे अपने पुत्रों और संतानों के साथ राजा दशरथ वहाँ अच्छी तरह रहने लगे। वहाँ सुखपूर्वक निवास करते हुए राजा के एक और पत्नी से प्रसन्न मन भरत उसी प्रकार उत्पन्न हुआ जिस प्रकार मुनि को संतोष उत्पन्न होता है। एक और पत्नी से शत्रुघ्न पैदा हुआ। पूर्ण मनोरथ वाले, परमशत्रुसेना का नाश करने वाले, स्वजनों का आदर करनेवाले उन चारों पुत्रों से राजा दशरथ इस प्रकार शोभित होता है, जिस प्रकार भूमिभाग चार समुद्रों से शोभित होता है।

धत्ता—इसी समय मिथिला नगरी में जनक नाम का राजा था। उसने सोचा पशु यज्ञ से स्वर्ग मिलता है। यज्ञ का अवसर है।

(15)

जो कोई मेरे यज्ञ की रक्षा करेगा मैं उसे सीता दूँगा। यह सुनकर जनक के मंत्री ने कहा : सुनो, जिसके नाम से त्रिभुवन कांपता है, और जिसका रावण के द्वारा ग्रहण संभव नहीं है, योद्धा लक्ष्मण जिसका छोटा भाई है, ऐसे राम निद्वय से यज्ञ की इस प्रकार रक्षा करेंगे, जिससे विद्याधरों के द्वारा होम का नाश नहीं किया जा सकता। यह सुनकर राजा ने श्रेष्ठ दूत भेजा,

3. P दिणमाणहं । 4. A सहामरुए; P सहसि हए । 5. AP दिणाउ जाएवि लए । 6. AP दसरहु । 7. A गुवरहुउ । 8. A महिला⁸ ।

(15) 1. A णाउहाणु । 2. A रक्खइ बंधुसमेउ ।

ता राएं पेसिय दूयवर	गय ते बहुपाहुडलेहकर ³ ।	5
उज्जहि दसरहु गिवेइयउं ¹	आलिहियउं पण्णउं बाइयउं ।	
जो रक्खइ अद्धर परमकूय ²	तहु दिज्जइ णं पञ्चक्ख सुय ⁴ ।	
णामेण सीय वेल्हलभुय	किर कहु उवमिज्जइ जणयसुय ।	
तं बुद्धिविसारएण भणितं	इहएण पणसि काइइहुमिउं ।	
कउकरणु ⁷ णिहालणु रक्खणु वि	लइ रक्खउ राहुउ लक्खणु वि ।	10

घत्ता—कारावय होआयार⁸ हुणिय पसु वि देवत्तणु ॥

जेण लहंति परिद तं करि जणपवत्तणु ॥15॥

16

जं जुजिवि ¹ सग्गहु सयरु गउ	सहुं सयणहि तणयहि मुक्करउ ।	
तं नुव ² रक्खिज्जइ किज्जइ ³ वि	भावें वित्थारहु णिज्जइ ⁴ वि ।	
जगि धम्ममूल वेउ जि कहिउ	सो जेहि महापुरिसहि गहिउ ⁵ ।	
ते हुंति देव दिव्वंगधर	लहु पेसहि कुलसरहंसवर ।	
रक्खेवि जणु सा घणथणिया	सिसु परिणउ ⁶ सुय जणयहु तणिया ।	5
ता अइसयमइणा ईरियउं	पइं वण्य असक्खु विमारियउं ।	

जो अनेक उपहार और लेख हाथ में लेकर गये। अयोध्या में उन्होंने दशरथ से निवेदन किया और लिखे हुए पत्र को पढ़ा : “जो महान् क्रिया वाले यज्ञ की रक्षा करता है, उसे मैं प्रत्यक्ष लक्ष्मी के समान कोमल भुजा वाली सीता नाम की कन्या दूंगा।” जनक की कन्या की उपमा किससे दी जा सकती है ! तब राजा से बुद्धिविशारद ने कहा—“यज्ञ करना, उसकी देखभाल करना या रक्षा करना इस लोक और परलोक में सुन्दर कहा गया है। तो लक्ष्मण और राम यज्ञ की रक्षा करें।”

घत्ता—यज्ञ कराने वाले होता जन और उसमें होमे गए पशु, जिससे देवत्व पाते हैं, हे राजन्, उस यज्ञ का प्रवर्तन कीजिए।

(16)

जिस प्रकार राजा सगर यज्ञ करके स्वजनों और पुत्रों के साथ पाप से रहित होकर स्वर्ग गया, उसी प्रकार, हे राजन्, यज्ञ की रक्षा की जानी चाहिए। उसका विस्तार करना चाहिए। विश्व में धर्म का मूल वेद को माना गया है, और उसे जिन महापुरुषों ने स्वीकार किया है, वे दिव्य शरीर धारण करने वाले देवता होते हैं, इसलिए शीघ्र ही अपने कुल रूपी सरोवर के श्रेष्ठ हंसों (राम, लक्ष्मण) को भेज दीजिए। यज्ञ की रक्षा करके सघन स्तनों वाली जनक की उस कन्या से बालक राम विवाह करें। तब अतिशयबुद्धि मंत्री ने कहा—“भोले-भाले तुमने यह

3. A पाहुड लेवि कर। 4. P गिवेविउं। 5. A अद्धर परमरुअ; P अद्धर परमकिय। 6. AP सिय। 7. P करुणु। 8. A कारावय होयारहुणिय; P कारावयहोआयारि।

(16) 1. A जुजिवि; P हुजेवि। 2. AP णिव। 3. A कज्जइ व। 4. A णिज्जइ व। 5. A महिउ 6. P परणउ।

सुणि भारहि चारणजुयलि पुरि जिणधम्मपहाउज्झियविहुरि ।
 तहि अत्थि सुजोहणु दिण्णदिहि महएवि तासु णामें अत्तिहि ।
 सुय सुलस सुलकखण जहि जि जहि दीसइ⁷ भल्लारी तहि जि तहि ।
 तहि णिरुवमु रूउ गुणरघविउं णिउणें विहिणा कहि णिम्मविउं । 10

घत्ता—णडवेयालियछत्तबंदिणघोसाऊरिउं ॥

ताहि सयंवर जाउ सयर⁸ राउ हक्कारिउ ॥ 16 ॥

17

सो कोसल मेल्लिवि णीसरिउ पहपरहरि¹ मज्जणि संचरिउ ।
 दप्पणि अबलोइउ सिरपलिउं² णवचंपयतेल्लें विच्छुलिउं ।
 राएण वुत्तु कि परिणयणु एवहि कि छिप्पइ तरुणियणु ।
 थेरत्तणि परिहउ पेम्मविहि³ विसहिज्जइ वर तवतावसिहि ।
 ता तहु धाईइ किसोयरिइ पडिवयणु दिण्णु मंदोयरिइ । 5
 सियकेमें चंगउ दीसिहइ तुह⁴ सिरिहरि संपय पडसिहइ ।
 तें वथणे महिवइ पुणु चालेउ गरुडइउ णहयलि परिघुलिउ ।
 दियहेहि पराइउ तं णयर ससुरग्गाइ संथुउ णिवसयर⁵ ।
 जाइवि धाईइ मंदोयरिइ सइ दिण्ण कण्ण तुच्छोयरिइ ।

असत्य विचार किया है। आप सुनिए कि भारतवर्ष के जिन धर्म के प्रभाव से दुःखों से रहित चारणयुगल नगर है, उसमें सुयोधन नाम का भाग्यशाली राजा था। उसकी अतिथि नाम की महादेवी थी। उसकी लक्षणवती सुलसा नाम की लड़की इतनी सुन्दर थी कि उसे जहाँ देखो वहीं भली दिखती थी। गुणों से युक्त उसके अनुपम रूप को चतुर विधाता ने बड़ी कठिनाई से बनाया होगा।

घत्ता—उसका वहाँ नटों-बैतालिकों, छत्रों-बंदीजनों के घोषों से आपूरित स्वयंवर रचा गया और उसमें राजा सगर को बुलाया गया।

(17)

वह (सगर) कौशल देश को छोड़कर चला। उसने स्नान करते समय उत्कृष्ट प्रभा को धारण करने वाले दर्पण के प्रतिबिम्ब में अपने सिर के सफेद बाल को देखा, जो चंप्पे के नये तेल से चमक रहा था। राजा ने कहा कि विवाह से क्या? इस अवस्था में तरुणी जन को क्या छुआ जाए! बुढ़ापे में प्रेम प्रक्रिया पराभव का कारण है, अब श्रेष्ठ तप की तपस्या को सहन करना चाहिए। तब उसकी कुशोदरी धाय मंदोदरी ने प्रत्युत्तर में कहा कि सफेद बाल से तुम अच्छे दिखोगे और तुम्हारे श्रीगृह में संपत्ति प्रवेश करेगी। उसके वचन सुनकर राजा फिर चल पड़ा, उसका गरुड-ध्वज आकाश तल में फहराने लगा। कुछ दिनों में राजा सगर उस नगर में पहुँचा और अपने ससुर के सामने बैठ गया। क्षीण कठिवाली धाय मंदोदरी ने जाकर स्वयं कान दिए (बात सुनायी)।

7. AP अबलोइय मारइ तहि जि तहि । 8. AP सयर राउ ।

(17) 1. A पह पुरिवहि । 2. AP सिरि पलिउ । 3. A पेम्मणिहि । 4. AP तहु । 5. A णिउ । सयर; P णिउ सगर ।

घत्ता—कण्णइ गुणसंदोहे हियवउं सयरि णिहित्तउं ॥

मायइ विहसिधि ताम अवर पडुत्तरु वुत्तउं ॥17॥

10

18

सुणि देसि सुरम्मइ सहलवणि
बाहुबलिणराहिवसंतइहि
तिणपिगु तासु पिय सुजसमइ
तहि तणउ तणउ णं कुसुमसरु
महुपिगु णामु¹ तुह मेहुणउ
अण्णेत्तहि² म करहि रमणमइ³
णियभाइणेज्जु वरु इच्छियउ
सासुयइ पइत्तु समारियउं⁴
अण्णेक्कं सयरहु साहियउं
अं कण्णारयणु समहिलसिउं

पोयणपुरि धणपरिपुण्णजणि ।
जायउ महु बंधु कुलुण्णइहि ।
वीणारव णं मणसियहु रइ ।
तरुणीयणलाइयविरहजरु ।
सुइ अच्छइ आयउ पाहुणउ ।
तुह जोगु जुवाणउ सो जिज लइ ।
अण्णेक्कु असेसु दुगुंछियउ ।
पडिवक्खागमणु णिवारियउं ।
अ आहरणोह पसाहियउं ।
तं दुल्लहु वट्टइ विहिवसिउं ।

5

10

घत्ता—अतिहीदेविहि बंधु जो तिणपिगलु राणउ ॥

महुपिगलु तहु पुत्तु आयउ मयणसमाणउ ॥18॥

घत्ता—कन्या ने गुणों के समूह राजा सगर में अपना हृदय स्थापित कर दिया। परन्तु उसकी माता ने हँसते हुए उसे (कन्या को) दूसरा ही उत्तर दिया।

(18)

सुफल वन वाले सुरम्य देश में वन से परिपूर्ण लोगों वाला पोदनपुर नगर है, उसमें बाहुबलि राजा की वंश परम्परा में कुल की उन्नति करने वाला मेरा भाई तृणपिग है। उसकी यशोधरी नाम की पत्नी है। वीणा के समान शब्द वाली जो मानो कामदेव की रति है, युवतीजनों को विरहज्वर उत्पन्न करने वाला मधुपिगल नाम का उसका कामदेव के समान पुत्र है। वह तुम्हारे मामा का बेटा पाहुता बनकर आया है, और यहाँ अच्छी तरह है। इसलिए तुम किसी दूसरे में रमण की बुद्धि न करो। वह तुम्हारे योग्य युवक है, उसी को तुम ग्रहण करो। अपने भाई के पुत्र को वर के रूप में पसन्द करो और बाकी सबकी उपेक्षा कर दो। इस प्रकार सास ने अपना प्रयत्न शुरू कर दिया और प्रतिपक्ष (सगर) का वहाँ आना मना कर दिया। किसी दूसरे ने जाकर राजा सगर से कहा—जो तुमने अलंकारों से प्रसाधन किया है, और जो कन्या की इच्छा की है, वह भाग्य के बल से असंभव दिखाई देती है।

घत्ता—अतिथि देवी का भाई जो तृणपिगल नाम का राजा है, उसका कामदेव के समान मधुपिगल नाम का पुत्र आया हुआ है।

6. AP णिहित्तउं ।

(18) 1. A णाउं तसु पेहुणउ । 2. A अण्णहे तहे । 3. A रमणरइ । 4. A सवारियउ; P संवारियउ ।

19

देहिति तासु सुय जाहि तुहुं
गुरु चवइ एउ किर कित्तडउं¹
जइ णउ परिणावमि कण्ण पइं
इव भणिवि कळु कइणा विहिउ
तं कासु वि कहि मि ण दावियउं
बहुवणविचित्तचीरपिहिउं³
हलियहि हलि हत्यु जेत्यु णिहिउ
कउ⁶ वडिइयतणकट्ठयरहिउ
वावारिय कम्म करंति जहि
आयडिठवि णीय णिहेलणहु
उग्घाडिय पोत्थउं जोइयउं

ता पहुणा जोइउं मंतिमुहुं ।
महुं तिहुयण² सरिसव जेतुइउं ।
तो मंतित्तणु किउं काइं मइं ।
वरलक्खणु दलसंचइ लिहिउ ।
मंजूसहि तेण छुहावियउं ।
णिवउववणमहियलि संणिहिउं ।
जहि छुहु भूभाउ समुल्लियउं⁴ ।
जहि पग्गहि धवल् परिग्गहिउं⁵ ।
णंगरि⁷ मंजूस विलम्भ तहि ।
दक्खालिय पहुहि सुजोहणहु ।
अण्णेक्के भल्लउं वाइयउं ।

5

10

घत्ता—दियवरवेसें दुवकु कह⁸ पच्छणु सरायइ ॥

वरइत्तहु सामुहु भासइ कोमलवायइ ॥19॥

20

काणकुटपिगलाहं
णिद्धणाहं णिब्बलाहं

अंधमूयपंगुलाहं ।
बुद्धिहीणवेभलाहं ।

(19)

तुम जाओ । कन्या उसे (मधुपिगल को) दी जाएगी । तब राजा ने मंत्री का मुख देखा । तब गुरु ने कहा—यह मेरे लिए कितनी-सी बात है, मेरे लिए त्रिभुवन सरसों के समान है । यदि मैं तुम्हारा कन्या से विवाह न कराऊँ तो मैंने मंत्रीपन क्या किया ? ऐसा कहकर कवि मंत्री ने एक उत्तम लक्षणों का काव्य बनाया और उसे पत्रसंपुट पर लिखा । उसे उसने कहीं भी किसी को नहीं दिखाया और मंजूषा में रख दिया । नाना रंग के विचित्र वस्त्र से ढकी हुई मंजूषा को राजा के उद्यान की धरती में गाड़ दिया । किसान द्वारा हल पर हाथ रखते ही जहाँ शीघ्र भू-भाग जुत जाता है, जहाँ धरती गड़े हुए तिनकों और कठोरता से रहित है, जहाँ बैल लंगामों से ग्रहीत हैं, वहाँ किसान खेती का काम करते हैं और उनके हल में मंजूषा आ लगती है । वे उसे उठाकर अपने घर ले आये और उन्होंने अपने अच्छे योद्धा राजा को उसे दिखाया । खोलकर पोथी देखी गई और कई लोगों के द्वारा वह अच्छी तरह बाँची गई ।

घत्ता—द्विजवर (ब्राह्मण) के वेश में कवि रूपी मंत्री प्रच्छन्न रूप में वहाँ पहुँचा और राग पूर्वक कोमल वाणी में वर को सामुद्रिक-शास्त्र बताते लगा ।

(20)

काले, पीले, अन्धे, गूँगे, निर्धन, निर्बल, बुद्धिहीन, पायल, मान और लज्जा से रहित और

(19) 1. A कित्तलउं; P केसडउं । 2. A तिहुयणु सरिसउ । 3. A चीरु पिहिउ । 4. AP समुल्लिहिउ ।

5A omits this foot. 6. P adds after this : वंसालग्ग राइ णिरु गहिउ । 7. A लगगलि; P लंगलि । 8. A कहकयपच्छण ।

(20) 1. A 'विब्बलाहं; P 'विमलाहं ।

माणलज्जवज्जियाहं	रोयभावणिज्जियाहं ।	
कुट्ठणट्ठकाययाहं	छिण्णपाणिपाययाहं ।	
णीयकम्मकारयाहं	इत्थिडिभमारयाहं ॥	5
णिग्घिणाहं णिइयाहं	साहुकम्मणिदयाहं ।	
वड्ढमाणदुज्जसाहं ²	दुक्कुलाहं सालसाहं ³ ।	
दुड्ढकुच्छियंगयाहं ⁴	दीणभावनं गयाहं ।	
गोत्तवित्तवत्त जा वि	दिज्जए ण कण्ण सा वि ।	
घत्ता—मंडवमज्झि विवाहि पिगलु जो पइसारइ ⁵ ॥		10
सो ⁶ विहवत्तणु दुक्खु णियधीयहि वित्थारइ ॥20॥		

21

ता सो महुपिगलु लज्जियउ	गउ चामरछत्तविवज्जियउ ।	
एक्किल्लउ ¹ लिह्विकवि बंधवहं	लगगउ दहदुविहहं जिणतवहं ।	
सेवइ हरिसेणगुरुहि पयइ	णिवखवइ अणंतइं दुक्कियइं ।	
एत्तहि सो सयरु वि बालियइ	वरु लइउ सयंवरमालियइ ।	
अणुहुंजिवि ² तहिं णववहुसुरउ	पुणु आमेल्लेप्पिणु सासुरउं ।	5
उज्झाउरि जाइवि पाणपिउ	सिरि सुलसइ सहुं भुंजंतु थिउ ।	
महुपिगु भडारउ कहि मि पुरि	पइसइ ³ भिक्खहि चउवण्णघरि ।	
जा ⁴ तावेक्कें विप्पें कहिउ	सामुद्दु असेसु सच्चरहिउ ।	

रोगों से पराजित, कोढ़ी, क्षीण शरीर, कटे हाथ-पैर वाले नीच कर्म करने वाले, स्त्रियों और बच्चों की हत्या करने वाले, निर्दय, घिनौने, अच्छे कामों की निन्दा करने वाले, बढ़ते हुए अपयश वाले, खोटे कुल वाले, आलसियों, बढ़ती हुई खूजली से युक्त शरीर वाले, दीन भाव को प्राप्त, उनको तथा ऐसे लोगों को तो कुल और धन से रहित कन्या भी नहीं दी जाती ।

घत्ता—जो व्यवित मंडप के भीतर विवाह में पिगल का प्रवेश कराएगा वह अपनी कन्या के लिए, दुःख और बंधव्य लाएगा ।

(21)

इससे बेचारा मधुपिगल लज्जित हुआ और चामरों और छत्रों से रहित होकर चला गया । वह अकेला अपने बंधु और बांधवों से छिपकर जिनेन्द्र भगवान् द्वारा कहे गए बारह प्रकार के तप में लग गया । वह हरिषेण के चरणों की सेवा करने लगा । और इस प्रकार अनन्त दुःखों का क्षय करने लगा । यहाँ भी उस बाला ने स्वयंवरमाला के द्वारा सगर को वर रूप में ग्रहण कर लिया । वह भी वहाँ नवबधू के साथ सुरति का भोग कर फिर समुराल छोड़कर अयोध्या नगरी में जाकर प्राणप्रिय श्री सुलसा के साथ आनन्द करता हुआ रहने लगा । जिसमें चारों प्रकार के वर्णों के घर हैं ऐसी उस नगरी में आदरणीय मुनि मधुपिग ने भिक्षा के लिए जैसे ही प्रवेश

2. A दुज्जणाहं । 3. A दुम्मुहाहं । 4. A कुच्छियारयाहं । 5. A वइसारइ । 6. P omits सो ।

(21) 1 AP एक्किल्लउ । 2. A अणुहुंजहि; P अणुभुंजहि । 3. AP पइसरइ । 4. A जा ता विप्पें एक्कें ।

रिसिसीलु एण अवलंबियउं लच्छीमुहु काइं ण चुंबियउं ।
अवरेक्के ता तहिं भासियउं पइ लक्खणु किं किर णिरसियउं । 10

घत्ता—सुणि^५ पोयणपुरि राउ होंतउ एहु महीसरु ॥

गउ सुलसावरयालि चारणजुयलउं पुरवरु ॥21॥

22

पिउसससुय परिणइ जाभ किर ता सयरमंतिकयकवडगिर ।
पोत्थइ वित्थारिविं दक्खविय^१ विवरिवि बहुसइसमग्घविय ।
सांसुयससुरहं मणु हारियउं इहु पिगदिट्ठिणीसारियउं ।
अप्पुण पुणु खलु वरइत्तु थिउ तेणेयहु दुक्खणिहाणु किउ ।
तं णिसुणिवि हियवइ कुद्धु जइ जिणदेसिउ तवहलु अत्थि जइ । 5
पाविट्ठु दुट्ठु खलु खुइमइ मइ पुरउ हणेव्वउ सयरु तइ ।
रिसि रोसु भरंतु भरंतु मुउ असुरिदहु वाहणु देउ हुउ ।
सो सट्ठिसहसमहिसाहिवइ किं वण्णमि महिसाणीयवइ ।

घत्ता—जिणवरधम्मू लहेवि खमभावे परिचत्तउ ॥

खणि सम्मत्तु हणेवि सुरदुग्गइ संपत्तउ ॥22॥

10

किया, वैसे ही एक ब्राह्मण ने कहा—“सारा ज्योतिष-शास्त्र झूठा है। इसने (मधुपिंग) मुनि का आचरण स्वीकार किया है। इसने लक्ष्मी का मुख क्यों नहीं चूसा?” तब एक और ब्राह्मण ने कहा, “तुमने लक्षण-शास्त्र की निन्दा क्यों की?”

घत्ता—सुनो, यह पोदनपुर का राजा होता हुआ सुलसा के स्वयंवर समय में चारणयुगल नामक महानगर गया हुआ था।

(22)

पिता की बहन की बेटी का जब वह विवाह करने लगा तो सगर के मंत्री के द्वारा विरचित कपट वाणी से युक्त पोथी खोलकर और दिखाकर अनेक शब्दों से युक्त उसकी व्याख्या कर सास-ससुर का मन ठग लिया गया और पिंग दृष्टि वाले इसे निकाल दिया गया। दुष्ट राजा सगर खुद वर बन बैठा और इस प्रकार उसने इसे दुःखों का पात्र बनाया। यह सुनकर मुनि हृदय में क्षुब्ध हो उठा और बोला कि यदि जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा कहे गए तप का कोई फल होता हो तो यह दुष्ट पापी, छोटी बुद्धि वाला सगर मेरे सामने मारा जाए। मुनि इस प्रकार क्रोध धारण कर और याद करते हुए मर गया और असुरेन्द्र का वाहन देवता हुआ। साठ हजार महिषों का अधिपति और महिषों का सेनापति उनका क्या वर्णन करूं।

घत्ता—जिनवर का धर्म धारण कर, किन्तु क्षमाभाव से रहित वह व्यक्ति एक क्षण में सम्यक् दर्शन का हनन कर देव दुर्गति को प्राप्त हुआ। इसलिए क्रोध नहीं करना चाहिए।

5. A मुणि ।

(22) 1. A दिक्खविय । 2. A णिहाउ ।

23

पुणु तवखणि असुरें जाणियउं
जिह मामिहि मामहु हित्त मइ
जिह गहिय तणूयरि मंदगइ
सहुं मंतिहि साकेयाहिवइ
इय^१ चित्तिवि तंबिरलोयणु
मुहकुहरविणिगयवेयसुणि
सुलसावइजीवियसिरिहरहु
जायउ सहाउ जो दुम्मयहु
उत्तंगसत्तधरणियलघरि
विस्सावसु राणउ विमलजसु

जिह कव्वु करेप्पिणु आणियउं ।
जिह पिगें पडिवण्णी विरइ ।
तिह एवहि धुउ पावमि कुगइ ।
कहि एवहि वच्चइ^२ लद्धु लइ ।
जायउ सो सालंकायणउ ।
हिसालउ दूसियपरममुणि ।
तहि तासु महाकालासुरहु ।
आयण्णहु तहु कहु^३ पव्वयहु ।
एत्थेव खेत्ति सावत्थिपुरि^४ ।
तहु सिरिमइदेविहि पुत्तु वसु ।

5

10

धत्ता—णामें क्षीरकलंबु दियवरु सत्थवियारउ ॥

तासु चट्ठु वसु जाउ पव्वउ अवरु वि णारउ ॥23॥

24

सहुं सीसहिं सो परमायरिउ
अवभावयासणिदठवियणिसि

एक्कहि दिणि काणणि अवयरिउ ।
उवविट्ठउ दिट्ठउ तेत्थु^१ रिसि ।

(23)

तब उसी समय उस असुर ने जान लिया कि किस प्रकार काव्य रचकर लाया गया था, किस प्रकार मामा^१ और माभी की बुद्धि को ठगा गया, और किस प्रकार मधुपिगल ने वैराग्य धारण किया, किस प्रकार मंद गति कन्या ग्रहण की गई, और किस प्रकार मैं कुगति को प्राप्त हुआ । साकेत नगर का राजा सगर इस समय मंत्रियों के साथ बचकर कहीं जाएगा । मैं उसे अभी लेता हूँ । फिर विचार कर वह लाल आँखों वाला सालंकायण नाम का ब्राह्मण हो गया । जिसके मुख बिबर से वेद-वाणी निकल रही है, जो हिसक परम मुनि को दूषित करने वाला है, सुलसा के पति (सगर) के जीवन रूपी लक्ष्मी का हरण करने वाले उस महाकाल सुर का जो सहायक बन गया ऐसे छोटे मद वाले प्रवर्तक ब्राह्मण की कथा सुनो ! इसी भरतक्षेत्र में ऊँचे सात धरणीतल वाले घरों से युक्त श्रावस्ती नगरी में विमल यश वाला विश्वावसु नाम का राजा था । उसकी श्रीमती नाम की पत्नी से वसु नाम का पुत्र था ।

धत्ता—उस नगर में क्षीरकदम्ब नाम का शास्त्रों का विचार करने वाला श्रेष्ठ ब्राह्मण था, राजा वसु, प्रवर्तक और एक और नारद उसके चेले बन गए ।

(24)

अपने शिष्यों के साथ वह महान् आचार्य क्षीरकदम्ब एक दिन जंगल में गए । बादलों से रहित आकाश के अंतराल में जिन्होंने रात्रि अतीत की है, ऐसे एक मुनि को उन्होंने बैठे हुए देखा ।

(23) 1. A अण्णइ लद्धु जइ । 2. P तं चित्तिवि । 3. A कयकव्ययहु । 4. AP उत्तुंग^१ । 5. सावत्थिपुरि; P सावत्थिपुरि ।

(24) 1. A तेण ।

1. ससुर और सास ।

उज्झाए पणविवि पुच्छियउ
तीहिं वि दियवरछत्तहं तणउ
वसु पव्वय पारयधरणिपलि
जिणणाणसुणिच्छउ² मणि वहइ
तं गिसुणिवि गुरु उव्विग्गमणु⁴
खेलंतु दिएसैं धाडियउ
कंपंतरेइ मूढदाइणिहि

भवियव्वमणु³ सुणियच्छियउ ।
आहासइ मुणि पणट्ठपणउ ।
पडिहिंति दो वि कयजण्णफलि ।
णारउ सव्वत्थसिद्धि लहइ ।
आयउ पुरु थिय भूसिवि भवणु ।
अण्णहिं दिणि लट्ठिइ⁵ ताडियउ ।
वसु विसइ सरणु उज्झाइणिहि ।

5

घत्ता—पत्थिवि रविखउ ताए कंत म तासहि बालउ ॥
पत्थिवपुत्त सुसीलु कमलगडभसोमालउ ॥24॥

10

25

घरणिहि वघणें वरु ओसरिउ
महुं उप्परि एंतउ कुद्धमणु
तं गिसुणिवि इज्जइ भासियउं
जइयहुं मग्गहि तइयहुं जि वरु
वउ³ लेतें संतें पीणभुउ

सिसु चवइ माइ पइ गुरु धरिउ ।
भणि¹ एव्वहिं² दिज्जउ वरु कवणु ।
महुं पुत्त चित्तु संतोसियउं ।
तुहुं देज्जसु धवलबलूढभरु ।
विस्सावसुणा कमि णिहिउ सुउ ।

5

उपाध्याय ने प्रणाम करके उनसे अच्छी तरह से निरीक्षित अपना भावी मार्ग पूछा । अपनी प्रतिज्ञा को भंग करते हुए मुनि उन द्विजवरों और क्षत्रियों का भविष्य बताने लगे—राजा वसु और पवर्तक नरक की धरती में पड़ेंगे क्योंकि दोनों ने अपने यश का फल कमा लिया है । नारद जिन ज्ञान के निश्चय को अपने मन में धारण करता है, इसलिए सर्वार्थसिद्धि प्राप्त करेगा । यह सुनकर अत्यन्त उद्विग्न मन से राजा घर आया और भवन की शोभा बढ़ाकर रहने लगा । एक दिन खेलते हुए उसे (वसु को) ब्राह्मण ने निकाल दिया । क्षीरकदम्ब ने एक और दिन उसे लाठी से पीटा । धर-धर कांपता हुआ राजा वसु शुभ करने वाली गुरु पत्नी की धारण में चला गया ।

घत्ता—उसने राजा की रक्षा की और कहा कि हे स्वामी, इस बालक को ताड़ित मत करो । राजा का यह लड़का सुशील है, और कमल के मध्य भाग की तरह कोमल है ।

(25)

अपनी पत्नी के शब्दों से पति हट गया । बालक कहता है कि हे माँ, तुमने गुरु को रोक लिया । क्रुद्ध मन मेरे ऊपर आते हुए । कहो इस समय मैं कौन-सा वर दूँ ? यह सुनकर आदरणीया माँ ने कहा—पुत्र, मेरा चित्त संतुष्ट हो गया । जिस समय मैं वर मांगूँ तब उस समय मुझे देना । इस प्रकार अत्यन्त महान् और बलिष्ठ बाहुवाला राजा वसु यह व्रत लेने पर अपने पिता विश्वावसु के द्वारा कुल परम्परा में स्थापित कर लिया गया । वह अपने सहचरों और

2. A भवियव्वमणु । 3. A 'णाणि विणिच्छउ; P 'णाणु विणिच्छउ । 4. A उव्विग्गमणु ।

5. AP पीडियउ । 6. A लट्ठे ताडियउ ।

(25) 1. AP भणु । 2. A एव्वहिं । 3. AP वउ ।

सहुं सहयरींकरहिं रमइ
पक्खिलसु णहंगणि पक्खलइ
णीरुवु ण णहयसु पइ धरइ
इय चित्तिवि तेण विमुक्कु सरु
आयासफलिहमउ खंभु^४ हउ
परिमट्ठउ हत्थे जाणियउ
तहु खंभहु उप्परि हरिगीहि^५

अवरहिं दियहुल्लइ वणि भमइ ।
पहु पेक्खइ तं तहिं पडिलवइ^४ ।
पक्खलणहु कारणु संभरइ ।
धणुगुणु^५ आयडिडवि पिच्छधर ।
उच्छलिवि बाणु धरणियलि गउ ।
उच्चाइवि भवणहु आणियउ ।
सइ चडियउ कंचणमयइ पीडि^६ ।

10

धत्ता—आसं गुं भलइ ण किं पि जणु जणु जणवइ पयडइ ॥

धम्मं णियसच्चेण वसु गयणाउ ण णिवडइ ॥25॥

26

अण्णेक्कहिं^१ वासरि विविहहलु
चंदकउ कलाउ ण जलि करइ
पत्तइं तित्ताइं^२ मयूरियहं
इय तेण कज्जु परिहञ्छियउं
कइ णीलकंठ सुविचित्तियउ
सो ण मुणइ ण भणइ पहि चरइ
सिहिणीउ सत्त इह एककु सिहि

णारय पक्खय गुरुगिरिगुहिलु^३ ।
पच्छाउहपायहिं^३ ओसरइ ।
सरिवारिपवाहाऊरियहं ।
पुणु मित्तहु वयणु णियच्छियउं ।
भणु पक्खय मोरिउ केत्तियउ ।
विहसेप्पिणु णारउ वज्जरइ ।
ओसरिउं सरहु जो पिच्छणिहि ।

5

किकरों के साथ क्रीड़ा करता है और दूसरे के साथ दिन में घूमता है। आकाश के आंगन में पक्षिकुल स्खलित होता है। राजा उसे देखता है। वह वहीं कहता है कि आकाश अरूप है, वह दूसरों को धारण नहीं कर सकता। वह उसके स्थिर होने का कारण सोचता है। यह विचार कर धनुष की डोरी खींचकर अपना पंख वाला तीर छोड़ा। उससे आकाश में स्थित स्फटिक वाला खंभा आहत हो गया, और बाण भी उछलकर धरती पर गिर पड़ा। हाथ से छूकर उसने जाना और उठाकर अपने घर ले आया। सिंहों के द्वारा धारण किये गये उस खंभे पर, उसकी स्वर्णमय पीठ पर वह चढ़ गया।

धत्ता—जनपद में लोगों को यह बात विदित हो गई कि आसन अणु मात्र भी नहीं हिलता। धर्म से और अपने सत्य से राजा वसु आकाश से भी नहीं गिर सकता।

(26)

एक दूसरे दिन नाना फल वाले विशाल पहाड़ की गुफा में नारद पर्वतक गये। वसु ने कहा कि मयूर जल में अपने पंख नहीं करता। वह अपने पिछले पैरों से हट जाता है। तालाब के पानी के प्रभाव से प्रवाहित मयूरों के पंख गीले हैं। इस प्रकार उसने असली बात छिपा ली। और फिर मित्र का मुख देखा, हे पर्वतक, बताओ कि विचित्र पंखों वाले मयूर कितने हैं और मयूरियाँ कितनी हैं। वह कुछ नहीं सोचता न कहता और रास्ते पर चलता है। नारद हँसते हुए कहता है कि यहाँ एक मयूर और सात उसके मोर हैं जो पंखों के समूह वाला तालाब से हट गया है। प्रखर

4. P पडिलवइ । 5. AP धणुगुणि । 6. AP धंभु । 7. A हरिबीडि; P हरिहि गीडि । 8. बीडि ।
(26) 1. A ता एककहि । 2. AP गय गिरिगुहिलु । 3. P पक्खामुह^३ । 4. A सित्ताइं (तित्ताइं ?)
5. AP ओसरइ ।

बहुबुद्धिगहीरें पीलुरय पयलंतपेम्मजलसित्तरय ।
 पयमगों जाणिय हृत्थिणिय अवर वि आरुढणियंबिणिय ।
 पुच्छिवि पव्वउ पुरि पइसरिवि गउ तवखणि मच्छरु⁶ मणि धरिवि ॥ 10

घत्ता—अक्खइ मायहि नेहि णिह ताएं संतरविउ ॥
 हुं ण पढाविउ कि पि णारउ चारु पढाविउ ॥26॥

27

सो जाणइ अम्म¹ असिट्ठाइं वणि मोरिगियइं अदिट्ठाइं ।
 करिकरिणिहि पयबिबइं कहइ ता बंभणि रोसु चित्ति वहइ ।
 सहं कंते पयडियगरहणउं विरइउ कोणीहलकलहणउं ।
 पइं काइं वि पुत्तु ण सिक्खविउ पराडिभु जि सत्थमग्गि थविउ ।
 तं णिसुणिवि भट्ठे² घोसियउं अलिकंकहं केणुववेसियउं ।
 मयरंदगंधमीणाहरणु हंसहं वि खीरजलपिहुकरणु ।
 सुउ तेरउ सुंदरि मंदु जहु णारउ पुणु ससहावेण पडु ।
 इय पभणिवि पिट्ठे³ मेस कय सुय भासिय जणणें णवियपय ।
 ए वच्छ लएप्पिणु तरुगहणि पइसरिवि दूरु पविमुक्कजणि⁴ ।
 जहि को वि ण पेक्खइ धुवु मुणिवि तहि आवहु बिहि वि कण्णु⁵ लुणिवि । 10

बुद्धि से गंभीर उसने (वसु ने) पग-चिह्नों के मार्ग से जान लिया कि हाथी में रत तथा झरते हुए प्रेम-जल से धूल पोंछती हुई एक हथिनी है और उसके ऊपर एक स्त्री बैठी हुई है। तब पर्वतक उससे पूछकर नगरी में प्रवेश कर अपने मन में ईर्ष्या धारण कर चला गया।

घत्ता—वह अपनी मां से कहता है कि घर में मुझे पिता ने अधिक सताया है। मुझे कुछ भी नहीं पढ़ाया, नारद को खूब पढ़ाया।

(27)

हे मां, वह (नारद) बिना कहे, बिना देखे वन में मयूर के चिह्नों को पहचान लेता है। हाथी और हथिनियों के चिह्नों को कहता है। यह सुनकर ब्राह्मणी मन में क्रुद्ध हो गई। जिसमें निंदा प्रकट है, ऐसा छोटा-मोटा जगड़ा उसने पति के साथ किया कि तुमने मेरे बच्चों को क्यों नहीं सिखाया। दूसरे के बच्चों को तुमने शास्त्र मार्ग में स्थापित कर लिया। यह सुनकर बेचारे ब्राह्मण ने कहा : बताओ भाई और बगुलों को पराग-गंध और मीनों का अपहरण करना किसने सिखाया ? हंसों को दूध से पानी अलग करना किसने सिखाया ? हे सुन्दरी, तेरा पुत्र मूर्ख और जड़ है। जबकि नारद स्वभाव से पंडित है। ऐसा कहकर उसने आटे के दो मेढ़े (ढेर) बनाए और पैरों में जणाम करने वाले अपने पुत्र से कहा : हे बेटे, इसे ले जाकर घने जंगल में प्रवेश कर खूब दूर जहाँ एक भी आदमी न हो, जहाँ कोई भी न देख सके, इस प्रकार अपने मन में

6. AP मणि मच्छर ।

(27) 1. AP अदिट्ठाइं । 2. AP कोलाहल¹ । 2. AP परिमुक्कजणि । 3. AP कण्ण ।

तं विसुणिवि⁴ जाइवि विविणवहि⁵ पच्छण्णं थाइवि⁶ खखरहि ।
कर मउलिवि जोइणि का वि धुम पव्वइण उरब्भहु कण्ण लुय ।

वत्ता—इयरे पइसवि दुग्गे चित्तिउं चंदादिवायर ॥
इह गियंति पसु पक्खि किणर जक्ख णिसायर⁷ ॥27॥

28

जहि गच्छमि तहि तहि अत्थि पर	जइ णर णउ तो पेक्खइ अमर ।
किह कण्ण ¹ उरब्भहु कत्तरमि	घरु गंपिणु तायहु वज्जरमि ।
गय वेणिण वि पेसणु अप्पियउ	णारयकिउ चारु वियप्पियउ ।
विप्पेण वूत्तु हलि हंसगइ	अवलोयहि तुहु णंदणहु मइ ।
जहि गम्मइ ताहि असुण्णु णिलउ	पसुसवणहं किह विरइउ विलउ ।
सुरगुव वि समाणु ण णारयहु	सइ एहु वि जोगउ गुरुवयहु ² ।
सुय ³ धरिणि वि तामु समप्पियइ	वसुराएं सहं नपिवि पियइ ।
तवचरणु जिणागमि संचरिवि	दिउ मुउ थिउ दिव्वबोंदि धरिवि ।
बहुकाले ⁴ विहि वि हेउभरिउ	पारद्धु विवाउ पवित्थरउ ⁵ ।
णारउ अय ⁶ जव तिवरिस चवइ	तं पव्वउ वयणु अइक्कमइ ।

5

10

निश्चित कर वहाँ इसके दोनों कान काट कर ले आओ । यह सुनकर एकान्त पथ में जाकर पेड़ों में छिपकर हाथ जोड़कर उसमें किसी योगिनी की मुद्रि की और मेढ़े के कान काट लिये ।

वत्ता—दूसरे ने दुर्गम स्थान में प्रवेश कर मन में विचार किया कि यहाँ भी सूर्य और चन्द्रमा देखते हैं, और पशु, पक्षी, किन्नर, यक्ष, निशाचर भी ।

(28)

मैं जहाँ जाता हूँ वहाँ-वहाँ दूसरा आदमी है । यदि आदमी नहीं देखता है तो देवता देखता है, मैं मेढ़े के कान कहीं काटूँ ? मैं घर जाकर आचार्य से कहूँगा । वे दोनों गये और अपनी-अपनी सेवा का निवेदन किया । नारद का कहा हुआ सुन्दर माना गया । ब्राह्मण ने ब्राह्मणी से कहा : हे हंस की चाल वाली, अपने बेटे की अक्ल देखो किसी भी स्थान को जाया जाए, वह सूना नहीं है, फिर इसने मेढ़े के कान को किस प्रकार काटा । नारद के समान बृहस्पति भी नहीं है, अतः यही गुरुपद के योग्य है । उन्होंने अपना पुत्र और गृहिणी भी नारद के लिए सौंप दी और राजा वसु के साथ प्रिय बातचीत कर जैन-शास्त्रों के अनुसार तप का आचरण कर वह ब्राह्मण देव शरीर धारण कर (स्वर्ग में) स्थित हो गया । बहुत समय के बाद उन दोनों ने युक्तिपूर्वक विवाद किया जो बहुत बढ़ गया । नारद कहता है कि तीन साल के जो को अज कहते हैं, लेकिन पर्वतक इस

4. AP जाय विणिमुणिवि । 5. AP वियणवहि । 6. AP थाइवि । 7. A किवापर ।

(28) 1. AP कण्णु । 2. A गुरुवयहु । 3. AP सुउ । 4. AP बहुकालहि । 5. AP पवित्थरिउ । 6. A अइजव ।

अय पसु भणंतु सो वारियउ अवरेहि बुहेहि णीसारियउ ।
 गउ मच्छरेण थरहरियतणु संपत्तउ णीलतमालवणु ।
 घत्ता—तहि दियवरवेसेण पव्वएण सो दिट्ठउ ॥
 असुरपुईय पढंउ दत्तजि सिल्लहि णित्तिहुउ ॥28॥

29

मणपणयपसंगुप्पायणउं¹
 बुद्धेण वि पडिअहिवाउ² किउ
 सुय जायउ जाणिउ कि ण पइं
 दोहि मि सुभउभु गुरु सेवियउ
 आयउ किर जोइहुं तासु मुहुं
 लइ जणमहाविहिकारियहं
 सयराइराय अम्भुद्धरहि
 हउं कंचुइ³ अज्जु परइ मरमि
 दियतरुणि ता तहु इच्छियउं
 पुरदेसहं घल्लिउ मारि जरु
 गय बेणिण वि तं कोसलणयरु

तें⁴ तासु कयउं अहिवायणउं⁵ ।
 पुणु वुत्तु होउ⁶ तुज्जु जि विणउ ।
 चिरु खीरकलंबे⁷ अवरु मइं ।
 सत्थत्थु असेसु वि भावियउ ।
 ता पवसिउ सो सुउ दिट्ठु तुहुं ।
 सहसाइं सट्ठि पसुवहरियहं ।
 मह⁸ महियलि कारावहि करहि ।
 णियविज्जइ पइं जि अलंकरमि ।
 तं विज्जावाणु⁹ पडिच्छियउं ।
 पहु को वि गवेसइ संतियरु ।
 दोहि वि संबोहिउ णिवु¹⁰ सयरु ।

5

10

वचन का प्रतिरोध करता है। अज को पशु कहते हुए वह मना किया गया। दूसरे पंडितों ने उसे निकाल बाहर किया। ईर्ष्या के बश वह चला गया और जिसमें हरा घास कंपित है, ऐसे नील तमाल वन में पहुँचा।

घत्ता—वहाँ श्रेष्ठ ब्राह्मण के वेश में पर्वतक ने उसे देखा जो पेड़ के नीचे चट्टान पर टा हुआ असुरों के शास्त्र को पढ़ रहा था।

(29)

उसने उसके मन में प्रेम प्रसंग को उत्पन्न करने वाला अभिवादन किया। उस बूढ़ ने भी प्रत्यभिवादन किया और कहा कि तुम्हें भी वित्त प्राप्त हो। हे पुत्र, क्या तुम यज्ञ को नहीं जानते? बहुत पहिले मैं और क्षीरकदंब दोनों ने सुभौम गुरु की सेवा की थी। समस्त शास्त्रार्थ का विचार किया था। मैं उनका मुख देखने के लिए आया था। लेकिन वह प्रवसित हो चुके हैं। हे पुत्र, तुम्हें मैंने देखा है, यज्ञ की महाविधि कराने वाली पशुबंध से संबंधित साठ हजार ऋचाएं लो और सगर आदि राजाओं का उद्धार करो, धरती पर यज्ञ करो और कराओ। मैं तो बूढ़ा आदमी हूँ, कल या परसों मर जाऊँगा। अपनी विद्या से तुम्हीं को अलंकृत करूँगा। ब्राह्मण युवक ने उसे चाहा और उसका विद्यादान स्वीकार कर लिया। मगर और देश में महामारी का ज्वर फैल गया। राजा किसी शांति करने वाले की खोज में रहता है। वे दोनों उस अयोध्या नगर जाते हैं। दोनों ने राजा सगर को संबोधित किया।

(29) 1. A मणे । 2. A तं तासु । 3. P अहिवायणउं । 4. A पडिपणिवाउ । 5. AP होइ । 6. A कयबें । 7. A मह । 8. A कंचु अज्जु । 9. P तें विज्जा । 10. AP णिउ सयरु ।

घत्ता—हृणिवि¹¹ तुरंग मयंग दणुएं दाविय मायइ ॥
कुंडलमउडफुरंत¹² दिट्टु देव गहभायइ ॥29॥

30

अप्पाणउं तहि जि ¹ हृणावियउं	देवत्तु गहंगणि दावियउं ।	
सत्तच्चिणिहित्तइ ² चउपयहं	णिट्टियइं सट्टिसहसइं मयहं ।	
मायारएण जणु मोहियउ	संतीइ सुहेण पयासियउं ।	
हारावलिरुइरंजियधणिय	सुलसा वि तेण ह्वयवहि हृणिय ।	
गोसवि णियजणणि वि अहिलसिय	सउयामणिमहि ³ मइर वि रसिय ।	5
विप्पहं वंभणिवरंगु विहिउं	महुणा लित्तउं जीहइ लिहिउं ।	
नहु वंविण हुरं मेव जड	अवलोयवि होमिज्जंत ⁴ भड ।	
घरु जाइवि तणु वल्लिवि सयणि	पहु सोयइ हा हा मिगणयणि ।	
हा सुलसि काइं मइं तुज्जु किउ	किह जीवियव्वु ⁵ णिहुहिवि णिउ ।	
ता ⁶ तहि जि पराइउ पवरजइ	पुच्छइ पणामु विरइवि णिवइ ।	10
किं धम्म भडारा पसुवहणु	किं सव्वजीवदयसंगहणु ।	

घत्ता—राक्षस ने (महाकाल ने) यज्ञ में हाथी-घोड़ों को होमकर उन्हें मायाबल से आकाश में दिखा दिया । आकाश में कुंडलों और मुकुटों से स्फुरित होते हुए देव दिखाई दिये ।

(30)

उसने अपने को भी यज्ञ में होम कर दिया और आकाश के प्रांगण में देवत्व के रूप में प्रदर्शन किया । आग में डाले गये साठ हजार पशु नष्ट हो गये । उस मायावी के द्वारा लोग ठगे गये । उसने शांति और शुभ के लिए उन्हें प्रकाशित किया । हारावलि की कांति से जिसके स्तन शोभित हैं, ऐसी सुलसा को भी उसने आग में होम दिया । गो यज्ञ में उसने अपनी माता की भी इच्छा की और सोत्रामिणी यज्ञ में मदिरा का पान भी किया । ब्राह्मणों के लिए ब्राह्मणियों के उत्तमांग की रचना की गई मधु से, लिप्त जो जीभ के द्वारा चाटी गई । इस प्रकार उस धूर्त के द्वारा बहुत-से लोग ठगे गये । होमे जाते हुए योद्धाओं को देखकर घर जाकर अपने शरीर को बिस्तर पर डालकर राजा सगर शोक करने लगा—हे मृगनयनी, हे सुरसे, मैंने तुम्हारे लिए यह क्या किया ! मैंने तुम्हारे जीवन को क्यों जला डाला ! इसी बीच एक महामुनि वहाँ पहुँचे । राजा उन्हें प्रणाम कर पूछता है : हे आदरणीय, पशुओं का वध करना धर्म है ? या सब जीवों के प्रति दया करना धर्म है ?

11. A हृणिवि । 12. A "मउल" ।

(30) 1. P तहि तो । 2. P णिहित्तइ । 3. P सोयामणि । 4. A होमिज्जंति । 5. A जीवियव्वु । 6. P तो ।

घत्ता—तं णिसुणिवि करुणेण तेण मुणिद्वे वुत्तउं ॥

होइ अहिंसइ धम्मु हिंसइ पाउ णिरुत्तउं ॥30॥

31

पहु¹ जंपइ पच्चउं दक्खवहि
रिसि भासइ णहयलरंगणडि
णिवडेसहि णरइ म² भंति करि
तं राएं रइयणरावयहु
तेण वि बोत्तिउं मलपोट्टलउं
असुरिद्वे दरिसिय देवि णहि
सो असणिणिहाएं³ घाइयउं
भणु पावें को व ण मारियउं
जं पिगलु हउं पइं दूसियउं
जं वरलक्खणु महुं कयउं छलु

अप्पाणउं किं मुहिइ खवहि ।
तुह सत्तमि दिणि णिवडिहइ तडि ।
किं सग्गु⁴ जंति पसु⁵ खंत हरि ।
आत्तेप्पिणु अविच्चल पावइहु⁶ ।
किं आणइ सवणउं विट्टलउं ।
बिउणारउं लग्गउं पुणु वि महि⁷ ।
वालुयपहमहि संप्राइयउं⁸ ।
रिउणा जाइवि⁹ पच्चारियउं ।
जं णियकरु कण्णइ भूसियउं ।
भुंजहि एवहिं तहु तणउं फलु ।

5

10

घत्ता—पुणु असुरें णहमग्गि मायारूवें हरिसियइं ॥

सा सुलस वि सो सयरु विणिण वि मंतिहि दरिसियइं ॥31॥

घत्ता—यह सुनकर उस महामुनि ने करुणापूर्वक कहा कि अहिंसा से धर्म होता है । हिंसा से निश्चय ही पाप होता है ।

(31)

तब राजा कहता है कि आप इस बात को प्रदर्शित करके बताइये । आप अपने को व्यर्थ ही क्यों खपाते हैं । मुनि कहते हैं कि आकाश के रंगमंच पर नृत्य करनेवाली बिजली सातवें दिन तुम्हारे ऊपर गिरेगी । तुम नरक में जाओगे इसमें भ्रान्ति मत करो । क्या पशुओं को खाने वाला शेर स्वर्ग में जाता है ? तब राजा ने जिसने पशुओं के लिए आपत्तियों की रचना की है ऐसे प्रवर्तक से कहा । उसने कहा कि मल की पोटली वह नीच जैन मुनि क्या जानता है ? असुरेन्द्र ने आकाश में देवी सुलसा को दिखाया । तब राजा दुगुने चाव से फिर यज्ञ में लग गया । वह राजा बिजली के गिरने से मारा गया । और बालुकाग्रभ नरक में पहुंचा । बताओ पाप के द्वारा कौन नहीं मारा जाता ? तब शत्रु ने जाकर उससे कहा कि जिस मुझ मधुपिगल को दूषण लगाया था कि यह पीला है । और जो कन्या के द्वारा अपना हाथ भूषित किया था और जो तुमने मेरे साथ वर के लक्षणों वाला छल किया । इस समय तुम उसका फल भोगो ।

घत्ता—फिर उस असुर ने आकाश मार्ग में माया रूप से हँसते हुए उस सुलसा को, उस सगर के दोनों मंत्रियों के साथ दिखाया ।

(31) 1. A पइ जंपइ सच्चउं । 2. A ण । 3. AP सग्गि । 4. A पसु खंति । 5. AP पच्चयहु; but T पावयहु । 6. A महि; P महे । 7. P णिवाएं । 8. AP संप्राइयउं । 9. P जीयवि ।

32

ता खद्वकदेण	सह तवसिविदेण ¹ ।	
गउ णारओ सेउ	तं णयरु साकेउ ।	
तेणुत्तु दियसीह	पब्बय दुरासीह ।	
वणयरइं मारंतु	अट्टियइं चूरंतु ।	
चम्माइं छिदंतु	वम्माइं भिदंतु ।	5
इसिदिदु सुपसत्थु	जइ वेउ परमत्थु ।	
तइ खागु किं णेय	जज्जाहि कुविवेय ।	
जइ पोरिसेओ वि	णउ होइ भणु तो वि ।	
वण्णज्जुणी गयणि	किं फुरइ णरवयणि ।	
अक्खरइं कहिं बिंदु	कहिं अत्थु कहिं छंदु ।	10
तत्तमणपणत्तेण	विणु पुरिसवत्तेण ।	
कहिं हेउ ³ कहिं वेउ	कहिं णाणु कहिं णेउ ।	
कहिं गयणि अरविंदु	णीरुवि कहिं सद्दु ।	
वेयम्मि कहिं हिंस	दिय मिलियपरमंस ।	15
हिंसाइ कहिं धम्म	जइ मुयहि तुहं छम्मु ।	
कत्तार दायार	जणस्स णेयार ।	
जहिं होंति होयार ⁴	सुरणारिभत्तार ।	
तो सुणगारा वि	मीणावहारा वि ।	
पसुखद्ववद्धा ⁴ वि ।		

(32)

तब जिन्होंने कंद का भोजन किया है, ऐसे तपस्वी समूह के साथ नारद उस श्वेत साकेत नगर के लिए गया। उसने छोटी चेष्टा वाले उस द्विजश्रेष्ठ पर्वतक से कहा कि वन पशुओं को मारनेवाला दरिद्रों को खूरनेवाला चर्मों को छेदते हुए वक्षस्थलों को चीरते हुए ऋषि के द्वारा देखा गया यदि सुप्रशस्त और परमार्थ है, तो हे कुविवेकी, तुम खड्ग की पूजा क्यों नहीं करते? यदि वेद पौरुषेय (पुरुष रचित) नहीं है तो बताओ वणों की ध्वनि आकाश और मनुष्य के मुख में क्यों स्फुरित होती है? अक्षर कहाँ, बिन्दु कहाँ, अर्थ कहाँ, छंद कहाँ? किया गया है मन का प्रयत्न जिसमें ऐसे मनुष्य के मुख बिना उत्पत्ति (कारण) कहाँ, और वेद कहाँ? कहाँ ज्ञान? और कहाँ ज्ञेय? कहाँ आकाश में कमल होता है? अरूप में शब्द कैसे हो सकता है? दूसरों का मांस खाने वाले हे द्विज, वेद में हिंसा कहाँ? हिंसा से धर्म कहाँ? मूर्ख, छल छोड़। (पशुओं को) काटने वाले, देने वाले और हवन करने वाले यदि मनुष्यों के नेता और देवांगनाओं के स्वामी होते हैं, तो

(32) 1. A तवसिविदेण । 2. AP वेउ । 3. A अविचार; PT अविधार । 4. AP omit this foot.

अमरा ण किं होति^५ जइ जणिण णिवडंति^६ ।

20

पसु सग्गु गच्छंति^७ ।

दोसंति सकयत्थ तो अप्पयं तत्थ ।

होमेवि^८ मंतेहि सहुं पुत्तकंतेहि ।

गम्मिज्जए सग्गु भुजिज्जए भोग्गु ।

धत्ता—जलमदियचम्मेण दब्भे सुद्धि कहेप्पिणु ॥

25

भट्टे खद्धउ मासु खगमिगकुलइ वहेप्पिणु ॥32॥

33

जइ सच्चउ विप्प पवित्तु जलु

जइ गंगाण्हाणु जि^१ दुरियहरु

जइ मदियमंडणि तमु गलइ

जइ हरिणाइणु धम्मज्जलउं

किं बंभणु उत्तमु तुहुं कहहि

जइ दब्भे पुण्णु पवित्थरइ

तं रत्तिदियहु दब्भ^२ जि चरइ

गोफंसणपिप्पलफंसणइ

जइ पाउ हणंति हुंत पउर

तो कि तं जायउं मुत्तु^३ मलु ।

तो इम वि लहंति वि मोक्खु^४ पर ।

तो कोलु विमाणे संचरइ ।

तो हरिणउलु जि जणि अगलउं ।

तं मारिवि^५ मासगासु महहि ।

5

तो कि मयउलु भवि संसरइ ।

किह^६ इंदविमाण ण पइसरइ ।

मुत्तुट्ठियाहं घयदंसणइ ।

तो वसहकायराया वि सुर ।

वध करने वाले और मीनों का अपहरण करने वाले, पशुओं को खाने और बांधने वाले भी देव क्यों नहीं होते ? यदि यज्ञ में पड़ने से पशु स्वर्ग जाते हैं और कृतार्थ दिखाई देते हैं, तो पुत्र और स्त्री के साथ मंत्रों सहित अपने को उसमें होम कर स्वर्ग जाया जाए और भोग भोगा जाए ?

धत्ता—जल, माटी और चर्म तथा दूध से शुद्धि बताकर तथा पक्षी एवं भृगुकुल की हत्या कर ब्राह्मण ने मांस खाया ।

(33)

हे ब्राह्मण, यदि सचमुच गंगा का जल पवित्र है, तो वह जल मल-मूत्र क्यों बन जाता है ? यदि गंगा का स्नान पापों का हरण करने वाला है तो मछलियों को भी परम मोक्ष की प्राप्ति होनी चाहिए । यदि मिट्टी शरीर पर लगाने से मोक्ष होता है तो सुअर को देव विमान में चलना था । यदि मृग के चर्म से धर्म उज्ज्वल होता है, तो मृगों का समूह श्रेष्ठ होना था । तुम ब्राह्मण उस को पवित्र कहते हो, और यज्ञ में मारकर उसके मांस का कौर बनाते हो । यदि दूध से पुण्य का विस्तार होता है तो मृगों का झुंड आकाश में क्यों नहीं फिरता ? वह दिन-रात चारा चरता रहता है । इन्द्र के विमान में वह प्रवेश क्यों नहीं करता ? गाय को और पीपल को छूना और सोकर उठने पर गाय को छूना, पीपल को स्पर्श करना और घी को देखना आदि यदि पाप का नाश करते

5. AP add after this : कि दुग्गई जति । 6. A णिवडंत । 7. A गच्छंत । 8. A होमेहि ।

(33) 1. AP मुत्तमलु । 2. A वि । 3. A सोक्खु । 4. P मारिवि । 5. AP दब्भु । 6. A कि ।

कि बहुवें पणु वि मंति भणइ जो पणु अप्पणउं⁷ सम्पु गणइ ।
 णिगंथु णियत्थु वि परिभमउ छुडु मोहु⁸ लोहु मच्छरु समउ ।
 सो पावइ तं सिद्धत्तु⁹ किह रसविद्धु घाउ हेमत्तु जिह ।

10

घत्ता—हिंसारंभु वि धम्मु वयणु असच्चु वि सुंदरु ॥

जणु¹⁰ धुत्तहि दढमूढु किज्जइ कालउं पंडुरु ॥33॥

34

जवहोमें संतियम्मु कहिउ जं तं पइ छेलएहि गहिउ¹ ।
 अय जव जि पयरिय हुंति णउ पइ लंघिउं तायहु वयणु कउ ।
 गिरि घोसइ गुरुणा पिसुणियउं तें तइयहुं² वसुणा णिसुणियउं ।
 ता णारउ पव्वउ रुद्धय³ तावस सावित्थिहि झ त्ति गय ।
 पव्वयजणणिइ अब्भत्थियउ वरकालु एहु पहु पत्थियउ ।
 जइ सुंअरहि भासिउ⁴ अप्पणउं तो थवहि वयणु भाइहि तणउं ।
 तं अम्महि भासिउं परिगणिउं अय जव ण होति तेण वि भणिउं ।
 जं चविउ असच्चु सुदुच्चरिउ तं सघरु घरायलु थरहरिउ ।

5

हैं तो वृषभ और कागराज भी बड़े-बड़े देवता होते । बहुत कहने से क्या, मंत्री कहता है कि जो दूसरे को अपने समान समझता है, जो परिग्रह से रहित है, निर्वस्त्र है, विहार करता रहता है, और जो मोह, लोभ, ईर्ष्या को शान्त करता है, वह उसी प्रकार सिद्धि को प्राप्त होता है, जिस प्रकार रस से सिद्ध धातु स्वर्णत्व को प्राप्त करती है ।

घत्ता—हिंसा का प्रारम्भ करना धर्म है, और असत्यवचन भी सुन्दर है, इस प्रकार घूर्त लोगों के द्वारा मूर्ख और भी मूर्ख बनाया जाता है, तथा काले का पीला किया जाता है ।

(34)

और जो तुमने यज्ञ में होम करने से शांति कर्म कहा और जो तुमने अज शब्द को बकरों के रूप में ग्रहण किया । बोये जाने पर जो जौ उत्पन्न नहीं होते वे अज कहलाये जाते हैं । इस प्रकार तुमने अपने पिता के वचनों का उल्लंघन किया है । गुरु के द्वारा कहे गये वचन की पट्टा भी घोषणा करता है उसे उसी प्रकार राजा वसु ने भी सुन लिया । तब अपने हाथ में रुद्राक्ष माला लिये हुए नारद और पर्वतक शीघ्र ही श्रावस्ती गये । पर्वतक की माँ ने यह प्रार्थना की कि यह वर माँगने का समय है, और राजा से प्रार्थना की कि यदि आप अपने कहे हुए की याद करते हैं तो आप अपने भाई के (पर्वतक के) वचन को स्थापित करो । माँ के द्वारा कहा गया उसने मान लिया । अज जौ नहीं होते ऐसा उसने भी कह दिया । उसने जो असत्य और दुष्ट का कथन किया,

7. AP अप्पणें । 8. AP लोहु मोहु । 9. A सिद्धतु । 10. AP जणु ।

(34) 1. P कहिउ । 2. A तं । 3. A रुद्धय । 4. A भासिउप्पणउ ।

महिकपे⁵ ठाणहु विहडियउं⁶ आयासहु आसणु णिवडियउं ।
 णहफलिहखंभचुउं⁷ चूरियउ वसु चुण्णु चुण्णु मुसुमूरियउ ।
 घत्ता—णियमित्तहो मरणेण पव्वउ थिउ विच्छायउ ॥
 पडियउ णरयणिवासि वसु असच्चु संजायउ ॥34॥

10

35

पुणु दणुएं मायाभाउ किउ
 ता सयरमंति आणंदियउ
 पुणु तेण वि⁸ रायसूउ रइउ
 णिवमासहोमु विद्ध⁹सियउ
 णारयहियउल्लउ तोसियउं
 मा णासहि पव्वय कहि मि तुहुं
 जिणविबइ चउदिसु यवहि तिह
 ता ते सिद्धउं तेहउं करिवि
 महिसिदे लोयहु भासियउं
 देहिहि दुक्खावहु धम्मु कहि

वसु दाविउ सम्भविमाणि¹ थिउ ।
 मूढेहि जण्णु कि णिदियउ ।
 दिणयरदेवे खयरें लइउं² ।
 महकालवियंभिउ णासियउ ।
 अमरारें पुणरवि घोसियउं ।
 मंतीसर माणहि अमरसुहुं ।
 खेयरविज्जाउ ण एंति जिह ।
 गय णरयविवरि³ विणिण वि मरिवि ।
 अप्पाणउं वइरु मइ साहियउं ।
 पलु खज्जइ पिज्जइ मज्जु जहि ।

5

10

उससे प्रवर धरती काँप गई । भूकम्प आ गया । अपने स्थान से विघटित होकर आकाश से (राजा वसु का) आसन गिर गया । स्फटिक मणि के खम्भे चूर-चूर हो गये । राजा वसु चकनाचूर हो गया ।

घत्ता—अपने मित्र की मृत्यु से पर्वतक एकदम उदासीन हो गया । राजा वसु नरक निवास में जा पड़ा और वह असत्य प्रमाणित हुआ ।

35

उस दनुज ने फिर मायावी आचरण किया । जब उसने राजा को स्वर्ग विमान में स्थित दिखाया, तो सगरमंथी आनंदित हो उठा (और बोला) कि मूर्खों ने यज्ञ की निंदा क्यों की ? फिर उसने भी राजसूय यज्ञ किया जैसा कि दितकर देव विद्याधर ने स्वीकार कर लिया था । नृप मास का होम ध्वस्त हो गया और महिषासुर का विस्तार नष्ट हो गया । नारद का हृदय संतुष्ट हो गया । दैत्य ने पुनः घोषित किया—हे पर्वतक, तुम कहीं मत जाओ । हे मंत्रीश्वर, तुम भी स्वर्ग-सुख मानो । तुम चारों ओर जिन प्रतिमाओं को इस प्रकार स्थापित करो कि जिससे विद्याधरों की विद्याएँ यहाँ न आएँ । तब उसने जैसा कहा था वैसा किया । वे दोनों सरकार नरक गये । महिषेन्द्र ने लोगों से कहा कि मैंने अपने वैर का बदला ले लिया है । जहाँ शरीरधारियों को सताया जाता है, मांस खाया जाता है, मद्य पिया जाता है, वहाँ धर्म कहाँ ? लेकिन तप के द्वारा

5. A महिकंरइ । 6. A विपडियउ । 7. A फलिहमउ खंभु धुउ चूरियउ ।

(35) 1. P^oविवाणि । 2. AP जि । 3. A लविउ । 4. A णरयधोरि ।

तवचरणे⁵ जालिवि मयणपुरि पारज अहमिद विभाणवरि⁶ ।

अज्ज वि अच्छइ जिणगुण महइ अइसयमइ⁷ दसरहासु कहइ ।

घत्ता—भरहकुमारजणेर हो हो जण्णु किं⁸ किज्जइ ॥

जगमहंतु अरहंतु पुष्पदंतु पणविज्जइ ॥35॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिण्ण

महाकविपुष्पदन्तविरचित महाकव्ये रामलक्ष्मणभरहसत्तुहणुप्पत्ती⁹

णाम जागणिवारणं¹⁰ णाम एकूणहत्तरिमो¹¹

परिच्छेओ समत्तो ॥69॥

कामदेव को जलाकर नारद अहमेन्द्र विमान में देव हुआ आज भी वहाँ जिन देवों का आदर करता है । इस प्रकार अतिशय मतिवाले वह मुनि राजा दशरथ से कहते हैं ।

घत्ता—हे भरत कुमार को जन्म देने वाले दशरथ, यज्ञ मत करो । विश्व में महान् अरहन्त को नमस्कार किया जाये ।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित

एवं महाभय्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न

की उत्पत्ति नाम यज्ञनिवारण नाम उनहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ।

5. AP तवजलर्णे । 6. A विमाणु धरि; P विमाणुवरि । 7. AP इय सयमइ । 8. AP ण । 9. A राम-भरहलक्ष्मण⁹ । 10. A जण्णिवारणं । 11. A एकसत्तिमो; P णवसत्तिमो ।

सत्तरिमी संधि

आयण्णिवि मंतिसुहासियइ^१ मिच्छादंसणु णिट्ठिउं^२ ॥
दसरह्हियउल्लउं मेरुथिरु जिणवरधम्मि परिट्ठिउं^३ ॥ ध्रुवकं ॥

1

अवरेहिं मि अरुहि णिहित्तु चित्तु	संयुउ समंति करुलाणमित्तु ।	
चमुवइणा मारियपरबलेण	एत्थंतरि उत्तु महाबलेण ।	
तंबारवारु सो जणु जाउ	णिव जोयहि णियणंदणपयाउ ^४ ।	5
असमुसल गयासणिधणुहरेहिं	जिप्पंति ण जिप्पंति व परेहिं ।	
विण्णाणणाणयविहयमोहु ^५	ता राए आउच्छिउ पुरोहु ।	
अणु अणु तणयहं महिरयणरिद्धि	तं गमणे होइ ण होइ सिद्धि ।	
ता वुत्तु णिमित्तवियवखणेण	जहिं जाइ रामु सहं लक्खणेण ।	
तहिं तहिं गोमिणि संमुहिय थाइ	दामोयरु मुइवि ण पउ वि जाइ ।	10

सत्तरवीं संधि

मंत्री के सुभाषित (अच्छे वचनों) को सुनकर राजा का मिथ्या दर्शन नष्ट हो गया तथा मेरु के समान स्थिर राजा दशरथ का हृदय जिन धर्म में लग गया ।

(1)

दूसरे लोगों ने भी अरहन्त भगवान् में अपना चित्त लगाया और उन्होंने अपने मंत्री कल्याणमित्र की संस्तुति की । इसी बीच शत्रु सेना का नाश करने वाले महाबल नाम के सेनापति ने कहा—राजन्, नरक का द्वार जो यज्ञ संपन्न हुआ है, उसमें अपने पुत्र के प्रताप को देखिये । भस्म, मुसल, गदा, अशनि और धनुष को धारण करने वाले शत्रुओं के द्वारा के जीते जाते हैं या नहीं । विज्ञान-ज्ञान तथा नय से जिसने मोह को नष्ट कर दिया है, ऐसे पुरोहित से राजा ने पूछा कि बच्चों के वहाँ जाने से धरती रूपी रत्न की सिद्धि होगी कि नहीं । बताइये-बताइये । तब नीमित्तशास्त्र में प्रख्यात मंत्री ने कहा—राम लक्ष्मण के साथ जहाँ-जहाँ जाते हैं, वहाँ-वहाँ लक्ष्मी

(1) 1. A 'सुहासियउं' 2. AP णिट्ठियउं । 3. AP परिट्ठियउं । 4. P णियणंदण' 5. A 'णयविहि-यमोहु; P 'णयणिहियमोहु ।

ए अट्टमः मद्ं⁶ णिसुणिउं पुराणि
जगतावणु रावणु रणि हणैवि
बलएव जणदण सुय ण भंति

संठिय सलायपुरिसाहिठाणि ।
महि भुंजिहिति⁷ खगो जिणेवि ।
दससंदणु पुच्छइ विहियसंति ।

धत्ता—महुं कहहि पुरोह लद्धविजउ⁸ भुवणत्तयविकखायउ ॥

दहगीउ⁹ दसासापत्तजसु केण सुपुण्णे¹⁰ जायउ ॥१॥

2

जसु आसंकइ जमु वरुणु पवणु
ता कहइ विष्णु महुरइ गिराइ
आरामगामसंदोहसोहि
रंभंतगोउलावासरम्मि
गोवालवालकीलाणिवासि¹
णायउरि अत्थि णरदेउ राउ
संतइहि धवेप्पिणु भोयदेउ
विज्जाहुरु पेच्छिवि चवलवेउ

तहु एयहु भणु सियविधु कवणु ।
सुणि धादइसंडहु पुखिल्लभाइ ।
खरदंडसंडमंडियसरोहि ।
जवणालसालिजवछेत्तसोम्मि ।
तहि सारसमुच्चइ णाम देसि ।
वंदिवि अणंत गुरु वीयरउ ।
जइ जायउ मेल्लिवि बंधहेउ ।
णहयलि आवंतु विचित्तकेउ ।

5

स्वयं सामने आकर खड़ी होती है, वह राम को छोड़कर एक पग भी इतर-उधर नहीं जायेगी । यह मैंने आठवें पुराण में सुना है कि राम शलाकापुष्पों की परम्परा में स्थित हैं । वह संसार को सताने वाले रावण को युद्ध में मारकर तथा धरती को तलवार से जीतकर उसका भोग करेंगे । ये पुत्र साक्षात् बलदेव और जनार्दन हैं । इसमें भ्रांति मत कीजिये । तब मन में शांति धारण करते हुए दशरथ ने पूछा—

धत्ता—हे पुरोहित, मुझे यह बताइये कि दसों दिशाओं में यश प्राप्त करने वाला रावण किस पुण्य से विजयों को प्राप्त करता हुआ तीनों लोकों में विख्यात हुआ है ।

(2)

यम, वरुण और पवन जिससे डरते हैं उसका ऐसा अपना कौन-सा चिह्न है ? यह सुनकर ब्राह्मण मधुर वाणी में कहता है—सुनिये मैं बताता हूँ । धातकीखंड के पूर्व भाग में सारसमुच्चय नाम का देश है, जो उद्यानों और ग्रामों के समूह से शोभित है । जो कमल समूह से मंडित सरोवरों से युक्त है । जो रंभाते हुए गोकुल के समूह से सुन्दर है, और जो जवनाल (?) धान तथा जौ के क्षेत्रों से सुन्दर है, जिसमें ग्वालों के बालकों की श्रीड़ा हो रही है, उस देश की नागपुर नगरी में नरदेव नाम का राजा है । वह परमवीतराग, अनन्तमुनि की वन्दना कर तथा कुल परम्परा में अपने पुत्र भोजदेव को स्थापित कर, पाप के बंध के सब कारणों का परित्याग कर मुनि हो गया । इतने में उसने आकाश में आते हुए विचित्र पताका वाले चपलवेग नाम के विद्याधर को देखा । उसने अपने मन में यह निदान (इच्छा) बांधा कि मुझे अगले जन्म में इस विद्याधर का सुन्दर भोग

6. AP णिसुणिउं मद्ं । 7. P भुंजिहिति । 8. A omits लद्धविजउ । 9. A दहगीव; P दसगीउ । 10. P सपुण्णे ।

(2) 1. P कमणु । 2. AP 'कीलणणिवासि ।

बद्धतु गियाणु महु जम्मि होउ	एहउ मणहरु खेयरविहोउ ³ ।	
सुररमणीरमणविलासमग्गि	मुउ उप्पणउ सोहम्मसग्गि ।	10
इह भरहवरिसि ⁴ वेयड्डसेलि	गयणग्गलगमणिमोहमेलि ⁵ ।	
दाहिणसेदिहि ह्यवड्डरिजीउ	पुरि मेहसिहरि पहु सहसग्गीउ ।	

घत्ता—उब्बेयउ केण वि कारणिण अंतरंगि णिरु⁶ जायउ ॥

कलहणउ करिवि सहं बंधवहिं सो तिकूडगिरि आयउ ॥2॥

3

लगइ अकंडि दुब्बयणकंडु	मउलाविज्जइ सुहि तेण तुंडु ।	
कि किज्जइ पिसुणणिवासि वासु	तहिं गम्मइ जहिं कंदरणिवासु ।	
तहिं गम्मइ जहिं तरुवरहलाइ ¹	तहिं गम्मइ जहिं णिज्झरजलाइ ।	
तहिं गम्मइ जहिं गुणणिरसियाइ	सुव्वंति ² ण खलयणभासियाइ ।	
इय चित्तिवि घत्तिवि ³ दुट्टसंक	काराविय राएं णयरि लंक ।	5
उप्परियियगिरिहत्थिहि ⁴ विहाइ	चल्लियघयहत्थिहि णडइ णाइ ।	
णं सण्णइ एहिं जि पुणु वि एम	कि सग्गे मइ जोयंतु ⁵ देव ।	
सिहरे ⁶ णं भिदिवि विउलमेह ⁷	ससि पावइ कि घरतेयरेह ।	

मिले। वह मरकर देवरमणियों से जिसकी विलास सामग्री भरी हुई है ऐसे सौधर्म स्वर्ग में उत्पन्न हुआ। इस भारतवर्ष में किरणसमूह से आकाश को छूने वाला विजयार्ध पर्वत है। उसकी दक्षिण श्रेणी में मेघ शिखर नाम की नगरी में, शत्रु के जीव का हनन करने वाला सहस्रग्रीव नाम का राजा है।

घत्ता—किसी कारण से उसके मन में अत्यन्त उद्वेग हो गया, और वह अपने भाइयों से क्षग्रा करके त्रिकूट गिरि में आ गया है।

(3)

चूँकि दुर्वचन रूपी तीर कुअवसर में (असमय) जा लगता है और इसलिए मित्र का मुख उससे कुम्हला गया। दुष्टों के घर में क्यों निवास किया जाए? वहाँ जाया जाए जहाँ गुफा में निवास हो, वहाँ जाया जाए जहाँ तरुवरों के फल हों, वहाँ जाया जाए जहाँ निर्झरों के जल हों, वहाँ जाय जाए जहाँ गुणों से रहित तथा गुणों का नाश करने वाले दुष्ट जनों के द्वारा कहे गये वचन सुनने को न मिले। यह विचारकर छोटी शंका को मन से निकालकर राजा ने लंका नगरी का निर्माण करवाया। ऊपर स्थित पहाड़ रूपी हाथी के समान चंचल ध्वज रूपी हाथों से वह ऐसी मालूम होती थी, जैसे नृत्य कर रही हो। अपनी चेतना के द्वारा (वह सोचती है) कि क्या मैं यहाँ फिर भी ऐसी ही हूँ। स्वर्ग में देवता लोग मुझे क्यों देखते हैं? शिखर के द्वारा बड़े-बड़े मेघों का भेदन करके सोचती है कि चन्द्रमा उसके घर की शोभा को क्या पा सकता है? अपनी पुतलियों

3. A खेयरहु होउ । 4. A 'वरिस' । 5. A 'मऊह' । 6. AP णिउ ।

(3) 1. AP 'वरफलाइ' । 2. AP सुम्मंति । 3. A पावियदुट्टसंक । 4. A 'हत्थिय विहाइ' । 5. A जोयंति । 6. AP सिहरेहि वि । 7. AP नीलमेह ।

जोयइ पुत्तलियाणयणएहि णं हसइ फुरंतहि रयणएहि ।
परिवित्थारिवि कित्तीमुहाइं दावइ पारावयरवसुहाइं⁸ ।

10

घत्ता—जहि चंदसाल चंदंसुहय चंदकंतिजलु मेल्लइ ॥

कामिणिपयपहउ⁹ असोयतर उववणि वियसइ फुल्लइ ॥3॥

4

सा पुरि परिपालिय तेण ताव
सयगीउ खगाहिउ पंचवीस
णिइलिवि वहरि भूभंगभीस
दसपंचसहासइ वच्छराहं
सुंदरि तहु पणइणि मेहुलाच्छि
अंकगि चडिउ चंडंसुमालि
आहासिउ दइयहु फलपयासि
संभूयउ सयणहं सुहु जणंतु
णिवरुवें आणंदु व पयाहं

गय वरिसहं बीससहास¹ जाव ।
थिउ विइवंतु णाणामहीस ।
पण्णासगीउ मुउ जिइवि बीस ।
संठिउ पुलत्थि राइयधराहं ।
सा² पेच्छइ वरि पइसंति लच्छि ।
सिक्खिणंतरंति परिगलियकालि³ ।
णरदेव⁴ देव थिउ गब्भवासि ।
णं वहुवुविणिवसियरणमंतु ।
आवासु व णहयरसंपयाहं ।

5

के नेत्रों से जैसे देखती है और मानो चमकते हुए रत्नों के द्वारा हँसती है, अपने कीर्ति रूपी मुखों का विकास कर जो समुद्र और धरती को दिखाती है ।

घत्ता—जहाँ पर चन्द्रशाला (छत) चन्द्रकिरणों से आहत होकर चन्द्रकान्त मणियों का जल छोड़ती है, तथा कामिनी के चरणों से आहत अशोक वृक्ष उपवन में विकसित होकर फूल उठता है ।

(4)

उस नगरी का पालन करते हुए उसे जब बीस हजार पच्चीस वर्ष बीत गये तब शतग्रीव विद्याधर अनेक राजाओं का दलन करता हुआ स्थित हुआ । उसके बाद भ्रूभंग से भयंकर शत्रु का नाश कर पंचाशत ग्रीव पन्द्रह हजार वर्ष जीवित रहकर मृत्यु को प्राप्त हुआ । तब धरती को अलंकृत करने वाले इतने वर्षों में फिर पुलस्त्य गद्दी पर बैठा । उसकी प्रियतमा मेघलक्ष्मी थी । वह घर में हँसती हुई लक्ष्मी के समान दिखाई देती थी । उसकी गोद के अग्रभाग में स्वप्न में सूर्य चढ़ गया । समय बीतने पर उसने पति से पूछा । इस बीच फल को प्रकाशित करने वाले गर्भ में देव राजा के रूप में स्थित हो गया जो स्वजनों को सुख देता हुआ उत्पन्न हुआ । मानो अनेक सुन्दरियों के लिए वशीकरण मंत्र ही उत्पन्न हुआ हो । अपने रूप से प्रजा के लिए आनन्द के समान तथा विद्याधरों की संपदा के निवास के समान वह था ।

8. A 'रइसुहाइं. P 'रयसुहाइं । 9. A 'पयहयउ ।

(4) 1. AP तीससहास । 2. AP ओहामियरुवें जाइ लच्छि (A जायलच्छि) । 3. P पडिगलिय³ ।

4. AP णरदेउ देउ ।

घत्ता—कुलधवलु धुरंधरु दहवयणु जायउ मायहि जइयहुं ॥

10

मंदरगिरिदुग्गु पुरंदरिण महं भावइ⁵ किउ तइयहुं ॥4॥

5

णवतरणि व सुरकुमुयायराहं¹

कठिणंकुसु णं दिग्गयवराहं

णं मत्तभमरु णंदणवणाहं

पवहंतमहासरिजलगलत्थु

वण्णेण गरलभसलउलकालु

जायउ जुवाणु जमजोहजूरु

णं⁴ विसमविसंकुरु विसविसित्तु

तज्जियदासि व भउ धरइ⁶ चरइ

जसु सत्तसत्तसहसाइ आउ

पडिमल्लु व गज्जियसायराहं ।

²मणमत्थइ सूलु व अरिवराहं ।

णं कामवासु³ तरुणीयणाहं ।

महिमहिहरसंचालणसमत्थु ।

आयवणयणु पडिवक्खकालु ।

5

दुइंसणु णं मज्झणसूरु ।

णं पलयकालु हुयवहु पलित्तु ।

जसु असिधारइ⁷ धर मरइ तरइ ।

वरिसहं जो सुक्खइ वज्जकाउ ।

घत्ता—जसु भइए⁷ रवि णं अत्थवइ चंदु व चंदगहिल्लउ ॥

10

फणि पुरिसरूवु परिहरिवि हुउ दीहदेहु कीडुल्लउ ॥5॥

घत्ता—कुल में श्रेष्ठ धुरन्धर रावण जिस समय मां से उत्पन्न हुआ तो मुझे लगता है कि उस समय इन्द्र ने मंदराचल को दुर्ग बनाया ।

(5)

देव कुसुमों के समूह के लिए नव सूर्य के समान, गरजते हुए समुद्रों के लिए प्रतिमल्ल के समान, श्रेष्ठ दिग्गजों के लिए कठिन अंकुश के समान, बड़े-बड़े शत्रुओं के मन और मस्तक पर शूल के समान, मंदनवनों के लिए मतवाले भ्रमर के समान, तरुणी जनों के लिए काम वास के समान वह रावण था । जिसने बड़ी-बड़ी नदियों के जल को छेड़ा है, जो पृथ्वी के बड़े-बड़े पहाड़ों के संचालन में श्रेष्ठ हैं, जो रंग में विष और भ्रमरसमूह के समान काला है, लाल-लाल आँखों वाला और दुश्मन के लिए काल वह रावण युवक हो गया । यम समूह को पीड़ित करने वाला वह इस प्रकार दूरदर्शनीय था मानो मध्याह्न का सूर्य हो । मानो विष से विषावल विषय विष का अंकुर हो । मानो प्रलयकाल हो या अग्नि प्रदीप्त हो उठी हो । जिसके कारण धरती डौंटी गई दासी के समान डरती हुई चलती है और जिसकी तलवार की धार में वह मरती और तिरती है, जिसकी सत्तर हजार वर्ष आयु है, ऐसा वह वज्र शरीरवाला समझा जाता है ।

घत्ता—जिसके भय के कारण रवि अस्त नहीं होता और चन्द्रमा को राहु लग गया है, और फणि भी अपने पुरुष रूप को छोड़कर एक लम्बी देह वाला खिलौना जिसके लिए बन गया है ।

5. A भावहि ।

(5) 1. A कृमुयावराहं । 2. AP मणि मत्थय । 3. AP कामबाणु । 4. A णं सविसु विसंकुरु विसपसित्तु; PT णं समविसमंकुरु; K records a p; समविसमंकुरु । 5. P करइ डरइ । 6. P⁷धारहि । 7. AP जसु रवि णं भइए अत्थमइ ।

6

खयरेण कण्ण इच्छियजएण
 आरुह्णि नास पुण्णयच्चिमाणु
 रययायलि अलयावइहि धीय
 जोइवि मणिवइ^३ ज्ञाणाणुलग्ग^४
 पारद्धु विग्घु परिगलियत्तुट्ठि
 बारहसंवच्छरपीडियंगि
 णासिउ बीयक्खरलीणु ज्ञाणु
 महु वप्पु होउ मइं रण्णि हरउ^५
 णिक्किउ विरत्तु विवरीयच्चित्तु
 गउ दहमुहु खेयरि मरिवि कालि

मंदोयरि^१ तहु दिण्णी मएण ।
 सहं कंतइ णहयलि विहरमाणु ।
 विज्जासाहणि संजमविणीय^२ ।
 मइ रायहु मयणवसेण भग्ग ।
 उववाससोसकिसकायलट्ठि^३ ।
 कुद्धी कुमारि णं खयभुयंगि^४ ।
 इहु खगवइ चिधे जाउहाणु ।
 आयाभि जम्मि महं कज्जि मरउ^५ ।
 जाणिवि रोसंगिउ^६ रत्तणेत्तु ।
 थिय मंदोयरिगम्भंतरालि ।

5

10

घत्ता—उप्पण्णी धीय सलक्खणिय कंपावियकेलासहु ॥

णं लंकाणयरिहि जलणसिह णाइं भवित्ति दसासहु ॥६॥

7

दिणि पडिउ जलिउ उक्काणिहाउ

अप्पंपरि जायउ णरणिहाउ ।

(6)

जय की इच्छा करने वाले उस विद्याधर मय के द्वारा रावण को अपनी कन्या दे दी गई । सुन्दर पुष्पक विमान में चढ़कर अपनी कान्ता के साथ वह आकाश में विहार कर रहा था । विद्या की साधना के कारण संयम से विनीत और रचित चूड़ा पाशवाली अलकापुरी के राजा की कन्या मणिवती को ध्यान में लीन देखकर राजा की मति काम से भग्न हो उठी । उसने विघ्न प्रारम्भ किया । जिसकी लुप्टि नष्ट हो चुकी है, तथा उपवास के कारण जिसकी दुबली पतली देह रूपी सृष्टि सूख चुकी है ऐसी बारह वर्षों से अपने शरीर को पीड़ा पहुँचाने वाली वह विद्याधर कुमारी प्रलयकाल की नागिन के समान फुफकार उठी । बीजाक्षरों में लगा हुआ उसका ध्यान नष्ट हो गया । उसने कहा : यह विद्याधर जो चित्त से राक्षस है, मेरा बाप होकर मुझे जंगल में हरे और इस प्रकार आगामी जन्म में मेरे कारण मृत्यु को प्राप्त हो । उसे निष्क्रिय, विरक्त, और विपरीत चित्त जानकर क्रुद्ध और लाल-लाल आँखों वाला रावण चला गया और विद्याधरी भी मरकर मंदोदरी के गर्भ में स्थित हो गई ।

घत्ता—वह लक्षणवती कन्या के रूप में उत्पन्न हुई, जो मानो कैलाश पर्वत को कँपाने वाले रावण की भवितव्यता और लंका नगरी के लिए अग्नि की ज्वाला थी ।

(7)

दिन में तारों का समूह जल कर गिर पड़ा । अपने आप हाहाकार शब्द होने लगा । धरती

(6) 1. मंदोयरि । 2. A °विलीय । 3. A महिवइ । 4. P ज्ञाणाणुलग्ग । 5. A °कायजट्ठि । 6. P खए भुयंगि । 7. A हरइ । 8. A मरइ । 9. P रोसं इगिउ रत्तु णेत्तु ।

महि कंपइ जंपइ को वि साहु
 एयइ धीयइ संभूइयाइ
 खयकालें ढोइय मरणजुति
 सुइसुहहराउ^१ विहुणियसिराउ
 खगभूगोयरसिरिमाणणेण
 किं गरलवारिभरियइ^२ सरीइ
 बंधवयणहिययवियारणीइ
 णवकमलकोसकोमलयराउ
 णिम्माणुसि काणणि धिवहि तेभ
 घत्ता—तं णिसुणिवि^३ तें मारीयएण भणिय देवि वररूवउं ॥
 तुह गब्भि भडारो^४ थीरयणु गोत्तखयंकस हूयउं ॥७॥

8

मुइ^१ मुइ दहमुहखयकालदूय
 बाहापवाह^२ ओहलियणयण
 मारीयय णवतरुफलरसहि
 घल्लिजजसु^३ कत्थइ पुत्ति तेत्थु
 तें होतें होसइ अवर धूय ।
 ता तरुणि चवइ ओहुल्लवयण ।
 कीलंतपविखरमणीयसहि ।
 रविकिरणु ण लगइ देहि जेत्यु ।

कौंप उठी । तब कोई सज्जन व्यक्ति कहता है कि इस समय राजा किस प्रकार बच सकता है । यह उत्पन्न हुई कन्या महामारी की तरह सबको खा जायेगी, यह क्षयकाल के द्वारा मरण की युक्ति यहाँ लाई गई है, इसलिए इस पुत्री को निर्जन वन में डाल दिया जाए । कानों के सुख का हरण करने वाली तथा शिरों को प्रताड़ित करने वाली ऐसी ज्योतिषी की वाणी सुनकर विद्याधर और मनुष्यों की लक्ष्मी का भोग करने वाले रावण ने मारीच से कहा कि विषजल से भरी हुई नदी से क्या ? विष से परिपूर्ण कुसुम मंजरी से क्या ? बांधवजनों के हृदय को विदीर्ण करने वाली इस दुश्मन लड़की के पैदा होने से क्या ? इसलिए नव कमलकोष से भी अधिक कोमल मंदोदरी के हाथ से इसे छीनकर मनुष्यों से रहित जंगल में इस प्रकार छोड़ दो, जिससे यह पापात्मा दुष्ट जीवित न रहे ।

घत्ता—यह सुनकर उस मारीच ने मंदोदरी से कहा—हे देवी, तुम्हारे गर्भ से सुन्दर रूप वाला स्त्रियों में रत्न हुआ है, परन्तु गोत्र का नाश करने वाला है ।

(8)

तुम रावण क्षयकाल की दूती के समान इसे छोड़ो-छोड़ो । क्यों कि रावण के रहने पर दूसरी कन्या होगी । तब आँसुओं के प्रवाह से जिसका नेत्र मलिन है, ऐसी उस युवती ने नीचा मुख करते हुए कहा—हे मारीच, जो नव वृक्षों के फलों के रस से आई हो, जहाँ क्रीड़ा करते हुए पक्षियों का सुन्दर शब्द हो और जहाँ इसकी देह को सूर्य की किरण न लगे ऐसे वन में कहीं इस पुत्री

(7) 1. A ताइ वि; P तामु वि । 2. A ^१मुहयराउ । 3. A मारीयउ वुत्तु । 4. A गरुडवारि^१ ।
 5. A णिसुणंतें मारियएण । 6. P भउरिए धीरयणु ।

(8) 1. A मुय मुय । 2. A बाहूपवाह^२ । 3. A घल्लिजजइ ।

अह एयइ काइ जियंतियाइ	कुरइ गियतायकयंतियाइ ।	5
गिरिदारणीइ कि गिरिणईइ	हो हो कि एयइ दुम्मईइ ।	
आलिहिउं पत्तु मच्छरकराल ⁴	रावणदेहुभव ⁵ एह बाल ।	
बहुदुखजोणि बंधुहं असीय	सुविसुद्धवंस णामेण सीय ।	
इय भासिवि मंजूसहि णिहित्त	सहुं रयणहि वरराईवणेत्त ।	
दह्गीवजीवरक्खणकएण	णिय णिविसें ⁶ णहि मारीयएण ।	10
चंपयचवचंदणचूयगुज्झि ⁷	बहि मिहिलाणयरुज्जाणज्झि ।	

धत्ता—मंजूसई सहुं छणयंदमुहि सरिसरणिज्जरसीयलि ॥

णं रहुवइसिरिलयकंदसिरि णिकखय सुय धरणीयलि ॥8॥

9

गउ विज्जापुरिसु णहंतरेण	तिक्खें महि दारिय लंगलेण ।	
आरामुहच्छित्तधुरंधरेण	मंजूस दिट्ठ पामरणरेण ।	
वणवालहु अप्पिय तेण णीय ¹	रायालउ ² राएं दिट्ठ सीय ।	
वाइवि बइयरु बुज्झिय विणीय	णियपियहि दिण्ण पडिवण्ण धीय ।	
वड्डइ परमेसरि दिव्वदेह	णं बीयायंदहु ³ तणिय रेह ।	5

को छोड़ना । अथवा अपने पिता का अन्त करने वाली या अपने पिता के लिए यम के समान इस कन्या के जीने से क्या ? पहाड़ को ही चीरने वाली पहाड़ी नदी से क्या ? हो-हो, इस दुर्मति कन्या से क्या ? पत्र लिखा गया कि ईर्ष्या से भयंकर यह बाला रावण की देह से उत्पन्न हुई है । बन्धु-जनों के लिए दुःख की कारण, संताप देने वाली, अच्छे वंश वाली इसका नाम सीता है । ऐसा कह कर उत्तम कमलों के नेत्रों वाली उसे रत्नों के साथ मंजूषा में रख दिया गया । और रावण के जीव की रक्षा करने वाला मारीच पल भर में उसे आकाश में ले गया । मिथिला नगरी के बाहर चंपक, धवल, चंदन, आम्र वृक्षों से गहन उद्यान के मध्य में ।

धत्ता—उसने नदी, तालाब, निर्झर से ठण्डे धरती तल पर पूर्ण चन्द्रमा के समान मुख वाली उस कन्या को मंजूषा के साथ इस प्रकार रख दिया मानो राम की लक्ष्मी रूपी लता के अंकुर की शोभा हो ।

(9)

विद्यापुरुष (मारीच) आकाश मार्ग से चला गया । एक किसान ने अपने तीखे हल से धरती को फाड़ा । और हल के आरा के मुख से धरती को फाड़ने में निपुण किसान ने उस मंजूषा को देखा । उसने वह मंजूषा वनपाल को दी, वह उसे राज्यालय ले गया । राजा ने उसे देखा, वृत्तान्त को पढ़कर उसने अपनी पत्नी को वह विनीत कन्या दी और उसने भी उसे स्वीकार कर लिया । वह दिव्य देह वाली परमेश्वरी दिन-दूनी रात-चौगुनी इस प्रकार बढ़ने लगी मानो द्वितीया के

4. P अच्छर^० । 5. P रावण^० 6. A णिवसें । 7. AP धवचंदण^० ।

(9) 1. A सीय । 2. AP रायालइ । 3. AP बीयाइंदहु ।

पं ललिय महाकइपयपउत्ति पं मयणभावविष्णाणजुत्ति ।
 पं गुणसमग्ग सोहग्गथत्ति पं पारिरुवविरयणसमत्ति⁴ ।
 लायणवत्त⁵ पं जलहिवेल सुरहिय⁶ पं चंपयकुसुममाल ।
 थिर दूहद⁷ पं धापुरिरुत्ति⁸ दहुत्तव्वण पं वायरणवित्ति ।

धत्ता—जसवेल्लि व अट्ठमराहवहु अमरदिण्णकुसुमंजलि ॥

10

पुरि वडिदय जणयणरिदसुय रामणरामहं⁸ पाइ कलि ॥9॥

10

पयकमलहं रत्तत्तणु जि होइ इयरह कह रंगु वहंति जोइ ।
 गुंफहं¹ पुणु² गूढत्तणु जि चारु इयरह कह मारइ तिजगु मारु ।
 जंघाबलेण जायउ अजेउ इयरह कह वग्गइ कामएउ ।
 णालोइउ जाणुहुं³ संधिठाणु इयरह कह संधइ कुसुमवाणु ।
 ऊरुयलचित्तइ हयसरीर इयरह कह जालंधरियसार ।
 कडियलु गरुपत्तणगुणणिहाणु⁴ इयरह कह गरुयहं महइ माणु ।
 गंभीरिम णाहिहि णवर होउ इयरह कह णिवडिउ तहि जि लोउ ।
 पत्तलउं उयर सिगारु करइ इयरह कह मुणिपत्तत्तु हरइ ।

5

चन्द्रमा की देह हो । मानो महाकवि के पद की सुन्दर युक्ति हो । मानो गुण की समग्रता हो । सौभाग्य की सीमा हो । मानो नारी रूप के रचने की समाप्ति हो । मानो सौन्दर्य की पिटारी हो । मानो सुगंधित चम्पक कुसुमों की माला हो । मानो स्थिर हुई सत्पुरुष की कीर्ति हो । मानो अनेक लक्षणों वाली व्याकरण की वृत्ति हो ।

धत्ता—मानो आठवें बलभद्र के यश की बेल हो । मानो देवताओं द्वारा दी गई कुसुमंजलि हो । इस प्रकार जनक राजा की वह कन्या नगर में बड़ी हो गई, राम और रावण की कलह के समान ।

(10)

उसके चरण कमलों में रक्तता है, नहीं तो मुनि उसे देखने में राग धारण क्यों करते हैं ? उसकी एड़ियों में अत्यन्त सुन्दर गूढ़ता है, नहीं तो कामदेव तीनों लोकों को कैसे मारता है ? वह जंघाबल से अजेय है, नहीं तो कामदेव इतना इतराता क्यों है ? ऊरुतल की चिन्ता से वह क्षीण शरीर हो गई अन्यथा वह कदली की तरह (तुच्छ) क्यों है ?

उसकी कमर गुरुता के गुण का खजाना है । नहीं तो बड़े लोगों का मान क्यों धारण करती है ? उसकी नाभि में केवल गंभीरता है, नहीं तो उसमें लोक क्यों गिरता है ? उसका पतला उदर उसकी शोभा को बढ़ाता है, नहीं तो वह मुनियों की पात्रता का हरण क्यों करती है ? उस मुग्धा

4. A °समग्ग । 5. A लायणवण्ण । 6. P सुरहिय णवचंपय° । 7. P सुप्पुरिस° । 8. A पं रामहं रावण कलि; P रावणरामहं पाइ कलि ।

(10) 1. A गुंफहं; P गुप्पहं । 2. A omits पुणु । 3. A जणुहि; P जं तुहुं । 4. AP गरुयत्तणु ।

सकयत्थउ मुद्धिहि⁶ मज्झु खीणु इयरह कह⁵ दंसणि विरहि रीणु ।
 वलियाहि तीहिं सोहइ कुमारि इयरह कह तिहुयणहिययहारि । 10
 धत्ता—रोमावलिमग्गु मणोहरउ कण्णहि केरउ संघइ ॥
 इयरह कह सिहिणसिहरिसिहरु मयरकेउ आसंघइ ॥10॥

11

देविहि थण रइरसपुण्णकुंभ	इयरह पुणु ¹ कामतिसाणिसुंभ ।	
भुय मयणपाससंकास गणमि	इयरह कह मणबंधणु जि भणमि ।	
कंधरु बंधुरु ² रेहाहि सहइ	इयरह कह कंबु ³ रसंतु कहइ ।	
तंबउ बिबाहरु हरइ चवखु	इयरह ⁴ कह तग्गहणेण सोकखु	
दियदित्तिइ जित्तइ धत्तियाइ	इयरह कह विद्धइ मोत्तियाइ ।	5
मुहससिजोण्हइ दिस धवल ⁵ थाइ	इयरह कह ससि जिज्जंतु जाइ ⁶ ।	
लोयणहि वि दीहत्तणु जि जुत्तु	इयरह कह पत्तइ जणमणंतु ।	
भालयलु वि अद्धिदु व वरिट्ठु	इयरह कह तहु मयणास ⁷ दिट्ठु ।	
कोत्तलकलाउ कुडिलत्तु ⁸ वहइ	इयरह कह माणवबंदु ⁹ वहइ ।	

का क्षीण मध्य भाग सफल है, नहीं तो उसके देखने से विरही दुबला क्यों हो जाता है? उस कुमारी की त्रिवलि शोभित होती है, नहीं तो वह त्रिभुवन के लिए सुन्दर कैसे होती?

धत्ता—उस कन्या की रोमावली का मार्ग सुन्दर और सराहनीय है, अन्यथा उसके स्तन रूपी पहाड़ की चोटी पर कामदेव किस प्रकार आश्रय ग्रहण करता?

(11)

देवी के स्तन काम रूपी रस के पूर्ण कुंभ थे, नहीं तो वे काम रूपी तृष्णा का नाश करने वाले कैसे होते? उसके बाहुओं को मैं कामदेव के पाश के समान मानता हूँ, नहीं तो मैं कहता हूँ कि फिर वे देव मन को बांधने वाले कैसे हैं? उसके कंधे सुन्दर हैं जो रेखाओं से शोभित हैं, नहीं तो शंख बोलता हुआ इस बात को कैसे कहता है? उसके लाल-लाल ओंठ नेत्रों का हरण करते हैं, नहीं तो फिर उनको ग्रहण करने में सुख कैसे होता है? मोती दांतों की दीप्ति के द्वारा जीते जाकर फेंक दिये गये हैं, नहीं तो वे इस प्रकार विद्ध कैसे होते? मुख रूपी चन्द्रमा की ज्योत्स्ना से दिखाएँ धवल हो गई हैं, नहीं तो चन्द्रमा दिन-दिन क्षीण क्यों होता है? उसके लोचनों की दीर्घता उपयुक्त ही है, नहीं तो वे जनों तक कैसे पहुँचते हैं? उसका भाल भी आधे चन्द्रमा के समान श्रेष्ठ है, नहीं तो वह मद का नाश करने वाला कैसा होता, उसका केशकलाप कुडिलता को धारण करता है, नहीं तो वह मानो मिह को कैसे मारता?

5. A मुद्धिहि । 6. AP कह विरहें विरहि ।

(11) 1. AP कह । 2. A कंबुह । 3. A कंठ रसंतु । 4. A इहरहं । 5. A धवल । 6. AP जिज्जंतु । 7. AP मयणासु । 8. A कुडिलत्तु । 9. P माणवविदु ।

धत्ता—जहि दीसइ तहिं जि सुहावणिय सीय काई वणिज्जइ ॥ 10
रक्खेवि जणु जणयहु तणउ रामें धुवु परिणिज्जइ¹⁰ ॥ 11 ॥

12

ता कुलजयलच्छिसुहावहेण	पेसिय गियतणुरुहु दसरहेण ।	
बलणाहें समउं महाबलेण	परिवारिय चउरंगें बलेण ।	
गय ¹ ससुरणयर सुर ² सणर तसिय	चलवलिय मयर मयरहरल्हसिय ।	
भड रह ³ करि तुरिय ⁴ तुरंग चलिय	दसदसिवह एकहिं णाई मिलिय ।	
घर आयहं ⁵ मामें कुसलु कयउ	प्रांगणि ⁶ जयमंगलु ⁷ तूरु हयउ ।	5
गय कइवय दियहु मणोरहेहिं ⁸	हा पहु वेहाविउ पसुवहेहिं ।	
चलपंचवणधयधुव्वमाणु	मंडउ णिहित्तु जोयणपमाणु ।	
दिज्जइ दीणहं आहारदाणु	धिप्पइ कंपतहं मृगहं ⁹ प्राणु ।	
खज्जइ मासु वि किज्जइ विहाणु	महुं मिठउं पिज्जइ सोमपाणु ।	
इय णिव्वत्तिउ ¹⁰ कउ रित्तिएहिं	भणु को ण वि खद्धउ सोत्तिएहिं ।	10
हिंसाइ धम्मु नावासवेण	अण्णहिं वासरि जयजयरवेण ।	

धत्ता—इस प्रकार वह जहाँ दिखाई देती है, वही सुहावनी है, उसका वर्णन किस प्रकार किया जाए । जनक के यज्ञ की रक्षा करते हुए, राम की रक्षा करते हुए, उसका परिणय किया जाएगा ।

(12)

तब कुल लक्ष्मी से सुन्दर दशरथ ने अपने पुत्रों को भेज दिया । सेनापति महाबल के साथ चतुरंग सेना से धिरे हुए वे ससुर के नगर गए । मनुष्यों सहित देवता अस्त हो उठे । समुद्र से च्युत मगर चंचल हो उठे । योद्धा, रथ, हाथी, घोड़े चल पड़े मानो दसों दिशा-पथ एक साथ मिल गए हों । घर पर आए हुए उनका (राम, लक्ष्मण) का ससुर ने अभिवादन किया । प्रांगण में जय मंगल और तूर्य बजा दिये गए । इस प्रकार कुछ दिन बीत गए । लेकिन अफसोस है कि राजा पशु बधों से प्रवर्चित हुआ । उसने चंचल पचरंगे ध्वजों से आन्दोलित एक योजन प्रमाण का मंडल बनाया, दीनों को आहार दान दिया जाने लगा । काँपते हुए पशुओं के प्राण आहूत किए जाते हैं । इस प्रकार मांस खाया जाता है, और विधान किया जाता है । पुरोहितों ने इस प्रकार के यज्ञ का विधान किया है, बताइए ब्राह्मणों के द्वारा कौन नहीं ठगा गया कि वे जो हिंसा और पाप के आश्रय का धर्म बताते हैं । दूसरे दिन जय-जय शब्द के साथ ।

10. A परिणिज्जइ ।

(12) 1. A गय । 2. A सुरसेण तसिय; P सुर सणर तसिय । 3. AP करि रह । 4. A तुरय । 5. आयउ । 6. AP प्रांगणि । 7. A मंगलतूरु; P मंगलतरु । 8. AP मणोरहेहिं । 9. AP मृगहं प्राणु । 10. A णिव्वत्तिउ ।

यत्ता—धनुकोटिचडाविधधनुगुणहु¹¹ दरिसियवइरिविरामहु ॥
णियधीय सीय नवकमलमुहि जणए दिण्णी रामहु ॥12॥

13

वइदेहि धरिय करि हलहरेण
णं तिहुयणसिरि परमप्पएण
णं चंदे वियसिय कुसुममाल²
दुव्वारवइरिवारणभुएण
अच्छइ दासरहि सुहेण जाम
आणिउ विणीयपुरि सीरधारि
अहिंसिचिवि जिणपडिमउ धएहि
णिव्वत्तिय जिणपुज्जा महेण
अवराउ सत्त कण्णाउ तासु
सोलह तहु महितच्छीहरास
गंभीरधीरसाहसधणाहं
कोणाहयतूरइ रसमसंति³
संमाणवसइ सयणइ णडंति

णं विज्जुल धवलें जलहरेण ।
णं पायवित्ति पालियपएण ।
गोविंदे णं सिरि सारणाल ।
सहुं सीयइ सहुं केककयसुएण ।
पिउणा णियद्वयउ पहिउ⁴ ताम ।
सकलत्तु सभाउ दुहावहारि ।
दहियहि दुद्धहि धारापएहि⁵ ।
सिसुणेहें तूसिवि दसरहेण ।
निम्पणत्तु मुसलकरणहणामु ।
अलिकुवलकज्जलसामलासु ।
रइयउ विवाहु दोहं मि जणाहं ।
मिहुणाइ मिलंतइ दर हसंति ।
पिसुणइ चित्तासायरि पडंति ।

5

0

यत्ता—शत्रुओं की अंत दिखाने वाले तथा धनुष की कोटि पर सघन शब्द के साथ डोरी चढ़ाने वाले राम को जनक ने नव कमल के मुखवाली अपनी कन्या दे दी ।

(13)

राम ने सीता का पाणिग्रहण कर लिया मानो धवल मेघ ने त्रिजली को पकड़ लिया हो, मानो परमात्मा ने त्रिभुवन की लक्ष्मी को ग्रहण कर लिया हो, मानो प्रजा के पालन करने वाले राजा ने न्यायवृत्ति को पकड़ लिया हो, मानो चन्द्रमा ने पुष्पमाला को विकसित किया हो, मानो गोविन्द ने लक्ष्मी के कमल को पकड़ लिया हो । तब दुर्वारशत्रुओं से निवारण करने वाली भुजाओं वाले, कैकेयी के पुत्र और सीता के साथ, लक्ष्मण के साथ राजा राम जब सुख से रहते थे, तो पिता ने एक अपना दूत भेजा और दुःख का हरण करने वाले श्रीराम को पत्नी सहित अयोध्या बुलवा लिया । घी, दही, दूध की धाराओं से जिन भगवान् की प्रतिमा का अभिषेक कर महान् पुत्र स्नेह से संतुष्ट होकर राजा दशरथ ने जिनेन्द्र की पूजा की । हाथ में मुसल अस्त्र को धारण करने वाले राम को और भी सात कन्याएँ दी गई, तथा भ्रमर नील कमल और कज्जल के समान क्षामल तथा धरती की लक्ष्मी को धारण करने वाले लक्ष्मण को सोलह कन्याएँ दी गई । और इस प्रकार गंभीर, धीर, साहस रूपी धन वाले उन दोनों का विवाह किया गया । दंड से आहत नगाड़े बजने लगे, मिथुन जोड़े मिलने लगे, कुछ-कुछ और मुस्कराने लगे । सम्मान के वशीभूत होकर स्वजन लोग नृत्य करने लगे, दुष्ट लोग चित्ता रूपी सागर में पड़ गये ।

11 A दानगुणहु; P धनुगुणहु ।

(13) 1. A पालियपएण । 2. P कुमुममाल । 3. AP पहिउ । 4 P धारवएहि । 5. A समसंमति ।

घत्ता—काणीणहुं दीणहुं देसियहुं दिण्णइं दाणइं लोयहुं ॥

तहिं समइ पराइउ^१ महुसमउ णं विवाहु अवलोयहुं ॥ 13 ॥

15

14

सोहइ वसंतु जगि पइसरंतु
महुकारि व महु धारहि सचंतु
णियविधइं दसदिसु पट्ठवंतु
सारंतु सुवाविहि वारिचीरु
खरकिरणपयाउ^२ वि णेलरासु
पयडंतु असोयहु पत्तरिद्धि
वउलहु वउ सुच्छायउं^३ करंतु
तिलयहु दलतिलयविलासु देंतु
वल्लहकामुयवम्मइं हणंतु
माणिणिहि माणगिरि जज्जरंतु
उत्तंगमडिड^४ दियहइं गमंतु^५ ।
मंदारकुसुमरयमहमहंतु^६

अहिणयसाहुरहि महुसहंतु ।
हेमंतपहुत्तणु णिद्धवंतु ।
अंकुरफुरंतु^१ पल्लवचलंतु^२ ।
दावंतु णीलसेवालतीरु^३ ।
अवस वि दीहत्तणु वासरासु ।
मोक्खयहु दुक्कणुणमोक्खसिद्धि ।
वणलच्छिहि ओसासुय^४ हरंतु ।
वेल्लीकामिणियहं रसु जणंतु ।
कणयारफुल्लरयधूसरंतु^५ ।
हिडिरमसलावलिगुमुगुमंतु ।

5

10

रमणाहिलासविब्भम भमंतु ।

घत्ता—कानीन, दीन, देशी लोगों को दान दिया गया । ठीक उसी समय बसंत का समय आ पहुँचा । मानो उस विवाह को देखने के लिए ही ऐसा हो रहा है ।

(14)

जग में प्रवेश करता हुआ बसंत शोभित होता है, अभिनव सहकार वृक्षों से महकता हुआ कलाली की तरह मधु धाराओं से बहता हुआ, हेमन्त की प्रभुता को नष्ट करता हुआ, अपने चिह्न को दसों दिशाओं में भेजता हुआ, नवाकुरों से चमकता हुआ, पल्लवों से हिलता हुआ, वापिकाओं के जल रूपी चीर को हटाता हुआ, उनके नीले शैवालों के तीरों को दिखाता हुआ, सूर्य के तीक्ष्ण किरण प्रताप को और दिनों के लम्बेपन को दिखाता हुआ, अशोक के पत्तों की वृद्धि करता हुआ, मोक्ष (अजून) वृक्ष की दुष्ट फागुन से मुक्ति की सिद्धि को प्रगट करता हुआ, मौलश्री के शरीर को कांतिमय बनाता हुआ, वन लक्ष्मी के ओस रूपी आंसुओं को पोंछता हुआ, तिलक वृक्षों के पत्तों को तिलक की शोभा देता हुआ, लता रूपी कामिनियों में रस उत्पन्न करता हुआ, प्रियों के कामुक मर्मों को आहत करता हुआ, कनेर के फूलों की धूल को धूसरित करता हुआ, मानिनियों के मान रूपी पहाड़ों को जर्जर करता हुआ, घूमते हुए भ्रमरों की आवलि से गुनगुन करता हुआ, उत्तम वृक्ष विशेषों पर दिनों को बिताता हुआ, मंदार कुसुमों की धूल से महकता हुआ, रमण की अभिलाषा के विलास को उत्पन्न करता हुआ, बसंत आ पहुँचा ।

6. AP पराइउ ।

(14) 1. A फुरंत । 2. A लसंतु । 3. AP सेवालणीरु । 4. AP पयाउ दिण्णसरासु । 5. A सच्छायउ । 6. AP ओसंसुय । 7. AP कणियार^० । 8. AP उत्तंगमडिड । 9. AP add after this: मज्जंत-पक्खिफुल्लचुमुचुमंतु; K writes it but strikes it off. 10. AP read this line as: रमणाहिलासविब्भम भमंतु (A : रमणीहि विलासविब्भमि भमंतु), मयंदकुसुमरयमहमहंतु ।

घत्ता—जो मोणें चिरु संचरइ वणि सो संपइ महुसेविरु ॥

कलकोइलु¹¹ पुण वि पुण वि लवइ मत्तउ को ण पलाविरु ॥14॥

15

बज्जइ वीणा पिज्जइ पाणं	पियमाणुसचित्तं साहीणं ।	
गिज्जइ महरं सत्तसरालं	दठपेम्मं पसरइ असरालं ।	
परिमलपउरं पोसियरामं	बज्झइ फुल्लियमल्लियदामं ।	
गंधकयंबयछडयवियारे	णेवरकलरवणच्चियमोरे ² ।	
सुप्पइ ³ दवणयविरहयगेहे	पुप्फत्थरणे भमियदुरेहे ।	5
संधइ कामो कुसुमखुरप्पं ⁴	णासइ तावसत्तवमाहप्पं ।	
अणुणिज्जइ रूसंति पियल्ली	दाविज्जइ कंदप्पसुहेल्ली ।	
सरजलकेलीसित्तसरीरो	जंतविमुक्कसकुंकुमणीरो ।	
तिम्मइ ⁵ पणइणिसुहुमकडिल्लो	दिट्ठावयववूद्धरसिल्लो ⁶ ।	
कुवलयमालाताडणलनियउ ⁷	फुल्लपलासदुमिहि ⁸ पज्जलियउ ।	10
इच्छामाणियकंताकंतो ⁹	एव वियंभइ जाम वसंतो ।	

घत्ता—जो अभी तक वन में बहुत समय से मौन था, वह कोकिल इस समय मधु का सेवन करने लगा और बार-बार सुन्दर आलाप करने लगा । इस दुनिया में मतवाला कौन नहीं प्रलाप करता ?

(15)

वीणा बजने लगती है । मदिरापान किया जाने लगता है । प्रियजनों के चित्तों को साधा जाता है । सप्त स्वरों में मधुर गायता जाता है । अपर्याप्त दीर्घ प्रेम फैलने लगता है । परिमल से प्रचुर स्त्रियों का पोषण करने वाली खिली हुई मल्लिका की माला बांधी जाने लगती है । जिसमें सुगंधित द्रव्यों के समुच्चय का छिड़काव किया गया है, और नूपुरों के समान शब्द वाले मयूर नृत्य कर रहे हैं, जिसमें धमर घूम रहे हैं ऐसे द्रवण लताओं से रहित घर में पुष्प-शय्या पर प्रेमी जनों के द्वारा सोया जाता है । रुठी हुई प्यारी को मनाया जाता है, और उसे काम पीड़ा का सुख दिखाया जाता है । जिसमें सरोवर की जलक्रीड़ा से शरीर सींचा गया है, जिसमें यन्त्रों से छोड़ा गया केशर मिश्रित पानी है, जिसमें प्रणयिनी स्त्रियों के सूक्ष्म कटिवस्त्र गीले हो गये हैं, जो दिखाई देनेवाले अवयवों से बँड़े हुए वृक्षों वाला है, जो कुवलय मालाओं के मारे जाने की क्रीड़ा से युक्त है, जो खिले हुए पलाशों के वृक्षों से जल रहा है, जिसमें पति-पत्नी अपनी इच्छाओं को मना रहे हैं, ऐसा वसन्त बढ़ने लगता है ।

11. A °कोकिलु ।

(15) 1. A गंधकुडंबय¹ । 2. AP जेउर² । 3. A सुप्पय³ । 4. P °खुरप्पं । 5. A निम्मिय⁴; P तिम्मिय⁵ । 6. P °वयवसुवूद्धरसिल्लो । 7. A लल्लो । 8. A °दुमेहि णं जल्लो; P °दुमेहि णं जलियउ । 9. A इच्छय⁶; P इच्छए ।

घत्ता—ता दसरहपयपंकय णविवि विहसिवि रामें वुच्चइ ॥
संताणकमागय तुह णयरि वाणारसि किं मुच्चइ ॥15॥

16

णासिज्जइ किं सो कासिदेसु	सुणि ताय रायसत्थोवएसु ।
गुरुगय णियगय णिव दुविह बूद्धि	बूद्धीइ पंचविह मंतसिद्धि ।
दीसंति जाइ सच्छिवेरि	सा मंतराति सत्तुसि सुरि ।
विदुरे वि ह्व अणिहालियदिसेण	उच्छाहसत्ति पुणु पोरिसेण ।
पहुसत्ति कोसदंडेहि ¹ देव	एयइ विणु महियसु वहइ केव ।
जाणेवा ² अवर अलद्धलाह	चत्तारि उवाय धरत्तिणाह ³ ।
बोल्लिज्जइ पहिलारउ जि सामु	पियवयणु जीवजणियाहिरामु ।
बीयउ पुणु सीकिज्जंति किच्च	संमाणिवि वइरिविरत्त भिच्च ।

5

घत्ता—ते थद्ध लुद्ध अवमाणणिहि भीरु कहंति विवक्खहु ॥

णियरायहु केरउ दुच्चरिउ वियलियपह⁴ परिरक्खहु ॥16॥

10

17

उवदाणु वि हरि करि हेम ¹ रयणु	दिज्जइ जइ लब्भइ को वि सयणु ।
अवयाह देसपुरगामडहणु	सो दंडु भणंति वरारिमहणु ।

घत्ता—तो दशरथ के चरण-कमलों को नमस्कार कर राम ने कहा—आपके द्वारा कुल परम्परा से प्राप्त नगरी क्यों छोड़ी जाती है ?

(16)

उस काशी देश को क्यों छोड़ा जाय ? हे आदरणीय, राजनीति-शास्त्र का उपदेश सुनिए । हे राजन्, बुद्धि दो प्रकार की होती है, एक गुरु की और दूसरी स्वयं की । बुद्धि से पांच प्रकार के मंत्रों की सिद्धि होती है । जिस बुद्धि से बैरी छिद्रपूर्ण दिखाई देता है, विद्वान् उसकी साधना करते हैं । संकट के समय भी किकर्तव्यमूढता से रहित पौरुष के द्वारा उत्साह शक्ति सिद्ध होती है । हे देव, कोष और दंड से प्रभु की शक्ति सिद्ध होती है, इसके बिना धरतीतल की रक्षा कैसे की जा सकती है ? और भी, हे पृथ्वी के स्वामी, जिनसे लाभ प्राप्त नहीं किया गया है, ऐसे चार उपायों को जानना चाहिए । पहला उपाय साम कहा जाता है, प्रिय वचनवाला जो जीवों के लिए अत्यन्त सुन्दर लगता है । दूसरे भेद उपाय को स्वीकार करना चाहिए । इसके द्वारा शत्रुओं से विरक्त लोगों का सम्मान करके उसका भेदन करना चाहिए ।

घत्ता—ये लोभी और जड़ होते हैं, अपमान ही इनकी निधि है । ये डरपोक होते हैं, ये रक्षा करनेवाले अपने राजा और विपक्ष का दुश्चरित बता देते हैं ।

(17)

हाथी, अश्व, स्वर्ण, रत्न का दान करना चाहिए । यदि कोई स्वजन मिल जाता है, तो अवश्य देना चाहिए । और देश, पुर, ग्राम को जलानेवाला अपकार भी करना चाहिए, उसे श्रेष्ठ

(16) 1. A कोसु दंडेहि । 2 A जाणेव्वा; P जाणेव । 3. AP धरत्तिणाह । 4. A वियविय^० ।

(17) 1. AP हेमु ।

जिप्पंति हरिस मय कोह काम
जउ वक्खाणिउ इंदियजएण
सावहि गिरवहि इच्छंति के वि
विग्गहु विरइज्जइ दोसदुट्ठु
आसणु गुरु कहइ असक्ककालि
जाणु वि सलाहु परिवारपोसि
जा किर विग्गहसंधाणवित्ति
जहि ण वहइ णियकरहत्थियारु
णरवइ अमच्चु जणठाणु दंडु
सत्त वि पयईउ हवंति जेण

रिउ माण लोह दुक्कम्मधाम ।
संधि वि मित्तत्तणसंगएण ।
पट्टणइ वत्थु वाहणइ लेवि^२ ।
दोसेण होइ बंधु वि अणिट्ठु ।
अवरोहि विउलि रणंतरालि ।
किज्जइ वज्जियदुंदुहिणिघोसि ।
तं दोहीअरणु^३ ण का वि भंति ।
असरणि रिउसेव वि किं ण चारु ।
धणु दुग्गु^३ मित्तु संगामचंडु ।
उज्जउं णउ मुच्चइ ताय तेण ।

10

घत्ता—तं गिसुणिवि जणसंतावहर ताएं चावविहूसिय ॥

णं जलहर^४ बे वि धवल कसण सुय वाणारसि पेसिय ॥ 17 ॥

18

णियतायपसायपसण्णभाव
देहच्छविहूसियरवियरोह^३

सविणय पणमंत^१ विमुक्कगाव ।
जुवरायत्तणसिरिलद्धसोह ।

शत्रुओं का नाश करनेवाला दंड कहते हैं। हर्ष, मद, क्रोध और काम रूपी और दुष्कर्मों के आश्रय लोभ और मान रूपी अन्तरंग शत्रुओं को जीतना चाहिए। इन्द्रियों की विजय से जीत का बखान किया जाता है, और मित्रत्व की संगति के साथ संधि भी करनी चाहिए। कितने ही लोग अवधि पूर्वक या बिना अवधि के नगर वस्तु और वाहन लेकर संधि की इच्छा करते हैं। दोनों से सहित दुष्ट के साथ विग्रह करना चाहिए क्योंकि दोष के कारण बन्धु भी अनिष्ट होता है। गुरु असंभव काल में दुर्गाश्रय की बात कहते हैं, और विशाल परिवार का पोषण करनेवाले बजते हुए नगाड़ों के घोष के साथ गमन करना ही सराहनीय है, तथा जो युद्ध और संधि की संधान वृत्ति है, उसे द्वैधीकरण कहा जाता है, इसमें जरा भी भ्रान्ति नहीं और यदि अपने हाथ में हथियार नहीं रहता है, तो अशरण की उस अवस्था में शत्रु की सेवा करना क्या अच्छा नहीं है? राजा, अमात्य, जनस्थान, दंड, धन, दुर्ग और संग्राम में प्रचंड मित्र—ये सात प्रकृतियाँ होती हैं। हे पिता, उससे उद्यम नष्ट नहीं होता।

घत्ता—यह सुनकर लोगों के संताप को दूर करने वाले पिता दशरथ ने धनुष से शोभित दोनों पुत्रों को वाराणसी भेज दिया। मानो वे दोनों काले और सफेद मेघ हों।

(18)

अपने पिता के प्रसाद से प्रसन्न, गर्वरहित वे दोनों प्रणाम करते हैं, जिन्होंने अपने शरीर की कांति से सूर्य के किरणसमूह को दूषित कर दिया है, और जो युवराज की लक्ष्मी से शोभा

2. A दोहीकरण; P दोहीअरणु । 3. A दुग्ग मित्त । 4. जलहर धवल बे वि कसण ।

(18) 1 A पणमंत; P णयवंत; K records a p : णयवंत । 2. A "सूतिय"

मणिसउडसुपट्टालिगियंग³ णं सुरमहिहरउत्तंगसिग⁴ ।
 सेविज्जमाण णरखेघरेहि विज्जिज्जमाण चलचामरेहि ।
 जोइज्जमाण जणवयजणेहि पेल्लिज्जमाण कामिणिबणेहि । 5
 अलिकसणपीयणिवसणणिउत्त सुंदर सुबलाकेवकयहि पुत्त ।
 दियहेहि बंधु ते जंत जंत रमणीयपएसहि⁵ थंत थंत ।
 पहचोइय मय सुहजणणपत्त वाणारसि⁶ बिणिण वि वीर⁷ पत्त ।
 धयमालातोरणमंगलेहि दहिदोवहि⁸ सियकलमुप्पलेहि ।
 णाणाणायरियहि दोसमाण पइसंति⁹ णयरि णं कामवाण ॥ 10
 घत्ता—जणु बोल्लइ इसरइजेइसुउ इह ससहोयर¹⁰ आवइ ॥
 कंचीकलाव गुप्पंतु¹¹ पहि पुरणारीयणु¹² धावइ ॥ 18 ॥

19

क वि मेल्लइ कोतलफुल्लदामु णीससइ का वि जोयंति रामु ।
 काइ वि थणजुयलउं विहलु गणिउं¹ हा² एउ ण लवखणणहहि वणिउं ।
 क वि दावइ कंकणु का वि हार क वि ऊरयलु³ क वि मुहबिबयारु ।
 पयलंतउं⁴ क वि परिहाणु धरइ क वि कट्टदिट्ठि जोयंति मरइ ।

को प्राप्त हैं, जिनके दिव्य शरीर मनि-मुक्ताओं की पदावली से आलिंगित हैं, जो मानो ऊँचे शिखरों वाले सुमेरु पर्वत के समान हैं, ऐसे वे मनुष्य और विद्याधरों द्वारा सेवित चंचल चामरों से हवा किये जाते हुए, जनपद लोगों के द्वारा देखे जाते हुए कामिनिजनों के द्वारा प्रेरित किए जाते हुए जो भ्रमर के समान काले और पीले कपड़े पहने हुए थे—ऐसे सुबला और कैकयी के पुत्र अत्यन्त सुन्दर थे। इस प्रकार दिन-दिन जागते हुए रमणीक प्रवेशों में विश्राम करते हुए वे पूज्य पिता के द्वारा दिये गये बाहनों वाले तथा पथ पर हाथियों को प्रेरित करते हुए वे दोनों वीर वाराणसी नगरी पहुँचे। ध्वजमालाओं, तोरणों, मंगलों, दधि और दूर्वाओं और श्वेत कलश पर रखे गए कमलों के साथ अनेक नागरिकाओं द्वारा देखे गए वे दोनों नगरी में ऐसे प्रविष्ट हुए जैसे कामवाण हों।

घत्ता—लोगों ने कहा—यह दशरथ के सबसे बड़े बेटे हैं, जो अपने भाई के साथ आए हैं, तब अपनी करधनियों को छोड़ती हुई, पुर की स्त्रियाँ पथ पर दौड़ने लगतीं।

(19)

कोई अपनी चोटी से फूलों की माला छोड़ देती है, कोई राम को देखती हुई निःश्वास लेने लगती है। किसी ने अपने स्तनस्थल को फलहीन समझा और कहा कि इनको लक्ष्मण के नखों ने घायल नहीं किया। कोई कंगन दिखाती है, कोई हार। कोई उरुतल दिखाती तो कोई मुखबिंबाधर कोई अपनी खिसकती हुई धोती धारण नहीं कर पाती। कोई कष्ट दृष्टि से देखती हुई मर रही

3. P सुपट्टा³ । 4. AP उत्तुंग⁴ । 5. P रवणीय⁵ । 6. P वाराणसि । 7. P धीर । 8. A दहिदूर्वाहि ।
 9. A पयसंति । 10. A एह सहोयर 11. A गुप्पंति पहे । 12. AP पुरेणारी¹² ।

(19) 1. A मुणिउं । 2. A हो । 3. AP उरयलु । 4. A पयलंतु का वि ।

क वि सिंचि पेम्भजलेण भूमि
जइ इच्छइ कह व धरितिसामि
दारें भत्तारु ण जाहुं देइ
मणि⁵ का वि विसूरइ चंदवयण
णं तो जोयमि उब्भिवि करग
कर मउलिवि सण्णइ का वि पोमु
क वि णेउरु पहि णिवडिउ ण वेइ
जोयंति रायसुयज्जलतोइ

क वि चितइ एवहिं घर ण जामि ।
तो जियमि माइ सच्चउं भणामि ।
पायाइ कि पि अंतर करेइ ।
तलहत्थि⁶ ण जाया मज्झु णयण ।
गच्छंतु⁷ सुहय सुहसारमण ।
आवेसमि जावहि सुवइ पोमु ।
क वि भिक्षाचारिहि भिक्ष देइ ।
अण्णेत्तहि⁸ घल्लइ कूरपिडु ।

5

10

घत्ता—क वि विहसिवि बोल्लइ चंदमुहि सीयइ काइ वउत्थउं ॥

जेणेहुं लद्धउं⁹ पययणु दरिसियकामावत्थउं ॥११॥

20

अण्णेक्कइ वुत्तउं जाहि माइ
वयणें बहुणेहपवत्तणेण
जइ एहु ण इच्छइ विउलरमणि
इय पुररभणीयणजूरणेण

सग्गेज्जसु णाहु सणइ पाइ ।
हरि आणहि भहु वूयत्तणेण ।
तो मारइ मारु मरालगमणि ।
सज्जणहं मणोरहपूरणेण ।

है। कोई प्रेमजल से धरती को सिंचित करती है। कोई सोचती है कि मैं अब घर नहीं जाऊँगी, और कहती है कि हे माँ, धरती के स्वामी यह यदि किसी प्रकार मुझे चाहते हैं तभी मैं जीवित रह सकती हूँ। सच कहती हूँ, पति किसी महिला को जाने नहीं देता और परकोटे पर कोई आड़ कर देता है। कोई चन्द्रमुखी भी अपने मन में अफसोस करती है कि हथेली में मेरे नेत्र क्यों नहीं हैं, नहीं तो दो हाथ ऊँचे करके मैं देख लेती। शुभ श्रेष्ठ मार्ग में जाते हुए उन दोनों सुभर्गों को हाथ ऊँचे करके देख लेती हूँ। कोई अपने हाथ को बन्द कर राम से संकेत करती है कि जब कमल मुकुलित हो जायेंगे, तब मैं आऊँगी। कोई पथ पर गिरे हुए अपने नूपुरों को नहीं जान पाती। कोई भिक्षा मांगने वाले को भिक्षा देती है, लेकिन उन दोनों राजपुत्रों के मुखों को देखती हुई भात का समूह दूसरी जगह डाल देती है।

घत्ता—कोई चन्द्रमुखी हँस कर कहती है कि सीतादेवी ने ऐसा कौन-सा व्रत किया है कि जिससे उन्होंने कामदेव की अवस्था को प्रकट करने वाला पति-रत्न प्राप्त किया।

(20)

एक और ने कहा—हे माँ, तुम जाओ और स्वामी के पैरों से लगे। अत्यन्त स्नेह से भर-पूर वचनों के द्वारा राम को यहाँ ले आओ। यदि यह इस विशाल रमणी को नहीं चाहता तो उस हंस की चाल वाली को कामदैत्य मार डालेगा। इस प्रकार नगर की स्त्रियों को पीड़ा उत्पन्न करते हुए तथा सज्जनों के मनोरथों को पूरा करने वाले ये दोनों भाई, दधि, अक्षत और निर्मल्य को

5. A मणि स विसूरइ क वि चंद⁵; P मणि सुविसूरइ क वि चंद⁶। 6. AP हलि हत्थि ण। 7. A गच्छंत; P गच्छंति। 8. AP अण्णहिं ता घल्लइ। 9. AP पययणु।

दहिअस्त्रयसबहुसेआउ¹ लेनि 5
 पियवयणें कि वि कि वि पाहुडेण
 कि वि सुहिसंबंधपयासणेण
 कि वि जेहें कि वि भुयबलिण घित्त वणवाल² चंड मंडलिय जित्त ।

घत्ता—मयरहरहु मलु दूसणु जिणहु अमयहु विसु कि सीसइ ॥

गुणवंतहं दसरहतणुहहं दुज्जणु को वि ण दीसइ ॥20॥ 10

21

अच्छंति बे वि ते तेत्थु जाव एत्तहि लंकहि दहवयणु ताव ।
 वरकणयवीढसंणिहियपाउ¹ सीहासणग्गि रायाहिराउ ।
 अत्थाणि णिसण्णउ सामदेहु अवइण्णु महिहि णं काममेहु ।
 करचालियाई चमरइ पडंति² कप्पूरपउरधूलिउ घुलंति ।
 पाढय पडंति तहि णड णडंति वाइत्तताल तेत्थु जि घडंति³ । 5
 गिज्जंति गेय सरठाणलग्ग णच्चंति असेस वि देसिमग्ग⁴ ।
 पडिहारहि अणिबद्धउं चवंतु णियमिज्जइ लोउ वियारवंतु ।
 विण्णप्पइ भण्णइ⁵ जीय देव अमर वि करंति कमकमलसेव ।

ग्रहण कर राजदरबार में प्रविष्ट हुए । कुछ को प्रिय वचनों से, कुछ को उपहारों से, कुछ को रण से, कुछ को उत्कट दुर्वचनों से, कुछ-कुछ को अच्छे संबंधों के प्रकाशन से, कुछ को वृत्तियों के भूषण से, इस प्रकार उन्होंने लोगों को वश में किया । कुछ को स्नेह से, कुछ को बाहुबल से पराजित किया । इस प्रकार उन्होंने वनपाल और प्रचंड मांडलिक राजाओं को जीत लिया ।

घत्ता—समुद्र में मल, जिन भगवान् में दूषण और अमृत में विष नहीं होता । इसी प्रकार गुणवान दशरथपुत्रों को कोई भी व्यक्ति दुर्जन दिखाई नहीं दिया ।

(21)

जब वे दोनों इस प्रकार वहाँ रह रहे थे । तब यहाँ लंका नगरी में, जिसने सुन्दर स्वर्ण पीठ पर अपना पैर रखा है, ऐसा राजाधिराज रावण सिंहासन के अग्रभाग पर बैठा था । श्याम शरीर सिंहासन पर बैठा हुआ वह ऐसा मालूम हो रहा था, मानो धरती पर काम मेघ उत्पन्न हुआ हो । हाथों से चलाये गए चमर उस पर गिरते थे । कपूर से प्रचुर धूल उस पर गिरती थी । पाठक चारण पढ़ते, नट नाचते, वाद्यों का ताल भी वहाँ रचा जा रहा था, स्वर और ताल से युक्त गीत गाये जा रहे थे, और सब लोग देशी ढर्रे से नाच रहे थे, प्रतिहारियों के द्वारा अंट-शंट बोल कर, विकार युक्त लोग नियंत्रित किए जा रहे थे । यह निवेदन और कथन किया जा रहा था—हे देव, आप जीवित रहें । देवगण भी आपके चरण-कमलों की सेवा करते हैं ।

(20) 1 AP सिद्धयस्त्रयसेआउ । 2. A बलवाल ।

(21) 1 AP णवकणय² 2. AP चवंति । 3. A घुलंति । 4. A देसिमग्ग । 5. P जगवइ ।

घत्ता—दसकंधरु दुद्धरु धरियधरु^६ सेयविहूसियदिसवहु ॥
जहि अच्छइ भरहध रत्तिवइ^७ पुष्पक्यंतसंकावहु ॥21॥

10

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकविपुष्पक्यंतविरइए महाकव्वे सीयाविवाहकल्लणं णाम
सत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो^८ ॥ 70 ॥

घत्ता—तेज से दिशापथों को विभूषित करनेवाला धरती को धारण करनेवाला रावण
जहाँ था, वहीं सूर्य और चन्द्रमा के भय को उत्पन्न करनेवाले भारत में धरती के अधिपति राम
भी थे ।

जैसे महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पकन्त द्वारा
विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का सीता-विवाह-
कल्याण नाम का सत्तरवां परिच्छेद समाप्त हुआ ।

एकहत्तरिमो संधि

णरसिरकरखंडणु¹ कहि तं भंडणु एम भणंतु जि संचरइ ॥
तहि विषियगारउ आयउ² गारउ अत्थाणंतरि पइसरइ ॥ ध्रुवकं ॥ छ ॥

1

उद्धाबद्धपिंगजडमंडलु ³	पोमरायरयणमयकमंडलु ।	
तारतुसारहारपंडुरतणु ⁴	णं ससहरु णावइ सारयघणु ।	
विमलफलिहमणिवलयालंकित	णं जसुं पुरिसरूवु विहिणा किउं ।	5
दीसइ एतउ ⁵ रायहु केरउ ⁶	रणकायरभडभयइ जणेरउं ।	
कडियलणिहियहेममयमेहलु	हसणु भसणु सवसणु ⁷ सकलसु खलु ।	
सोत्तरीयउववीयउरुज्जलु ⁸	हिंडणसीलु समीहियकलयलु ।	
कयदेवंगवत्थकोषीणउ	जुज्जु अपेच्छमाणु णिरु झीणउ ।	
दिट्ठउ रावणेण ⁹ पडिदत्तिइ	वइसारिउ आसणि गुरुभत्तिइ ।	10

इकहत्तरवीं संधि

वह लड़ाई कहाँ है कि जिसमें मनुष्यों के सिर, हाथों का खंडन होता है, इस प्रकार कहता हुआ जो विचरता रहता है, ऐसा लोगों का अप्रिय करने वाला नारद वहाँ आता है, और दरबार के भीतर प्रवेश करता है ।

(1)

जिसने अपने पीले जटा समूह को ऊपर बांध रखा है, जिसका कमंडलु पद्मराज मणियों से बना है, जिसका शरीर स्वच्छ हिमकण के हार के समान सफेद है, मानो-चन्द्रमा हो या शारदीय मेघ । स्वच्छ स्फटिक मणि के वलय से अंकित वह, ऐसा मालूम होता है, मानो उसके पुरुष रूप की विधाता ने स्वयं रचना की है, आता हुआ वह ऐसा दिखाई देता है कि जैसे राजा के रण में कायर योद्धाओं के लिए भय उत्पन्न करने वाला हो । उसके कटितल में स्वर्णमेखला थी । जो बहुत हँसता बोलता, ईर्ष्या से युक्त और युद्ध में आसक्ति रखनेवाला था । उत्तरीय को पहने हुए उसका वक्षस्थल उज्ज्वल था । घूमते हुए, और युद्ध की इच्छा रखते हुए, उसकी कौपीन वस्त्रों की बनी हुई थी । जो युद्ध न होने से अत्यन्त क्षीण हो गया था । रावण ने उसे देखा और

(1) 1. 1 AP णरकरसिर^० । 2. A कोलइ गारउ; P आइउ गारउ । 3. P उद्धाबद्ध पिंगु जडमंडलु । 4. P पंडर^० । 5. A जसरूउ पुरिस विहिणा । 6. A एतहो; P एतउ । 7. P केइउ । 8. AP वसणु । 9. A^० उरुज्जलु । 10. A रामणेण ।

पुच्छिउ पटुणा परमणभूलउ कहहि बस को महु पडिकूलउ ।
तं गिसुणिवि संगामपियारउ आहासइ दहगीबहु णारउ ।

धत्ता—सुरगिरिसिरि णिवसइ महिहि ण विलसइ संचइ धणयहु तणउं धणु ॥
णिसि णिइ ण पावइ सयमहु भावइ णावइ तुज्जु जि भीयमणु ॥ १ ॥

2

सिहि णं करइ तुहारउं भाणसु डहु वइवसु वइरिहि तुहुं वइवसु ।
णेरिउ णेरियदिस^१ ता रुंभइ जाव ण तुज्जु पयाउ वियंभइ ।
रयणायरु जं गज्जइ तं जइ तुहुं जि एक्कु तइलोकिक महाभइ ।
वाउ वाइ किर तुह णीसासैं बज्जइ फणिवइ तुह फणिपासैं ।
चंदु सूरु किर^२ तुह घरदीवउ सीहु वराउ वसउ वणि सावउ ।
ससुरु सगरु खगु जगु तुह बीहइ पर पइं जिणिवि एक्कु जसु ईहइ ।
दसरहतणउ मुसलहलपहरणु दूरमुक्कपररमणीपरहणु ।
परबलपबलसलिलवडवामुहु जासु भाइ रणरसवियसियमुहु ।
लक्खणु सुहडलक्खविकखेवणु अण्णु वि जासु पवरपीणत्थणु^३ ।
जणएं कण्णारयणु विइण्णउं तासु^४ रुवि थिउ विहिणेउण्णउं ।

5

10

स्वागत किया। गुरु-भक्ति के साथ आसन पर बैठाया। राजा ने दूसरों के मन के लिए शूल के समान उससे पूछा—यह बात बताइए कि कौन मेरे प्रतिकूल है? यह सुनकर जिसे संग्राम प्यारा है, ऐसा नारद रावण से कहता है—

धत्ता—यद्यपि इन्द्र सुमेरु पर्वत के शिखर पर रहता है, वह धरती पर शोभित नहीं होता। वह कुबेर का धन संचित करता है, फिर भी रात को उसे नींद नहीं आती। ऐसा मालूम होता है जैसे तुमसे भीत मन उसे अच्छा नहीं लगता।

(2)

आग तुम्हारे यहाँ मानो रसोइये का काम करती है। यम दग्ध हो जाए, तुम शत्रुओं के लिए यम हो, नैऋत्य नैऋत्य दिशा को रोकता है तब तक कि जब तक तुम्हारा प्रताप नहीं फैलता। समुद्रजो गरजता है वह मूर्ख है, क्योंकि तीनों लोकों में एक तुम्हीं महासुमद हो। तुम्हारे निश्वास से हवा चलती है। तुम्हारे नागपाश में नागराज बंध जाते हैं। सूर्य और चन्द्रमा तुम्हारे घर के दीपक हैं। सिंह बेचारा वन में निवास करता है और श्वापद भी। देवताओं और मनुष्यों सहित खग और जग तुमसे डरता है, लेकिन एक आदमी ऐसा है कि जो तुम्हें जीतने की इच्छा रखता है। दशरथ का बेटा, हाथ में मूसल का हथियार रखनेवाला, पररमणी का परिहार करनेवाला (राम) और जिसका भाई शत्रु सेना के प्रबल पानी में बड़वाग्नि के समान है, और जिसका मुख वीर रस से विकसित है ऐसा लक्ष्मण लाखों योद्धाओं को क्षुब्ध करने वाला है, और भी जिसे राजा जनक ने अपनी विशाल पीन स्तनों वाली बाला प्रदान की है, जिसके रूप में त्रिधाता का नैपुण्य स्थित है।

(2) 1 AP णेरियदिसि । 2 AP किहु । 3 AP पीणपीवरथणु । 4 AP ताहि ।

घत्ता—सा तुज्झ जि जोम्मी लयललियंगी हिप्पइ मड्डइ⁵ किकरहं ॥
सुरसारि झसमुद्धु होइ समुद्धु णउ जम्मि वि पंकयसरहं ॥2॥

3

विष्फुरियाणणु णं पंचाणणु	तं णिसुणिवि पडिलवइ दसाणणु ।	
धीर विमृक्ककेर करिकरभय	खल बलपयल ¹ चवल दसरहसुय ।	
रामसाम गयसाम सहोयर	माराम मुहड तुमांल भूगोयर ।	
हरमि घरिणि गुणमणिसंचयखणि	अहिणवहरिणयण मयणावणि ।	
पभणइ णारयरिसि किं गावें	रावण ² विहलें वीरपलावें ।	5
सरह सीह को वणि संधारइ	काल कयंत बे वि को मारइ ।	
चंद सूर को खलइ णहंगणि	हरि बल को णिहणइ समरंगणि ।	
केसरिकेसछडा ³ को ⁴ छिप्पइ	जाणइ केण णराहिव हिप्पइ ⁵ ।	
चवइ राउ विरइयअवराहहं	बालहं बाणारसिपुरिणाहहं ⁶ ।	
सिरकमलइ खंडेसमि जइयहं	तुहं वि तेत्थु आवेसहि तइयहं ।	10

घत्ता—तेलोककभयंकर⁷ वइरिखयंकर धनुगुणटंकार जि झुणइ ॥
खेयरउरदारणि महं सरधोरणि रणि रामहु वम्मइ लुणइ ॥3॥

घत्ता—वह स्त्री लता के समान सुन्दरता अंग वाली तुम्हारे योग्य है। अपने चातुर्य से उसे बलपूर्वक किकरों से छीन लीजिए। क्यों कि गंगा नदी मछलियों से भरे समुद्र की होती है, वह जन्म भर तलाबों की नहीं होती।

(3)

जिसका मुख चमक रहा है, ऐसे शेर के समान वह रावण यह सुनकर बोला—मैं धीर, मर्यादा से हीन हाथी के सूंड के समान भुजाओं वाले दुष्ट बलवान, चंचल दशरथ के बेटे राम और श्यामल लक्ष्मण को, जो हाथी के समान श्याम हैं, ऐसे सुभटों को तुमुल-युद्ध में मारूँगा और मैं गुणों और मणियों के संचय की खान अभिनव हरिणियों के समान नेत्र-वाली कामदेव की भूमि, उसका अपहरण करूँगा। नारद मुनि कहते हैं—हे रावण, गर्व से विह्वल प्रलाप से क्या ? क्यों कि वन में श्वापद और सिंह का संहार कौन कर सकता है ? काल और कृतान्त को कौन मार सकता है ? सूर्य और चन्द्र को आकाश के प्रांगण से कौन स्थलित कर सकता है ? युद्ध के प्रांगण में राम और लक्ष्मण को कौन छू सकता है ? हे राजन्, जानकी का कौन अपहरण कर सकता है ? तब राजा कहता है—अपराध करनेवाले वाराणसी नगरी के राजा उन दोनों बालकों के सिर-कमलों को जब मैं काटूँगा, हे मुनि तब आप वहाँ आना।

घत्ता—फिर तीनों लोकों में भयंकर शत्रुओं का नाश करनेवाला रावण धनुष की टंकार करता है। और कहता है—विद्याधरों के वक्षस्थलों को चीरने वाली मेरी बाणों की परम्परा युद्ध में राम के कवच को छिन्न-भिन्न करेगी।

5 AP मड्डइ । 6. P ससमुद्धु ।

(3) 1. AP रणपयल । 2. P रामण । 3. A ⁰केसरसड; P ⁰केसरसड । 4. AP कि । 5. AP छिप्पइ । 6. AP वाराणसि⁰ । 7. A तइलोक⁰ ।

4

ता परियाणवि कलहह्णु कारण	अवसें होसइ एत्थु महारणु ।	
गउ णारउ णियमणि संतुट्ठउ	वीसपाणि मंतणइ पइट्ठउ ² ।	
दुट्ठु अणिट्ठु विसिट्ठु ण ³ सिट्ठउ	मंतिउ ⁴ मंतु सबुद्धिइ दिट्ठउ ।	
तणुलायण्णवण्णजलवाहिणि	हिण्णइ रहुकुलणाहहु गेहिणि ।	
मारिज्जंति भाइ ते भीसण	भणु मारीयय भणइ विहीसण ।	5
तं णिसुणिवि मारीए ⁵ वुत्तउ	परवहुरमणु णरिद अजुत्तउ ।	
परवहुरमणु धम्मणिल्लूरणु	परवहुरमणु सयणसयजूरणु ।	
परवहुरमणु कित्तिविद्ध ⁶ सणु	परवहुरमणु विमलकुलदूसणु ।	
परवहुरमणु पराहवमारउं	परवहुरमणु णरयपइसारउं ।	

घत्ता—परयास सुविट्ठलु दुक्खहं पोट्ठलु दुग्गमु दुज्जेसपरियस ॥ 10
 बहुभवसंसारणु सिवगइवारणु पावासवविहिवासघर ॥4॥

5

दुत्तरमोहमहण्णवि छूडउं	परवहुरमणु करइ जो भूडउ ।
तुहं घदं ¹ बहुसत्थत्थवियाणउ	अण्णु वि सयलहि पुहइहि राणउ ।

(4)

तब इस कलह के कारण को जानकर कि अब अवश्य ही महायुद्ध होगा, नारद अपने मन में संतुष्ट होकर चला गया और रावण भी परामर्श के लिए महल में प्रविष्ट हुआ। उसने यह दुष्ट अनिष्ट बात विद्वान् मंत्री से नहीं कही, अपनी बुद्धि से ही इस बात का विचार किया कि शरीर के सौन्दर्य और वर्ण की नदी रघुकुलनाथ की गृहणी का हरण किया जाए, उन भयंकर भाइयों को मार दिया जाए। यह मारीच से कहो। तब विभीषण कहता है। यह सुनकर मारीच बोला, हे राजन्, परवधू से रमण करना अनुचित है, परवधू का रमण धर्म का नाश करने वाला होता है, परवधू का रमण आत्मीय जनों को संताप पहुँचाने वाला होता है। परवधू का रमण कीर्ति का नाश करने वाला होता है। परवधू का रमण पवित्र कुल को दोष लगाने वाला है। परवधू का रमण दूसरों का अपकार करने वाला है, परवधू का रमण नरक में प्रवेश कराने वाला है।

घत्ता—परस्त्री अत्यन्त नीच दुःख की पोटली होती है। दुर्गम और छोटे यश की समूह है, अनेक लोकों में घुमानेवाली एवं मोक्ष गति का निवारण करनेवाली और पापाश्रय विधि का वास-घर होती है।

(5)

जो मूर्ख व्यक्ति परवधू से रमण करता है, वह नहीं तरने योग्य मोह रूपी महासमुद्र में जा गिरता है। तुम अनेक शास्त्रार्थों को जानने वाले हो, और फिर सकल धरती के राजा हो। जो

(4) 1. A परितुट्ठउ । 2. AP वइट्ठउ । 3. AP वसिट्ठउ । 4. AP मंतिए ।

(5) 1. AP तई ।

जो पडिकूलु होइ सो हम्मइ परवहु पुणु सिदिणि वि ण रम्मइ ।
 भणइ दसाणणु जणसामण्हं² जणएं जाणिवि दिण्णी अण्हं ।
 थीयणसारी णयणपियारी चंपयगोरी हिययवियारी³ ।
 सेलसिहरसंचालणचंडहि सा⁴ अवहंडमि जइ भुयदंडहि ।
 तो सकयत्थु महारउं जीविउ तो मइं णरभवफलु संप्राविउ⁵ ।
 जइ तहि तं मुहकमलु ण चुंबमि तो अण्णाणउं काइं विडंबमि ।
 कम्मणिबंधणेण णिव्कज्जे⁶ किं महं महियलेण किं रज्जे ।

5

घत्ता—हरिणच्छिहि वत्तइ सुइसुहमेत्तइ⁷ उप्पाइउ मणि कलमलउ ॥

10

रइकायर कंयइ पुणु पुणु जंपइ दहमुहु विरहविसंठुलउ ॥ 5 ॥

6

बुज्झिवि अंतरंगु दहगीवहु वाय विणिग्गय मुहि मारीयहु ।
 कामबाणसंताणहि भग्गउ जइ तुहं महिबइ सीयहि लग्गउ ।
 तो वि मयणु मग्गं माणेवउ¹ रत्तावेरत्ताचित्तु जाणेवउं² ।
 तं जाणिज्जइ विविहपयारें विडगुरुभासिएण सुयसारें ।
 असयदेसिजाइपरइत्थहु³ इंगियसत्तभावरसगुत्थहु⁴ ।

तुम्हारे प्रतिकूल है, उसे तुम्हें मारना चाहिए । लेकिन परवधू का रमण तुम्हें स्वप्न में भी नहीं करना चाहिए । तब दशानन कहता है—जनक ने जान-बूझकर (मुझे छोड़कर) किसी अन्य जन-सामान्य को जानकी दे दी है । स्त्रीजन में श्रेष्ठ नेत्रों के लिए प्यारी, चंपक के समान गोरी, हृदय को चूर कर देने वाली ऐसी उसका, मैं (रावण) पर्वत शिखरों के संचालन से प्रचंड अपने भुजदंडों के द्वारा यदि उसका आलिंगन करता हूँ तो मनुष्य जीवन पाने का फल पा लेता हूँ । इसलिए यदि उसका मुखकमल मैं नहीं चूमता तो मैं अपने को विडम्बित क्यों करता हूँ ? बेकार कर्म (निष्प्रयोजन) से क्या ? मेरे राज्य से क्या और धरती से क्या ?

घत्ता—कानों के लिए सुख की मात्रा के समान उस मृगनयनी के वार्तामात्र से मेरे मन में हलचल मच गई है । रति में कायर रावण विरह से अस्त-व्यस्त होकर काँप उठता है, और बार-बार कहता है ।

(6)

तब रावण का मन जानकर मारीच के मुँह से यह बात निकली—काम के बाणों की परम्परा से नष्ट हुए हे राजन्, यदि तुम सीता से लग गए हो तब भी तुम्हें कामदेव के मार्ग से उसे मानना चाहिए । रागी विरागी चित्त को जानना चाहिए । तथा काव्य-शास्त्र में कामाचार्य द्वारा कहे गए विविध प्रकार के इंगितों, सात भावों और रसों से परिपूर्ण हंसादि देसी तथा जाति भेदों वाले स्त्रीसमूह में कामिनी को जानना चाहिए । इस प्रकार जो धरती पर कामिनियों को जानना

2. A ⁰सावण्हं 3. AP हिययवियारी । 4. AP omit सा; A अवहंडिवि । 5. AP संप्राविउ । 6. A णिवक्कज्जे । 7. A सुयसुह⁰ ।

(6) 1. AP साणिज्जउ । 2. P जाणेवउ । 3. A ⁰जाईपयओ; P ⁰जाइपयइत्थउ । 4. A ⁰रस-गुहपउ ।

कामिणीउ जो महियलि जाणइ सो लंकाहिव रइसुहुं मणइ ।
 भइ मंद लय हंसि चउत्थी चउविह महिलाजाइ पसत्थी ।
 भइ भणमि सब्वंगसुखविणि^६ मंद^७ थूलगुरुपेढालत्थणि^८ ।
 लय दीहरतणु लय जिह पत्तल खुज्जी णारि मरालि समासल ।
 रिसिविज्जाहरजवखपिसायहं अंस होंति रमणीसंघायहं । 10
 तावसि उज्जुय भुंभूलभोली^९ खेयरि मदराकुसुमरसाली ।
 जक्खणि धणकणलोहपरव्वस अडण पिसल्ली भणिय सतामस ।

घत्ता—सारसि भिगि रिट्ठिणि ससि धयरट्ठिणि^{१०} महिसि खरी मयरि वि जुवइ ॥
 सत्ते दीसत्ते^{१०} रइसइकत्ते वसुविह कहिय णिसुणि णिवइ ॥ 6 ॥

7

वच्छत्थलु थणकलसहि पेल्लइ सारसि पिययमसंगु ण मेल्लइ ।
 भिगि^१ णियबंधवदाने मणइ तज्जिय तसइ गेउ आयण्णइ ।
 पुत्तहंडुक्खिणि वायसरव रिणि ठाणु मुयइ रणभइरव ।
 ससि णिम्मीलियच्छि दुहभायण णिग्घिण परहरगासालोयण ।
 धयरट्ठिणि सररुहसरकीलिणि महिसि कराल रोसरसवालिणि । 5

हे, हे लंकाराज, वह रति सुख को मानना है। भद्रा, मंदा, लता और चौथी हंसा यह चार प्रकार की महिलाजाति प्रशस्त मानी गई है। भद्रा को मैं कहता हूँ कि वह सर्वांग सुन्दर होती है, जबकि मंदा अत्यन्त मोटी और भारी चौड़े स्तनों वाली होती है। लता लंबे शरीरवाली एवं लता के समान पतली होती है। हंसा नारी कुबड़ी और थुलथुल (मांसल) होती है। ऋषियों, विद्याधरों, यक्षों और पिशाचों को जो रमणीय समूह है, वह हंसा होती है। तापसी नारी सीधी और स्वभाव से भोली होती है। विद्याधरी मदिरा और कुसुमों में आसक्त होती है। यक्षिणी धन-धान्य के लोभ के अधीन होती है, और पिशाचिनी घूमने वाली और तामस भाव से युक्त कही जाती है।

घत्ता—सारसी, मृगी, रिष्टणी, शशि, धृतराष्ट्रणी, महीषी, खरी और मयूरी युवतियां भी होती हैं। इस प्रकार कामदेव की आठ प्रकार की युवतियां कही गई हैं। हे राजन् उन्हें सुनिए।

(7)

इनमें सारसी प्रिय के वक्षस्थल को अपने स्तनरूपी कलशों से प्रेरित करती है और प्रिय-तम के संग को नहीं छोड़ती। मृगी अपने भाइयों के दान के द्वारा संतुष्ट होती है। डाँटने पर अस्त होती है। और गीत सुनती रहती है। रिष्टणी पुत्र रूपी भांड से दुःखी कौवे के समान स्वर वाली, रण से भयंकर अपने स्थान को छोड़ देती है। शशि अपनी आँखें बंद किए हुए दुःख की भाजन होती है। दूसरों के घर पर भोजन करने वाली होती है। धृतराष्ट्रणी कमलों के तालाबों में क्रीड़ा

5. P adds after this : णरवर मंदा णिसुणि णियंबिणि 6. P आणि थूलगुरुपेढालत्थिणि । 7. AP add after this : णउ सेविज्जइ सा वि यलक्खणि । 8. AP भुंभुरभोली; T भुंभुर^० । 9 AP धयरिट्ठिणि । 10. AP दीसत्ते ।

(7) 1 A मृगि णिवबंधव^० ।

खरि खेलति हसइ कहकहसर
मयरि मासगासिणि दढगाहिणि
सुणि^३ देसीउ णिहिलदेसाहिव
ससहावें लंपडि खरभासिणि

सहइ पायपहर वि घल्लिउ कर ।
कयसाहस कुकम्मणिग्वाहिणि ।
इह मालविणि होइ इच्छियसिव ।
वाणारसिसंभव वणदासिणि ।

घत्ता—अब्बु^३ जा कामिणि मंथरगामिणि सा पहिलउं जि दब्बु हरइ ॥
दिणमेर णिबंघिंवि रहसु संघिंवि पच्छइ सरकीलणु^४ करई ॥ ७ ॥

10

8

सिधुवि पुणु पियगेयहु^३ रप्पइ
मायाबहुलु भाउ कोसलियहि
दविडि^६ दंतणहछेयहु सक्कइ
ललियालावें लाडि लइज्जइ
कालिंगी उवयाह पउंजइ^७
सोरट्टिय आउंवणनुट्टी
अवरु महारट्टी जइ सीसइ

प्राणु^३ वि दविणु वि दइयहु अप्पइ ।
लब्भइ रइगुणेण^४ सिधलियहि ।
अंधिणि^६ णिग्भररयहु चमक्कइ ।
उड्डी रमणविण्णाणें भिज्जइ ।
रक्खसु सुक्कउ^८ रुक्खु^९ वि रंजइ ।
गुज्जरि णिच्चसयज्जहु लट्टी ।
ता तहि धुत्तत्तणु पर दीसइ ।

5

करने वाली होती है। महिषी अपने भयंकर क्रोध रस का निर्वाह करने वाली होती है। खरी खिलखिलाती है, और ठहाका मार कर हँसती है। मारे गए हाथ और पैरों के प्रहार को भी वह सहती है। मयरी मांस खाने वाली मजबूत पकड़ वाली अत्यन्त साहसी तथा कुकर्मों का निर्वाह करने वाली होती है। हे अखिल देशों के राजा, देसी स्त्री को सुनिये। मालवी स्त्री अपना मतलब चाहने वाली होती है। स्वभाव से लंपट और अत्यन्त कर्कशबोलने वाली होती है। वनारस की स्त्रियाँ क्रीड़ा को चाहने वाली होती हैं।

घत्ता—अब्बु^३ की जो स्त्री है, वह मंदगामिनी होती है, और सबसे पहले आदमी का धन हरण करने वाली होती है। और दिन की मर्यादा मानकर रतिसुख का संधान कर बाद में काम क्रीड़ा करती है।।

(8)

सिधु देश की स्त्री अपने घर में प्रसन्न रहती है। और अपने प्राण और धन दोनों ही अपने पति को अर्पित कर देती है। कौशल देश की स्त्री का भाव अत्यन्त मायावी होता है। सिंहल देश की स्त्री को रति गुण से ही पाया जाता है। द्रविड़ देश की स्त्री दांतों और नखों के क्षत को सहन कर सकती है। आन्ध्र देश की स्त्री परिपूर्ण रति से चौंक उठती है। मधुर आलाप से गुजरात की स्त्री शरमा जाती है। उड़ीसा की स्त्री का भेदन रमण-विज्ञान से ही किया जा सकता है। कलिंग देश की स्त्री उपचार का प्रयोग करती है। राक्षस, पुण्यात्मा और रूखे किसी का भी रंजन करती है। सौराष्ट्र देश की स्त्री चुम्बन से संतुष्ट होती है। गुजरात की स्त्री नित्य अपने काम में निपुण

2. AP मुणि । 3. A अच्छए । 4. AP सुरयकील ।

(8) 1. AP सेंघवि । 2. A पियगेयहु; P पियगेयहु । 3. AP प्राणु । 4. P घणेण । 5. AP दिविडि । 6. AP अंधणि । 7. AP पवज्जइ । 8. AP सुक्खउ । 9. P रुक्ख ।

कोंकणियहि जइ काई वि दिज्जइ¹ तो तं चित्तंति या दि² ॥ १० ॥
 दरिसियहरिसियवम्हलीलउ पाडलिउत्तियाउ करणालउ ।
 करइ किं पि चंगउं ववसायउं पारियत्तणइणि पुरिसाइउं ।
 हिमवंती वि मंतवीयक्खस जाणइ जेण³ पडइ पायहि वरु ।
 मज्जएसणारीउ कलालउ होंति राय सयदलसोमानउ ।

घत्ता—देसंसयजुत्तहं जाइहि सत्तहं सयलहं पयइणिवासु किह ॥
 गिरिसिहरठाणहं अमरविमाणहं मयरहरहं तेखोक्कु जिह ॥ ११ ॥

9

सा वि तिविह णरजम्मि गिवज्जइ⁴ पित्तमिभमास्यहि णिरुज्जइ ।
 पित्तपयइ आरुसइ खणि खणि संतोसेवी धुत्ते दिणि दिणि ।
 गोरी बुद्धिवंत णहपिगल मउएं किज्जइ सा रइभिभल⁵ ।
 उण्णयसिहिणवरंगु³ मुणेज्जसु सीयलु तहि आभिगणु देज्जगु ।
 सीयलु गंधु सेउ⁴ पंगुरणउं सीयलु⁵ ताहि जि सुरयारुहणउं ।
 सिभपयइ सामल वण्णुज्जल अहिणवकायलीकंदलकोमल ।

होती है। और यदि मराठी स्त्री के बारे में कहा जाये तो उसमें केवल धूर्तता ही दिखाई देती है। कोंकण देश की स्त्री को यदि कुछ दिया जाये तो वह उसका विचार करती हुई दुबली होती जाती है। जो हर्षित होकर कामदेव की कीड़ा का प्रदर्शन करती है, ऐसी पाटलीपुत्र की स्त्री अपने स्तन के ऊपर स्तन रखने वाली होती है। पारियात्र देश की स्त्री पुरुष के प्रतिकूल कुछ भी अच्छा या बुरा व्यवसाय करती है। हिमवंत देश की स्त्री मंत्र के बीजाक्षरों को जानती है। इससे पति उसके पैरों पर गिरता है। हे राजन्, मध्यदेश की स्त्रियाँ कलायुक्त होती हैं, और कमल के समान कोमल होती हैं।

घत्ता—सैकड़ों देशों से युक्त सभी सातों जातियों की प्रकृति का निवास इनमें उसी प्रकार होता है, जिस प्रकार पहाड़, नदी, धरती के स्थान, अमर विमानों और समुद्रों का त्रिलोक में होता है।

(9)

उस स्त्री को भी मनुष्य जन्म में तीन प्रकार से रचा गया है—पित्त, कफ और वात के द्वारा उसे अवरुद्ध किया गया है। पित्त प्रकृति वाली स्त्री क्षण-क्षण में क्रुद्ध होती है। उसे प्रतिदिन धूर्तता से संतुष्ट करना चाहिए। गोरी, बुद्धिमती, पीले नख वाली को कोमलता के साथ रति से विह्वल बनाना चाहिए। उन्नत स्तनों और श्रेष्ठ अंग वाली को समझना चाहिए और उसे धीरे-धीरे आलिंगन देना चाहिए। जो शीतलगंध, श्वेतपट और शीतल हो उसे सुरति का आरोहण देना चाहिए। कफ प्रकृतिवाली श्यामल और उजले रंग की होती है, तथा नये केले के पत्ते के

10. A भिज्जइ । 11. AP जेहि । 12. AP मज्जदेस³ । 13. AP 'महि' ।

(9) 1. AP विवज्जइ । 2. AP रइवेभल । 3. AP उण्हं³ 4. A सीउ । 5. AP सीयलु सीयलु सुरयारुहणउं ।

दिदुइ दोसि णिरुत्तउ चुक्कइ
सच्चै विणए दाणें पिप्पइ
रइजल पौभल मउ सोणीयलु
आयंबिरणह सोहियकमकर
कसण फरुस मरुपयइ विलासिणि
पुणु जम्मि वि ण संमुहु दुक्कइ ।
इयरह पुणु तहि अंगु ण छिप्पइ ।
णिप्पडियंध⁶ चारु तणुपरिमलु ।
सुंदरि साहारणसुरयायर ।
बहु अहार लेइ बहुभासिणि ।

वत्ता—करकठिणपहारहिं सद्गहीरहिं पयडउं पडु विडु जइ रमइ ॥
परिभमणपरिक्खहि⁷ कालकडक्खहि ता⁸ कामग्गि ताहि समइ ॥9॥

10

जहि पयइइ पयइइ फुडु सिण्णी
जिह पयइउ¹ तिह विहि विहि जायइ
जाइउ² देसिउ तिह मइ बुद्धउ
पहिलारउ सवत्तिसहवासं
आसंकइ चामीयरलोहें
वहउ असुद्धभाउ नारीयणु
आलोयंतहं संमुहुं जोयइ
सा तोंतडिय दोहि संकिण्णी ।
अंसयसत्तइ मइ विण्णायइ ।
भाउ दुविहु अविमुद्धु विमुद्धउ ।
वयपरिणामें दीहपवासं³ ।
अवरेहि⁴ वि कारणसंदोहें ।
तेण वि वेयारिज्जइ जडयणु⁵ ।
मुहुं वियसावइ⁷ करयलु ढोवइ ।

समान कोमल होती है। दोष दिखाई देने पर वह चुप-चाप हो जाती है। फिर जन्म भर सामने नहीं आती। फिर सत्य, विनय और दान से ही वह ग्रहण की जाती है। दूसरी तरह से शरीर का स्पर्श नहीं किया जा सकता। वह रति जल से प्रचुर होती है। उसका स्वर्णिम तल कोमल होता है। और उसका शरीर रूपी सौरभ दुर्गन्धरहित होता है। उसके नख लाल होते हैं। काम करती हुई शोभित होती है, ऐसी वह सामान्य सुरति में आदर रखने वाली होती है। कृष्ण कठोर और विलासिनी होती है। बात प्रकृति वाली बहुत खाती है और बहुत बोलती है।

वत्ता—चतुर, प्रेमी उससे हाथ के कठिन प्रहारों और गंभीर शब्दों के द्वारा, रूप से उसे रमण करता है। आलिगन, चुम्बन आदि तथा कठोर कटाक्षों के द्वारा वह उसकी कामाग्नि को शांत करता है।

(10)

जहाँ प्रकृति-प्रकृति से स्त्री भिन्न होती है, दोनों से संकीर्ण वह मिश्रित होती है। जिस प्रकार की प्रकृति होती है, उसी प्रकार दो-दो प्रकार के भेद होते हैं। इस प्रकार हंस आदि और सात्विक स्त्रियों को मैंने जान लिया। देसी जाति को भी मैंने उसी प्रकार जान लिया। भाव भी दो प्रकार के होते हैं। विशुद्ध और अविशुद्ध। पहला भाव अपनी पत्नी के सहवास से होता है। दूसरे (अविशुद्ध भाव) को वय के परिणाम, दीर्घ प्रवास, स्वर्ण लोभ और दूसरे कारण समूह से नारीजन धारण करती हैं। इनसे भी मूर्खजन विकार को प्राप्त होते हैं। वह देखनेवालों के सामने देखता है, मुख का विकास करता है, और करतल उस पर रख देता है। हे देव, ऐसे भी नारीजन

6. APT णिप्पडियम्म; K णिप्पडियंध but records a p: णिप्पडियम्म इति पाठे संस्काररहितः ।

7. AP 'भवण' । 8. A तो ।

(10) 1. A पइओ । 2. P जणुउ । 3. AP सवित्ति⁶ । 4. AP 'पयासं' । 5. AP अवरेण । 6. AP जडमणु । 7. AP विहसावइ ।

सो^८ वि देव विउसहिं पालिज्जइ बुद्धिइ संकिणत्तणु णिज्जइ ।
 मंदु तिवखु तिवखयरं पउत्तउ सुद्धभाउ तिहिं भेयहिं जुत्तउ ।
 घत्ता—भल्लारउं णिवसणु रयणविहसणु जोव्वणु णारिहिं हरइ मणु ॥ 10
 तं^९ पुणु पियदूएं पियडीहूएं मयणहुयासें उहइ^{१०} तणु ॥ 10 ॥

[]

ता तहिं दूवि का वि पेसिज्जइ ताइ भावसंभवु जाणिज्जइ ।
 इंगिएहिं देहुअभवलिगहिं कयणिण्णेइसणेहूपमंगहिं ।
 भुक्खइ भग्गी अण्णहु लग्गी धणलंपडि कयखलसंसग्गी ।
 गमणकंख णिहालस मत्ती सुहिसोयाउर परगयचित्ती ।
 रुढी णिट्ठुर कट्ठपलाविणि एही णउ सेविज्जइ भाविणि । 5
 सीय^१ विसेसि परकुलउत्ती एक्क वि एत्थु जुत्ति णउ जुत्ती ।
 तो वि जाउ चंदणहिं सुदेहिहिं मणअवहरणु करउ वइदेहिहिं ।
 ता पेसिय सा^२ राएं तेत्तहिं तं वाणारसिपुरवर^३ जेतहिं ।
 गय गयणंगणेण सा खेयरि पंडुरभवणावलि जोइवि पुरि ।
 जोयइ^४ चित्तकूडु णंदणवणु णं महिमहिलहिं केरउं जोव्वणु । 10

का चतुर लोगों को पालन करना चाहिए और उसे बुद्धि से संकीर्ण भाव की ओर ले जाना चाहिए । मंद, तीक्ष्ण और तीक्ष्णतर—शुद्धभाव इन तीन भेदों से युक्त कहा गया है ।

घत्ता—सुंदर निवसन, रत्नभूषण और यौवन नारी का मन हरता है । फिर उसे प्रिय के दूत के निकट होने पर कामदेव की आग जलाने लगती है ।

(11)

इसलिए वहाँ पर किसी दूती को भोजना चाहिए । उसके द्वारा संकेतों, शरीर से उत्पन्न चिह्नों, किए गए स्नेह और अस्नेह के प्रसंगों के द्वारा उसके भावों की उत्पत्ति को जानना चाहिए । भूख से मग्न, किसी दूसरे से लगी हुई, धन की लालची, दुष्टों का संसर्ग करनेवाली, गमन की आकांक्षा रखने वाली, मित्रा से आलसी, मतवाली, सुधीजनों के लिए शोकानुर, दूसरे में चित्त लगाने वाली, रुठी हुई, निष्ठुर और कठोर भाषण करने वाली स्त्री का सेवन नहीं करना चाहिए । सीता विशेष रूप से श्रेष्ठ कुल की पृथ्वी है । उसके संबंध में यह एक भी युक्तियुक्त नहीं है । तब भी हे चन्द्रनखे, तुम जाओ और सीतादेवी के मन का अपहरण करो । तब राजा ने उसे वहाँ भेजा जहाँ श्रेष्ठ वाराणसी नगरी थी । आकाश के प्रागर्ण से वह देवी वहाँ गई, और सफेद घरों की पंक्तियों वाली उस नगरी को देखकर वह चित्रकूट और नंदन वन को इस प्रकार देखती है, मानो धरती रूपी महिला का यौवन हो ।

8. A सा वि । 9. P तें पुणु । 10. AP उहइ ।

(11) 1 सीलविसेसि । 2. AP राएं सा । 3. AP वाराणसि^० । 4. AP जोइय ।

घत्ता—मधुधारहि सित्तुं णावइ मत्तुं मलयाणिलसंचालितं ।

णवत्तस्वरसाहहि पसरियबाहहि णं णच्चंतु णिहालितं ॥ 11 ॥

12

सखमूलरोहियधरायलं¹

कीलमाणसाहामयालयं

विल्वचिन्नवेदलसदलं

सच्छविच्छलुच्छलियजलकणं

विडविणिहसणुग्गमियद्वयवहं

परिघुलंतककेल्लिपल्लवं

बालवेल्लिविलएहि णवणवं

अलयवल्लयविलुलंत अलिउलं

केयईर²उक्खुसियमाणवं

कुसुमधूलिधूसरियणहयलं ।

गयणजगतालीतमालयं³ ।

हरिणदंतदरमलियकंदलं⁴ ।

अयरुदेवदारुयहि षणघणं ।

सुरहिधूमवासियदिसामुहं ।

पवणचलियमहिलुलियमहुलवं ।

कीरकुररकारंडकलरवं⁵ ।

विविहकीलणावासपविउलं ।

रमियखयरजक्खिददाणवं ।

5

घत्ता—तहि पयडियभावइ बहुरसदावइ सिसुमाणिणिमणमोहणइ ॥

10

जणइच्छियकोमलि वरवणुज्जलि णाइ कवि सुकइहि तणइ ॥ 12 ॥

घत्ता—मधु की धाराओं से सींचा गया एकदम मतवाला जो मानो मलयपवन के द्वारा संचालित हो, वह नववृक्षवनों की शाखाओं से मानो बाहें फैलाकर नाचता हुआ दिखाई दिया ।।

(12)

जहाँ भूमितल वृक्षों की जड़ों से अवरुद्ध है, आकाशतल कुसुमधूलि से धूसरित है, जो खेलते हुए वानरों का घर है, जिसमें ताड़ी और तमाल वृक्ष आकाश को छू रहे हैं, विल्व चिंचा और बेल के पत्तों से जो युक्त है, अगुरु और देवदारु वृक्षों से जो आच्छादित है, जिसमें वृक्षों के संघर्ष से अग्नि उत्पन्न हो रही है, जिसमें सुरभित धूप से दिशामुख सुवासित हैं; जो अशोक वृक्ष के पत्रों से व्याप्त है, हवा के चलने के कारण जिसमें बसंत लता धरतीतल पर लुठित है । बाल लताओं के घरों के द्वारा, जिसमें कीर, कुरइ और कारंड पक्षियों का नव कलरव हो रहा है; बालों के समूह के समान जिसमें भ्रमर मंडरा रहे हैं, जो विविध क्रीड़ाघरों से प्रचुर है, जिसमें मनुष्य केतकी पुष्पों की रज से लिप्त हैं, जिसमें विद्याधर, यज्ञेन्द्र और दानवेन्द्र क्रीड़ा करते हैं ।

घत्ता—सुकवि के काव्य की तरह जो भावों को प्रगट करने वाला है, अनेक रसों को प्रदर्शित करने वाला है । शिशु मानसियों के मन को मोहने वाला है, जो जनों की इच्छाओं की तरह कोमल है । (जिसमें लोगों के द्वारा कोयल को चाहा जाता है), जो श्रेष्ठ रंगों से उज्ज्वल है, ऐसे उस नंदन वन में ॥

(12) 1. A सोहियं । 2. AP बह्वमाणहितालतालयं । 3. P 'दरदरियं' । 4. AP 'धूषं' । 5. A 'कारंडकुलरवं' । 6. A 'रउ उक्खुसियं' ।

13

उभयचंदणि उरगयचंदण ¹	उणयचंदणि कयजिणचंदण ² ।
लोहियकंदइ सुहितकंद ³	गुरुमाइदइ जियमाइदा ⁴ ।
वडिदयमोयइ कयरइमोया ⁵	फुल्लासोयइ वियलियसोया ⁶ ।
लगपियाले णिच्चपियाला ⁷	कीलासेले धीर व सेला ⁸ ।
खगरावाले बहुरावाला	सरकमलाले गुरुकमलाला ।
महुयरगीए ⁹ मणहरगीइ ¹⁰	छाहियसीयइ ¹¹ ते सहं सीयइ ¹² ।
बहुपुहईरुहि पुहइसमेया	सिवए सिवढोइयरिउमेया ।
पहरिक्कामइ ¹³ कामियकामा	लक्खणरामइ लक्खणरामा ।
पंदेयवणे छुहु छुहु जि नइदु	लंकेसरवरवहिणिइ दिट्ठा ।
सहुं अंतेउरेहि कीलारय	गहियणवल्लफुल्लमंजरिरय ।

5

10

घत्ता—कयकिसलयकण्णउ कुमुमरवण्णउ णं देविउ वणवासिणिउ¹⁴ ॥

दुमसाहंदोलणि उववणकीलणि लगउ रायविनासिणिउ ॥ 13 ॥

(13)

जिसमें चंदन वृक्ष उगे हुए हैं, ऐसे उस वन में राम और लक्ष्मण के हृदय में चंदन संलग्न है। जिसमें रक्त चंदन के वृक्ष उत्पन्न हैं, ऐसे वन में जिनेन्द्र की वंदना करते हैं। जिसमें रक्तकंद वृक्ष हैं, ऐसे वन में वे (राम और लक्ष्मण) मित्र रूपी वृक्षों के लिए मेघ के समान हैं। जिसमें प्रचुर आम वृक्ष हैं, ऐसे वन में जो चन्द्रमा और लक्ष्मी को जीतने वाले हैं। जिसमें कदली वृक्ष बढ़ रहे हैं, ऐसे वन में जो रति क्रीड़ा करने वाले हैं। जिसमें अशोक वृक्ष विकसित हैं, ऐसे जो शोक से रहित हैं, जिसमें अचार वृक्ष आकाश को छूते हैं, ऐसे उस वन में वे दोनों नित्य अपनी प्रियाओं से युक्त हैं। क्रीड़ा वन में जो पर्वत के समान धीर हैं, पक्षियों के कलरव से युक्त वन में जो गुरुके चरणों को चाहने वाले हैं, भ्रमरों के मधुर गीत वाले वन में, मधुरश्रीवा (सीता के साथ) छाया से शीतल वन में (सीता के साथ) प्रचुर महीवृक्षों वाले वन में, पृथ्वी (लक्ष्मण की पत्नी का नाम) के साथ सुखद वन में वे पशुओं को शत्रुओं का मांस देने वाले हैं। जिसमें अमल और प्रचुर जल है ऐसे वन में जो वांछित अर्थों को भोगने वाले हैं, जो सारसों से रमणीय है, ऐसे नंदन वन में राम और लक्ष्मण शीघ्र प्रविष्ट हुए। अपने हाथों में नई पुष्प मंजरी धारण करने वाले और अन्तःपुर के साथ क्रीड़ा करने वाले वे दोनों रावण की बहिन द्वारा देख लिए गए।

घत्ता—जिसने किसलयों के कर्ण फूल धारण कर रखे हैं, जो पुष्पों से ऐसी सुन्दर है मानो वनवासिनी देवी हो, वे राजवनिताएँ वृक्षों की शाखाओं के आन्दोलन वाली उपवन क्रीड़ा में रत हो गईं ॥

(13) 1. AP °चंदणे । 2. AP °चंदणे । 3. AP °कंदए । 4. AP °मायंदए । 5. AP °मोयए । 6. P °सोया । 7. P °पियाले । 8. P वीर व सेला; T वीर वसेला वशा इला ययोस्ती वशेलो । 9. AP °गीयइ । 10. A °गीया । 11. AP छाही° छाहिय । 12. A सीया । 13. AP पयरिक्कीमए । 14. A उववण ।

काइ वि जणयणहं रुच्चंतिइ
 सोहइ कमल दुवासिहि¹ धरियउं
 णाई कंडु रइणाहुहु केरउ
 काइ वि समउं² वि हंसु चमकइ
 काहि वि छप्पउ लंगउ करयलि
 काहि वि गियइउं णं ओलगइ
 काइ वि उप्पलु सबणि गिहित्तउं
 कुवलयकिकिणिमालाजुत्तउं
 काइ वि जाइवि मड्डइ³ धरियउ
 संसार⁴ णं मयण⁵ छप्पु
 जाइहुल्लु अण्णइ तहु ढोइउं
 जाइवंत कि जाइ भणिज्जइ
 तो वि भडारी सीसैं बज्जइ

14

मोरें सहं सहासु णच्चंतिइ ।
 णालंतालिपिछविच्चुरियउं ।
 दावइ⁶ सुरणरहियवियारउ ।
 गइलीलाविलासि सो चुक्कइ ।
 जइ अण्णउं मण्णइ थिउ सयदलि ।
 एणउ दीहकडविखउ मगइ ।
 कुम्माणउं णं णयणिहि जित्तउं ।
 काइ वि बड्डु वेत्तिकडिसुत्तउं ।
 कुसुमरण⁷ रामु पिजरिउ ।
 तेण⁸ य सोहइ णं सारयधणु ।
 अण्णइ सरसु वयणु संजोइउं ।
 जा महयरसएहि माणिज्जइ ।
 अण्णकज्जि जणु सयलु वि मुज्जइ ।

5

10

घत्ता—सर्वंगहि सुरहिउ वरमखउ पिउ हणुहंटेप्पिणु धुत्तडिय⁷ ॥

मोगरउ मुएण्णिणु अंगु धुजेप्पिणु तासुप्परि⁸ महयरि चडिय ॥14॥

15

(14)

लोगों के नेत्रों को प्रिय लगती हुई, मयूर के साथ एवं हंसी के साथ नाचती हुई किसी के द्वारा अपने दोनों पादर्व भागों में धारण किया गया नाल (मृणाल के) के अंत में मधुकर रूपी पुंख से शोभित कमल ऐसा मालूम होता है, मानो सुर नर के हृदय को विदारित करने वाले कामदेव का तीर दिखाई दे रहा हो । किसी के साथ हंस चलता है, परन्तु वह उसकी गति लीला विलास में चूक जाता है । किसी की हथेली से भ्रमर आ लगा । वह मूर्ख समझता है कि मैं कमल दल पर आ बैठा हूँ । मृग किसी के निकट आकर उसकी सेवा करता है, और उसका दीर्घ कटाक्ष मांगता है । किसी के द्वारा कानों पर रखा गया कमल मुरझा गया है, मानो उसके नेत्रों के द्वारा जीत लिया गया हो । किसी ने कुवलय रूपी किंकिणी माला से युक्त लता रूपी कटिसूत्र बांध लिया । किसी ने जवर्दस्ती राग को पकड़ लिया और पुष्प पराग से उन्हें पीला कर दिया, मानो संध्या राग ने चन्द्रमा को पीला कर दिया हो या मानो उसी से शारदीय मेघ शोभित हो । किसी ने जाती पुष्प दे दिया । दूसरी ने सरस मुखश्री की ओर देखा जो (जाती पुष्पों) संकड़ों मधुकरों के द्वारा भोगा जाता है, उसे जाति वाला (उत्तम जाति का) क्यों कहते हैं । तो भी आदरणीया वह उसे सिर से बांधती है । अपने काम में सभी लोग मोहित होते हैं ।

घत्ता—मोगर पुष्प को छोड़कर अपने शरीर को फड़फड़ा कर तथा रोककर धूर्त मधुकरी सर्वांग-सुरक्षित प्रिय मखक पुष्प पर चढ़ गई ।

(14) 1. AP दुवासिहि । 2. P दावइ णं सुरं । 3. AP समउं हंसु चम्मकइ । 4. को माणउ तं णयणिहि । 5. P मंयइ; K मयइ but corrects it to मड्डइ । 6. AP तेण जि । 7. A धुत्तलिया । 8. AP जासुप्परि ।

15

का वि कुंदकुसुमइं गियदंतहिं
बडलु परिकखइ गियतणुगंधे
क वि फुल्लिउ साहारु गिरिकखइ
जंपमाणु णवकलियइ मत्तउ
धरिउ ताइ रुसिवि मणदूसउ
का वि उच्छुकरयल सुहकारिणि
का वि फुल्लमालउ संचारइ⁵
का वि पलासपसूयइं वीणइ
णिद्धइं रत्तइं कुडिलइं तिकखइं
काइ वि कोइल कसण गिरिकिखय
संपहिं एह⁶ वि बोल्लणसीली¹⁰
एयहिं सह, मधुर मधुरउ पुसु
जइ महुं लक्खणु अज्जु रमेसइ

जोयइ दण्णणि समउ कुरंतहिं ।
बिबीहलु अहरहु संबंधे ।
बाली हरिसाहारणु² कंखइ ।
अरसंताउ णं भुणइ सइत्तउ ।
अग्गिवण्णु जायउ³ मुहि पूसउ ।
णावइ⁴ विसमसरसणधारिणि⁵ ।
सर⁶ सरपंतिउ णं दक्खालइ ।
केकयतणयहु⁷ पाहुडु आणइ ।
णाइ वसंतमइंदहु णक्खइं ।
पुच्छिय⁸ अवरइ विहसिवि अक्खिय ।
जणविरहाणलधूमें काली ।
दोहिं मि हम्मइ पवसिउ माणुसु ।
ता हलि कलपलविउं⁹ सुहुं देसइ ।

5

10

धत्ता—लयमंडव माणिवि कील समाणिवि कामभोगसंपण्णरइ ॥

णं¹³ करिवरु करिणिहिं सहं गियधरिणिहिं सरि पइसंति णराहिवइ ॥15॥

(15)

कोई दर्पण में चमकते हुए अपने दाँतों के साथ कुंद पुष्पों को देखती है। अपनी देहगंध से मौलश्री पुष्प की ओर अधरों के संबंध से बिम्बाफल की परीक्षा करती है। कोई फूले हुए सहकार वृक्ष को देखती है, और बाला वासुदेव के साथ बाहुयुद्ध चाहती है। नवकलियों से मतवाला और बोलता हुआ निष्कपट शुक वियोग दुःख को कुछ भी नहीं मानता। मन को कुपित करनेवाले उसे उसने कसकर पकड़ लिया, इसीसे वह (शुक) मुख में (चोंच में) लाल रंग का हो गया। कोई शुभ करनेवाली, हाथ में इक्षुदंड लिये हुए ऐसी प्रतीत होती है, मानो विधम धनुष को धारण किये हुए हो। कोई पुष्पमाला का इस प्रकार संचार करती है, मानो कामदेव तीरों की पंक्तियाँ दिखा रहा हो। कोई पलाश पुष्पों को इकट्ठा करती है, और लक्ष्मण के लिए उपहार में देती है। स्निग्ध लाल कुटिल और तीखे वे ऐसे मालूम होते थे, मानो वसंत रूपी सिंह के नख हों। कोई काली कोयल को देखती है और पूछती है। दूसरी हँसकर उत्तर देती है कि लोगों के विरहानल के धुएँ से काली यह इस समय भी बोल रही है। इसका भीठा शब्द, मधुर शुक दोनों ही प्रवासियों के मानस को आहूत करते हैं। यदि आज मुझ से लक्ष्मण रमण करता है तो कोयल का यह प्रलाप मुझे सुख देता है।

धत्ता—लतामंडप का उपभोग कर क्रीड़ा को मानकर जिसने कामभोग में अपनी रति पूर्ण कर ली है ऐसा राजा अपनी हथिनियों के साथ सरोवर में इस प्रकार प्रवेश करता है, मानो कविवर अपनी स्त्रियों के साथ प्रवेश कर रहा हो ॥

(15) 1. A बडलु । 2. KT record a p: अथवा हरियासायणं चुम्बनम् । 2. AP मुहि जायउ । 3. AP णं विसमसरसरा³ । 4. A ³धोरिणि । 5. AP संचालइ । 6. AP सर । 7. A केकइतणयहु; P केइयतणयहु । 8. A अक्खिय अवरइ विहसिय अक्खिय; P अक्खिय अवरइ विहसिवि अक्खिय । 9. P एह जि । 10. AP बोलण¹⁰ । 11. AP मइ । 12. A कललवियउं । 13. P omits णं ।

16

सीयापंजलिपाणियसित्तहु
 सीसइ रामहु जरि लीलुप्पलु
 कसणें हरिणा का वि महासइ
 णं रोमावलिअंकुर मेल्लइ
 क वि घणथणफलसंपय दावइ
 सिचिय सिचिय हसइ सलीलउं
 काहि वि पियकरजलविच्छुलियहि
 अल्लउं^१ परिहणुं ढलिउं^२ विहाविउं
 काइ वि महुमहकंतिइ कालिउं
 सहियहु वंसिवि कहिवि^३ वियप्पिउं
 सिचहि ललिय^४ एह पोमावइ
 कुकुमपिंडउं एयहि वल्लहि

णं दप्पणयलि पुष्पयवित्तहु ।
 सोहइ णं छणचंदहु^५ मयमलु ।
 सित्ती णं मेहेण वणासइ ।
 मुहकमलेण णाई पप्फुल्लइ^६ ।
 सुंदरि वेल्लि अणंगहु णावइ ।
 उच्छलंतकप्पूरकणालउं ।
 सुत्तजालु तुट्टउं कंचुलियहि ।
 लज्जइ सलिलि अंगु लिहक्काविउं ।
 रत्तउं सयदलु कण्हु^७ णिहालिउं ।
 कण्णालगइ काइ वि जंपिउं ।
 विरहिणि जेण^८ भडारा जीवइ ।
 एह देव वच्छयसें पेल्लहि ।

5

10

घत्ता—तं मुणिवि कुमारें माणवसारें एक्क धरिय चीरंचलइ ॥

अण्णेक्कहि जंतें दरविहसंतें मुक्कउं सलिलु थणत्थलइ ॥ 16 ॥

15

(16)

सीता की अंजुलियों के पानी से सींचा गया नील कमल पुण्य से पवित्र राम के उर पर ऐसा प्रतीत होता है, मानो दर्पणतल में मृग से लांछित पूर्ण चन्द्र शोभित हो । श्याम नारायण (लक्ष्मण) ने किसी महासती को इस प्रकार सींच दिया, मानो मेघ ने वनस्पती को सींच दिया हो, मानो वह (नाभि का) रोमावली रूपी अंकुर को छोड़ रहा हो, मानो वह मुखकमल से खिल गई हो । कोई सघन स्तन रूपी फलसंपदा को दिखाती है, जैसे कामदेव की सुन्दर लता हो । बार-बार सींचे जाने पर वह, जिसमें कपूर के कण उछल रहे हैं, ऐसे लीलापूर्वक हँसती है । प्रिय के हाथों से नहलाई गयी किसी की चोली का सूत्रजाल टूट जाता है, शिथिल गीला वस्त्र गिर जाता है, वह लंजा जाती है, और पानी में अपना अंग छिपाती है । कोई लक्ष्मण की कान्ति से श्याम रक्त कमल को काला देखती है, सखियों को दिखाकर अपना विचार बताती है । कोई कानों से लगकर कहती है, हे ललिते ! इसे सींचो यह पद्मावती है । जिससे यह आदरणीया विरहिणी जीवित रह सके । इसे केशर का लेप दो । हे देव, इसे वक्षस्थल पर दबाओ ।

घत्ता—यह सुनकर मानवश्रेष्ठ कुमार ने एक को वस्त्र के अंचल से पकड़ लिया तथा एक और दूसरी के स्तनों पर थोड़ा-थोड़ा मुसकाते हुए उसने जलयंत्र से जल छोड़ा ।

(16) 1. AP पाणियपंजलि^१ । 2. A छणचंदहु; P छणचंदहु । 3. AP पप्फुल्लइ । 4. AP पुलएं; K records a p: पुलएं 5. A ण्हसिउं; P ल्हसिउं । 6. AP किण्हु । 7. A कहव । 8. AP एह ललिय । 9. A जेम भडारा जीवइ ।

17

तं¹ हारावलि तिम्मिबि² पडियउं
 कहि लब्धइ पियसंगे आयउं
 काइ वि बल्लहहृत्थ³ गलत्थिय
 णहणिवडंत⁴ धरिय धवलामल
 का वि णियंबिणि णाहु णासइ
 सरि परिघोलिह सण्हउं पंडुर⁵
 का वि उरत्थलि चडिय उविदहु
 पत्तिभिगसइ पेण्डिउवि जलकण
 क वि हियउल्लइ विभिय मंतइ
 का वि ण इच्छइ जलपक्खालणु¹⁰
 उड्डइ अंतरि करइदीवरु
 चवलरहल्लिजलोल्लियकेली

विहिणा कि णउ तेत्थु जि जडियउं ।
 काहि वि मणि उच्छल्लउं जायउं ।
 देहतावहय⁶ ते जिज समस्थिय ।
 तोयबिदु णावइ मुत्ताहल ।
 वणि णिम्मज्जइ दूरहु दीसइ । 5
 पाणियछल्लि व कड्डइ अबरु ।
 णावइ विज्जुल अहिणवकंदहु ।
 हारु ण तुट्टउ अवलोइय थण ।
 अलयहं अलिहि मि अंतरु चितइ ।
 कज्जलतिलयणत्तपक्खालणु । 10
 तहु णवणालु¹¹ व थिउ धारासरु ।
 एम करेप्पिणु चिरु जलकेली ।

घत्ता—सरि ण्हाइवि णिग्गय णावइ दिग्गय थणयलधुलियहारमणिहि ॥

पयलियरसधारहु तलि साहारहु सहं णिसण्णु णियपणइहि ॥ 17 ॥

(17)

हारावली को भीना करता हुआ वह उसके ऊपर गिरा, विधाता ने उसे क्यों नहीं जड़ दिया। इसने प्रिय का संग कैसे प्राप्त कर लिया? किसी के मन में यह उत्सुकता पैदा हुई। किसी ने कंठ में स्थित देह के ताप को दूर करने वाले प्रिय के उन्हीं हाथों का समर्थन किया। किसी ने आकाश से गिरते हुए धवल और अमल जलबिन्दुओं को इस प्रकार धारण कर लिया जैसे मोती हों। कोई नितम्बिनी अपने स्वामी से भाग जाती है, और जल में डूबकर दूर दिखाई देती है। सरोवर में हिलते हुए सूक्ष्म और सफेद वस्त्र को वह पानी की छाल की तरह निकालती है। कोई लक्ष्मण के वधःस्थल पर चढ़ी हुई ऐसी प्रतीत होती है, मानो अभिनव मेघ की बिजली हो। कमलिनी के पत्र पर जलकणों को देखकर वह अपने स्तन देखती है कि कहीं हार तो नहीं टूट गया। कोई अपने मन में विस्मित होकर विचार करती है और भ्रमर तथा बालों के अंतर को सोचती है। कोई काजल, तिलक और पत्र-रचना का प्रक्षालन करने वाले जलप्रक्षालन को नहीं चाहती। किसी का कर रूपी कमल पानी के भीतर है, चंचल लहरों और जल से आर्द्र है। ऐसी जलक्रीड़ा चिरकाल तक कर—

घत्ता—जल में नहाकर वे इस प्रकार निकले मानो दिग्गज हों। जिनके स्तनतलों पर हारमणि व्याप्त हैं, ऐसी प्रणयिनियों के साथ रस की धारा से प्रगलित उत्तम आम्र वृक्ष के नीचे जब वे बैठे हुए थे ॥

(17) 1 AP णं । 2. P णिम्मिबि । 3. AP उच्छल्लउं । 4. P °हृत्थि । 5. AP °तावहर । 6. P णहणियडंत । 7. P पंडरु । 8. AP तुट्टइ । 9. A जलपक्खालणु । 10. AP °णालु पविउ । 11. P थणयलधुलिय° ।

18

पावइ सीयसुरूवें¹ णिज्जिय
तहि अवसरि कंचुई होएप्पिणु
जोयइ² सीय पसाहिज्जंती
भालयलहु कलंकु परि किज्जइ
का वि ण बंधइ मोत्तियकंठिय
का वि कचोलइ पत्तु लिहेप्पिणु
चित्तइ खेयरि माणणिसुंभहं
रुवें सीयाए वि गुरुक्की
हा हा हत कि कयउ³ परावउ
जासु एह कुलहरि⁴ कुलउत्ती
णिच्छउ होसइ⁵ जित्तमहाहउ

विज्जाहरि तारुणें लज्जिय ।
सा चंदणहि⁶ तेत्थु आवेप्पिणु ।
कवि संकइ तिलउल्लउ देंती ।
एणं णं महं हासउ दिज्जइ ।
कंबु पलोइवि णिहुणिय⁷ संठिय ।
जूरइ कि पह पहय⁸ णिहेप्पिणु ।
उव्वसिगोरितिलोत्तमरंभहं⁹ ।
पुरिसहं वम्महभल्लि व दुक्की ।
दुक्कह रामणु¹⁰ जोइवि जीवइ ।
रिद्धि विद्धि तहु तहु जि धरिती ।
धण्णउ पुण्णवंतु जगि राहउ ।

10

धत्ता—जरधवलियकेसइ कंप्पिरसीसइ मायारुवें भावियउं ॥

मणहरणवियइउइ¹¹ खेयरिवुइउइ¹² तरुणीयणु पहसावियउ ॥18॥

19

ता तहि एक भणइ नृवरणी ।
हलि हलि कंचुइ काइ णियच्छसि

का तुहं कि कारणु अब्बइणी ।
भणु भणु कि लिहिया इव अच्छसि ।

(18)

उस अवसर पर सीता के रूप से जैसे पराजित हो कर तथा तारुण्य से लज्जित विश्वाधरी वह चन्द्रनखा वहाँ आकर सीता को प्रसाधित होते हुए देखती है। कोई तिलक देते हुए शंका करती है कि इससे (तिलक देने से) मुझे लज्जा आती है। कोई उसे मोतियों का कंठा नहीं बाँधती। उसके कण्ठ को देखकर निश्चल हो जाती है। कोई गाल पर पत्ररचना लिखकर प्रभा के द्वारा आहत प्रभा को देखकर पीड़ित हो उठती है। वह विद्याधरी चन्द्रनखा विचार करती है कि मान को नष्ट करने वाली उर्वशी गौरी तिलोत्तमा रंभा आदि के रूप से सीता देवी महान् है, और यह पुरुषों के लिए, काम की भल्लिका के समान आई है। हा हा हत भाग्य प्रजापति, तुमने क्या किया? इसको देखकर रावण का जीवित रहना कठिन है, जिसकी ऐसी कुलपुत्री कुलगृहणी है, उसी की श्रद्धा, वृद्धि और धरती है। निश्चय ही वह महायुद्ध का विजेता होगा। राघव विश्व में धन्य और पुण्य-वन्त हैं।

धत्ता—बुढ़ापे से जिसके केश धवल हैं, जिसका सिर कांप रहा है, जो मन चुराने में चतुर है, ऐसी उस विद्याधरी वृद्धा ने मायावी रूप बना लिया और उसने तरुणी जन को हँसाया।

(19)

उस अवसर पर वहाँ एक राजरानी कहती है कि तू कौन है, और यहाँ किसलिए आई है, हे कंचुकी तू क्या देखती? बोल-बोल लिखित हुए के समान क्यों है? यह सुनकर वह मायाविनी

(18) 1. सीयारुवें; P सीयासुरूवें । 2. A चंदणवि । 3. P जोइय । 4. AP कंडु । 5. AP णिहुवी संठिय । 6. AP णिहिय पिहेप्पिणु । 7. A उव्वसिगोरी⁰; P उव्वसिमिणी । 8. AP कियउं । 9. A रावणु । 10. A कुलहर । 11. A होसइ तहि जि महाजउ । 12. A ⁰विसइउहे । 13. P खेयरवुइउइ ।

(19) 1. A गिरवणी; P शिवरणी ।

तं णिसुणिवि बोल्लइ ² मायारी	हुं मायारि वणवालहु केरी ।	
तुम्हिहि परमवि जं वउ ³ चिण्णउं	जेणेहुं जायउं लायण्णउं ।	
लद्धा जेण णाहु हलहर हरि	जेण लच्छि एहो सबसुंधरि ।	5
तं मज्झु वि उवइसहु वइत्तणु	साहमि सबसा ⁴ हुं वि जुवइत्तणु ।	
ता तं सीयइ ज त्ति दुगुंछिउं	महिलत्तणु कि किज्जइ कुच्छिउं ।	
रयसलवासरि चंडालत्तणु	णउ पावइ णियवंसपहुत्तणु ।	
अण्णहि कुलि कत्थइ उप्पज्जइ	वड्ढंती अण्णेण जि णिज्जइ ।	
सयणविओयवसेण रुयंती	बहलबाह्विदुयइं मुयंती ।	10
मंतिकज्जि ⁵ णउ कासु वि भावइ	जा जीवइ ता परवस ⁶ जीवइ ।	
दूहउ दुट्ठु दुग्धु दुरासउ	अंधु बहिरु बाहिल्लु अभासउ ।	
असहणु अहणु कुडिलु जाणेवउं	जो भत्तारु सो जिज माणेवउ ।	

घत्ता—जइ सहं चक्केसरु अहव सुरेसरु तो वि अण्णु णरु जणणसमु ॥

चित्तेव्वउ णारिहि कुलगुणधारिहि णउ लंघेव्वउ गोत्तकमु ॥ 19 ॥

15

20

विहवत्तणि पुणु सिरु मुंडेव्वउं	अप्पउं तवचरणे दंडेव्वउं ।
स्वयं पिउ अन्धत्तसिमुत्तणि	स्वयं तूय पइ ¹ पुणु पोढत्तणि ।

कहती है कि मैं वनपाल की माँ हूँ। तुम लोगों ने दूसरे जन्म में जो व्रत ग्रहण किया था, और जिसके लिए तुम लोगों को यह सौन्दर्य मिला, जिससे तुमने बलभद्र और नारायण जैसे पतिव्रतों को प्राप्त किया और जिससे इस भूमि सहित लक्ष्मी को प्राप्त किया है, उस व्रत का उपदेश तुम मुझे दो, जिससे मैं इस स्वतंत्र युवतीत्व को पा सकूँ। तब सीता देवी ने उसे शीघ्र डाँटा कि कुत्सित महिलापन से क्या करना। रजस्वला के दिनों में उसे चंडालत्व प्राप्त होता है, और वह वंश की प्रभुता को नहीं पा सकती। किसी कुल में उत्पन्न होता है, और बड़ी होने पर किसी दूसरे कुल के द्वारा जाई जाती है, स्वजनों के वियोग के वश से रोती हुई तथा प्रचुर वाष्प बिंदुओं को बहाती हुई। मंत्रणा के समय वह (नारी) किसी को अच्छी नहीं लगती। वह जब तक जीती है, तब तक परवश जीती है। चाहे वह दुर्भग दुष्ट दुर्गन्ध और दुराशयी, अंधा बहरा रोगी और गूंगा, असहनशील, निर्धन और कुटिल जाना जाए जो पति है, उसे पति ही माना जाना चाहिए।

घत्ता—यदि वह स्वयं चक्रवर्ती हो अथवा इन्द्र, तो भी कुलगुणों को धारण करने वाली स्त्रियों के द्वारा पर पुरुषों को पिता के समान माना जाना चाहिए। उन्हें अपने गोत्र का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

(20)

विधवापन में उन्हें अपना सिर मुंडवा लेना चाहिए, और स्वयं तपश्चरण से दंडित करना चाहिए। अत्यन्त बचपन में पिता रक्षा करता है, प्रौढ़ काल में स्त्री की रक्षा पति करता है,

2. P भासइ । 3. AP वउं । 4. AP रामसामि² 5. A मंतकज्जि । 6. P परवसि ।

(20) 1. A डंडेवउ । 2. A अन्धत्तसिमुत्तणि । 3. AP तिय । 4. AP पुणु पइ ।

रक्खइ वुड्डुत्तणि तणुरहु तिह
परवसहिण सयणाहारहु
वुड्डिइ वुड्डयालि णिब्भगिउ
किज्जइ जिणवरिदभासिउ तउ
रुहिररसावहु अट्टियपंजरु
जहि इंदियइ ण इच्छियकामइ
सं मग्गिज्जइ मोक्खमहासुहुं
हियवउं भिण्णउं तक्खणि एयहि
जाणियतच्चहि सच्चहि संतहि
तहि मइ धुत्तिइ⁵ काइ करेव्वउं

ण करइ कि पि वि कुलविप्पिउ जिह ।
महिल ण मुच्चइ कारागारहु ।
डज्जउ महिलत्तणु कि मग्गिउ ।
तं मग्गिज्जइ जहि णउ संभउ ।
तं मग्गिज्जइ जहि ण कलेवरु ।
जहि सुव्वंति ण जारहं णामइ ।
तं णिसुणिवि बुद्धहि⁶ मउलिउं मुहुं ।
भरइ⁷ सीलु को खंडइ सीयहि ।
जहि एहुउ वियप्पु गुणवत्तहि ।
पासहि हिडिक्खि णवर मरेव्वउं ।

5

10

घत्ता—इय चित्तिवि सुंदरि णिवसें⁸ णहयरि चंचलगय गयणंगणइ ॥

धिय मणियरणिम्मलि कणयधरायलि लंकाहिक्खरप्रंगणइ⁹ ॥20॥

21

अंजणसामहु लच्छिविलासहु
देव दियंतदंतित्तच्छवि—
पइ³ इच्छइ सा जइ सिहि सीयलु

णविवि ताइ विण्णविउ दसासहु ।
जसपसरणयर² जगपंकयरवि ।
जइ ठाणाउ चलइ धरणीयलु ।

उसी प्रकार वृद्धापन में पुत्र रक्षा करता है, जिससे कि वह कुल के लिए अप्रिय कुछ भी नहीं कर सके। दूसरों के अधीन घूमने वाली महिला स्वजनो के आभार रूपी कारागार से नहीं छूट पाती। वृद्धा, तूने बुढ़ापे में भाग्यहीन महिलापन क्यों भाँगा? इस महिलापन में आग लगे। जिनेन्द्र के द्वारा बताए गए तप को करना चाहिए और वह माँगना चाहिए कि जिसमें फिर जन्म न हो, वह माँगना चाहिए कि जहाँ रक्त रस को धारण करने वाला अस्थिपंजर से युक्त शरीर न हो, जहाँ इन्द्रियाँ कामनाओं की इच्छा करने वाली नहीं है, जहाँ जारों का नाम सुनाई नहीं देता—ऐसे उस मोक्ष रूपी महासुख को माँगना चाहिए। यह सुनकर वृद्धा का मुख मैला हो गया। उसका हृदय तत्काल विदीर्ण हो गया। वह सोचती है कि सीता के शील का खंडन कौन कर सकता है? जहाँ तत्त्व को जानने वाली सच्ची शांत और गुणवती सीता वैधी का यह विकल्प है, वहाँ मेरे द्वारा क्या धूर्तता की जाएगी! मैं केवल बंधनों में पड़कर भ्रमण कर मर जाऊँगी।

घत्ता—यह विचार कर वह चंचल सुन्दरी विद्याधरी एक पल में आकाश के आँगन से गई और मणि किरणों से निर्मल, स्वर्ण धरातल वाले लंकानरेश के प्रांगण में जा पहुँची।

(21)

अंजन की तरह श्याम, लक्ष्मी के विलास दशानन को प्रणाम कर उसने निवेदन किया— हे दिग्गज के दांतों की छवि के समान यश के प्रसारण करने वाले तथा विश्व रूपी पंकज के रवि हे वेव, यदि आग शीतल हो जाए तो वह आपको चाह सकती है। यदि धरणी-तल अपने

5. A बुड्डिइ। 6. A भणइ; T भरइ चिन्तयति। 7. A धुत्ते। 8. P णिवसें। 9. AP पंगणइ।

(21) 1. A वत्तहो छवि। 2. A पसरणजगवणपंकय²; P पसरणयर। 3. A इच्छइ पइ जइ सा; P इच्छइ पइ सा जइ।

जइ गियमेण वसंति ण सायर	जइ पडंति सिसिरयर ¹ दिवायर ।	
जइ जिणु राएँ दोसेँ छिज्जइ	तो पइ ² सीय खगिंद रमिज्जइ ।	5
तं गिसुणिवि दहवयणे बुच्चइ	अवसु वि वसि किज्जइ जं रुच्चइ ।	
कि विसभइयइ फणिमणि मुच्चइ	अलसहु सिरि दूरेण पवच्चइ ।	
सुहिसयणत्तणु पुरिसपहुत्तणु	गिरिमसिणत्तणु ⁴ सइहि सइत्तणु ।	
दूरयरत्थु सुणंतहं चंगउं	पासि असेसु वि दरिसियभंगउं ।	
हरमि सीय कि पउरपलावे	ता सा पुणु ⁷ वि कहइ सद्भावें ।	10
दहमुह एउ अजुत्तु अकित्तणु ⁸	इय बोल्लंति संति मंतित्तणु ।	

घत्ता—चंदणहि णिवारिवि असिवरु धारिवि सुरसमरओहि⁹ असंकियउ ॥

भरहद्धणरेसरु सुरकरिकरकर रावणु¹⁰ पुष्पकयंति थियउ ॥21॥

इय महापुराणे तिसदिठमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमाण्णए
महाकविपुष्पकयंतविरइए महाकव्वे णारयआगमणं रावणमणखोहणं
णाम एकहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ 71 ॥

स्थान से चलित हो जाए, यदि समुद्र नियमित रूप से न रहे, यदि चन्द्रमा और सूर्य गिर पड़ें, यदि जिन भगवान् राग-द्वेष से छिन्न हो जाएं, तो हे देव, सीता देवी आपके साथ रमण कर सकती है। यह सुनकर रावण कहता है—जो अच्छा लगता है, ऐसे अवश को भी वश में किया जाता है। क्या विष के भय से नागमणि को छोड़ दिया जाता है? आलसी व्यक्ति से लक्ष्मी दूर रहती है। सुधियों का स्वजनत्व, पुरुषों की प्रभुता, पहाड़ की रम्यता और सती का सतीत्व दूरस्थ होने के कारण सुनने में अच्छा लगता है, निकट होने पर उनकी अशेष खामियाँ प्रकट हो जाती हैं। मैं सीता का अपहरण कहूँगा। अत्यधिक प्रलाप से क्या? तब वह पुनः सद्भाव से उससे कहती है—“हे दशमुख, यह अयुक्त और अशोभनीय है।” ऐसी मंत्रणा देती हुई—

घत्ता—चन्द्रनखा का प्रतिकार कर, असिवर अपने हाथ में लेकर देवों के युद्धों में अशंकित, भारत का अर्ध चक्रवर्ती और ऐरावत की सूइ की तरह बाहुवाला रावण अपने पुष्पक में बैठ गया।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पकयंत द्वारा विरचित,
महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का रावण-मन-ओभन नाम का
इकहत्तरवां परिच्छेद समाप्त हुआ।

4. A सिसिरयर । 5. A पय । 6. AP गिरिहि महत्तणु । 7. AP कहइ पुणु वि । 8. P अखत्तणु । 9. A “समरेहि असं”; P समरउहे असं । 10. P रामणु । 11. AP रामणखोहणं ।

दुसत्तरिमो संधि

सहं मारीयण पट्ट मुक्कदेसजइसंजमु ॥
पुष्पविमाणे^१ थिउ गउ सीयहरणकयउज्जमु^२ ॥ ध्रुवकं ॥

1

कामबाणोहविद्धेण सुद्धेण णो किं पि आलोइयं
ता विमाणं विमाणे णहे राइणा तेण संचोइयं ।
तारयाऊरियायाससंकासबद्धुज्जलुल्लोवयं
हिमवंताविमद्वंत्तंणारसंताविमासागयं ।
चारुचंदकभाभारि माणिककसंमुक्कसुबुक्कयं^३
वाउधुव्वंतकेऊलयालोलणाइण्णदिच्चक्कयं ।
तुंगसिगग्गणिद्धिण्णणीलब्भसच्छंबुधाराोल्लियं
वोमपोमायरे हंसवत्तम्मि^४ पोसं व^५ पप्फुल्लियं ।
दिण्णधूवं रयवखं गवक्खंतलव्वंतभिगंचियं^६

5

10

बहत्तरवीं संधि

जिसने मुनि के एकदेश संयम (अणुव्रत) को छोड़ दिया है, तथा जिसने सीता के अपहरण का उद्यम किया है, ऐसा स्वामी रावण, पुष्पक विमान में बैठकर मारीच के साथ गया ।

(1)

कामबाणों के समूह से आवद्ध उस मुख ने कुछ भी नहीं देखा । उस राजा ने निःसीम आकाश में अपना विमान चला दिया । जिसमें तारकों से भरित आकाश के समान उज्ज्वल वितान बँधा हुआ है, स्वर्ण घंटाओं की प्रसरित होती हुई टंकार से जिसने दिग्गजों को संवस्त कर दिया है, जो सुन्दर स्वर्ण-आभ्रा को धारण करता है, जो माणिक्यों से निर्मित गुच्छों से युक्त है, जिसने पवन से आंदोलित ध्वज रूपी लताओं के हिलने से दिग्मंडल को आच्छादित कर दिया है, जो ऊँचे शिखरों के समूह से उद्भिन्न नीले मेघों के स्वच्छ जल की धारा से आर्द्र है, जो आकाश रूपी सरोवर में कमल की तरह खिला हुआ है, जिसे धूप दी गई है, जिससे धूल नष्ट हो चुकी है, जिसके गवाच्छों के निकट भ्रमर समूह लगा हुआ है । पक्षी, सिंह, सारंग और मातंगों

(1) 1. P "विमाणे । 2. P "सीयाहरण" । 3. AP "माणिककणिमुक्क" । 4. A "हंसवत्तम्मि" । 5. P "च पुप्फुल्लियं" । 6. AP "गवक्खंतलगंत" ।

पक्खिसेहीरसारंगमायंगउक्किणरुर्वकियं⁷ ।
 बद्धसोहिल्लकप्पंघिवुद्धूयपत्तावलीतोरणं⁸
 इंदणीलंसुकालं असीयंसुसीयंसुणिब्बारजं⁹ ।
 तेयवंतं णहुम्मिल्लकंतिल्लदिब्बत्थसोहावहं
 भम्मपिणं पलित्तं व सत्तच्चिणा रंजियासावहं ।
 कित्तिवेल्लीइ फुल्लं व सेयं दसासालिणा माणियं
 जायवेयं कुघीरेण वीरेण¹⁰ वाणारसी आणियं ।

घत्ता—दिट्ठउ तेत्थु वणु अण्णेक्क वि सीयहि जोव्वणु ॥

रावणु चित्तवइ विहि समसंजोयवियक्खणु ॥ ॥ ॥

20

2

वणु दीसइ णच्चियणीलगलु	सीयहि जोव्वणु मणमीणगलु ।
वणु दीसइ णिम्मलभरियसरु	सीयहि जोव्वणु णिरु महुरसरु ।
वणु दीसइ संचरंतकमलु	सीयहि जोव्वणु वरमुहकमलु ।
वणु दीसइ सज्जिअयथाहरउं	सीयहि जोव्वणु बिबाहरउं ।
वणु दीसइ कालालिणियउं	सीयहि जोव्वणु सालिणियउं ।
वणु दीसइ अलयतिलयसहिउ	सीयहि जोव्वणु विहलीसहिउ ।

5

के उत्कीर्ण रूपों से जो अंकित है, जिसमें कल्पवृक्षों से उत्पन्न पत्रावलियों का बंधा हुआ तोरण शोभित है, जो इन्द्रनील मणियों की किरणों से काला है, जो सूर्य और चन्द्रमा की किरणों का निवारण करने वाला है, जो तेज से युक्त है, जो आकाश में चमकने वाले क्रांति से युक्त प्रहरणों की शोभा को धारण करने वाला है; स्वर्ण से पीला, अग्नि के द्वारा प्रदोप्त के समान जो दिशा-पथों को रंजित करने वाला है, कीर्ति रूपी लता के फूल के समान जो दशानन रूपी भ्रमर के द्वारा मान्य है, ऐसे उस वेगशाली विमान को छोटी बुद्धि वाला वह रावण वाराणसी ले आया ।

घत्ता—उसने वहाँ वन देखा तथा एक ओर सीता का यौवन देखा । रावण, श्रम और संयोग में विचक्षण विधाता का चिंतन करता है ।

(2)

जिसमें नील मयूर नाच रहा है, वन ऐसा दिखाई देता है, सीता का यौवन मन रूपी मत्स्य के लिए लोहे के कांटे वाला है । वन निर्मल भरे हुए सरोवरों वाला दिखाई देता है, सीता का यौवन मधुर स्वर वाला दिखाई देता है । वन प्रवहनशील जल वाला दिखाई देता है, सीता का यौवन श्रेष्ठ मुखकमल वाला है । वन सुर लजामृहों वाला दिखाई देता है, सीता का यौवन बिम्बाधरों वाला है । वन भ्रमरों से आलिंगित दिखाई देता है, सीता का यौवन लक्ष्मी से आलिंगित है । वन प्रचुर तिलक वृक्षों से युक्त दिखाई देता है, सीता का यौवन बलभद्र के लिए

7. A 'सीहीर' । 8. AP 'घिवुद्धूय' । 9. P omits 'सुसीयं' । 10. A 'धीरेण' ।

(2) 1. A मणिणीलगलु ।

वणु दीसइ फुल्लासोयतरु	सीयहि जोव्वणु परसोययरु ।
वणु दीसइ दुग्गउं कंचुइहि	सीयहि जोव्वणु घरकंचुइहि ।
वणु दीसइ तरुकीलंतकइ	सीयहि जोव्वणु वण्णंति कइ ।
वणु दीसइ मूलणिरुद्धरसु ²	सीयहि जोव्वणु कयमयणरसु ।
वणु दीसइ वडिइयधवलवलि	सीयहि हारावलि धवलवलि ।
हियउल्लउं कामसरहि भरिउं	लंकालंकारें संभरिउं ।

10

घत्ता—इय एयहि तणउ णरु माणइ जो णउ³ जोव्वणु ॥

मंदिरु परिहरिवि रिसि होइवि सो पइसउ वणु ॥ 2 ॥

अहो कयत्थो भुवणंतरे हली
पलोयए लोयणएहि¹ संमुहं
हरामि² एयं कवडेण संपयं
उयार मारीयय होहि तं मओ
कुक्कम्मए मंतिवरो णिवेसिओ
जसो ण जाओ भवणंतमेरओ
भणामि किं सिंभजरे पयं पियं

3

महेलिया जस्स घरम्मि मेहली ।
मुहेण मल्हंति विउवए⁴ मुहं ।
करेइ मंती महिणाहसंपयं ।
खुरेहि सिंभेहि जवेण तम्मओ ।
विचितए हा विहिणा णिवे सिओ ।
कहं परत्थीरमणे⁵ तमे रओ ।
दुलंघमेयं पट्टणा पयंपियं ।

5

सुखदायाँ है। वन खिले हुए अशोक वृक्ष के समान दिखाई देता है, सीता का यौवन दूसरों के लिए खेद उत्पन्न करने वाला है। वन सर्पों से दुर्गम दिखाई देता है, सीता का यौवन गृहकंचुकी से युक्त है। जिसके वृक्षों पर वानर क्रीड़ा करते हैं वन ऐसा दिखाई देता है, सीता के यौवन का वर्णन कवि करते हैं। जिसने अपने मूल भाग में जल को अवहृद्ध कर रखा है, वन ऐसा दिखाई देता है, सीता का यौवन कामदेव के रस को बढ़ाने वाला है। जिसमें धव और लवली-लता (चन्दन लता) बढ़ रही है, वन ऐसा दिखाई देता है। सीता की धवल हारावली गले में बँधी हुई है। रावण का मानस कामदेव के तीरों से भरा हुआ था, उसे याद आया—

घत्ता—यहाँ इसके यौवन का जिसने भोग नहीं किया, घर छोड़कर और मुनि होकर उसने वन में प्रवेश किया।

(3)

अरे, भुवन में बलभद्र ही कृतार्थ है कि जिसके घर में मैथिली (सीता) गृहिणी है। राम नेत्रों के द्वारा सामने देखते हैं, उसके हर्षित मुख से मुख चूमते हैं। इस समय मैं कपट से इसका अपहरण करता हूँ। मंत्री राजा की संपदा करता है। हे उदार मारीच, तुम मृग वन जाओ। खुरों और सींगों के द्वारा वेष से उसके अनुरूप बन जाओ। इस प्रकार विचित्र कुमार्ग में निवेशित वह सोचता है—खेद है कि विधाता ने राजा को भुवनांत तक सीमित श्वेत यश नहीं दिया, स्त्री-रमण रूपी अंधकार में वह कैसे रत हुआ? लेकिन मैं क्या कहूँ, उसने कफ-ज्वर में दूध पी लिया है, प्रभु के द्वारा कहा गया यह अलंघ्य पदार्थ है। उस समय विषाद से विकृतअंग वह एक क्षण में

2. A घर । 3. P ³ णिवद्धरसु । 4. A वल्लियधवल² । 5. AP ण वि ।

(3) 1. P लोयणेहि । 2. A विओवए; P विउवए । 3. AP हरेभि । 4. A रमणंतमेरउ ।

तओ विसाएण वियारियंगओ	खणेण होऊण मओ तहि गओ ।	
णिसणिया जत्थं घरासुया सई	पिए मणो जोइ ⁵ समप्पिओ सई ।	
कुरंगओ बालतणंकुरासओ	सुयाहिरामंकियरामरासओ ।	10
णियच्छिओ दिट्ठिमओ रवणणओ	विचित्तपिछोहमऊरवणणओ ।	
महीरहाए भाणियं हिया सयं	इमं महं लोयणलोलणासयं ⁶ ।	
णरिद हे राम पुलिदकायरं	रण ⁷ गंतुं धरिऊण कायरं ।	
अणेयमाणिवकमयं मयं महं	कुलीण दे देहि णियच्छिमो महं । ⁸	

घत्ता—णिसुणिवि प्रियवयणु⁹ सो रामें दीसइ केहउ ॥

सावउ चित्तलउ चलु मणु काउरिसहं जेहउ ॥3॥

4

पविरलपएहि लंघंतु महि	लहु धावइ पावइ दासरहि ।	
थोवंतरि मणहरु जाइ जवि	कह कह व करंगुलि छित्तु ण वि ।	
पहु पाणि पसारइ किर धरइ	मायामउ मउ अगइ सरइ ।	
दूरंतरि णियतणु दक्खवइ	खेलइ दरिसावइ मंदगइ ।	
णवदूवाकंदकवलु ¹ भरइ	तरुवरकिसलयपल्लव ² चरइ ।	5
कच्छंतरि सच्छसलिलु पियइ	वंकियगलु पच्छाउहुं ³ पियइ ।	

मृग होकर वहाँ गया कि जहाँ पृथ्वीपुत्री सती सीता देवी बैठी हुई थी। उस सती ने अपने प्रिय में मन समर्पित कर रखा था। बाल तूणों को खाने वाला तथा जिसने सुनने में मधुर राम शब्द का उच्चारण किया है, ऐसा देखने में कोमल और सुन्दर वह मृग देखा गया कि विचित्र पूँछ समूह से मयूर के रंग का था। सीता ने स्वयं कहा—यह मृग मेरे नेत्रों के लिए खेलने का साधन है। हे राजन्, हे राम, शरों के द्वारा आहत और अधीर उसे (मृग को) वेग से जाकर और पकड़कर लाओ और अनेक मणिक्यों से युक्त उस महान् मृग को, हे कुलीन दे दो, मैं उसे देखूँगी।”

घत्ता—प्रिय के वचन सुनकर राम के लिए वह मृग इस प्रकार दिखाई दिया जैसे कापुरुष लोगों का चंचल मन हो।

(4)

अपने प्रविरल पैरों से धरती को लाँघता हुआ वह शीघ्र दौड़ता है, राम को पाता है। वह सुन्दर थोड़ी दूर तक वेग से जाते हैं, किसी प्रकार हाथ की अंगुली से उसे छू भर नहीं पाते। स्वामी (राम) हाथ फैलाते और उसे पकड़ते हैं, वह मायामय मृग आगे बढ़ जाता है, दूरी पर अपना शरीर दिखाता है, फिर मंद गति दिखाता है, और शीड़ा करता है। नई दूब की जड़ों के कौर को खाता है, तरुवरों के किसलय पल्लवों को खाता है, वन के मध्य में स्वच्छ जल पीता है, टेढ़ी गर्दन और पीछे मुँह करके देखता है। जिनके फल तोतों की चोंचों के आघातों से गिर रहे

5. A जाइ । 6. A लोयणलोयणासयं । 7. A रण तुंगं । 8. T णियत्थियामहं पश्याम्यहं, पश्यामि तेजः (उत्सवः ?) । 9. AP पियवयणु ।

(4) 1. AP ^१कमलु । 2. AP तरुवरपल्लवकिसलय । 3. AP पच्छामुहुं ।

सुयचंचुधायपरियलियफलि⁴ खणि दीसइ चंपयचूयतलि⁵ ।
 खणि वेत्तिणिहेलणि पइसरइ अण्णण्णपएसहि⁶ अवयरइ ।
 ओहच्छइ⁷ अइकोड्डावणउ लइ माणमि णयणसुहावणउ ।
 इय चित्तिवि राहुउ संचरइ पसु पुणु धरणास तासु करइ । 10
 धरिओ वि करग्गहु णीसरइ कहि वेसायण कहि णीसरइ ।
 णिइइयहु⁸ कि करि चडइ णिहि कहि कवडहरिणु कहि बंधविहि ।

घत्ता—गउ गयणुल्ललितु मिगु णं कुवाइहत्थहु रसु ॥

थितु दसरहतणउ समणीससंतु विभियवसु ॥4॥

5

भयणभूमिआयासगामिणो¹ मंतिणा वि कहियं ससामिणो ।
 देवदेव जयलच्छिसंगमो वंचिओ² रहरायपुंगमो ।
 ता ससक्क³ तेत्तल्लोक्क⁴ रामणो⁵ राम एव रुवेण रावणो ।
 कासकुसुमसंकासवेहओ चावधारि णं सरयमेहओ ।
 कसणवाससोहियणिपंबओ हत्थणिहियमणिमयसिलिबओ⁶ । 5
 झ त्ति जणयतणयासमीवयं आगओ कयाणंगभावयं⁷ ।

हैं ऐसे चंपक और आम्रवृक्ष के नीचे एक पल में दिखाई देता है, एक क्षण में लताघरों में प्रवेश कर जाता है, तथा दूसरे-दूसरे प्रदेशों में अवतरित होता है। अत्यन्त कुतुहल उत्पन्न करने वाला वह लो यह बैठा है, लो नेत्रों के लिए सुहावने लगने वाले इसे मैं मानता हूँ। यह विचार कर राम संचरण करते हैं। मृग उनमें पकड़ जाने की आशा उत्पन्न करता है। पकड़े जाने पर भी वह हाथ की पकड़ से छूट जाता है। कहाँ वेश्याजन और कहाँ दरिद्रों की रति? भाग्यहीन के हाथ क्या निधि चढ़ती है? कहाँ कपटमृग और कहाँ उसके पकड़ने की विधि?

घत्ता—आकाश में उछलता हुआ मृग चला गया, मानो कुवादी के हाथ से पारद चला गया हो। विस्मय से विस्मित राम, श्रम से श्वास लेते हुए रह गए।

(5)

मंत्री ने नक्षत्रों की भूमि, आकाश से जाने वाले अपने स्वामी से कहा—“हे देव विजय और लक्ष्मी के संगम रघुराजश्रेष्ठ को वंचित कर लिया गया है। तब इन्द्र सहित तीनों लोकों को रूलाने वाला रावण ही राम बन गया। कांस पुष्प के समान उज्ज्वल शरीर वाला धनुष-धारी, जैसे शरद मेघ हो, मृग चर्म से उसका नितम्ब भाग शोभित था। जिसने अपने हाथ में मणिमय तीरधारण कर रखे थे, ऐसा वह (रावण) शीघ्र ही जनक तनया सीता देवी के पास आया। शत्रुओं के मान को नष्ट करने की शक्ति वाले उस दुश्चरित्र ने काम की अभिलाषा से

4. AP °परिलिय° । 5. P °चूयलि । 6. P पवेसहि । 7. P इहु अच्छइ । 8. A णिइइयहु कहि करि; P णिइइयहु करि कहि ।

(5) 1. A गयणभूमि°; T भयणभूमि° । 2. A वणि वइडु रहुवंसपुंगमो; P वणि पइडु रहुवंस-पुंगमो । 3. A ससक्क° । 4. P तइल्लोक्क° । 5. AP °रामणो । 6. A °सिलिबओ । 7. A °तावयं

वहिरिमाणणिम्महणसत्तिणा	भासियं कुसीलेण ⁸ णं तिणा ।	
दूरयं ⁹ पि मणपवणवेययं	पंचवण्णमाणिक्कतेययं ।	
आणियं मए हरिणपोययं	कृणसु देवि कीलाविणोययं ।	
ता सईइ अवलोइओ मओ	णं सुदुसहो दुवखसंचओ ।	10
विष्फुरंततणुकिरणमालओ	विरहसिहि व वित्थिण्णजालओ ।	
विभियाबलायाणमाणिया	रयणिगमणच्चिधेण भाणिया ¹⁰ ।	

घत्ता—पिए जरदिदसयर अत्थंगउ दीसई रत्तउ ॥

जरजुण्णु वि तिजगि भणु अत्थहु को णासत्तउ ॥ 5 ॥

6

उज्झिऊण इंदियसमं	सविमाणं सिक्कियासमं ।	
सक्वत्थ वि भइं ¹ सियं	तीए तेणं दंसियं ।	
बुद्धं किं पि णवं च णं	णं ² हु खलरइयं वंचणं ।	
तं धरणीयलरुद्धिया	अमुणंती आरुद्धिया ।	
उववणवासविणिग्गयं	अप्पाणं हरिवरगयं ।	5
दहवयणेण विलासिणा	रिउक्कित्तीयविलासिणा ।	
तीए पुरओ ³ दावियं	वइयालियसदावियं ।	
सा तुरियं लंकं णिया	वम्महधणुगुणकणिया ⁴ ।	

पूर्ण इस प्रकार कथन किया—मन और पवन के समान वेग वाला, पाँच प्रकार के माणिक्यों से तेजस्वी हरिण का बच्चा दूर होते हुए भी मैं ले आया हूँ । हे देवी, तुम क्रीड़ा-विनोद करो । तब सीता देवी ने उस हरिण को देखा । मानो असह्य दुःख का संचय हो । शरीर की विस्फुरित किरणमाला से युक्त यह विरह की ज्वाला की तरह विस्तीर्ण ज्वाला वाला था । राक्षस चिह्न धारण करने वाले रावण ने, विस्मित और मायापुरुष को नहीं जाननेवाली सीता से कहा :

घत्ता—हे प्रिये, बूढ़ा सूर्य भी अस्त होता हुआ रक्त दिखाई देता है । बताओ तीनों लोकों में जरा से जीर्ण होने पर भी कौन है जो अर्थ में आसक्त नहीं होता !

(6)

इन्द्रियों की थकान को दूर कर उसने शिविका के समान अपना विमान, जो सर्वत्र भद्र और श्रीसंपन्न था, सीता देवी को दिखाया । उसने समझा कि यह कोई अपूर्व विमान है, न कि कोई दुष्ट के द्वारा रचित प्रबंधना है । इस प्रकार, नहीं जानती हुई धरतीतल पर प्रसिद्ध वह उपवन वास के बाहर स्थित, अश्वों पर आरुढ़ उस विमान पर चढ़ गई । शत्रु की कीर्ति से क्रीड़ा करने वाले विलासी रावण ने उसे सामने वैतालिकों के द्वारा वर्णित लंका दिखाई । कामदेव के धनुष की डोरी की कणिका उस सीता को वह लंका ले गया । सारसों के जोड़े द्वारा मान्य

8. A कुसीलेण मंतिया । 9. दूरियं । 10. A भासिया ।

(6) 1. A भइंसियं । 2. P तहु खल⁰ । 3. AP पुरउं । 4. P वम्महु ।

साधुजगदुपमणिमयसि संनिहिया नंदनवणि । 10
 माणवाहिरामं गओ दूरमुक्करामंगओ ।
 पयडीकयससरीरओ भूहरभेइसरीरओ ।
 इर^३ भुवणयले विस्सुओ रक्खकेउ महिइसुओ ।
 घत्ता—कालउ दहवणु णवमेहु व दुहयर सीयइ ॥
 पियविरहाउरइ दिहुउ कंठद्वियजीयइ ॥6॥

7

चित्तें मउलत्तें मउलियउं लीयणजुयलंसुउ^१ पयलियउं ।
 आपंडुरत्तु^२ गंडस्थलइ विलसित विलसिइ विरहाणलइ ।
 कडकडकडंति ससहरपहइ अंगइ लायणवारिवहइ ।
 का^३ दिसि केणाणिय केंव कहि को पावइ एवहि रामु जहि ।
 इय चित्तवर्ति मोहेण हय परपुरिसु णिहालिवि मुच्छ गय । 5
 पइवय परपइवयभंगभय णं पवणें पाडिय ललिय लय ।
 भत्तारविओयविसंठुलिय^४ विहिवस सिलसंकडि पक्खलिय ।
 णं कामभल्लि महियलि पडिय णं बाउल्लिय कंचणघडिय ।
 सुहिसुंयरणपसरियवेयणिय^५ सा जइ वि थक्क णिच्चेयणिय ।
 परिहाणु ण तो वि ताहि डलइ चल जारदिट्ठि कहि परिघुलइ । 10

जल वाले नंदन वन में वह ठहरा दी गई । तब मनुष्य शरीर की रमणीयता को प्राप्त, राम के वेष को जिसने दूर फेंक दिया है, जिसके पास भूधरों का भेदन करने वाली नदी के समान वेग है, जिसने अपना शरीर (रूप) प्रगट कर दिया है, जो राक्षस की ध्वजावाले राजपुत्र के रूप में प्रसिद्ध है—

घत्ता—काले रावण को प्रिय विरह से आतुर एवं कंठस्थित प्राणोंवाली सीता देवी ने इस प्रकार देखा जैसे नवमेघ को देखा हो ।

(7)

चित्त के मुकुलित होने पर नेत्र युगल भी बन्द हो गए, आँसू प्रगलित होने लगे । गालों पर सफेदी शोभित हो उठी । विरह की ज्वाला के प्रदीप्त होने पर, चन्द्रमा-सी प्रभा वाले सौन्दर्य जल को धारण करने वाले उसके अंग कड़कड़ाने लगे । यह कौन दिशा है, किसके द्वारा यहाँ लाई गई हैं, किस प्रकार, कहाँ ? कौन मुझे वहाँ प्राप्त कराएगा कि जहाँ राम हैं ? इस प्रकार विचार करती हुई वह मोह से आहत हो उठी । परपुरुष को देखकर, दूसरे के पति द्वारा व्रत भंग से भयभीत पतिव्रता वह मूर्च्छा को प्राप्त हुई, मानो पवन ने सुन्दर लता को गिरा दिया हो । अपने पति के वियोग से अस्त-व्यस्त वह भाग्य के वश से शिलासंकट स्थान पर इस प्रकार स्खलित हो गई, मानो काम की मल्लिका धरती पर गिर पड़ी हो । फिर भी उसका परिधान (साड़ी) नहीं खिसका । चंचल जार की दृष्टि कहाँ ठहरती ?

5. AP इह ।

(7) 1. P^२जुउ असुय । 2. A आपंडुरत्तु । 3. AP का दिस । 4. A विसंठुलिया । 5. A सुहि-सुवरण^०; P सुहिसुवरण^० ।

धत्ता—दृढनिवसणु सइहि सुहृदहु करासि ण वियट्टइ ॥

मरणि समावडिइ परियरिबिहि⁶ विहि वि ण फिट्टइ ॥7॥

8

परदारलुद्धु ठुक्कंतु खलु
रावण¹ कि आणिय परजुवइ
वणु णाई करइ साहुवरणु
अलि कण्णासण्णउ रणुरणइ
इच्छइ दससिरु पररभणिसुहुं
णं² सो वि णिवहु उब्बेइयउ
दुज्जसु महु महणिहु महहि जइ
हंसावलि लवइ व लोयपिय
भा मइखहि माणिमि इह तिय
अंबउ लोहियपल्लवललिउ
चंदणु पुणु विसहर दक्खवइ
रामाणीरमणकम्मतुरिउ

किं लज्जइ कहि मि गामकमलु ।
तरु चुयसिण्हंसुएहि खवइ ।
हा पत्तउं णारिरयणमरण ।
पहु एउं अजुत्तु णाई भणइ ।
कणइल्लउ वंकिवि जाइ सुहुं ।
कोइलु³ विलवंतु व आइयउ ।
वइदेहि भडारा रमहि तइ ।
मइ जेही तेरी⁴ कित्ति सिय ।
मा णासहि लंकाउरिहि सिय ।
णं णिवअण्णायसिहि जलिउ ।
पडिवक्खबाणमाणु⁵ व थवइ ।
खयरिदें⁶ भणु मइडइ⁷ धरिउ ।

5

10

धत्ता—स्त्री के दृढ़ वस्त्रों को सुभट का हाथ रूपी खड्ग नहीं काट सकता, मृत्यु आ जाने पर भी विधाता उसके कटिबंध को नहीं तोड़ सकता ।

(8)

परस्त्री का लोभी दुष्ट रावण वहाँ आ पहुँचता है । क्या गाँव के कुत्से को कहीं भी लाज आती है ? हे रावण, तू दूसरे की युवती को क्यों लाया ? जैसे वृक्ष अपनी गिरती उष्ण आँसुओं से यह रो रहा है । वन मानो अपनी शाखाएँ उठाता है (और खेद व्यक्त करता है) कि नारी रत्न की मृत्यु आ पहुँची । कानों के समीप आकर भ्रमर गुनगुनाता है और मानो कहता है कि स्वामी, यह अयुक्त है । रावण परस्त्री के स्मरण सुख को चाहता है, (यह सोचकर) शुक मुँह टेढ़ा करके चला जाता है, मानो वह भी राजा से उद्विग्न है । कोयल भी विलाप करती हुई वहाँ आई (और बोली) : यदि तुम मेरे समान अपना दुर्यंश ही चाहते हो तो आदरणीया वैदेही से रमण करना । हंसावली मानो कहती है कि तुम्हारी कीर्ति मेरे समान इवेत और लोक प्रिय है, इस स्त्री का उपभोग कर तुम इसे मैला मत करो और न ही लंकापुरी की लक्ष्मी का नाश करो । अपने लाल-साल पल्लवों से सुन्दर आम्रवृक्ष ऐसा मालूम होता है मानो वह नृप के अन्याय की अग्नि में जल गया हो । चंदन वृक्ष विषहरों को दिखाता है, और प्रतिपक्ष के मान को स्थापित करता है । जिसे रामभार्या के साथ रमण कर्म की शीघ्रता है ऐसे अपने मन को विद्याधर ने शीघ्र ही बलपूर्वक रोका ।

6. AP परिवरविहि ।

(8) 1. P रामण । 2. A तं सो । 3. A कोकिलु । 4. A तेही कित्ति ।

5. पडिवक्खमाणमाणु व । 6. AP खयरिदएँ 7. A मइडइ ।

घत्ता—परवस परमसइ जइ छिवमि करें धणु पेल्लिवि ॥
अंबरयारिणिय तो^८ जाइ विज्ज मइं मेल्लिवि ॥८॥

9

इय णिज्जाइवि पंकयकरिहि
जीवावहु भावहु कह^१ वि तिहु
ता तरलइ^२ तारइ णाइणिइ
अविउलइ अंबइ अंबालियइ
पिरलंइ^३ पंदइ पंदिणिइ
कप्पूरपूरपरिमलजलइं^४
सीयहि अंगंगि रमंति किहु
णियपरिवपेमणकारिणिहि
दहमुहवहदाइणि कालणिहु
उट्टिय परणरणिट्ठुरहियय

आएसु दिण्णु विज्जाहरिहि ।
मइं इच्छइ सुंदरि अज्जु जिह ।
चंपयमालइ मंदाइणिइ ।
मयमत्तइ मल्लहणसीलियइ ।
रहसंइ^५ चंदइ चंदिणिइ ।
पल्लत्थियाइं हिमसीयलइं ।
सीयइं रहुवइअंगाइं जिह ।
लहु विज्जिय चामरधारिणिहि ।
संधुविकय णं खयजलणसिह ।
संचितइ हा हउं किं ण मय ।

5

10

घत्ता—हा रहुवंसपहु हा लक्खण कहिं^६ पइं पेच्छमि ॥
दावहि तांव मुहुं जावज्जु जि मरवि^७ ण गच्छमि ॥९॥

घत्ता—यदि मैं परम सती परवश सीता के स्तनों को हाथ से दबाकर छूता हूँ, तो आकाशगामिनी विद्या मुझे छोड़कर चली जाएगी ।

(9)

अपने मन में यह विचार कर, उसने कमल के समान हाथों वाली विद्याधारियों के लिए आदेश दिया—उसे इस प्रकार जिलाओ और मनाओ कि वह आज किसी प्रकार मुझे चाहने लगे । तब तरला, तारा, नागिनी, चंपकमाला, मंदाकिनी अविपुला, मयमत्त प्रसन्न स्वभाव वाली अंबा अंबालिका, प्रिय स्वभाव वाली नन्दा नंदिनी, रति से सुन्दर चन्दा और चंदिनी के द्वारा छोड़ा गया कपूर के पूर से सुवामित, हिम के समान ठण्डा जल सीता देवी के अंगों पर इस प्रकार फ्रीड़ा करता है, जैसे राम का अंग हो । अपने राजा की आज्ञा मानने वाली चामरधारिणी दासियों ने जब हवा की तो, रावण के वध को करने वाली वह काल के समान प्रलय की आग की ज्वाला की तरह जल उठी । परपुरुष के लिए कठोरहृदय सीता अपने मन में सोचती है—मैं मर क्यों नहीं गई ?

घत्ता—हे रघुवंश के स्वामी (राम) हे लक्ष्मण, मैं तुम्हें कहीं देखूँ, मेरे मरने तक तुम अपना मुँह दिखा दो ।

8. P ता जाइ विज्जु ।

(9) 1. A कहूँ । 2. AP अबलोहय अंबं बालियए । 3. AP रहसंदइ । 4. AP कप्पूरपूर^८ ।

5. A पइं कहि पेच्छमि । 6. AP मरेवि ।

10

चउपासिहिं थियउ गियच्छियउ
भणु भणु संदेहु मज्झु हुयउ
पुरि एहु कवण किं जमणयरि
जसु तलवरु जसु किर भणइ जणु
जसु इंदु वि संगरि थरहरइ
जसु वारइ^१ तत्ताणरु भुवइ
जसु अग्गइ णडइ सरासइ वि
जसु पंगणि मेहहिं दिणु छहु
सो एयहिं लंकहि एहु पइ
भत्तारु समिच्छहि माइ तुहुं

पुणु खयरपुरंधिउ^२ पुच्छियउ ।
णिवु कालउ जमु किं वा मणुउ ।
तावेक्क पजंपइ तहिं खयरि ।
जसु देइ णिच्च वइसवणु धणु ।
जसु मारुउ घरकयारु^३ हरइ । 5
दिवकरिउलु णामें मउ भुयइ ।
कुसुमंजलि धिवइ वणासइ वि ।
जसु को वि णत्थि पडिमत्सु भइ ।
रावणु णामें तिहुवणविजइ ।
अणुभुंजहि इच्छियकामसुहुं^४ । 10

घत्ता—सामिणि राणियहं णीसेसहं होइवि अच्छहि ॥

महएवित्तणयहु^५ परमेसरि पट्टु^७ पडिच्छहि ॥ 10 ॥

11

किं किज्जइ हरिणु अधीरमइ,
किं किज्जइ दीवउ तुच्छछवि

जइ लब्भइ सीहकिसोरु^१ पइ ।
जइ अंधयारु णिट्ठवइ रवि ।

(10)

उसने चारों ओर स्त्रियों को बैठे हुए देखा, फिर विद्याधरियों से पूछा—बताओ-बताओ मुझे संदेह उत्पन्न हो गया है कि यह राजा काल है या यम या कि मनुष्य? यह कोई नगरी है या यमनगरी? तब एक विद्याधरी उससे कहती है—लोग यम को जिसका तलवर (कोतवाल) बताते हैं, कुबेर जिसे नित्य प्रति धन देता है, युद्ध में इन्द्र भी जिससे थर-थर काँपता है, पवन जिसके घर का कचरा निकालता है, अग्नि जिसके कपड़े धोती है, जिसके नाम से दिग्गज समूह मद छोड़ता है, सरस्वती जिसके आगे नाचती है और वनस्पतियाँ कुसुमांजलियाँ बरसाती हैं, भेष जिसके आंगन में छिड़काव करता है, विश्व में जिसका प्रति योद्धा दूसरा कोई नहीं है, वह इस लंका का स्वामी है। विभुवन के विजेता उसका नाम रावण है। हे आदरणीया, तुम उसे अपना पति मान लो और अभिलषित काम सुखों का भोग करो।

घत्ता—निःशेष रानियों की स्वामिनी होकर रहो। हे परमेश्वरी, तुम महादेवी के पद को स्वीकार करो।

(11)

अधीरमति उस हरिण से क्या करना यदि किशोर सिंह के रूप में पति मिलता है? तुच्छ प्रकाशवाले दीपक से क्या यदि सूर्य अन्धकार को नष्ट कर देता है? वहाँ कौए से क्या,

(10) 1. AP खयरि^० । 2. A घर कयारु । 3. AP बत्थइ । 4. A omits this foot. 5. A इच्छिउ काम । 6. A महएविहि तणउ; P महएवीए पट्टत्तणहु । 7. A पट्टु ।

(11) 1. A सीहु किसोर ।

किं किञ्जद वाइसु² जइ गरुलु³ सुपसणु होइ बहुबाहुबलु ।
 किं किञ्जद खरु जइ दुद्धरहु पाविञ्जइ कंधरु सिधुरहु ।
 किं किञ्जइ पिप्पलु सलसलित जइ दोसइ सुरतरुवरु⁴ फलिउ । 5
 किं किञ्जइ राहुउ⁵ मुद्धि तइ रावणमहिलसणु होइ जइ ।
 ता सीयइ उत्तर मणि थविउ एयइ अण्णाणिइ किं लविउ ।
 जहि कंकु रायहंसु व गणिउ एरंडु कप्परुक्खु व भणिउ ।
 जहि गुणवंतु वि दोसिल्लसमु तहि जे विरयंति वयणविरमु ।
 ते विउस पसंसिय विउसजणि⁶ णिक्खिबइ बुद्धि को मुखवयणि⁷ । 10

घत्ता—पेयहु तणउं मुहुं विद्यसावइ को जणि चुंविवि ॥

इय चितिवि हियइ मोणव्वउ थिय⁸ अवलंबिवि ॥ 11 ॥

12

जयजसरामहु रामहु तणिय णिसुणेसवि वत्त सुहावणिय ।
 जइहुं¹ पेसियलेहेण सहं तइहुं² आहारपवित्ति महुं ।
 णं तो पुणु जिणवरिदु सरणु संयज्जउं सल्लेहगमएणु ।
 एत्तहि जक्खाहिवरक्खियउं³ पहवंतु फुरंतु णिरिक्खियउं ।
 पहरणपरिपाले रक्खियउं पणविधि दहगीवहु अक्खियउं । 5
 आउहसालहि खयरविसरिसु⁴ उत्पण्णउ चक्कु जणियहरिसु ।

जहाँ बहुत बाहुबल वाला गरुड़ प्रसन्न होता है ? उस गधे से क्या यदि दुर्धर महागज का कंधा प्राप्त होता है (बैठने के लिए) ? कौपते हुए पीपल के पत्ते से क्या जहाँ कल्पवृक्ष फला हुआ दिखाई देता हो ? हे मुग्धे, राम से क्या यदि रावण का पतीत्व प्राप्त होता है ? (यह सुनकर) सीता ने उत्तर अपने मन में रख लिया । (उसने सोचा) इस अज्ञानी ने क्या कहे ? जहाँ बगले को राज हंस समझा जाता है, एरंड को कल्पवृक्ष कहा जाता है, जहाँ दोषी व्यक्ति ही गुणवान है, ऐसे स्थान पर जो लोग अपने शब्दों के विराम की रचना करते हैं, उन पंडितों की विद्वत्सभा में प्रशंसा की जाती है । मूर्खजनों में अपनी बुद्धि कौन बर्बाद करता है ?

घत्ता—कौन व्यक्ति विश्व में प्रेत के मुख को चूम कर उसे विकसित कर सकता है, अपने मन में यह विचार कर वह मौन का सहारा लेकर स्थित हो गई ।

(12)

जय और यश से सुन्दर राम की सुहावनी वार्ता, जब मैं प्रेषित लेखपत्र द्वारा सुनूंगी— तभी मैं आहार ग्रहण करूंगी (अर्थात् भोजन ग्रहण करूंगी) नहीं तो मेरे लिए जिनवर की शरण है, मैं संलेखना मरण को प्राप्त होऊंगी । यहाँ पर, आयुधों की रक्षा करने वाले ने कुबेर के द्वारा रक्षित चमकता हुआ चक्ररत्न देखा । उसने प्रणाम कर रावण से कहा—आयुषशाला में प्रलयकाल के सूर्य के समान तथा हर्ष उत्पन्न करने वाला चक्र उत्पन्न हुआ है । इससे राजा

2. AP वायसु । 3. P गरलु । 4. AP सुरतरवरु । 5. AP रामे । 6. AP विउसजणि । 7. A मुख-
 मणि । 8. A थिय ।

(12) 1. AP जइयहुं लक्खणरामहु तणिय । 2. AP जइयहुं । 3. AP तइयहुं । 4. K records a
 p : आरक्खियउ इति पाठे आरः क्षितं प्राप्तं अराणां वा निवासः 5. AP खररवि^० ।

ता णिवह⁶ हियउं रोमंचियउं तं जाइवि⁷ कुसुमहिं अंचियउं ।
 णिवमंतिहिं इय बोल्लिउं वयणु एंवहिं⁸ कहिं चुक्कइ दहवयणु ।
 संभूयउं भवणि⁹ चक्करयणु आणिउं अण्णेक्कु वि मिगणयणु ।
 जं तं कलसु रामहु तणउं अप्पिज्जउं¹⁰ घणचक्कलथणउं । 10
 उप्पाउं णयरि भीयरु हवइ¹¹ तं णिसुणिवि णहयरिदु लवइ ।
 उप्पणु चक्कु सीयागमणि किं तुम्हहुं अज्ज वि भंति मणि ।

घत्ता—छिदिवि¹² अरिसिरइं असिकंपावियदेवासुरु ॥

भरहहुं हउं जि पहु सिरिपुष्पकयन्तभाभासुरु ॥12॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्यभरहाणुमणिण
 महाकव्यपुष्पकयन्तविरहए महाकव्ये सीयाहरणं नाम
 दुसत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥72॥

रावण का हृदय रोमांचित हो उठा और उसने जाकर फूलों से उसकी अर्चा की । राजा के मंत्रियों ने यह शब्द कहे—हे दशवदन, तुम इस समय क्यों चूकते हो । तुम्हारे घर में चक्ररत्न उत्पन्न हुआ है । और एक और जो मृगनायिका तुम ले आए हो वह राम की पत्नी है । घन गोल स्तनों वाली उसे तुम वापस कर दो । नगर में भीषण उत्पात होगा । यह सुनकर विद्याधर राजा कहता है कि सीता के आगमन से ही चक्ररत्न की प्राप्ति हुई है । क्या आप लोगों के मन में आज भी भ्रान्ति है ?

घत्ता—मैं शत्रु का सिर काटूंगा ? अपनी तलवार से देव और असुरों को कैंपाने वाला तथा सूर्य और चन्द्रमा के समान मैं ही भरत क्षेत्र का स्वामी हूँ ।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पकयन्त
 द्वारा विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का
 सीताहरण नाम का बहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ।

6. AP महिवहवउ । 7. A जोइवि । 8. AP सुंवह पडिचज्जइ दह⁹ । 9. AP भवणि वि । 10 P अप्पिज्जइ । 11. AP वहइ । 12. AP छिदमि । 13. AP बहत्तरि ॥ ।

तिसत्तरिमो-संधि

मायारज किं माणिक्यमय जो रहुसीहहु णंदुज ॥
महुं णावइ^१ भावइ सो हरिणु चंदहु सरणु पइदुज ॥ध्रुवकं॥

I

दुवई—एत्तहि रामसामि मृगपच्छइ^२ गउ दूरंतरं वणे ॥
एत्तहि णीय सीय दहवयणें एत्तहि सोउ परियणे ॥छ॥

एत्तहि दिणंति ^३ अत्थइरिसाणु	संपत्तउ लहु अत्थमिउ भाणु ।	5
णरतिरियणयणपसरणु हरंतु	चक्कउलहं तणुतावणु करंतु ।	
णं दिसइ लइउ रइरसणिहाउ	णं णिण्णदुज ^४ रावणपयाउ ^५ ।	
णं रइउ समुद्वे रयणसंगु	णं महिइ गिलिउ रइरहरहंगु ^६ ।	
देउ वि वारुणिसंगेण पडइ	णं इय भणंतु पक्खिउलु रइइ ।	

तिहत्तरवीं संधि

वह माणिक्यमय हरिण क्या मायावी था कि जो राम रूपी सिंह से नष्ट हो गया ? वह हरिण मुझे चन्द्रमा की शरण में गया हुआ अच्छा लगता है ।

(1)

दुवई—यहाँ स्वामी राम मृग के पीछे वन में दूर तक चले गये । यहाँ सीता दशमुख के द्वारा ले जाई गई और यहाँ स्वजनों में शोक बढ़ गया ।

यहाँ दिन का अन्त होने पर अस्तंगत सूर्य शीघ्र ही मनुष्यों और तिर्यचों के नेत्र-प्रसार का हरण करता हुआ, चक्रवाल कुल के लिए शरीर संताप करता हुआ, अस्तगिरि के शिखर पर इस प्रकार पहुँच गया मानो दिशा ने (पश्चिम दिशा ने) रति-रस के निधान को ले लिया हो, मानो रावण का प्रताप नष्ट हो गया हो, मानो समुद्र ने रत्न का (सूर्य का) साथ कर लिया हो, मानो धरती ने रति के रथ चक्र को निगल लिया हो । देव (सूर्य) भी वारुणी (सुरा,

(1) 1. AP भावइ णावइ । 2. AP मिगं । 3. A दियंति; K दिणंति, corrects it to दियंति but has a gloss दिनस्यान्ते । 4. AP णिड्डिउ । 5. AP रामणयुयं । 6. A रविरहं ।

मच्छंतु अहोमुख तिमिरमंथु णं दावइ णरयहु तणउ पंथु ।
 रामहु कलत्तु इह हित्तु जेण जाएसइ सो सग्गेण एण ।
 गउ अत्थवणहु कंदोद्वज्जु करसहसेण वि णउ धरिउ सूरु ।

10

घत्ता—णिवडंतु जंतु हेट्टामुहउ रवि किं एक्कु भणिज्जइ ॥
 जगलच्छीमंदिरणिग्गयहि मंदहि को रक्खिज्जइ ॥१॥

2

दुवई—माणवभवणभरहखेतोवरि वियरणगमियवासरो ॥
 सीयारामलवखणाणंदु व जामत्थमिओ^१ दिणेशरो ॥छ॥

पच्छाइयसयलायासतीरु	णं संझारायकोसुं भचीरुं ।	
णहसिरि परिहइ रंडिज्जमाण	दिणवइविओउ ^३ अइअसहमाण ।	
सिसुससि भग्गउ ^४ णं वलयखंड	मउलियउं कमलु णं ताहि तुंडु ।	5
विकिक्कणउ ^५ पत्तु दियतपारु	तारायणु णावइ तुट्टु हारु ।	
गय णिसि उययायलकरिहि चंडिउ	तमवइरिणरिदहु समरि भिडिउ ।	
उगउ उण्णइ पहरेण पत्तु	परिपालियखत्तु व रायउत्तु ।	
दिणयरु त्रिहडाविषपउमसीउ	सोहइ णावइ दहवयणु वीउ ।	

पश्चिम दिशा) के संग पड़ जाते हैं, मानो पक्षिकुल यह कह कर चिल्ला रहा है, अंधकार का नाश करने वाला (सूर्य) अधोमुख जाता हुआ नरक के पक्ष को दिखा रहा है। यहाँ जिसने राम की पत्नी का अपहरण किया है, वह भी इसी मार्ग से जाएगा। कमलों को खिलाने वाला सूर्य अस्त को प्राप्त हो गया, हजार किरणों के द्वारा भी वह नहीं पकड़ा जा सका।

घत्ता-—पतित होता हुआ और अधोमुख जाता हुआ क्या अकेला सूर्य ही है? विश्व में लक्ष्मी के घर से निकले हुए मंद व्यक्तियों से किसकी रक्षा की जा सकती है?

(2)

मानव जानि के घर भरतक्षेत्र के ऊपर, जो विचरण कर अपना दिन बिताता है, ऐसा सूर्य सीता, राम और लक्ष्मण के आनन्द के समान जब अस्त को प्राप्त होता है, तो आकाश की लक्ष्मी विधवा होती हुई, समस्त आकाश रूपी तीर को आच्छादित करने वाली वह संध्या मानो राग रूपी वस्त्र को पहिन लेती है। दिनपति के वियोग को नहीं सहन करती हुई, उसने बाल चन्द्र को इस प्रकार खंडित कर दिया मानो अपना वलयखंड ही खंडित कर दिया हो। कमल मुकुलित हो गया, मानो उसका मुख ही मुरझा गया हो। जो इधर-उधर विकीर्ण होकर दिगंत पर्वत पहुँच चुका है, ऐसा तारागण मानो उसका टूटा हुआ हार है। रात्रि व्यतीत हो गई। उद-याचल रूपी महागज पर चढ़ा हुआ वह (सूर्य) अंधकार रूपी शत्रु राजा से युद्ध में भिड़ गया। जिसने क्षात्र धर्म का परिपालन किया है, ऐसे राजपुत्र के समान जो एक प्रहर (प्रहार)

(2) 1. AP जामत्थमिउ णेशरो । 2. A संझाराए । 3. A 'विओयअइ' । 4. AP णं भग्गउ ।
 5. APT विक्किण्णउ पत्तदियंतरालु ।

णं सीयाविरहदुयासचंडु णं तियसाणीकरघुसिणुपिंडु । 10
 णं दिसकामिणिसिरि⁶ रत्तु फुल्लु णं खयररायतणुसिहिरतल्लु ।

धत्ता—ह्यसीयउ⁷ कयरणागमणु अइरत्तउ सउंहाइयउ⁸ ॥

दीहरपहरीण⁹ राहविण रवि परवारु¹⁰ व जोइयउ ॥2॥

3

तुंई—पुच्छिद वेण तेत्थु णियपरियणु बालमरालगांमिणी ॥

कहिं सा सीय भणसु भो लक्खण सइगुणरयणसामिणी ॥छ॥

तं णिसुणिवि भायरु कहइ एवं	जावहिं तुहुं ¹ गउ मृगमग्गि देव ।	
जावहिं हउं अच्छिउ सरवरंति ²	तावहिं जि ण दिट्ठी उववणंति ।	
विण्णवइ एवं भिक्खयणु सळु	कंदइ उब्भियकरु गलियगळु ।	5
एवंहि जाणइ दीसइ जियंति	जइ तो ³ तुहुं पुण्णाहिउ ण भंति ।	
तं णिसुणिवि मुच्छिउ पडिउ रामु	जलसिचिउ उट्ठिउ खामखामु ।	
सीयलु विसु विसु व ण संति जणइ	हरियंदणु सिहिकुलु अंगु छणइ ।	

में उन्नति को प्राप्त हो गया । जिसने पद्म सीय कमलों की शीत (राम और सीता) को विघटित कर दिया है, ऐसा दिनकर दूसरे दशमुख के समान शोभित होता है । मानो वह सीता देवी की विरह रूपी ज्वाला से प्रचण्ड है, मानो इन्द्राणी के हाथों में केशर का पिण्ड है, मानो दिशा रूपी कामिनी के सिर पर रक्तपुष्प है, मानो विद्याधर राजा के शरीर के रक्त का तालाब है ।

धत्ता—लम्बे रास्ते से थके राघव ने सूर्य को रावण के समान देखा जो शीत दूर करने वाला (सीता का अपहरण करनेवाला) युद्ध के लिए आगमन करनेवाला, अत्यन्त रक्त (अनुरक्त) और सामने दौड़ता हुआ है ।

(3)

दुवई—राम ने वहाँ अपने परिजनों से पूछा—हे लक्ष्मण, बताओ बाल-हंस के समान गतिवाली तथा सतीत्व गुणरूपी रत्नों की स्वामिनी वह सीता बताओ कहाँ है ?

यह सुनकर भाई ने इस प्रकार कहा—हे देव, जब तुम हरिण के मार्ग पर गए थे, और जब मैं सरोवर में था, तब वह उपवन में दिखाई नहीं दी । समस्त भृत्यजन भी निवेदन करते हैं, और दोनों हाथ उठाकर गलितगर्व रुदन करते हैं कि यदि इस समय जानकी जीवित दिखाई देती हैं, तो तुम पुण्यशाली हो । इसमें भ्रांति नहीं । यह सुनकर राम मूर्छित होकर गिर पड़े । पानी छिड़कने पर अत्यन्त दुर्बल वह उठे । शीतल जल भी विष की तरह उन्हें शांति उत्पन्न नहीं करता, हरिचन्दन भी अग्निकुल की तरह शरीर को जलाता । कमल भी सूर्य के साथ अपनी

6. A विसिकामिणिकररत्तु फुल्लु । 7. AP द्विपं । 8. A सविहायउ; P सउंहाइउ । 9. P पहरण । 10. AP परिवारु वि जोइउ ।

(3) 1. A सयंगुणं । 2. AP गउ तुहुं भिगं । 3. A सरवणंति । 4. P तइ ।

ण वियाणहि कंतहि तणिय वत्त रे णीलगीव घणरामवत्त⁷ ।
 णच्चंति दिट्ठ भणु कहि मि देवि इयरह कहि णच्चहि भाउ लेवि ।
 रे कीर ण लज्जहि जंपमाणु जइ दिट्ठउं पइं मुच्चहि पमाणु ।

घत्ता—णिह विरहें क्षीणउ दासरहि देविहि अज्जु जि सुच्चहि ॥

णीसेसजीवसंतावहर मेह दूअउं⁸ तुहुं वच्चहि ॥4॥

15

5

दुवई—अइउवकोंठिएण धरणीसें सज्जणदिण्णजीययं ॥

ता दिट्ठं मयच्छिणकु कुमपिज रु⁹ उत्तरीययं ॥छ॥

दीसइ वंसग्गविलंबमाणु णं रिउ¹ गयगयणंगणणिवाणु ।
 णं दावइ कंतहि तणिय वट्ठ इह दहमुहमारीयइं³ पयइ ।
 णं उवियय सीयइ सइवडाय तं लेप्पिणु किकर झ त्ति आय ।
 आलिगिउं रामें णीससेवि पुणु बाहुल्लइं जयणइं पुसेवि ।
 जंपिउं णिय सुंदरि खेयरेहि⁴ मायाविण्हि रणदुद्धरेहि⁵ ।
 सहं लवखणेण संदेहि छुट्ठु जामच्छइ पहु किकज्जमुइ ।
 तावायउ दूयउ दसरहासु तें घित्तु पत्तु आलिहिउ तासु ।
 उच्चाइवि तं सहसा सिरेण इय वाइउं देवें हलहरेण ।

5

10

कांता का समाचार नहीं जानते ? हे सुन्दर स्मरणीय पूछवाले मयूर बताओ, क्या तुमने देवी को कैसे नृत्य करते हुए देखा ? अन्यथा तुम उसका भाव ग्रहण कर कैसे नाच रहे हो ? हे शुक, तू बोलता हुआ लजाता नहीं है, क्या तू मेरी पत्नी का पता जानता है ?

घत्ता—पवित्र देवी के विरह में राम आज भी अत्यन्त क्षीण हैं। निःशेषजीवसतापहर हे मेघ, तुम दूत हो तुम बताओ ।

(5)

दुवई —अत्यन्त उत्कंठित धरणीश (राम) ने सज्जनों को जीवन देने वाला, मृगाक्षी (सीता) के स्तनकेशर से पीला उत्तरीय देखा ।

बाँस के अग्र भाग पर अवलम्बित वह ऐसा दिखाई देता है, मानो शत्रु के आकाश-प्रांगण से जाने का चिह्न हो । मानो वह कांता का मार्ग बता रहा हो कि दशमुख रावण के द्वारा वह यहाँ से ले जाई गई है । मानो सीता के सतीत्व की पताका उठी हुई हो । उसे अनुचर लेकर शीघ्र आए । राम ने निःश्वास लेकर उसका आलिंगन किया और फिर बाँहों से अपने नेत्रों को पोंछ कर कहा—मायावी और अत्यन्त दुर्बर विद्याधरों द्वारा सीता ले जाई गई है । इस प्रकार जब राम लक्ष्मण के साथ संदेह में किकर्तव्यविमूढ़ थे, तभी शीघ्र दशरथ राजा का दूत आया, और उसने उनका लिखा हुआ पत्र (सामने) रख दिया । उसे सहसा उठाकर देव बलभद्र राम

7. A घणरामवत्त; P घणरामवत्त; T घणरामवत्त अतिशयेन रमणीयनिच्छ । 8. AP दूउ ।

(5) 1. AP पिंजरि । 2. A णं रिउ गयणंगणि निज्जमाणु । 3. AP मारीयय । 4. P रणि दुद्धरेहि ।

दसरहु जिणचरणभोयभसलु^१ उवइसइ सुयहं गियदेहकुसलु ।
मइ दिट्ठउं सिविणउं हयविलासु हिय राहुं^२ रोहिणि ससहरासु ।

घत्ता—एककल्लउ ससि गहयलि भमइ अबलोइवि अवहारिउं ॥
वज्जरिउं पहाइ पुरोहियहु तेण वि मज्झु विचारिउं^३ ॥५॥

6

दुवई—जो दिट्ठउ विडप्पु सो रावणु जा णिलि पइ विलोइया ॥
रोहिणि तुहिणकिरणविच्छोइय सा तुह सुयविओइया ॥छा॥

परमत्थे जाणसु राय सीय	अज्जु जि खयरिदे घरहु णीय ।	
जा हिप्पइ सा ^१ पुणरवि णिरुत्तु	ता किज्जइ गियदेहहु पयत्तु ।	
जे ^२ चक्कवट्ठि पालइ सजीव	भरहंतरालि छप्पण दीव ।	5
तहिं सायरि लंकादीवु अत्थि	अण्णु वि तिकूडु गिरि मणिमभत्थि ।	
पुरि लंक राउ दहवयणु णाम	गिय तेण सीय रामाहिराम ।	
आयण्णिवि विसरिसविसम वत्त	ते बे वि भरह सत्तुहण पत्त ।	
हिसंततुरय गज्जंतणाय	सामंत सुहड दसदिसिहिं आय ।	
आवेप्पिणु तणयासोक्खहेंउ	ससुरेण णिहालिउ रामएउ ।	10
दुम्मणु जोइवि रिउमद्देण	गलगज्जिउ तेत्थु जणद्देण ।	

ने सिरे से उसे पढ़ा—“जिनवर के चरणकमलों का भ्रमर राजा दशरथ पुत्रों को अपनी देह की कुशलता का आदेश करता है। मैंने स्वप्न में देखा कि राहु द्वारा चन्द्रमा की हतविलास रोहिणी का अपहरण किया गया है।

घत्ता—अकेला चन्द्रमा आकाश में परिभ्रमण करता है, यह देखकर मैंने समझ लिया और सबेरे पुरोहित से कहा। उसने मुझे बताया—

(6)

तुमने जो राहु देखा है, वह रावण है; और जो तुमने रात्रि में चन्द्रमा से वियुक्त रोहिणी को देखा है, वह तुम्हारे पुत्र से वियुक्त सीता है।

हे राजन्, तुम इसे परमार्थ जानो कि आज ही वह विद्याधर के द्वारा घर ले जाई गई है। यदि उसे फिर से वापस लाना है तो निश्चय ही अपनी देह से प्रयत्न करना चाहिए। चक्रवर्ती जो भरतक्षेत्र में जीव सहित छप्पन द्वीपों का परिपालन करता है उसके समुद्र में लंका द्वीप है। और भी त्रिकूट मणि किरण आदि द्वीप हैं। लंका नगरी में राजा रावण है, उसके द्वारा स्त्रियों में सुन्दर सीता का अपहरण किया गया है। यह असमान विषतुल्य बात सुनकर भरत और शत्रुघ्न दोनों वहाँ पहुँचे। हिनहिनाते हुए घाड़े, गरजते हुए हाथी, सामंत और सुभट दसों दिशाओं से आये। पुत्रों के सुख के कारणभूत राम देव से ससुर ने भी आकर भेंट की। उन्हें दुर्मन देखकर शत्रु का मर्दन करनेवाला लक्ष्मण एकदम गरज उठा।

5. AP जिणकमलंभोय^१ । 6. A राहें । 7. AP विचारियउं ।

(6) 1. A सो । 2. A जो । 3. उदयकेसर ।

घत्ता—रिउ जरकुरंगु महु आवडइ हउं हरि उद्धु यकेसरु ॥
जइ दुद्धु दिदिठगोयरि पडइ तो मारमि लंकेसरु ॥6॥

7 :

दुवई—सीयागुणविसेससंभरणचुर्यसुयसित्तवसुमई ॥

उम्मोहिउ विओयविसघारिउ कह व णिवेहि महिवई ॥छ॥

वियविप्पओयकहुमणिमणु^१
तावाय बेणि खग विमलदेह
णं सीयामगपयासदीव
संमाणिय हरिणा संणिसण
बोल्लानिय बेणि वि दिव्दकाय
तं णिगुणिवि भासइ जेट्ठु खयर
णामें किलिकिलु कलहंससहिय
तहि महु^२ बलिदु माणियपियंगु
सामल सलोण उडुणिहणहलि
हउं लहुयारउ सुग्रीउदेव

जावच्छइ सेजजायलि णिसणु ।

णं रामसासथिरकरणमेहु ।

बेणि वि पणवेप्पिणु थिय समीव । 5

सुहिदंसणरुहरोसंचभिण्ण ।

कहुं तुम्हई कि किर एत्थु आय ।

खगदाहिणसेदिहि अत्थि णयरु ।

जहि विविहवास चोरारिरहिय ।

तहु धण पियंगसुंदरि^३ पियंगु । 10

तहि पढममुत्तु णामेण बालि ।

अणवरउ करमि णियपियरसेव ।

घत्ता—ता तेत्थु मरतें पुरि पिउणा बालि रज्जि बइसारिउ ॥

हउं जुवराणउ कउ मइ जणणि^४ दाइएण णीसारिउ ॥7॥

घत्ता—शत्रु मुझे बूढ़े हरिण की तरह प्रतीत होता है। मैं, जिसकी अयाल ऊपर उठी हुई है, ऐसा सिंह हूँ। यदि वह लंकेश्वर मेरी निगाह में पड़ता है, तो मैं उसे मार डालूंगा।

(7)

सीता के गुण विशेष के स्मरण से गिरे हुए आँसुओं से जिन्होंने धरती को सिंचित कर दिया है, ऐसे वियोग के विष से व्याकुल महीपति राम को राजाओं ने किसी प्रकार समझाया।

प्रिया के वियोग के कीचड़ में निमग्न राम जब अपनी सेज पर बैठे हुए थे, तब पवित्र शरीर विद्याधर ऐसे आए मानो राम रूपी धान्य को स्थिर करने के लिए मेष हों, मानो सीता के मार्ग को प्रकाशित करने वाले दीप हों। दोनों प्रणाम करके वहाँ पास में बैठ गए। बैठे हुए उनका लक्ष्मण ने सम्मान किया। सुधि और दर्शन से उत्पन्न रोमांचित दिव्य शरीर वाले उन दोनों से लक्ष्मण ने पूछा—कहाँ से किसलिए आए? यह सुनकर बड़ा विद्याधर कहता है—विजयार्ध पर्वत की दक्षिण श्रेणी में एक नगर है, जो नाम से किल-किल कलहंसों से सहित है। जहाँ चारों ओर शत्रुओं से रहित विविध आवास घर हैं, वहाँ जिसने प्रियंगु को माना है, ऐसा मेरा राजा बलि है। उसकी पत्नी प्रियंगु सुंदरी प्रियंगु के समान सुन्दर श्यामल और नक्षत्र पंकित के समान नखों वाली है। उसका पहला पुत्र बालि नाम का है, और मैं छोटा सुग्रीव देव हूँ। मैंने अनवरत रूप से पिता की सेवा की है।

घत्ता—पिता ने मरते समय बालि को राजगद्दी पर बैठा दिया, और मैं युवराज बना दिया गया। मुझे भाई ने निकाल दिया।

(7) 1. A वसुपई । 2 P has ता before पियं । 3. P °णिसणु । 4. A पहु । 5. AP पियंगु-सुंदरि । 6. A जणेण ।

8

दुवई—सुणि रायाहिराय हे हलहर मणिमयसिहरमंदिरे ॥

तित्थु जि रययसिहरि खगसेठिहि खणरुद्धकंतपुरवरे ॥छ॥

विज्जाहरु गामें अत्थि पवणु	लीलाणिहि वेयविजित्तपवणु ।	
तहु अंजण मणरंजणविचार	महएवि वूढसिगारभार ।	
इहु पेउं सहस्र पशुगईहि	...हे मायउ गविभ महासईहि ।	5
पंडित पहु भहु विज्जाणिकेउ	जगि वुच्चइ एहु जि मयरकेउ ।	
एकहि दिणि कोक्किवि खयरलवख	एए दिण्णी विज्जापरिवख ।	
गिरिसिहरि णिवेसिउ एक्कु पाउ	अण्णेक्कु दिण्णु उदंडवाउ ।	
दीहुद्धु पसारिउ गयउ ताम	गयणंगणि ससि दिवसयरु जाम ।	
पुणु रुवु धरिउ तसरेणुमेत्तु	अणुमेत्तु मिलिवि खयरेहि वुत्तु ।	10
वेविखवि सहस्रसाहसु अभेज्जु	वालें महु दिण्णउं जउवरज्जु ।	
कालें जंतें तं हित्तु पुणु वि	आसंकिवि तें सहं ण किउ रणु वि ।	
गय वेणि वि जण माणिककवूहु	संमेयजिणानउं सिद्धकूहु ।	

घत्ता—तसथावरजीवहं दय करिवि धम्मि थवेप्पिणु अप्पउ ॥

तहि देहिदेहुहुणासयरु वंदिउ जिणु परमप्पउ ॥४॥ 15

(8)

दुवई—हे राजाधिराज, हे हलधर सुनिए, वहाँ ही विजयार्थ पर्यंत की विद्याधर श्रेणी के मणिमय शिखर मंदिर वाले विद्याधर विद्युत्कान्त नगर में पवन नाम का विद्याधर है। अपने वेग से पवन को जीतने वाले उसकी लीलाओं की निधि और मनोरंजन के विचार से युक्त शृंगारभार धारण करने वाली अंजना नाम की महादेवी थी। राजगामिनी उस महासती के गर्भ से उत्पन्न यह मेरा सहचर है—चतुरपंडित और भटविद्या-निकेत। दिव्य में इसे कामदेव कहा जाता है। एक दिन एक लाख विद्याधरों को बुलाकर इसने विद्याओं की परीक्षा दी। पहाड़ के शिखर पर इसने एक पैर रखा और दूसरा उड़्ड पैर आधा लम्बा फैलाया। वह वहाँ तक गया, जहाँ तक आकाश के आंगन में सूर्य और चन्द्रमा हैं। फिर उसने अपना रूप तसरेणु तथा अणु वरावर यगत्या। विद्याधरों से मिलकर उसका अभेद्य स्वभाव और साहस देखकर बालि ने मुझे युवराज पद दे दिया। लेकिन समय बीतने पर उसने अवहरण कर लिया। आशंकित होकर हमने उसके साथ युद्ध नहीं किया। हम दोनों, जिसके शिखर माणिक्य के हैं ऐसे, सिद्धकूट समेदजिनालय गये।

घत्ता—वहाँ त्रसस्थावर जीवों की दया कर और अपने आपको धर्म में स्थापित कर शरीरधारियों के शरीर के दुःखों का नाश करने वाले परमात्मा जिनदेव वंदना की।

(8) 1. A रमणिगणदित्तमंदिरे; P रमणियसिधमंदिरे। 2. P adds वि after अण्णेक्कु। 3. A जुउविरज्जु; P जुउवरज्जु।

9

दुवई—जय देविदत्तदखयरिदफणिदणरिदपुज्जिया¹ ॥जय णिट्ठवियदुट्ठकम्मट्ठट्ठारहदोसवज्जिया² ॥छ॥

ण भोएसु कंखा ण णिदा ण भुवखा ।

ण तण्हा ण सोओ ण राओ ण रोओ³ ।ण चावं ण वेरी ण ताणं⁴ ण मारी ।ण कायं⁵ ण चेत्तं ण सीसं सिहालं ।ण णिदा ण थोत्तं ण मुट्ठापवित्तं⁶ ।ण हिंसाइ सग्गो ण सोडालमग्गो⁷ ।

ण गोभूमिदानं ण वेओ पमाणं ।

ण चम्मत्तरीयं⁸ ण जण्णोववीयं ।

उरे णत्थि सप्पो मणे णत्थि दप्पो ।

पसूणंतयालं करे णत्थि सूलं ।

सिरे णत्थि गंगा जडागोवियंगा¹⁰ ।भवाणी ण देहे रई णो सणेहे¹¹ ।

पुरारी ण कामी तुमं मज्झ सामी ।

जिणो भोवखहेऊ भवंभोहिसेऊ ।

घत्ता—जय परमणिरंजण जणसरण¹² वीयराय जोईसर ॥

जलि पत्थरि पाणिध धम्मु णउ तुहं जि धम्मु परमेसर ॥१॥

(9)

देवेन्द्र चन्द्र विशाधरेन्द्र नगेन्द्र और नरेन्द्रों के द्वारा पूज्य, आपकी जय हो । जिन्होंने आठों दुष्टकर्मों का नाश कर दिया है, और जो अठारह दोषों से रहित हैं, ऐसे आपकी जय हो ।

त भोगों में आकांक्षा है, न नींद है, और न भूख, न तृष्णा है, और न शोक, न राग है, और न रोग । न चाप है, और न शत्रु है, न त्राण है, और न मारी । न शरीर है, और न वस्त्र है और न जटायुक्त सिर है, न निन्दा है और न स्तुति, न पवित्र मुद्रा है । न हिंसादि से स्वर्ग है, न सुरा मार्ग है, न गौ और भूमि का दान है, न वेदों का प्रमाण है, न चर्म का उत्तरीय (मृगछाला) है और न यज्ञोपवीत है । उसपर सर्प नहीं है, मन में दर्प नहीं है, पशु-पशुओं का अन्त करने वाला शूल हाथ में नहीं है । न सिर पर गंगा है, न जटाओं में गुप्त अंग है । न देह में भवानी है और न स्नेह में रति है, और न त्रिपुर शत्रु है, न कामी है । हे देव, आप मेरे स्वामी हैं । जिनदेव ही मोक्ष के कारण हैं, भवरूपी समुद्र के सेतु हैं ।

घत्ता—हे परम निरंजन जनशरण, आपकी जय हो । हे वीतराग ज्योतीश्वर, आपकी जय हो, जल, पत्थर और पानी में धर्म नहीं है । हे परमेश्वर, धर्म आप ही हैं ।

(9) 1. AP ^०पुज्जिय । 2. AP ^०वज्जिय । 3. AP पाओ । 4. AP तावं । 5. A ण कायं सुचेत्तं; P ण काये सुचेत्तं । 6. AP ण मुट्ठा ण वित्तं । 7. A ण सो जण्णमग्गो । 8. AP ण वेउप्पमाणं । 9. A वंसुत्तरीयं । 10. P जडगोवियंगा । 11. AP सणाहे । 12. P जणसरण ।

10

दुवई—विणयरु हरइ तिमिरु सलिलु वि तिस खगवइ विसवियंभियं ॥

जिण तुह वंसणेण खणि णासइ गुरुदुरियं णिसुंभियं ॥छ॥

इय वंदिवि जिणवरु सेस लेवि	खण एक्कु जाम तद्धि थवक बे वि ।	
ता तेयवंतु णं विज्जुदंढु ¹	णं सुरवरसरिडिडीरपिडु ।	
वियडजडजूडु विवरीयवाणि	मणिरयणकमंडलु ² दंडपाणि ।	5
खणखणियमणियगणियवखसुत्तु ³	कोपीणकणयकडिसुत्तजुत्तु ।	
ससहरु व विसाहारुढभत्तु	असुरसुरसमरसंणिहियचित्तु ।	
सोत्तरियफुरियउववीयवंतु	ता दिट्ठउ गारउ गयणि एंतु ।	
अरहंतु णवेप्पिणु सुहुं ⁴ णिविट्ठु	अम्हहि संभासणु करिवि दिट्ठु ।	
तुहुं जाणहि णिसुयसुयंगरिद्धि	पुच्छिउ पावेसहुं किह सरिद्धि ।	10
मुहुं वंकइ संकइ वालि कासु	को देसइ कुलरज्जावयासु ।	
ता दाणवमाणवरणरण	विहसेप्पिणु वोल्लिउं गारएण ⁵ ।	

घत्ता—भो खेयरपहु भूगोयरु वि धुउ तिजगुत्तमु भावहि ॥

सेवहि रामहु पणपंकयइ जइ तो कुलसिरि पावहि ॥10॥

(10)

दिनकर अंधकार को नष्ट करता है, जल प्यास को और गरुण विष के फैलाव को । हे जिन, तुम्हारे दर्शन मात्र से भारी पाप एक क्षण में चूर-चूर हो जाते हैं ।

इस प्रकार जिनवर की वन्दना कर निर्मल्य लेकर जैसे वे दोनों एक क्षण के लिए ठहरे कि इतने में तेज से युक्त मानो विद्युत दंड हो, मानो देव-गंगा का फेन समूह हो, विकट जटा-जूट वाला, विपरीत वाणी वाला, जिसका कमंडलु मणि और रत्नों का है, जो हाथ में दण्ड लिये हुए है, जो खनखनाता हुआ, मणियों का अक्षसूत्र जप रहा है, कोपीन और कनक कटिसूत्र से युक्त जो विशाखा नभत्र में रुद्ध चन्द्रमा के समान पादुकाओं पर आरुढ़ है, जो असुर और सुरों के युद्ध में समाहित चित्त है, जिसके उत्तरीय पर यज्ञोपवीत चमक रहा है, ऐसे नारद को आकाश में आते हुए देखा । अरहंत को प्रणाम करके वह सुख से बैठ गए । हम लोगों ने संभाषण करने के लिए उनसे भेंट की और पूछा—आप निश्चुत और श्रुतांग की ऋद्धि को जानते हैं, हम अपनी ऋद्धि कब प्राप्त करेंगे ? वालि किससे मुख टेढ़ा रखता है और आशंका करता है ? कुलराज्य का आलिंगन कौन देगा ? तब दानवों और मानवों के युद्ध में रत नारद ने हँस कर कहा—

घत्ता—हे विद्याधर स्वामी, भूगोचर (मनुष्य) भी विजय में उत्तम होते हैं । यदि तुम राम के चरणकमल चाहते हो, और सेवा करते हो, तो कुललक्ष्मी प्राप्त कर सकते हो ।

(10) 1. AP विज्जदंढु । 2. AP मणिरइय² । 3. A ²गलियक्ख² । 4. A सहु । 5. V विहसे-विणु ।

11

दुवई—अण्णु वि हरिणयण णियपणइणि तासु दसासराइणा ॥

विरसियअमरडमरडिडिमरवरिउबहुतासदाइणा ॥छ॥

दुवखेण ण याणइ दिमहु रत्ति	जो दावइ कंतहि तणिय थत्ति ।
सो जाणमि जिह भमरहु सुगंधु	तिह रामहु होसइ परमबंधु ।
लभइ मणोज्जकज्जेण ¹ कज्जु	सो देसइ तुह ² सुग्गीव रज्जु ।
तं गिसुणिवि आया एत्थु राय	जलयगिसिगसंणिहियपाय ।
सै णहयर पुज्जिय राह्वेण	संभासिय तोसिय माह्वेण ।
हणुमंतें मग्गियपेसणेण	जंपिउ णवजलहरणीसणेण ।
भो दसरहणंदण णंद णंद	मा क्षिज्जहि सज्जणकुमुयचंद ।
णियरामालोयणकयपयत्त	हउं आणमि सीयहि तणिय वत्त ।

5

10

घत्ता—सुग्गीवहु मुहुं पप्फुल्लियउं³ मित्तवयणु पडिक्खणउं ॥

अहिणाणु लेहु अंगुत्थलउं रामें हणुयहु दिण्णउं ॥१॥

12

दुवई—ता णविउं पयाइं हलहेइहि णवदलणलिणणिहमुहो ॥

उल्ललिओ¹ णहेण पवणो इव चलगइ पवणतणुरुहो ॥छ॥

(11)

और भी विशेष रूप से बजाए गए अमरों के लिए भयानक डिडिम के शब्द से शत्रु के लिए अत्यधिक त्रास देने वाला राजा दशानन उनकी मृगनयनी प्रणयिनी को ले गया है। वह दुःख के कारण दिन रात नहीं जानती। जो परनी की वार्ता को बताएगा, मैं जानता हूँ, कि भ्रमर के लिए सुगन्ध की तरह वह राम का परम बंधु होगा। मनोज्ञ काम से ही मनोज्ञ कार्य प्राप्त किया जाता है। हे सुग्गीव, वे तुम्हें राज्य दे देंगे। यह सुनकर, हे राजन्, हम लोग यहाँ आये हैं। मेघों के अग्र शिखरों पर चरण रखने वाले उन विद्याधरों का राम ने सम्मान किया। लक्ष्मण ने बात कर उन्हें संतुष्ट किया। आदेश चाहने वाले तथा नवमेघ के समान शब्द वाले हनुमान् ने कहा—हे दशरथपुत्र, तुम प्रसन्न होओ, तुम प्रसन्न होओ। हे सज्जन कुमुदचन्द्र तुम क्षीण मत होओ, अपनी स्त्री के अवलोकन का जिसमें प्रयत्न है, ऐसी सीता संबंधी वार्ता मैं ले आऊँगा।

घत्ता—सुग्गीव का मुख खिल गया। उसने मित्र का वचन स्वीकार कर लिया। राम ने पहिचान का लेख और अंगूठी हनुमान के लिए दे दी।

(12)

तब नवदल वाले कमल के समान मुख वाले हनुमान् ने राम के चरणों में प्रणाम किया। पवनगति वह पवनपुत्र आकाश मार्ग से पवन की तरह उड़ गया।

(11) 1. A °कज्जाण कज्जु । 2. P तुम्हहं । 3. A पप्फुल्लियउं; P पडुल्लियउं ।

(12) 1. P has गउ before उल्ललिओ ।

तओ तेण जंतेण दिट्ठो समुद्धो	पधावंतकल्लोलमालारउद्धो ।
जलुम्ममणिम्ममग्गोहित्थवंदो	अथाहंभपब्भारसंकंतचंदो ।
इसप्फोडफुट्ठंतसिप्पीसमूहो	णहुक्खित्तमुत्ताहलो भाणुरोहो । 5
दिसाहुवकणक्कुग्गयंतं करालो	चलुप्पिच्छपल्लहत्थवेलाविसालो ² ।
पवालंकुरुक्केरराहिल्लरूहो	पगज्जंतमज्जंतमायंगजूहो ।
सुभीसो असोसो ³ असेसंबुवासो	विडिदु व्व पीयाहरो ढंकियासो ।
सरोसंगतुं गत्तणालीढारिक्खो ⁴	अलंकारओ कूलकीलंतजक्खो ।
करिदो व्व गाढं गहीरं रसंतो	अहिदो व्व पायालमूले विसंतो । 10
णरिदो व्व धीरो ⁵ समज्जायवंतो	रिसिदो व्व अंतोमलं णिग्गहंतो ।
गिरिदो व्व रेहंतमाणिककमोहो	सुरिदो व्व देवासिओ दिण्णसोहो ।

घत्ता—गंभीरु घोर आवत्तहर लीलाइ जि आसंधिउ⁷ ॥

संसारु व परमजिणेसरिण सायर हणुए लंधिउ⁸ ॥12॥

13

दुवई—खेयरिचरणधुसिणमसिणारुणरयणसिलायलामलो ॥

दीसइ तहि तिकूडु गिरि दरितरुवियसियकुसुमपरिमलो ॥छ॥

उस समय उसने जाते हुए समुद्र को देखा जो दौड़ती हुई लहरमाला से भयंकर था । जहाज समूह जल में डूब उतरा रहे थे । अथाह जल के प्रवाह से चन्द्रमा आशंकित हो रहा था । मत्स्यों के आघात से सीपी समूह फूट रहे थे । आकाश में उछलते हुए मोती किरणों को रोक रहे थे । दिशाओं में प्राप्त मगरों से निकले हुए मध्य भाग से जो भयंकर था, जो ऊपर जाते और पीछे हटते हुए तटों से विशाल था, जिसका तट प्रवाल के अंकुरों के समूह से शोभित था, जिसमें गरजते हुए गज समूह डूब उतरा रहे थे । जो अत्यंत भीषण अशेष जल का घर था । जो विडेन्द्र (कामुक) की तरह, पीताधर (अधरों का पान करने वाला, घरा तक व्याप्त रहने वाला), ढंकितास (दिशा आच्छादित करनेवाला, आशा को आच्छादित करनेवाला) था । जिसने नवियों के साथ ऊंचाई के द्वारा नक्षत्रों को छू लिया था, जो अलंकृत था, जिसके तट पर यक्ष क्रीड़ाकर रहे थे, करीन्द्र के समान जो पातालभूल में प्रवेश कर रहा था, नरेन्द्र के समान जो धीर और मर्यादा वाला था, ऋषीन्द्र की तरह जो अन्तर्मल को नाश करने वाला था, गिरीन्द्र की तरह जिसमें माणिक्य किरणें चमक रही थीं, जो सुरेन्द्र के समान देवाश्रित और शोभायुक्त था ।

घत्ता —गंभीर भयंकर आवर्ती को धारण करने वाले समुद्र को हनुमान् ने उसी प्रकार पार कर लिया, जिस प्रकार परम जिनेश्वर संसार को पार कर लेते हैं ।

(13)

वहाँ विद्याधरियों के चरणों की केशर से चिकने और लाल, रत्नशिलातल की तरह स्वच्छ तथा जिसमें घाटियों के वृक्षों के विकसित कुसुमों का परिमल है ऐसा त्रिकूट पर्वत दिखाई दिया ।

2. A असुप्फाल² । 3. P चलप्पत्थ³ । 4. असेसो । 5. AP ०रिखो । 6. AP कीरो । 7. AP आसंधियउ ।

8. AP लंधियउ ।

लंबंतरत्तपत्तोहर्तुबु गुरुसिहरालिगिघसूरबिबु ।
 वेलापक्खलणविसट्टकंबु किणरसुंदरिसेवियणियंबु ।
 नाइणिणेउरवहिरियदियंतु णच्चियजविखणिरसभावधंतु । 5
 करिमयकदमखुप्पंतहरिणु गुमुगुमियभमिरछच्चरणसरणु ।
 हिडंतकालणाहलकुडंबु² खेरलंतसरहसरहससिलिबु³ ।
 णउलउलफणिउलाढत्तंसमरु चमरीमयचालियचारुचमरु ।
 हरिकुंजरकलहकलालवंतु⁴ चुरत्तलित्तमोत्तियफुरंतु ।
 दुमणियरगलियमहुवारियेभु⁵ सबरीपरियंदणसुत्तडिभु । 10
 ह्यमुहुकिलिक्किचियसंहरम्भु⁶ नहियरुगुगनु पडुयवहं रम्भु ।
 घत्ता—णावइ णिउणइ महिकामिणिइ एइ सम्मपरिछंदहु⁷ ॥

गिरिणियकरु उब्भिबि णिहिय तहि दाविय लंक सुरिदहु ॥13॥

14

दुवई—परिहादारतोरणट्टालयधयजयलच्छिसंगमा ॥

लंकाणयरि दिट्ठ हणुमंतें¹ मणिपायारदुग्गमा ॥छा॥

दीहत्तें बारहु जोयणाइ वित्थारें णव हियलोयणाइ ।
 बत्तीस विसालइ गोउराइ मोत्तियमरगयधडियइ घराइ ।

जो लटकते हुए रक्त पत्र समूह से लाल था, जिसके गुरु शिखर पर सूर्य अवलंबित था, तटों के प्रखलन से जिसमें शंख टूट चुके थे, जिसके तट किन्नरियों के द्वारा सेवित थे, नागिनों के नूपुरों से जहाँ दिगंत बहरा था, जो नृत्य करती हुई यक्षिणियों के रस भाव से युक्त था, जहाँ गजों के मदजल की कीचड़ में हरिण निमग्न हो रहे थे, जो गुम-गुम करते भ्रमणशील भ्रमरों की शरण था, जिसमें कोल भीलों के कुटुम्ब घूम रहे थे, जिसमें शरभ के बच्चे हर्ष पूर्वक क्रीड़ा कर रहे थे, जिसमें नकुल कुल और नागकुल में युद्ध प्रारम्भ होने जा रहा था, जिसमें चमरी-मृगों के द्वारा सुन्दर चमर चलाए जा रहे थे, जो सिंहों और गजों के युद्ध से रक्त रंजित था, जहाँ रक्त में गिरते हुए मोती चमक रहे थे, जो वृक्षसमूह से झरते मधुजल से आर्द्र था। जिसमें भीलनियों के द्वारा आंदोलित बच्चे सो गए थे, जो अश्वों के सुरति-शब्द से सुन्दर था, जो पर्वतों से दुर्गम और विद्याधरों के लिए गम्य था।

घत्ता —मानो निपुण धरती रूपी कामिनी द्वारा गिरि रूपी अपना हाथ उठाकर उस पर स्थित लंका नगरी देवेन्द्र के लिए दिखाई जा रही हो कि स्वर्ग का प्रतिबिम्ब आ रहा है।

(14)

परिखाओं, द्वारों, तोरणों, नाट्य-मृहों और विजयलक्ष्मी का जिसमें संगम है, ऐसी मणियों के प्रकारों से दुर्गम लंका नगरी हनुमान् ने देखी। लम्बाई में जो बारह योजन थी, और विस्तार में हृदय को आकर्षित करने वाली नौ योजन। उसमें बड़े-बड़े बत्तीस गोपुर थे। मोतियों और पन्नों से विजडित घर थे। जहाँ कर्पूर की धूल, धूल के रूप में व्याप्त थी जहाँ कल्पवृक्ष; वृक्ष थे,

(13) 1. AP 'भमिय' । 2. AP 'हिडंतकोल' । 3. AP 'संछाहयत्तदलसूरबिबु' । 4. A 'किलाल-वंतु' । 5. AP 'महुपाणिभु' । 6. AP 'ह्यमुहि' । 7. पडिछंदहु ।

(14) 1. AP हणवतें ।

जहि धुलइ रेणु कप्पूररेणु	सुरतरु तरु धेणु वि कामधेणु ।	5
वणु णहुवणु वेल्लि वि णायवेल्लि	रणु रइरणु भल्लि वि मयणभल्लि ।	
जरु विरहजरु ² जि णउ अत्थि अण्णु	बहुवण्णचित्तु ³ णउ चाउवण्णु ।	
घरु सिरिघरु चोर ⁴ वि चित्तचोर	वज्झंति केस रोवंति मोर ।	
वउ णववउ रुवु वि णिरु सुरुवु	रिसि खीणदेहु वम्महु विरुवु ।	
रिणु तिलरिणु बंधणु पेम्मबंधु	जलु चंदकंतजलु दलु सुगंधु ।	10
कामिणि खगकामिणि अलिवमालु	धूमु वि कालागरुधूमु कालु ।	
दीव वि जलंति माणिक्यदीव	जीव वि वसंति जहि भव्वजीव ।	
गुण ⁵ जिणगुणु धम्म अहिंसधम्म	फलु पुण्णफलु जि कम्म वि सुकम्म ।	
कि वण्णमि भूमि वि भोगभूमि	सामि वि दहमुहु खयरायसामि ।	

घत्ता—एवकेवकउ जो गुण संभरइ सो तहु अंतु ण पेक्खइ ॥ 15
जगसुंदरत्तु⁷ लंकहि तणउं कवणु कईसरु अक्खइ ॥ 14 ॥

15

दुवई—कलरवु रणुरणंतमाणिणिमुहमंडणु जणमणिटुओ ॥
छडयणरुवधारि ता पावणि रावणभवणि पइटुओ ॥ छ ॥

और कामधेनुएँ धेनुएँ थीं। जहाँ नखप्रण (प्रण और वन) वन थे। जहाँ रति युद्ध था, दूसरा युद्ध नहीं था। जहाँ काममल्लिका महिलाएँ थीं, दूसरी मल्लिका नहीं थी। ज्वर भी विरह ज्वर था, दूसरा ज्वर नहीं था। जहाँ अनेक रंगों का चित्त था, परन्तु चतुर्वर्ण नहीं था; जहाँ धर लक्ष्मी का घर था, और चोर भी चित्तचोर थे; जहाँ केश बाँधे जाते थे, और मयूर आवाज करते थे। जहाँ उम्र नई उम्र थी और रूप भी स्वरूप था। जहाँ ऋण तिलऋण था, और बंधन प्रेम-बंधा था; जहाँ जल चन्द्रकांत मणि का जल था और दलों में सुगन्ध थी। जहाँ कामिनियाँ विद्याधर कामिनियाँ थीं। भ्रमरों का कलकल शब्द था, काला गुरु काला धूम था। माणिक्य के ही माणिक्य के दीप जलते थे, जिनगुण ही गुण थे। अहिंसा धर्म ही धर्म था। जहाँ पुण्यफल ही फल था और सुकर्म ही कर्म था। क्या वर्णन करूँ, वह भूमि भोगभूमि थी और उसका स्वामी विद्याधर स्वामी रावण था।

घत्ता—जो उसके एक-एक गुण को याद करता है, वह उसके अन्त को नहीं देख पाता। लंका के विश्व-सौन्दर्य का कौन कवीश्वर वर्णन कर सकता है ?

(15)

जिसका शब्द सुन्दर है, जो गुणगुनाती हुई मानिनियों के मुख का मंडन है, जो जनमन के लिए इष्ट है, ऐसे भ्रमर का रूप बनाकर हनुमान् ने रावण के भवन में प्रवेश किया।

2. AP विरहजरु णउ । 3. A बहुवण्ण चित्तु णउ चाउवण्णु; P बहुवण्णु चित्तु णउ चाउवण्णु । 4. AP चोर वि चित्तचोर । 5. A णिरुवु । 6. A गुण जिणगुण । 7. AP जगि सुंदरत्तु ।

चक्केसर वरलक्षणपसत्थु	दिट्टउ दहमुहु सीहासणत्थु ।	
णं गिरिसिहरासिउ णोलमेहु	पण्णारहचावपमाणदेहु ।	
चामीयरवीढि णिहित्तरणु	बलवन्तकालु बलहीणसरणु ।	5
विज्जिज्जइ चलचमरीरुहेहि	वण्णिज्जइ वरबन्दिणमुहेहि ।	
राइज्जइ सरगमभावरुहि	सलहिज्जइ सुरणरसेवएहि ।	
दीसइ णवकप्पद्दुमफलेहि	माणससरवररसुप्पलेहि ।	
मउड्ढगरयणमहियललिहेहि	पणविज्जइ सुरवइसंणिहेहि ।	
चित्तिइ मारुइ उट्ठिण्णचित्तु ।	हा एण णिहिसउं परकलत्तु ।	10

घत्ता—एसज्ज एउं एवइडु कुलु तो वि कयउं^१ सकलंकणु ॥
हयविहि सुवण्णाभिगारयहु खप्पर दिण्णउं ढंकणु ॥ 5 ॥

16

दुवई—पुणु णिवसवणपूरकत्थूरियपरिमलगहणकुसलओ ॥	
दहमुहु देहि सोय मा णासहि णं गुमुगुमइ भसलओ ^१ ॥छा॥	
सो सइ जि कामु णं कामवाणु	तरुणीविवाहरि ^२ दुवकमाणु ।
कोमलकरयलवारिज्जमाणु	चमराणिलेण पेरिज्जमाणु
थणजुयलि णाहिमंडलि घुलंतु	पिच्छहि कवोलपत्तइ ^३ दलंतु ।

5

उसने उत्तम लक्षणों से युक्त चक्रेश्वर दशमुख को सिंहासन पर बैठे हुए देखा । मानो नील मेघ पर्वतशिखर पर आश्रित हो । उसका शरीर पन्द्रह धनुष प्रमाण था । स्वर्णपीठ पर अपने पैर रखे हुए था । वह बलवानों के लिए काल था और बलहीनों के लिए आश्रयदाता था । चमरी गाय के बालों से जिसे हवा की जाती है, श्रेष्ठ चारण मुखों के द्वारा जिसका वर्णन किया जाता है, सरगम भावों से जो गाया जाता है, सुर-नर सेवकों के द्वारा जिसकी प्रशंसा की जाती है, नव कल्पवृक्षों के फलों और मानसरोवर के स्वतः कमलों के साथ जिसके दर्शन किए जाते हैं, जिनके मुकुटों के अग्र भाग से भूमि तल लिखित है ऐसे इन्द्र-समूह द्वारा जिसे प्रणाम किया जाता है, हनुमान् अपने मन में उद्विग्न होकर सोचता है—~~खेद~~ है कि फिर भी इसने परस्त्री का अपहरण किया ।

घत्ता—यह ऐश्वर्य, इतना बड़ा कुल, फिर इसने उसे क्यों कलंकित कर दिया ? हा हंत, विश्राता ने स्वर्णभिगार को ढाँकने के लिए खप्पर दिया (या खप्पर का ढक्कन दिया) ।

(16)

फिर जो राजा के कानों में पूरित कस्तूरी के परिमल को ग्रहण करने में कुशल था, ऐसा वह भ्रमर मानो गुन-गुना रहा था कि हे रावण, तुम सीता दे दो, अपना नाश मत करो ।

वह भ्रमर (हनुमान्) स्वयं कामदेव और कामवाण था, युवतियों के विम्बाधरों पर पहुँचता हुआ, कोमल हथेलियों के द्वारा हटाया जाता हुआ, चमरों की हवा से प्रेरित होता हुआ, स्तन युगल और नाभिमंडल में प्रवेश करता हुआ, अपने पंखों से कपोलों की पत्ररचना को दलित

(15) 1. A ओविण्ण^० । 2. AP वि हित्तउं । 3. P कयं सकलंकणु ।

(16) 1. P भसलओ । 2. A विवाहर^० । 3. A कवोलि ।

कुडिलालयपंतिउ दरमलंतु मुहकमलवाससासहु⁴ चलंतु ।
 थिउ दारि⁵ सहइ णं इंदणीलु थिउ भालि गहियवरतिलयलीलु ।
 थिउ उरि गियणहरकिणंक गाइ⁶ थिउ मणि सरसरपुंखु व मुहाइ⁷ ।
 थिउ कणमूलि णं मम्मणाइ⁸ बोल्लइ मणियाइ⁹ घणघणाइ ।
 थिउ उखयलि सहइ सुराहि णं किकिणि कामिणिमेहलाहि । 10

धत्ता—सो महुयह वम्महु कि भणमि णारिहि वयणइ⁹ चुंबइ ॥

जाइवि खयरिदहु रयणमइ कुंडलकमलि बिलंबइ ॥16॥

17

दुवई—बुज्झिथि णयणवयणतणुलिगहि सीयारइवसं गयं ॥

दहवयणं विमुक्कणीसासरुहाणलतावियंगयं ॥छ॥

गउ अलि पुरपच्छिमगोउरगु वारुठउ ओयइ¹ वणु समगु ।
 द्विटी वणसिरि सहं खेयरीहि सीय वि परिवारिय खेयरीहि ।
 वणु देइ ससाहिहि रामविरहु सीयहि पुणु वट्टइ रामविरहु । 5
 वणि लोहियाउ पत्तावलीउ सीयहि पुसियउ पत्तावलीउ ।
 वणि पमयइ फलसारं गयाइ सीयहि शीणइ² सारंगयाइ ।

करता हुआ, टेढ़ी केश पंक्तियों को विदलित करता हुआ, मुख रूपी कमल की सुगंधित हवा से उड़ता हुआ द्वार पर स्थित वह इस प्रकार शोभित था, मानो इन्द्र नीलमणि शोभित हो । भाल पर स्थित होकर वह श्रेष्ठ तिलक की शोभा धारण कर रहा था । उर पर स्थित होकर वह प्रिय के प्रहार के चिह्न के समान शोभित था । मन पर स्थित वह कामदेव के तीर के पुंख के समान शोभित हो रहा था । कानों के मूल में स्थित होकर मानो वह व्यक्त घन-घन काम वचन बोल रहा था । किसी सुन्दरी के उखतल पर स्थित होकर ऐसे शब्द कर रहा था, मानो कामिनी की करधनी की किंकिणी हो ?

धत्ता—कामदेव के उस भ्रमर को क्या कहूँ ? वह स्त्रियों के मुखों को चूमता है, वह विद्याधर राजा के कुण्डल रूपी कमल पर जाकर बैठता है ।

(17)

नेत्र मुख और शरीर के चिह्नों से यह जानकर कि रावण सीता के प्रति प्रेम के वशीभूत है, और उसका शरीर छोड़े गए निःश्वासों से उत्पन्न आग से संतप्त है ।

भ्रमर चला गया और नगर के पश्चिमी गोपुर के अग्र भाग पर स्थित होकर समग्र वन को देखता रहा । विद्याधरियों के साथ उसने वनश्री को देखा । और सीता को भी विद्याधरियों से घिरा हुआ । वन अपनी शाखाओं के द्वारा स्त्रियों को विशेष एकान्त देता है, परन्तु सीता के लिए केवल राम का विरह है । वन में लाल-लाल पत्रावलियाँ थीं, परन्तु सीता की पत्रावलि (पत्ररचना) पछ चुकी थी । वन में प्रमद (वानर) श्रेष्ठ फल पर है, लेकिन सीता के श्रेष्ठ

4. AP सासवासहु । 5. AP हारि । 6. A भाइ; P जाइ । 7. AP बिहाइ । 8. AP मणियाइ व घण⁰ ।

9. AP वत्तइ ।

(17) 1 P जोइय । 2. P शीणाइ ।

वणि एतहि तेतहि बोल्लवलय सीयहि थिय पसिठिल बाहुवलय ।
 वणि खेलइ हरिसिज्जइ वि हंसु सीयहि वट्टइ जीवियविहंसु ।
 वणि दिसमुहि सोहइ लग्गु तिलउ सीयहि णिडालु^३ णिल्लुहियतिलउ । 10
 वणि तरुवंदई रुढंजणाइ सीयहि णयणइ विगयंजणाइ ।
 वणि साहारु जि मारइ पियत्थि सीयहि साहारु ण को वि अत्थि ।
 भवसत्ति व बलविहडणदिसण्ण जहि अच्छइ परमेसरि णिसण्ण ।
 तं^४ सीसवितलु खगभमर आउ णं वइदेहीजीवियहु आउ ।

वृत्ता—पडिबिबिउ दहहि वि पयणहहि आसण्णउ परिघोलइ ॥ 15
 सो छप्पउ सीयहि कमकमलु पसरियपत्तिहि लोलइ ॥ 17 ॥

18

डुवई—सीयासावभाउ^१ णं भीसणु णं हुयवहु समिद्धओ ॥
 असरिससुहडवक्कचूडामणि पावणि मणि विरुद्धओ ॥छ॥
 सीयहि केरउ दुचरित्तरहिउ^२ तणुचिंधु पलोइवि रामकहिउं ।
 णियहियवइ चितइ अंजणेउ परणारिदेहसंतावहेउ^३ ।
 मरु^४ मारमि अज्जु जि रणि दसासु गलि लायमि कालकियंतपासु^५ । 5
 पइवय णीरय पइवडपणय वाणारसि पावमि जणयतणय ।

अंग क्षीण हैं। वन में यहाँ-वहाँ लतामंडल है, परन्तु सीता का बाहुवलय शिथिल है। वन में हंस से क्रीड़ा-हर्ष किया जाता है, परन्तु सीता के जीवन का विध्वंस है। वन में दिशामुख में तिलक वृक्ष लगा हुआ शोभा देता है, सीता के ललाट से तिलक पुछ गया है। वन के वृक्ष, जनों से अधिष्ठित हैं, परन्तु सीता के नेत्र अंजन से रहित हैं। वन में प्रियार्थी को सहकार (आमवृक्ष) ही मारता है, परन्तु सीता के लिए कोई भी आधार (सहारा) नहीं है। जहाँ परमेश्वरी सीता देवी बल के विघटन से उदास मठशक्ति की तरह बैठी हुई हैं वह विद्याधर रूपी भ्रमर (हनुमान्) वहाँ शिशिपा वृक्ष के नीचे आया मानो वैदेही का जीवन ही आया हो।

वृत्ता—बैठा हुआ वह भ्रमर दसों चरणों में प्रतिबिम्बित होकर भ्रमण करता है। वह सीता के चरणकमलों में अपने पंख फैलाये घूमता है।

(18)

असामान्य सुभटों का चक्रचूडामणि हनुमान् अपने मन में इस प्रकार विरुद्ध हो उठा, मानो सीता का शाप भाव हो या मानो आग समृद्ध हो उठी हो।

राम के द्वारा कहे गए, सीता के दुश्चरित्र से रहित शरीर चिह्न को देखकर, परस्त्रियों के लिए संताप का कारण हनुमान् अपने मन में विचार करता है—मैं आज युद्ध में रावण को मार डालता हूँ, और उसे काल रूपी यम के पाश में डाल देता हूँ तथा पतिव्रता निष्पाप, अपने पति में

3. AP णिलाहि । 4. P तें ।

(18) 1. AP °भाव । 2. A दुचरित्तु । 3. AP °देहु संताव° । 4. पइ । 5. AP कालकयंत° ।

णं णं हृत् द्वयत्त राहवेण
 किकरु पदुवयणुल्लंघणेण
 अक्खमि भत्तारहु तणिय वत्त
 इय चित्तिवि अवसरु मग्गमाणु
 अत्थमिउ सुरु ता उइउ चंदु
 आपंडु गंडमंडलि धुलंतु
 अरुणच्छवि णं रामणहु कुद्ध
 अहवा लइ ससहरु कि ण चारु
 मिगमुद्ध^६ मुद्धिउ कंतिपिंडु
 मेहलियहि णं संतोसकारि
 घत्ता—जणलोयणणियरणिवासधरु सुहणिहि अमयकलालउ ॥

पट्टविउ मज्झु कि आहवेण ।
 णिदिज्जइ हियकारि वि जणेण ।
 मा मरउ महासइ चारुणत्त ।
 जा णिहुयंगउ धिउ कुसुमबाणु । 10
 णं सीयहि^७ दुहवल्लरिहि कंदु ।
 तहु तेउ डहइ अग्नि व जलंतु ।
 णहसरि णं सियसररुहु विउद्धु ।
 णहसिरिकरदप्पणु अमयसारु ।
 पियलेहहु केरउ णं करंडु ।
 खेयरणाहहु^८ णं पाणहारि ।

ससि सीय^९ वि रामणतणु डहइ णं खयसिहिसिहमेलउ ॥१८॥

19

दुवई—ण^१ सहइ हसइ रसइ पर पुच्छइ माणिणिविसयसंगहं ॥

डंकइ दोसणिवहु गुण पयडइ अहणिसु करइ संकहं ॥छ॥

सिरु धुणइ कणइ णीसामु मुयइ सयणयलि पडइ अलियउं जि सुयइ ।

बद्धप्रणय सीता को वाराणसी ले जाता हूँ । परन्तु नहीं-नहीं । मैं दूत हूँ । क्या मुझे युद्ध के लिए भेजा गया है ? भला करने वाले अनुचर की भी प्रभु की आज्ञा के उल्लंघन के कारण लोगों के द्वारा निन्दा की जाती है । इसलिए मैं स्थायी की बात कहता हूँ । जिससे सुन्दर नेत्रों वाली वह महासती मरे नहीं । यह सोचकर अवसर की प्रतीक्षा करता हुआ कामदेव हनुमान् जब तक अपना शरीर छिपाकर बैठता है तबतक सूर्यास्त हो गया और चन्द्रमा का उदय हो गया, मानो वह सीता देवी की दुःखरूपी लता का अंकुर हो । एकदम सफेद गंड मंडल पर व्याप्त होता हुआ उसका तेज सीता को अग्नि के समान जलाता है । अरुण छवि वह ऐसा लगता मानो रावण के प्रति क्रुद्ध हो, मानो आकाश रूपी नदी में श्वेत कमल खिला हुआ हो, अथवा लो चन्द्रमा सुन्दर क्यों न हो, अमृत श्रेष्ठ वह आकाशरूपी लक्ष्मी के हाथ का दर्पण है, मृगमुद्रा (हरिण लांछन) से मुद्रित मानो वह कांति का पिंड है, अथवा प्रियलेख का पिटारा है मानो मैथिली के लिए संतोष-कारी है, मानो विद्याधर राजा के लिए प्राणहारी है ।

घत्ता—जनों के नेत्रों के समूह का निवासगृह सुखनिधि अमृत कलाओं का घर, चन्द्रमा और सीता भी रावण के शरीर को इस प्रकार जलाती है कि मानो क्षय काल की अग्नि की ज्वालाओं का समूह हो ।

(19)

उसे (रावण को) कुछ भी सहन नहीं होता । वह हँसता है, बोलता है, दूसरों से पूछता है, अपना दोष-समूह छिपाता है, गुणों को प्रकट करता है, और मानिनी स्त्रियों के विषय से संगत समीचीन क्रियाओं को करता रहता है ।

अपना सिर पीटता है, क्रन्दन करता है, निःश्वास छोड़ता है, शयनतल पर गिर पड़ता है,

6. A सीयादुह^७ । 7. A मृग^८ । 8. AP णं खेयरणाहहु । 9. A सीउ; P सीयलु ।

(19) 1. A तसइ ण हसइ सरइ पर ।

परिभ्रमइ रमइ णउ कहि मि ठाणि पियमित्तभवणि उज्जाणि जाणि ।
 णायणइ गेउ मणोज्जवज्जु ण पउंजइ किं पि वि रायकज्जु । 5
 णउ प्हाइ ण परिहइ दिव्वु^२ वत्थु
 णउ बंधइ णियसिरि कुसुमदामु
 ण विलेवणु सुरहिउ अंगि^३ देइ
 णउ भूसइ तणु णउ महइ भोउ
 जहि जाइ तहि जि सो सीय णियइ
 अंधारए वि संमुहउं चडिउं
 पाणिउं वि पियइ सो तहि ससीउ
 करदीवदित्तु उववणहि चलिउ
 घत्ता—जहि अच्छइ णियउपरिट्ठि^४ अंजणतणुरुहु बालउ ॥
 तहि दहमुहु रइसुहु कहि लहइ वम्महु जहि पडिकूलउ ॥ 19 ॥ 15

20

दुवई—अह अणुकूलु होउ मयरद्वउ सीयहि सीलदूषणं ॥
 किज्जइ कहि मि वप्प खज्जोएं कि रविधरविहसणं ॥ छ ॥
 धिउ सीयहि पुरउ खगिंदु केम णियमरणभवित्तिहि जोउ जेम ।
 यणइ सत्तामु दिणु जइ वि पणु णिइ तो नि ण कि संवरहि चित्तु ।

और झूठ-मूठ सो जाता है, परिभ्रमण करता है, किसी एक स्थान पर रमण नहीं करता, प्रिय मित्र, भवन, उद्यान और यान में वह न गेय सुनता है, और न मनोज्ञ वाक्य और न कुछ भी राज-काज करता है। न नहाता है, न दिव्य वस्त्र पहिनता है और न विविध आहारों को अपने हाथ से लेता है। अपने सिर पर पुष्पमाला नहीं बाँधता, विद्याधर स्त्रियों के साथ काम सुख नहीं माता। सुरभित विलेपन अपने शरीर पर नहीं बेता। विरह से व्याकुल वह स्वयं को नहीं जानता। शरीर पर भूषण नहीं पहनता और न भोग को महत्त्व बेता है। उसे एक भी विनोद अच्छा नहीं लगता है। वह जहाँ भी जाता है, उसे वहीं सीता देवी दिखाई देती है। आई हुई नियति का निवारण कौन कर सकता है? अन्धकार में भी वह सीता का मुख सामने गढ़ा हुआ देखता है, उसे दशों दिशाओं में जड़ा हुआ देखता है। वह पानी भी पीता है तो वह ससीय (शीत सहित, सीता सहित) होता है। इस प्रकार रावण परवश हो उठा था। हाथ के दिए से दीप्त वह उपवन में इस प्रकार चला मानो प्रिय विरह की ज्वाला में जल गया हो।

घत्ता—जहाँ पर अंजना का पुत्र बालक हनुमान् निकट बैठा हुआ है, वहाँ रावण रति सुख कैसे प्राप्त कर सकता है कि जहाँ विधाता ही उसके प्रतिकूल है।

(20)

अथवा कामदेव अनुकूल भी हो, तो क्या सीता देवी का शील-दूषण हो सकता है? हे सुभट, क्या खद्योत के द्वारा सूर्य किरणों का आभूषण किया जा सकता है?

सीता देवी के सम्मुख विद्याधरराज इस प्रकार स्थित था, जैसे अपनी मरण-भवितव्यता के सामने जीव बैठा हो। वह (रावण) कहता है: यद्यपि आज सातवाँ दिन समाप्त हो गया है,

2. A दिव्वत्थु । 3. AP देहि । 4. A णियडि परि^० ।

वित्थिणु मयरहुरु कवणु तरइ	तिमिगिलतगिलगिलियंगु ¹ मरइ ।	5
दुग्गमु तिकूडु गिरि कवणु चडइ	कक्करि सयसवकरु होवि पडइ ।	
पायालपरिह जणजणियसंक	भूगोयरु पडसइ कवणु लंक ।	
जइ चितहि कुलु तो तुहुं जि कासु	पोसिय जणएं जणवयपयासु ² ।	
जइ चितहि परिहउ तो सलग्गु	हउं उत्तमु भुवणत्तइ महग्गु ।	
जइ चितहि एवहि रामपेम्मु	तो तहु दंसणि तुहु ³ अण्णु जम्मु ।	10
जइ चितहि सिरि तो हउं जि राउ	कि लभाउ तुज्जु सइत्तवाउ ।	
हलि वीणालाविणि मणविमदि	महएवि महारी होहि भदि ।	

धत्ता—हलि सीय महारइ खगजलि आहंडलु वि णिमज्जइ ॥

आलिगहि मइ सुललियभुयहि रामें किं किर किज्जइ ॥20॥

21

दुवई—करिसिररत्तलित्तमोत्तियणियरंचियकेसरालओ ॥

संतइ सीहि सीय ससहरमुहि किं रम्मइ सियालओ ॥छ॥

अच्छउ स रामु लवखणु हयासु	दसरहु वि महारउ ताम दासु ।	
किं किज्जइ चरणविहसणत्तु	जइ लब्भइ हलि चूडामणित्तु ।	
किंकरमहिलहि किं तणुगुणेण ¹	किं पाउयाहि मणिमंडणेण ।	5

हे प्रिये, तुम अपने चित्त का संवरण क्यों नहीं करती? विस्तीर्ण समुद्र का संवरण कौन कर सकता है? तिमिगल मत्स्य को खानेवाले तगिल मत्स्य के द्वारा गिलितशरीर वह मर जाएगा। त्रिकूट पर्वत दुर्गम है, उस पर कौन चढ़ सकता है? गिरि रूपी दांत पर पड़कर सौ टुकड़े हो जाएगा। पाताल की खाई लोगों को शंका उत्पन्न करने वाली है, कौन भूगोचर (मनुष्य) लंका में प्रवेश कर सकता है? यदि तुम अपने कुल की चिन्ता करती हो तो तुम किस की हो? जनपद में यह बात प्रकाशित है कि जन ने तुम्हारा पोषण किया है। यदि तुम अपना पराभव सोचती हो तो मैं तीनों भुवनों में श्लाघनीय उत्तम और आदरणीय हूँ। यदि इस समय तुम राम के प्रेम के विषय में सोचती हो उसके दर्शन में तुम्हारा दूसरा जन्म हो जाएगा। यदि तुम लक्ष्मी का विचार करती हो तो मैं भी राजा हूँ। हे वीणा के समान बोलने वाली, मन का विमर्दन करनेवाली भद्रे, तुम मेरी महादेवी हो जाओ।

धत्ता—हे सीता देखो, मेरी तलवार के पाती में इन्द्र भी डूब जाता है। अपनी सुन्दर भुजाओं से मेरा आलिगन करो, राम से क्या लेना-देना।

(21)

हाथियों के सिर के रक्त से लथ-पथ मोतियों के समूह से जिसका अयाल अंचित है, ऐसे सिंह के विद्यमान रहते हुए, हे चन्द्रमुखी, क्या शृगाल से रमण किया जाएगा?

हनाश राम और लक्ष्मण तो रहे, दशरथ भी हमारा दास है। हे सीते, जब चूडामणित्व प्राप्त होता है तो पैरों के आभूषण से क्या प्रयोजन? और फिर दास की स्त्री के शरीर गुण से क्या,

(20) 1. A "तगिल"। 2. AP जणवए पयासु। 3. AP हलि अण्णु।

(21) 1. AP किं किर गुणेण।

महु दासि वि तुहुं महएवि होहि लच्छिहि एंतिहि कोप्पर म देहि ।
 उरयलु मेरउं लालउ विसत्थु मा मुसलकिणंकिउ² होउ हत्थु ।
 अणुवसहुं एहि महुं पंजलीइ मा सलिलु बहहि फणिनुंभलीइ ।
 महु खग्गवायलंछणहरेण खंडे रहवइसिरखप्परेण ।
 मा वहउ विणेउरु चरणजुयलु करमरि कालायसलोहणियलु ।
 थिय सइ णियणिययमलीणचित्त उत्तर ण देंति पट्टणा पउत्त ।

10

घत्ता—पइं सीइ अज्जु तिलु तिलु करमि भूयहुं देमि दिसाबलि ॥

पर पच्छइ दूसहु होइ महुं विरहजलणजालाबलि ॥21॥

21

दुवई—ता मंदोयरीइ दिण्णुत्तरु जंपसि सुयणगरहियं ॥

किं तियसिदवंदकंदावण रावण जुत्तिविरहियं ॥छ॥

हा पुरिस हुंति सयल वि णिहीण घरघरिणि जइ वि उव्वसिसमाण ।
 कामेण तइ वि ते खयहु जंति परघरदासिहि लग्गिचि मरंति ।
 कहि काइहि रत्तउ रायहंसु कहि खरि कहि सुरकरिहत्थफंसु ।
 कहि भूगोयरि कहि खेयारिदु हा मयणजोगपरिणाणि¹ मंडु ।

5

पादुकाओं के मणि विभूषणों से क्या ? मेरी दासी होते हुए भी तू मेरी महादेवी बन । आती हुई लक्ष्मी को हाथ मत दे । तुम विश्वस्त हो मेरे उर का लालन करो । तुम्हारा हाथ मूसलों के चिह्नों से अंकित न हो, तुम मेरी अंजलि में आकर निवास करो, नाग के शिरोभूषण पर पानी मत डालो । मेरी तलवार के आघात के चिह्न को धारण करने वाले खंडित राम के सिररूपी खप्पर के साथ, नूपुर से रहित हे दासी, अपने पैरों को कालायस लौह श्रृंखला से युक्त मत कर । अपने प्रियतम में लीन चिह्न वह सती चुपचाप रह गई । उत्तर न देने पर राजा (रावण) ने कहा—

घत्ता—हे सीता, आज मैं तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा और भूतों को दिशाबलि छिट-कवा दूंगा । फिर बाद में मेरी विरहाग्नि-ज्वाला असह्य हो उठेगी ।

(22)

तब मन्दोदरी ने उत्तर दिया, हे इन्द्र को कंपानेवाले रावण, तुम सज्जनों के द्वारा निंदनीय और युक्ति से विरहित यह क्या कहते हो—

हत्त, सभी पुरुष नीच होते हैं । यद्यपि उनकी घरवाली उर्वशी के समान भी हो, फिर भी वे काम के द्वारा क्षय को प्राप्त होते हैं, और दूसरे के घर की दासी के लिए मरते हैं । क्या हंस कभी कोए की स्त्री में अनुरक्त होता है ? क्या कहीं ऐरावत की सूंड गध्री का स्पर्श करती है ? कहीं मनुष्यनी, और कहीं विद्याधर राजा ? तुम कामशास्त्र के परिज्ञान में मंद हो । जिसने अन्धकार समूह को ध्वस्त कर दिया है, ऐसा चन्द्रमा जैसे गंगा में दिखाई देता है, वैसा ही नगर की जलवाहिनी में भी । कामुक लोग जो भी दुश्चरित्र करते हैं, वे महिलाओं में कुछ भी अन्तर

2. P मुसलु किणंकिउ ।

(22) 1. A ^१परियाणि; P ^२परिमाणि ।

दीसइ विद्ध^१ सियतिमिरचंदु^२
महिलंतह णर ण मुणंति किं पि
ना णियघरु गउ लज्जिबि दसासु
अवलोइय सीयाएवि ताइ
णं विउसमईइ^३ सुकइत्तलील^४
ओलविखय पयजुयलंछणेण
मंजूसइ सहं कत्थइ वणंति

जिह^५ गंगहि तिह बाहलहि चंदु ।
कामुय करंति दुवरिसु जं पि ।
मयसुय दुवकी जाणइहि पासु ।
णं जलहिबेल ससहरकलाइ । 10
णं स जिज ताइ सुविमुद्धसील^६ ।
जा चिरु घल्लिय णिदिय जणेण ।
सरिसरसीयलसिचियदियंति ।

धत्ता—हा अघडिउं^७ घडिउं विहायएण इंदीवरदलणयणहु ॥

आणिय सा मेरी एह सुय कालरत्ति दहवयणहु ॥22॥

15

23

दुवई—^१जणणसुयाहिलासणियवइखयचिंतामउलियच्छिया ॥

मेइणियलि दड ति णिवडिय मंदोयरि दुस्सहदुवखमुच्छिया^२ ॥छ॥

पच्छाइय कामिणिकरयलोहि
विज्जिय^३ पडिचमरुक्खेवएहि
कह कह व देवि सज्जीव जाय
मुहकुहरहु वियलिय मधुर वाय
हा विलसिउं किं^४ विहिणा खलेण

सिचिय सुयंधसीयलजलोहि ।
आसासिय चंदणलेवएहि ।
भणु कासु अवच्छल^५ होइ माय । 5
हा सीय पुत्ति तुहुं महुं जि जाय ।
बोलीणु^६ जम्मू दुविकयफलेण ।

नहीं करते । रावण तब लज्जित हो कर अपने घर चला गया । मंदोदरी सीता देवी के पास पहुँची । उसने सीता देवी को इस तरह देखा मानो चन्द्रमा की कला ने समुद्र को देखा हो, मानो विद्वान् की मति ने सुकवित्व की लीला को देखा हो, मानो उसी ने (सुकवित्व की क्रीड़ा ने) सुविशुद्ध-शील व्यक्ति को देखा हो । दोनों पैरों के चिह्नों से उसने (मन्दोदरी ने) पहिचान लिया कि लोगों द्वारा निदित जिसे पहिले मंजूषा के साथ नदी सरोवर से शीतल और सिंचित बन के भीतर कहीं फेंक दिया था (यह वही है) ।

धत्ता—हा, विधाता ने अघटित को घटित कर दिया । उसने मेरी वह पुत्री ला दी जो नील कमल के समान नेत्र वाले रावण के लिए काल रात्रि के समान है ।

(23)

पुत्री की अभिलाषा और अपने पति के विनाश की चिन्ता से जिसकी आँखें मुकुलित हैं, ऐसी मन्दोदरी असह्य दुःख से मूर्च्छित होकर धरती तल पर शीघ्र गिर पड़ी ।

बाद में कामिनियों के करतलों और सुगंधित शीतल जलों से सिंची जाने, प्रतिचमरों के उत्क्षेपों से हवा किए जाने पर और चंदन के लेपों से वह देवी किसी प्रकार से होश में आई । उसके मुखविवर से मधुर वाणी निकली—हे सीता पुत्री, तू मुझसे उत्पन्न हुई थी । हा, दुष्ट विधाता ने क्या किया ! दुःकृत के फल से तुम्हारा जन्म बीत गया । पिता का चित्त तुम पर अनु-

2. A तिमिरचंदु । 3. P omits जिह । 4. P सुकइत्तणेण । 5. P adds after this : णं जिणवरधम्म अहिसणेण । 6. P adds after this : णं सुरसरीइ मयरहरलील । 7. P अघडिउं ।

(23) 1. A जणणि । 2. A omits दुस्सह^० । 3. AP विज्जिय । 4. A ण वच्छल । 5. AP विहिणा किं । 6. A बोलीणजम्मि; P बोली णुजम्मि ।

तुङ्गुप्पारि रत्तउ तावचित्तु हा धइये विहुरंरिणिहित्तु ।
 इय सोयभावणिम्मोयणाइं बाहुल्लकणोल्लइं⁷ लोयणाइं ।
 पेच्छिवि सीयाइ सदुक्ख⁸ रुण्ण मंदोयरिथणणीसरिउ थण्ण⁹ । 10

घत्ता—आसण्णइ बिइ विहवत्तणइ एतउं सीयइ जोइउं¹⁰ ॥
 थण मेल्लिवि रामणगेहिणिहि हारु व खीरु पधाइउं¹¹ ॥ 23 ॥

24

दुवई—णिम्मलसीलसलिलभरवाहिणि णिच्छह¹ णिययदेहए² ॥
 जाणइ³ तेण सीयदुद्धोहे जियणडिम⁴ एव रेहए ॥ छ ॥

तं किं सीयलु रहुवइअसंगि णिवडंतु दुद्धु सिमिसिमइ अंगि ।
 खगवइकंतइ पुणरवि पवुत्तु मा इच्छहि पुत्ति पुलत्थिपुत्तु ।
 हउं जणणि तुहारउं⁵ जणणु एहु ता सीयहि रोमंचियउ देहु । 5
 वुत्तउं पइवयगुणदिण्णछाइ सच्चउं तुहं मेरी माय माइ ।
 सच्चउं दहमुहु महु होइ वप्पु णासिवि तहु केरउ दुव्वियप्पु ।
 मइ पेसहि रामहु पासि ताम कुडि मेल्लिवि जाइ ण जीउ जाम ।
 जणणीइ पवोल्लिउ रामरामि कुरु भोयणु पुत्तिइ मज्झंखामि ।
 आहारें अंगु अणंगधामु अंगें होतें पुणु मिलइ रामु । 10

रक्त है। हा, विधाता ने तुम्हें दुःखों के भीतर डाल दिया। इस प्रकार शोकभाव के कारण जिनका आमोद (हर्ष) चला गया है, ऐसे तथा बाष्प-कणों से आर्द्र नेत्रों, तथा मन्दोदरी के स्तनों से रिसते दूध को देखकर सीता देवी फूट-फूट कर रो पड़ी।

घत्ता—वैधव्य के निकट होने पर आते हुए दूध को सीता देवी ने इस प्रकार देखा, मानो स्तन को छोड़ कर दूध मन्दोदरी के हार के समान दौड़ा।

(24)

निर्मल शील रूपी जल के भार की वाहिनी अपने ही शरीर में निस्पृह सीता उस शीतल दुग्ध प्रवाह से जिन प्रतिमा के समान शोभित थी।

राम का संगम न होने के कारण गिरता हुआ भी वह शीतल दूध शरीर पर रिम-झिम ध्वनि कर रहा था (शरीर की उष्णता के कारण)। विद्याधर की पत्नी मन्दोदरी ने पुनः कहा—हे पुत्री तुम रावण को मत चाहो, मैं तुम्हारी माँ हूँ, और यह तुम्हारा पिता है। तब सीता का शरीर पुलकित हो उठा। वह बोली—जिसने पतिव्रत गुण को आश्रय दिया है, ऐसी हे आदरणीया, क्या सचमुच तू मेरी माँ है? सचमुच दशमुख मेरा पिता होता है, तो उसके दुर्विकल्प को नष्ट कर तुम मुझे तब तक राम के पास भिजवा दो, जब तक जीव इस शरीर को छोड़ कर नहीं जाता। माता मन्दोदरी बोली—हे मध्यक्षीण रामपत्नी, मेरी पुत्री, तुम भोजन करो, आहार से ही शरीर

7. AP बाहुल्लकणोल्लइं । 8. A सदुक्खरुण्णु; P सदुक्खरुण्णु । 9. AP थण्णु । 10. P जोइयउं । 11. P पधाविउं ।

(24) 1. AP णिच्छह । 2. A जियइ । 3. AP सित्त तेण दुद्धोहे । 3. A जियणडिडिबि ।
 4. A तुहारी ।

इय भणिवि देवि गय गियणिवासु हियवउ हरिसिउं अंजणसुयासु ।
 महिवइभिच्चहं घल्लिवि रउइ चैयण चप्पंति महंत णिइ ।
 समरंगणि णिज्जियअरिवरेण लहुं धरिउ वाणरायारु तेण ।
 घत्ता—अधिरियण्हं पाहिं भिरं णिरसपाहिं मलिणहि मइलियवत्थहि ॥
 सो सीयहि रामविओइयहि^१ गंडयलासियहत्थहि ॥24॥

25

दुवई—लक्खणु पेक्खमाणु भारहियहि सणियं^२ पयइं देतओ ॥
 दुक्कइ^३ कइवरिदु तहि णियइइ कइगुण अणुसरतओ ॥छ॥
 पत्तलवट्टु नयरतंबकणु पवकणयकंजकिजक्कवणु ।
 सिहिविप्फुलिगचलपिगलच्छु णीरोमभउहु लंबंतपुच्छु^४ ।
 ससिकंतितंततिक्खग्गदंतु^५ कयकरजुयलंजलि बुक्करंतु ।
 अवलोइउ देविइ पमउ एतु थिउ अगइ पयपंकय णमंतु ।
 तेणंबहि^६ दाविउ^६ दइयणेहु सह अंगुत्थलियइ धित्तु लेहु ।
 परमेसरि मइं रंजियमणासु परियाणहि पुत्तु पहंजणासु ।

5

कामदेव का धाम बनता है। शरीर होने पर राम फिर से मिल सकते हैं। यह कहकर देवी अपने निवास स्थान पर गई। पवन-अंजना के पुत्र का हृदय प्रसन्न हो उठा। महापति (रावण) के अनुचरों को भयंकर नींद देकर और उनकी महान चेतना शक्ति को चाँपते हुए, समर-प्रांगण में शत्रुओं को जीतने वाले हनुमान् ने शीघ्र वानर का रूप धारण कर लिया।

घत्ता—जिसने स्नान नहीं किया है, जो भोजन से अत्यन्त रहित है, जो मलिन है, जिसके वस्त्र मैले हैं, जो राम से वियुक्त है, जिसका हाथ गंड-स्थल पर आश्रित है, ऐसी सीता—

(25)

भारती (सीता और कवि की बाणी) के लक्षणों को देखते हुए और धीरे-धीरे पथ (पद और चरण) देते हुए वह कपीन्द्र हनुमान् कई गुण (कविगुण, कपिगुण) का अनुसरण करते हुए उनके निकट पहुँचा।

जिसके कान पतले और एकदम लाल और गोल हैं, जो नव स्वर्ण कमल के पराग के समान रंग वाला है। आग के स्फुलिंग के समान जिसकी पीली आँखें हैं, जिसकी भौंहें बिना रोम की हैं, और जिसकी पूँछ लम्बी है, जिसके आगे के दाँत तीखे चन्द्रमा की कांति के समान हैं, जिसने दोनों हाथों से अंजलि बाँध रखी है, जो बुक्कार कर रहा है, ऐसे बंदर को देवी ने आते हुए देखा। चरणकमलों को प्रणाम करता हुआ, वह आगे आकर स्थित हो गया। उसने सीता के लिए पति के प्रेम को बताया और अंगूठी के साथ लेख रख दिया। वह बोला—हे परमेश्वरी, तुम मुझे मन को रंजित करने वाले प्रभंजन का पुत्र, राम का दूत समझो। मेरा नाम हनुमान् है। मैं श्रेष्ठ

5. P रामविलइयहि।

(25) 1. A सणियइं । 2. A दुक्कउ । 3. P पुच्छु । 4. AP ससिकंतकंति । 5. A तेणं तहि । 6. AP दावियं ।

दूरस्थ वि गाढउं देवि खेम
मणवासिणि दहरहरायसुहि¹⁴

णियकुसलवत्त हउं कहमि रामु ।
लइ सव्वु चारु सरयंदजोणिह¹⁵ ।

घत्ता—धीरी होज्जसु हलि जणयसुए भडरणरंगि भिडेप्पिणु ॥
ढोएवी तुहुं महुं बंधविण दससिरसीसु खुडेप्पिणु ॥27॥

15

28

दुवई—अणुदिणु लच्छिणाहु पइं सुमरइ तसियकुरंगलोयणे ॥

आयवि तिजगसामि णिवसिज्जसु कइवय दियह परयणे ॥

तूसेप्पिणु³ सीयइ अद्दुईउ
कइ पुच्छिउ लंघियविउलखयलु
विण्णविय देवि लइ भत्तु पाणु
तं तासु वयणु पडिवणु ताइ
सीयासुंदरिहि खगोयरीइ
अइरावयलीलागामिणीहि
पलहत्थियाइं तत्तइं जलाइं
णियकुलु वि डहइ णिग्घिणु हयासु⁴
तिलमुक्कें तेल्लें मुक्क केस

ता कउ अंगुलियहि अंगुलीउ ।
तेण वि अक्खिउ विसंतु सयलु ।
विणु तेण ण थक्कइ 'मणुयपाणु' ।
गउ पावणि सूरुगामि पहाइ ।
उवयरिउं चारु मंदोयरीइ ।
मज्जणउं भरिउं खगकामिणीहि ।
किं तावियाइं जइ णिम्मलाइं ।
कह खमइ विवक्खहि जणियतासु ।
विणु तिलसंबंधें सुहि वि वेस⁵ ।

5

10

देवी, मेरा प्रगाढ़ आलिंगन है। मैं राम अपनी कुशलवार्ता कहता हूँ। मन में बसने वाली हे दशरथ राज की वधू, शरद की चाँदनी में सब सुन्दर होगा ?

घत्ता—हे जनकसुते, तुम्हें धैर्य धारण करना होगा, योद्धाओं के युद्धरंग में भिड़कर, रावण का सिर काटकर, मेरे भाई के द्वारा लाई जाओगी ।

(28)

हे त्रसित हरिण के समान नेत्र वाली, लक्ष्मण तुम्हें दिन-रात याद करता है, त्रिजगस्वामी का ध्यान कर कुछ दिन तुम शत्रुजनों में निवास करो ।

तब सीता ने संतुष्ट होकर, उस अद्वितीय अंगूठी को अपनी अंगुली में पहिन लिया और विशाल आकाशतल को पार करने वाले बानर से पूछा। उसने भी समस्त वृत्तांत कह सुनाया। उसने निवेदन किया—हे देवी, भोजन जल ग्रहण करो, उसके बिना मनुष्य के प्राण नहीं ठहरते। उसने उसका वचन स्वीकार कर लिया। सबेरे सूर्योदय होने पर हनुमान् चला गया। विद्याधरी मंदोदरी ने सीता सुन्दरी का सुन्दर उपकार किया। एरावत की चाल से चलने वाली विद्याधर सुन्दरियों ने स्नान कराया। गर्म जल निकाला गया। यदि वह निर्मल है तो जल को गर्म क्यों किया गया ? निर्दय अग्नि अपने कुल को भी जला देती है, तो फिर वह ब्राम्ह उत्पन्न करने वाले विषक्ष को कैसे क्षमा कर सकता है ? तिल मुक्त तेल से उसने जाल खोले। बिना स्नेह संबंध के

14. A ⁹सुह । 15. A ⁹जुह ।

(28) 1. A सुजरइ । 2. A परवणे; P परियणे । 3. P हूसेप्पिणु । 4. AP मणुअपाणु । 5. AP add after this : आहारें अंगु अणंगधामु, अंगें होतें पुणु मिलइ रामु । 6. A हयासु । 7. AP सेस ।

किं पुणु धम्मिल्लय कुडिलभाव हरिणीलणोल हयभमरगाव ।

घत्ता—सण्हइं चोक्खइं ससहरसियइं राहवजससंकासइं ॥

दीहरइं^१ सुविउलइं सुहयरइं देविहि दिण्णइं वासइं ॥28॥

29

दुवई—थिय परिहिवि मयच्छि न पसाहणु गेण्हइ पियविओइया ॥

ताव रसोइ सव्व तहि आणिय मंदोयरि पराइया^२ ॥छ॥

बंदिइ^३ जिणि मणि समसुहपयट्ठि आसीण भडारी रयणपट्ठि ।

कलहोयथालकच्चोलपत्त^४ णं धरणिवीडि णक्खत्त पत्त ।

उण्हण्हउं दिण्णउं पढमपेउ णं दाविउ दहमुहि^५ विरहवेउ ।

णं तिक्खु मिट्ठु मलदोसणासु णं भासिउं परमजिणेसरासु ।

पुणु दिण्णइं गाणासालणाइं णं दहमुहरइआसालणाइं ।

आणेप्पिणु घल्लिउ दीह कू^६ णं दहमुहि^५ सीयाभाव कू^६ ।

ढोइयइं ससूवइं रसवहाइं णं दहमुहि^५ सीयारइवहाइं ।

उवणिय थियधार महासुयंघ दहमुहि^५ सीयादिट्ठि व सुअंघ ।

णिण्णेहवंतु णिह मंडु तक्कु णं दहमुहि^५ सीयामणवियक्कु ।

सुधिजन से भी द्वेष हो जाता है, फिर कुटिल स्वभाव वाली चोटी के बारे में क्या कहना ? हरि और नील के समान नीली वह, भ्रमर के गर्व को नष्ट करने वाली थी ।

घत्ता—सूक्ष्म, उत्तम चन्द्रमा की तरह श्वेत, राम के यश की तरह लम्बे, विपुल और शुभ-तर वस्त्र सीता देवी के लिए दिए गए ।

(29)

वह मृगनयनी वस्त्र पहिनकर बैठ गई । प्रिय से वियुक्त होने के कारण देह प्रसाधन ग्रहण नहीं करती । इतने में वहाँ सब प्रकार की रसोई ला दी गई । मंदोदरी भी वहाँ पहुँची ।

अपने सम और शुभ प्रवृत्ति वाले मन में जिनदेव की बंदना कर आदरणीया सीता रत्नपट्ट पर आसीन हो गई । स्वर्ण के थाल और कटोरी पात्र ऐसे लग रहे थे, मानो धरती पर नक्षत्र प्राप्त हुए हैं । पहले गर्म-गर्म पेय दिया गया, मानो रावण के लिए विरह वेग दिखाया गया हो, जो मानो तीखा, मीठा और मल दोष का नाश करने वाला था । मानो जिनेश्वर का कथन था । फिर उन्हें तरह-तरह के शालन दिए गए, जो मानो रावण के लिए रति की आशा दिखाने वाले थे । लाकर खूब भोजन दिया गया मानों रावण के मुख में दुष्ट सीता का भाव हो । रसदार सुन्दर दाल दी गई, मानो रावण के मुख में सीता की रति का प्रवाह हो । अत्यन्त सुगंधित घी की धारा लाई गई, जो मानो दशमुख में सीता की अत्यन्त सुगन्धित रसदृष्टि हो । स्नेह (चिकनाई) से रहित, अत्यन्त कोमल तक्र (मट्ठा) दिया गया मानों दशमुख में सीता का विमुक्त मन हो ।

8. A दीहरइं ।

(29) 1. A परिहिवि । 2. AP पराणिया । 3. AP बंदिवि जिणि मणि । 4. AP चित्त । 5. A दहमुह^५ । 6. A दहहगव्वु ।

उवणिउ माहिनु दहि थइहु^१ गव्वु
उवणिउ वहुविहु थोराइपाणु^२
अइसरसउं भक्खइ चक्खियाइं
फइकव्वु व कयमत्तापवाणु^३
अच्चविपउं^४ पुणु मुद्धहि विहाइ

णं दहमुहि सीयामाणगव्वु ।
णं दहमुहरमणहु कोसपाणु ।
णं दहमुहि सर सइं भक्खियाइं ।
भायणु मुत्ताउं थोराइपाणु ।
पाणिउं दिण्णउं दहमुहहु णाइ ।

15

घत्ता—पूत्रफलेण सचुण्णएण पत्तगुणेण समग्गउ ॥

तंबोलराउ रामु व सइहि छज्जइ अहरविलग्गउ ॥29॥

30

दुवई—इय भु जेवि भोज्जु भूमीसुय सीलगुणंबुवाहिणी ॥

धिय णंदणवणंति सीसवत्तलि^१ सीरहरस्स मेहिणी ॥छ॥

एत्तहि हणुमंतु^२ वि पत्तु तित्थु
हा सीय सीय सकलुणु कणंतु^३
ओल्लाविउ माइइ तें कयत्थु
भणु कि दिट्ठउं मिसुहरिणणंतु
कि मुच्छिउ णियडइ जीवत्तु

अच्छइ दुग्गंतरि रामु जेत्थु ।
णियकरयलेण उरु सिरु हणंतु ।
मउडग्गचडावियउह्यहत्थु^४ ।
कि णउ कुमार मेरउं कलत्तु ।
कि महं विरहें पंचत्तु पत्तु ।

5

भैस का गाढ़ा दही लाया गया, मानो दशमुख में सीता का भान गर्व हो। अनेक प्रकार का बेरादि का पानी लाया गया, जो मानो दशमुख के रमण के कुसुम्भ रंग का पान था। इस प्रकार अत्यधिक सरस खाद्य पदार्थों को उसने चखा मानो दशमुख में कामानुबद्ध वचन स्वयं खा लिए गए हों। कवि के काव्य के समान जिसमें मात्रा का प्रमाण किया गया था। फिर मुग्धा के लिए आचमन हेतु दिया गया पानी ऐसा शोभा देता था, मानो दशमुख के लिए पानी दिया गया हो।

घत्ता—चूने से सहित पत्र (पात्र, पान) के गुण और सुपाड़ी से समग्र अधरों पर लगा हुआ ताम्बूल राग उस सती के लिए राम के समान शोभित होता था।

(30)

शीतल जल की नदी पृथ्वी-सुता श्रीराम की पत्नी सीता इस प्रकार भोजन कर नंदन वन में शिशपा वृक्ष के नीचे बैठ गई।

इधर हनुमान् भी वहाँ पहुँचा जहाँ दुर्गा के भीतर राम थे। हा सीते हा सीते कहकर करुण रुदन करते हुए तथा अपने हाथ से उर और सिर पीटते हुए उन्होंने, जिसने अपने दोनों हाथ मुकुट के अग्र भाग पर धड़ा रखे हैं ऐसे कृतार्थ हनुमान् से पूछा—हे कुमार बताओ तुमने शिशुमृगनयनी मेरी स्त्री को देखा या नहीं? मेरे विरह में मूर्च्छित पड़ी है, या कि त्यक्त जीवन वह मृत्यु को प्राप्त हो गई है? यह सुनकर हनुमान् ने कहा—हे देव मैंने जानकी को जीवित देखा है। कलिकृतांत रावण को सो या देवी से सकाम वचन कहते हुए देखा है। प्रिय कहती हुई तथा देवी के मन की

7. P कोराइपाणु । 8. A अइमत्तापवाणु; P कयमत्तापवाणु । 9. AP अच्चविपउं ।

(30) 1. P सीसवत्तलि । 2. A हणवंतु । 3. A रुयं । 4. A उअयहत्थु ।

तं णिसुणिं वि हणुं उत्तु एव
दिट्ठं रावणुं गं कलिकयंतु
दिट्ठी मंदोयरि पिउ चवंति
अवरु वि दिट्ठं आरामहंतु

दिट्ठी जाणइ जीवंति देव ।
सीयहि सकामवयणाइं देतु ।
देविहि हियउल्लउं संथवंति ।
उप्पणउं चक्कु पहाफुरंतु⁵ ।

10

घत्ता—सिरिमंतु सुरूवु⁶ वि दहवयणु सीयहि मणु णासंघइ ॥

भरहुप्परिगामिय तेयणिहि पुष्पकयंत⁷ को लंघइ ॥30॥

इय महापुराणे तिसिट्ठमहापुरिसुणालंकारे महाभयभरहाणुमणिए
महाकव्यपुष्पकयन्तविरचए महाकव्ये सुग्रीवहनुव्रतकुमारागमणं⁸
सीयादंशणं णाम तिसत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥73॥

संस्तुति करती हुई मंदोदरी देवी को देखा है । और जी मैंने देखा है—आप अर्ध ही महात्मा प्रथा के धमकता उत्पन्न हुआ चक्र ।

घत्ता—श्रीसम्पन्न एवं रूपवान् होकर भी रावण सीता के मन का आश्रय नहीं पा सका । भारत के ऊपर जाने वाले तेजनिधि सूर्य चन्द्र का उल्लंघन कौन कर सकता है ?

बैसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पकयन्त द्वारा
विरचित एवं महाभय भरत द्वारा अनुमत महाकव्य का सुग्रीव-
हनुमान्-कुमारागमन-सीतादर्शन नाम तेहत्तरवाँ
परिच्छेद समाप्त हुआ ।

5. AP महाफुरंतु । 6. AP सुरूवु । 7. P पुष्पकयंतु । 8. A हनुव्रतकुमारागमणं णाम तिसत्तरिमो ।

चउहत्तरिमो संधि

परहु ण देइ मणु अवसैं मउलइ सकलंकहो ॥
फुल्लइ पउमिणिय करफसैं कहि मि मियंकहो^१ ॥ ध्रुवकं ॥

1

हेला—सीयादेवि देव दीहुण्ह णीससंती ॥
सुअरइ तुह पयाइ भत्तारभत्तिवंती ॥छ॥

सिरि व उविदहु	सरि व समुदहु ^२ ।	5
मेत्ति ^३ व णेहहु	मोरि व मेहहु ।	
भमरि व पोमहु	संति व सामहु ^४ ।	
करिणि व पीलुहि	करहि ^५ व पीलुहि ।	
विउसि व छेयहु	हरिणि व गेयहु ।	
णववणकंतहु ^६	जेंव वसंतहु ।	10
सुअरइ कोइल	धीरत्तें इल ।	
जिणगुण ^७ जाणइ	तिह तुह जाणइ ।	

चहत्तरवीं संधि

(कमलिनी सीता) दूसरे के लिए मन नहीं देती । वह संकलक (चन्द्रमा और रावण) से अवश्य ही मुकुलित होती है । क्या चन्द्रमा के करस्पर्श से कमलिनो कभी भी खिल सकती है ।

(1)

हे देव, लम्बे और उष्ण उच्छ्वास लेती हुई तथा पति के प्रति भक्ति से ओत-प्रोत सीता देवी तुम्हारे चरणों को याद करती हैं, जिस प्रकार लक्ष्मी ज्येन्द्र की, जिस प्रकार नदी समुद्र की, जिस प्रकार मैत्री स्नेह की, मयूर मेघ की, भमरी कमल की, जिस प्रकार शान्ति साम की, जिस प्रकार हथिनी हाथी की, जिस प्रकार ऊंटनी पीलू वृक्ष की, जिस प्रकार विदुषी चतुर व्यक्ति की, हरिणी गेय की तथा कोयल नवीन वन से मनोहर वसन्त की याद करती है, धैर्य से जिस प्रकार वह इला और जिन गुण को जानती है, उसी प्रकार जानकी तुम्हें जानती है ।

(1) 1. A मयंकहु । 2 P adds after this : महि व णविदहु, सइ व सुविदहु । 3. A मित्तिय । 4. A सोमहु । 5. AP हरि व सुसीलहि । 6. AP णववहुकंतहु । 7. AP read *a* as *b* and *b* as *a* ।

तुह सा राणी	खंतिसयाणी ।	
भवहं रुचइ	खणु वि ण मुचइ ।	
लवखणचितइ	बहुअसवंतइ ⁸ ।	15
वरकविवित्ति ⁹ व	धम्मपवित्ति व ।	
समसंपत्ति व	साहसथत्ति व ।	
कुलहरजुत्ति व	जिणवरभात्त व ¹⁰ ।	
णिह परलोइणि	तुह सुहदाइणि ।	
सा आणिज्जइ	रिउ मारिज्जइ ।	20

घत्ता—विरहहुयासहउ पियवत्तइ सुइवहुवकइ ॥

वियसिउ रामदुमु णं सित्तउ अमियल्लवकइ¹¹ ॥१॥

2

हेला—गाढालिगिऊण रामेण पवणपुत्तो ॥

सीयासंगमो व्व हरिसेणेव¹ वुत्तो ॥छ॥

तुह समु किं भण्णइ अवरु णह	अंजणिसुय ² तुहुं सुहिविहुरहरु ।	
तुहुं मुहुं मणकमलहु दिवसयरु	विरहावडणिवडणधरणतरु ³ ।	
जलु थलु णहयलु तुह गम्मु जहि	वण्णेव्वउं मव्वु समत्तु तहि ।	5
तहि अवसरि रुसिवि अतुलबलु	सिरिणाहें जोइउ भुयजुबलु ।	

तुम्हारी वह रानी आदिका के समान है, वह भयों को अच्छी लगती है, एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ी जाती; जो अत्यधिक अस (असादि प्रत्यय, यश) वाली, लखन की चिन्ता (व्याकरण की चिन्ता, लक्ष्मण की चिन्ता) के द्वारा श्रेष्ठ कवि की वृत्ति के समान है। जो धर्म की पवित्रता के समान, समता रूपी सम्पत्ति के समान, साहस की स्थिरता के समान, कुलगृह की युक्ति के समान, जिनवर की भक्ति के समान है; जो पर की आलोचना करने वाली है, और तुम्हें सुख देने वाली है, ऐसी उसे लाया जाए और शत्रु को मारा जाए ।

घत्ता—रामरूपी जो वृक्ष विरह की आग में जल चुका था, कर्ण-पथ पर प्राप्त प्रिया की वार्ता से वह इस प्रकार विकसित हो गया मानो अमृत की धारा से सिंचित हो ।

(2)

पवनपुत्र का प्रगाढ़ आलिंगन लेकर राम ने मानो हर्ष के द्वारा ही अपना सीता-संगम व्यक्त कर दिया ।

हे अंजनापुत्र, दूसरा तुम्हारे समान क्यों कहा जाता है ! तुम सुधीजनों का संकट दूर करने वाले हो । तुम भरे मन रूपी कमल के लिए दिवाकर हो, विरह की आपत्ति में पड़ने वाले को बचाने के लिए आधार वृक्ष हो । जहाँ जल स्थल और आकाश तुम्हारे लिए गम्य हैं वहाँ मैं कहता हूँ कि सारा काम समाप्त है । उस अवसर क्रोध करते हुए लक्ष्मण ने अपना अतुल-बल

8. A 'असवंतइ' । 9. AP 'कइ' । 10. AP add after this : सज्जणमेत्ति व । 11. AP 'अमय' ।

(2) 1. AP हरिसेण एम वुत्तो । 2. AP अंजणिसुय । 3. A 'धरणि' ।

बलएवहु पायपोमु णवइ
मइ रवियरदारियतिमिरबलि
जइ सायह सलिलु दुग्गु कमइ
तो कुंडलमंडियगंडयलु
तुह गेहिणि देमि समेइणिय

कोदारुणच्छु लवखणु⁴ चवइ ।
हणवंतु⁵ णेइ जइ गयणयलि ।
जइ लंकाणयरिणियडि थवइ ।
तोडेप्पिणु दहमुहसिरकमलु ।
णच्चवमि विड्डर⁶ डाइणिय ।

10

धत्ता—दे आएसु महुं सरर करउ गमणु साहेज्जउं ॥

कन्ताहरणरुहु फेडमि अज्जु जि वयणिज्जउं ॥2॥

3

हेला—ता सीराउहेण उवसामिओ अणंतो ॥

णं केसरिकिसोरओ रोसविप्फुरंतो ॥छा॥

भइयणु णिहिलु वि ओसारियउ
सउवाउ⁷ अवाउ सहाउ धणु
आरंभ कम्मफलसिद्धि किह
तं णिसुणिवि मंगलेण कहिउ
दुग्गामिउ बलवंतु वि विज्जइ
जइ सीय देह रणि णब्भइइ

पंचंगु मंतु भवयारियउ ।
मंतिउ महुं किं वडिरिहि बलु कवणु ।
किह दइवु हवइ भणु मुणितं जिह ।
णिव णिसुणि मंतु विगईरहिउ ।
खगराउ तिखंडधराहिवइ ।
तो भल्लउं महु मणि आवडइ ।

5

बाहुबल देखा । वह राम के चरणकमलों में प्रणाम करता है, और क्रोध से लाल आँखों वाला लक्ष्मण कहता है—यदि हनुमान्, जिसने सूर्य की किरणों से अंधकार की शक्ति विदारित की है, ऐसे आकाश में मुझे ले जाए, समुद्र जल और दुर्ग का उलंघन करवा सके; यदि लंका नगरी के निकट स्थापित कर सके तो मैं कुंडलों से मंडित गंडतल वाले दशमुख के सिरकमल को तोड़ कर भूमि सहित सीता देवी को लाकर दे दूँ । तथा भयानक डाइनी नचाऊँ ।

धत्ता—आप आदेश दें ! कामदेव हनुमान् गमन में सहायता करें तो मैं कान्ताहरण के कलंक को आज ही नैस्तनाबूद कर दूँ ।

(3)

तब श्रीराम ने लक्ष्मण को इस प्रकार शान्त किया कि मानो क्रोध से स्फुरित सिंह-किशोर हो ।

समस्त योद्धा समूह को हटा दिया गया और पंचांग मंत्र का विचार किया गया । उपाय सहित उपाय सहाय और धन में मेरा क्या मंत्र है ? शत्रुओं की सेना कितनी है ? आरंभ और कर्मफल सिद्धि किस प्रकार हाती है, देव किस प्रकार होता है ? मुझे बताओ, जिस प्रकार तुमने विचार किया है । यह सुनकर मंगल ने कहा—हे राजन्, अन्यथा नहीं होने वाला मंत्र सुनिए । विद्याधर राजा, तीन खंड धरती का स्वामी है । दुर्गाश्रित बलवान और विजयी है । यदि वह सीता दे देता है और युद्ध में नहीं लड़ता तो यह बात मेरे मन के लिए अच्छी लगती है । इसका उपहास करते

4. A माहुइ; P माहुइ । 5. P हणुवंतु । 6. T डार भयानक संग्रामो वा; विड्डर इति पाठेष्वप्यमेवायं ।

7. AP सव । 8. AP कन्ताहरणु रुहो ।

(3) 1. A सउवायउ चाउ सहाउ बलु । 2. AP महु वडिरिहि कवणु बलु ।

तं³ विहसिवि सुग्रीवं भणिउं पइं रावणजीविउं किं गणिउं ।
 हणुवंतुं सहाउ हउं वि पबलु हरि पुण्णवंतु चालइ अचलु । 10
 विज्जउ पहरणइं वि चितियइं होहिंति मंतविहिमंतियइं⁴ ।
 हलहर तुहुं राणउ देव जहिं पडिवक्खु पसंसिउ काइं तहिं ।
 धुउ⁵ लक्खणहरथे रिउ मरइ णिइइवहु दुग्गु काइं करइ ।
 भो मंगल मा किं पि वि भणहि तहु चक्कु कालचक्कु व गणहि ।
 घत्ता—तेण जि तासु⁶ सिह छिदेव्वउं रणि गोविदे ॥ 15
 दिणयरि उग्गमिइ किं पयडिज्जइ चंदे ॥3॥

4

हेला—उत्तं रामसामिणा जइ¹ अहं महंतो ॥

लच्छीहरणसाहिओ पत्तरपुण्णवंतो ॥४॥

णिपदूउ तो वि तहु पट्टवमि उप्पिच्छु समत्थु व णिट्ठवमि ।
 णिय सो² किं देइ ण देइ वहु पेक्खहुं किं बोल्हइ पुहइपहु ।
 भणु कवणु वओहरविहिकुसलु जिणवरचरणारविदभसलु । 5
 सुग्रीउ कहइ रिउछिदणहु जेट्ठहु दससंदणणंदणहु ।
 गुणवंत अत्थि णर³ धरणियर ते जंति ण खे ण होति खयर ।
 सुकुलीणु अदीणु दीणसरणु अग्गि व सीहु व दूसहफुरणु ।

हुए सुग्रीव ने कहा—तुमने रावण के जीवन को क्या समझा ? हनुमान् सहायक हैं और मैं भी प्रबल हूँ । लक्ष्मण पुण्यवान हैं, वह अचल को चलित कर देते हैं । मंत्र विधि से आराधित, चितित प्रहरण और विद्याएँ भी प्राप्त हो जाएँगी । हे हलधर, जहाँ आप राजा हैं वहाँ इसने प्रतिपक्ष की प्रशंसा क्यों की । निश्चय ही लक्ष्मण के हाथ से शत्रु मरेगा । दैवहीन व्यक्ति का दुर्ग क्या करेगा ? हे मंगल, तुम कुछ भी मत कहो, उसके चक्र को तुम कालचक्र समझो ।

घत्ता—युद्ध में लक्ष्मण के द्वारा, उसी से उसके सिर का छेदन किया जाएगा ? दिनकर के उदय होने पर चन्द्रमा के द्वारा क्या प्रगट किया जाएगा ?

(4)

तब स्वामी राम बोले—यद्यपि हम महान् हैं, लक्ष्मी गृह से प्रसाधित हैं और प्रचुर पुण्य से युक्त हैं,

तो भी उसके पास मैं अपना दूत भेजता हूँ । फिर सैन्यसहित समर्थ उसे मारता हूँ । ले जाई गई वधू को वह देता है, या नहीं ? हम देखें राजा क्या कहता है ? बताओ दूतविधि में कौन कुशल है ? जिनवर के चरण-कमलों का भ्रमर सुग्रीव शत्रु का नाश करने वाले जेठे दशरथ-पुत्र राम से कहता है—हे राजन्, धरणीवर (मनुष्य) गुणवान हैं, परन्तु वे आकाश में नहीं चल सकते क्यों कि वे विद्याधर नहीं हैं । सुकुलीन अदीन और दोनों के लिए शरण तथा अग्नि और

3. AP ता । 4. P मंत तिहि । 5. A धुवु । 6. P तासु जि सिह ।

(4) 1. AP जइ वि अहं । 2. AP किं सो । 3. A णरवरणियर ।

एविकल्लउ ^४ भल्लउ सेल्लवहि ^५	रणि सरजालंचियसदिसवहि ।	
सूहउ सूरुउ गंभीर थिर	पडिवणसूह तेयंसि गिर ।	10
णिट्ठुरहं वि उप्प, इयपणउ	हियमियमहुरक्खरजंपणउ ।	
किं वणमि सहयह अप्पणउ	दूयत्तजोग्गु अंजणतणउ ।	
ता रामें संचियणेरुसु	पुरिसुण्णउ पोरिसकणयकसु ।	
सुग्गीउ बंधु बुद्धिइ गहिउ	विज्जाहररायत्तणि णिहिउ ^६ ।	
घत्ता—बंधिवि पट्टु सिरि हणुवंतु कियउ सेणावइ ॥		15
जोत्तिउ दूयभरि पुणु सो जिज धवलु णिहयावइ ॥4॥		

5

हेला—दिण्णा राहवेण हणुयस्स खयरंगया^१ ॥रविगयविजयकुमुयपवणवेयया^२ सहाया ॥छ॥

गरुयारइ मंतिकज्जि थविउ	बलहद्दे ^३ मारुइ सिकखविउ ।	
जाएज्जमु भवणु ^४ विहीसणहु	परिपालियखत्तियसासणहु ।	
बोब्बेज्जमु मिट्ठउ किं पि तिह	अप्पावइ सीयाएवि जिह ।	5
जइ सामें देइ ण दहवयणु	तो पुणु भणु दंढु ^५ चंडवयणु ।	
अम्हहु ^६ विवरोकखइ आवडिय	ललियंग चित्तवित्तिहि चडिय ।	
अण्णणें रइरहसेण णिय	भण्णइ अप्पिज्जउ रामपिय ।	

सिंह के समान जो असह्य कांतिवाला है, तथा भालों से युक्त सरजाल से जिसमें दिशाओं सहित पथ आच्छादित है ऐसे रण में जो अकेला ही भला है; जो गंभीर, सुभग, सुन्दर और स्थिर तथा स्वीकार की गई वस्तु में शूरवीर, अत्यन्त तेजस्वी, अत्यन्त निष्ठुर, लोगों में प्रणय उत्पन्न करने वाला, हित मित मधुर वाणी बोलने वाला है, ऐसे अपने सहचर का क्या वर्णन करूं? हनुमान् दूतत्व के योग्य है। जिसमें स्नेह रस संचित है, जो पुरुषों में उन्नत है, जो पौरुष रूपी स्वर्ण को कसने वाला है, ऐसे सुग्रीव बंधु को राम ने बुद्धि से ग्रहण कर लिया, और विद्याधर राजा के पद पर उसे स्थापित कर दिया।

घत्ता—सिर पर पट्ट बंध हनुमान् को सेनापति बना दिया। आपत्तियों को नष्ट करने वाले और श्रेष्ठ उसी को फिर से दूतकार्य में जोत दिया।

(5)

राम ने रविगति, विजय, कुमुद तथा पवनवेग आदि विद्याधर हनुमान् के साथ कर दिए।

राम ने हनुमान को महान् मंत्री कार्य में स्थापित किया और उसे सीख दी—तुम अत्रिय शासन का परिपालन करने वाले विभीषण के घर जाना और उससे मीठा-मीठा कुछ इस प्रकार बोलना कि जिससे वह सीता देवी सौंप दे। यदि रावण साम से सीता देवी को नहीं सौंपता, तो दंड प्रचंड वचन कहना कि हमारे परोक्ष में तुम आए और चित्तवृत्ति पर चढ़ी हुई सुन्दरी को रति के हर्ष से अन्याय पूर्वक ले गए। तुमसे कहा जाता कि राम की प्रिया अर्पित कर दो। लक्ष्मण

4. AP एकल्लउ । 5. AP विहिउ ।

(5) 1. AP खयरंगया । 2. AP रविगइ^० । 3. P कुमुयबलवेयया । 4. AP बलभद्दे । 5. A भवणु । 6 AP चंडदंडवयणु । 7. A अम्हइ ।

गोवेदमुक्कगुणमग्गणाह
सोणियजलसित्तछत्तसहिउ¹⁰

दारियसरीरु सहं⁹ ससयणहि ।
मा होहि कयंतणयरपहिउ ॥

10

घत्ता—बोल्लिउ लक्खणिण सृय¹¹ सीय वसुंधरि ढोयवि ॥
जइ दहमुहु जियइ तो जीवउ किकरु होइवि ॥5॥

6

हेला—अहवा जइ ण देइ तो जाइ¹ किं जियंतो ॥

मइ कुद्धे ण हणुय णउ हणइ कं कयंतो ॥छ॥

तेलोककचवकजूरावणहु
जइ तिण्णि वि एयउ वेहु णउ
जइ जुज्झइ तो कालाणलहु
पेसमि दहगीउ ण दूय जइ
तो हलि² हरि जयकारिवि चलिउ
तारावलिहारावलिउरहि
पविमलपसण्णदिसवयणियहि
आहंडलघणुउप्परियणहि
णहलच्छिहि उवरि देंतु पयइ

इय जाइवि साहहि रावणहु ।
तो ताभु महु वि किर संधि कउ ।
जइ णासइ तो पुणु काणणहु ।
रहुवइपयजुवलु ण णवमि तइ ।
तणुभूसणमणियरसंवलिउ ।
उत्तु गहि तुंगपयोहरहि ।
चंदवकमणोहरणयणियहि ।
रंजियविज्जाहरणमणहि ।
पडिसुहडहं³ संजणंतु भयइ ।

5

10

के द्वारा डोरी से छोड़े गए तीरों के द्वारा विदारित शरीर के रक्त रूपी जल से सिक्त छत्र से सहित तुम अपने जनों के साथ यम नगर के अतिथि मत बनो ।

घत्ता—लक्ष्मण ने कहा—सीता और धरती को लेकर यदि रावण जीवित रहता है, तो वह अनुचर होकर ही जीवित रह सकता है ।

(6)

अथवा यदि वह सीता देवी को नहीं देता तो क्या जीवित रह सकेगा ? मेरे श्रुद्ध होने पर हनुमान् किस कृतान्त को नहीं मारता ?

त्रिलोक चक्र को सताने वाले रावण से तुम इस प्रकार कहना । यदि वह वे तीनों चीजें (सीता, श्री और भूमि) नहीं देता, तो उससे मेरी क्या संधि ! यदि वह लड़ता है, तो मैं उसे कालानल में, और यदि भागता है तो फिर कानन में नहीं भेज दूँ तो हे दूत, मैं श्रीराम के चरणयुगल को नमस्कार नहीं करूँगा । तब वह लक्ष्मण-राम की जय बोलकर घल पड़ा, शरीर के आभूषणों की मणि-किरणों से घिरा हुआ । जिसके उर पर तारावलियों की हारावलि है, जो ऊँची और विशाल पयोधर वाली है, अत्यन्त विमल और प्रसन्न दिशारूपी मुख वाली है, चन्द्रमा और सूर्य के मनोहर नेत्रों वाली है, जिसका इन्द्रधनुष का स्तरीय वस्त्र है, और जो विद्याधर समूह के मन को रंजित करने वाली है, ऐसी आकाश रूपी लक्ष्मी के ऊपर पैर रखता हुआ शत्रु योद्धाओं को भय उत्पन्न करता हुआ ।

8. A प्रलियणि । 9. A सुद्धं सज्जणेहि । 10. P omits छत्त । 11. A सिय; P सीय ।

(6) 1. P कि जाइ । 2. AP हरि हलि । 3. AP 'सुहडहं णं जणंतु ।

घत्ता—संखपतिदसणु वडवाणलजालाकेसर ॥
बेलापुंछचलु मणिगणणहु सीहु व भासुह ॥6॥

7

हेला—गंभीरो सरमेरउ¹ गीढमयरमुद्दो² ॥
मारुदणा तुरतेणं लंघिओ समुद्दो ॥छ॥

भुवणंतरालि विक्खायएण	दीहं जलणिहंसरजायएण ।	
तिसिहरगिरिणालें ³ उद्धरिउ	पायारकणिणयापरियरिउ ⁴ ।	
छुद्धवलट्टालविउलदलु	लच्छीमंजीररावमुहलु ।	5
देउलहंसावलिपरियरिउ ⁵	कणयालयकेसरपिजरिउ ⁶ ।	
कामिणिमुहरसमयरंदरमु	जसपरिमलपूरियगयणदिसु ।	
रावणरवियरवियसावियउ	देवाहं वि भल्लउं भावियउं ।	
वित्थरियकोसु ⁷ सुभुयंगपिउ	कह णिउणें विहिणा णिम्मविउ ।	
णहि जंतु जंतु मारुदभसलु	संपत्तउ तं लंकाकमलु ॥	10

घत्ता—जोयवि कुसुमसरु णारीयणु असेसु वि खुद्धउ ॥
कंपइ णीससइ हसइ व बहुणेहणिवद्धउ ॥7॥

घत्ता—संख-पति ही जिसके दाँत हैं, वडवानल की ज्वाला जिसकी अयाल है, जो बेला-रूपी पूंछ से चंचल है, जिसके मणिगण रूपी नख हैं, ऐसा जो सिंह की तरह भास्वर है ।

(7)

जो गंभीर और जल की मर्यादा वाला है, जिसने मकर मुद्रा स्थापित कर रखी है, ऐसे समुद्र का हनुमान् ने शीघ्र उल्लंघन किया ।

भुवनांतराल में विख्यात, लम्बे समुद्र के जल से उत्पन्न त्रिकूट पर्वत रूपी नाल के द्वारा जो उद्धत है, प्राकार रूपी कर्णिका से घिरा हुआ है, चूने की सफेद अट्टालिकाओं के विपुल दल वाला है, लक्ष्मी के नूपुरों के शब्दों से मुखर है, देवकुल रूपी हंसावली से घिरा हुआ है, स्वर्णालय रूपी केशर से पिजरित है, कामिनियों के मुख रस रूपी मकरंद के रस से सहित है, यश रूपी परिमल से जिसने गगन और दिशाओं को भर दिया है, जो रावण रूपी रवि की किरणों से विकसित है, जो देवों के लिए भला और रुचिकर है, जिसका कोश विस्तृत है, जो भुजंगों (चिह्नों) के लिए प्रिय है, किस निपुण विघाता ने उसकी रचना की है, ऐसे उस लंका रूपी कमल में, आकाश मार्ग से जाता-जाता हनुमान् रूपी भ्रमर आ पहुँचा ।

घत्ता—उस कामदेव को देखकर समस्त नाहीजन क्षुब्ध हो उठा, अत्यधिक स्नेह से निबद्ध वह काँपने लगता है, निश्वास लेता है और हँसता है ।

(7) 1. AP समेरउ; K सरमेरउ but records a P : अथवा समेरउ समर्यादः; T सरमेरउ जलमर्यादः, अथवा समेरउ समर्यादः; 2. AP गाढमयरसुद्दो । 3. A णिसियरं । 4. A पायालें । 5. AP हंसावलिपंडुरउ; K पंडुरिउ इय्यपि पाठः 6. A कणयायलकेसरिं । 7. A वित्थारियं ।

8

हेला—कंदर्पं सुरुविणं णिएवि चित्तचोरं ॥

कां वि देइ सक्कणं चारुहारदोरं ॥छ॥

क वि जोयइ दिट्ठिय मजलियइ	गुरुयणि ⁹ सलज्जदरमजलियइ ।	
क वि चलिय कडकखहि विवलियइ ¹	क वि वियसियाइ क वि विलुलियइ ।	
काहि वि गय तुट्ठिवि मेहलिय	क वि मुच्छिय धरणीयलि धुलिय ।	5
काहि वि रइजलझलवक झलिय ²	क वि उरयलु पहणइ ³ झिदुलिय ।	
काइ वि थणजुयलउं पायडिउं	काहि वि परिहाणु भत्ति पडिउं ।	
क वि भणइ एहु ⁴ हलि दूउ जहि	केहुउ सो होही रामु तहि ।	
सइ सीय भडारी वज्जमिय	ण सइत्तणवित्ति अइक्कमिय ।	
हलि एहु वि पेच्छिन्नि पुरिसवरु	जइ कह व महारउं एइ घरु ।	10
पायगं जइ थणग्गु छिवइ	तंदोलु वि जइ उप्परि धिवइ ।	
तो हउं सकयत्थी ⁵ जगि जुवइ	क वि पेम्मपरब्बस मूढमइ ।	
अप्पाणु परु वि ण सच्चवइ ⁶	हा मुइय ¹⁰ मुइय जणवउ चवइ ।	

घत्ता—कामु हरंतु मणु पुरवरणारीसंधायहु ॥

वलइयउच्छुधणु गउ भवणु विहीसणरायहु ॥४॥

15

(8)

चित्तचोर सुन्दर कामदेव को देखकर, कोई अपना कंगन और सुन्दर हारदोर देती है ।

कोई मुकुलित दृष्टि से देखती है, और गुरुजनों में लज्जा से थोड़ा मुकुलित करती है, कोई चंचल कटाक्षों से वक्र होती है, कोई विकसित करती है, कोई चंचल करती है; किसी की कटिमेखला टूट गई । कोई मूर्छित होकर धरती पर गिर गई । किसी की रतिजल की धारा बह निकली । कोई कामविह्वल हो अपने उर तल को पीटती है । किसी ने अपने स्तनयुगल को प्रकट कर दिया । किसी का परिधान शीघ्र गिर पड़ा । कोई कहती है, “हे सखी, जहाँ ऐसा दूत है, वहाँ राम कैसे होंगे ? सती सीता देवी वज्र की बनी है, उनकी सतीत्व वृत्ति अतिश्रान्त नहीं हो सकी । हे सखी, यह पुरुषवर देखने के लिए यदि किसी प्रकार मेरे घर आता है, और पैर के अग्र भाग से मेरे स्तन के अग्रभाग को छूता है, और यदि पान भी मेरे ऊपर फेंकता है, तो मैं विश्व में कृतार्थ युवती हूँगी ।” कोई मूढ़मति प्रेम के वशीभूत हो जाती है । वह अपने पराए को नहीं जानती । जनपद चिल्लाता है, “वह भरी मरी ” ।

घत्ता—इस प्रकार पुरवर के नारी समूह के मन का हरण करता हुआ मुड़े हुए ईश के धनुष वाला कामदेव विभीषण राजा के घर जा पहुँचा ।

(8) 1. AP का वि हु देइ । 2. P चीरुहार⁹ । 3. A गुरुयण⁹ । 4. P विवलियइ । 5. AP गलिय । 6. A पहणइ । 7. हलि एहु । 8. AP सकियत्थी । 9. A सभरइ । 10. AP मुइय मुइय ।

9

हेला—णियकुलकुमुयससहरो मुणियरायणाओ ॥

आओ तेण मणिओ अंजणंगजाओ ॥छ॥

रयणुज्जलु आसणु घल्लियउं
पाहुणयवित्ति णिस्सेस¹ कय
किं किज्जइ किं किउ आगमणु
गुणवंतु भत्तिभाउंभवउं²
पइं जेहउ माणुसु जासु धरि
लइ एत्थु विहीसण दोसु ण वि
पत्थहि पडलत्थि³ देउ तरुणि

मणहारि समंजसु बोल्सियउं ।
पुच्छिउ कहिं अच्छिय कहिं वि गय ।
तं णिसुणिवि पभणइ रइरमणु ।
णयवंतु संतु महुरुल्लवउ ।
किं सो लगइ परघरिणिकरि ।
कालिदिसलिलणिह्वेहछवि ।
पायालि म णिवडउ णिक्करुणि ।

5

धत्ता—गिरि गिरिययसरिसु गोप्पउ⁴ जासु रयणायरु ॥

तें सहं कवणु रणु किं करइ⁵ गव्वु तुह भायरु ॥9॥

10

10

हेला—दिट्ठादिट्ठभट्ट पट्टपट्ट पल्लवारी ॥

णहयरणाहमउडि मा पडउ पलयमारी ॥छ॥

(9)

अपने कुल रूपी कुमुद के चन्द्र, राजन्याय को जाननेवाले, अंजना के शरीर से उत्पन्न, आए हुए हनुमान् का उसने आदर किया ।

उसे रत्नों से उज्ज्वल आसन दिया तथा सुन्दर और उचित बात की । समस्त आतिथ्य वृत्ति पूरी की । उसने पूछा—कहाँ थे और कहाँ गए थे, क्या किया जाए, किसलिए आपने आगमन किया ? यह सुनकर कामदेव बोला—तुम जैसा गुणवान् भक्तिभाव से उत्पन्न न्यायवान् शांत मधुरभाषी मनुष्य जिसके घर में है ? वह दूसरे की स्त्री के हाथ से क्यों लगता है ? लो विभीषण, यहाँ दोष भी नहीं है, तुम प्रार्थना करो कि यमुना नदी के जल के समान देहछविवाला रावण युवती को दे दे (सीता वापस कर दे) और वह व्यर्थ ही पाताल लोक में न जाए ।

धत्ता—पहाड़ जिसे गेंद के समान है, समुद्र जिसे गोपद के समान है, उसके साथ कैसा युद्ध ? तुम्हारा भाई क्यों व्यर्थ अहंकार करता है ?

(10)

जिसने अदृष्ट कष्ट झेल लिये हैं, ऐसी राम की नारी को वापस कर दो । विद्याधर राजा के मुकुट के अग्रभाग पर प्रलयमारी न पड़े ।

(9) 1. AP जीसेस । 2. A भाउत्तमउ । 3. A पट्टलच्छि देव । 4. P गोप्पउ व जासु । 5. A करइ तुहारउ भायरु ।

अज्ज वि पण्डितइ दासगहि	अज्ज वि पण्डितइ दासगहि ।	
चउरासीलखधरायरहं	कोडिउ पण्णास भयंकरहं ।	
आहुट्ट ताउ गयणेयरहं	बलवंतहं बहुपहरणकरहं ।	5
अज्ज वि खुब्भन्ति ण नृवबलइं	दुल्लंघइं पडिबलघंचलइं ।	
अज्ज वि अण्णावहि सीय तुहुं	मा पइसउ बंधउ जमहु मुहुं ।	
मा डज्जउ लंक सतोरणिय	मा णिवडउ उयरवियारणिय ।	
सरधोरणि गोविंदहु तणिय	दुद्धरधणुगुणरवक्षणज्जणिय ।	
मा रिट्ठु रिट्ठलोहिउं रसउ	मा कालकियंतुं मासु गसउ ।	10
रायाणुएण ता भासियउं	पइं चारु चारु उवएसियउं ।	
मज्झत्थु महत्थु सच्चवयणु	पइं मेल्लिवि को सुपुरिसरयणु ।	
पइं मेल्लिवि को वि बुहाह्विइ	को जाणइ ऐही कज्जगइ ।	

घत्ता—इय संसिवि सुयणु पोरिसकंपवियसुरिदहु ॥

गंपि विहीसणेण दाविउ हणवंतुं खगिंदहु ॥10॥

15

11

हेला—णविऊणं दसासणं तरुणिहिययहारी ॥

आसीणो वरासणे कुसुमबाणधारी ॥

राम आज भी कुपित न हों, आज भी लक्ष्मण रूपी समुद्र क्षुब्ध न हो, पचास करोड़ चौरासी लाख भयंकर मनुष्यों की तथा साढ़े तीन करोड़ विद्याधरों की बलवान् एवं अनेक आयुध हाथ में लिये शत्रुसैन्य के लिए विघ्न स्वरूप और दुर्लब्ध शत्रुसैन्य आज भी क्षुब्ध न हो। आज भी तुम सीता अर्पित कर दो। हे बन्धु, तुम यम के मुख में प्रवेश मत करो। तोरणों सहित अपनी लंका मत जलाओ। उदार विचारणीय दुर्धर धनुष की डोरी के शब्दों से अन-क्षन झरती लक्ष्मण के तीरों की पंक्ति उसके ऊपर न पड़े। कौआ रावण के मांस के लिए न चिल्लाए, काल कृतान्त मांस न खाए। इस पर राजा का छोटा भाई (विभीषण) बोला—तुमने अत्यन्त सुन्दर उपदेश दिया। तुम्हें छोड़कर महार्थवाला और सत्यवादी मध्यस्थ और कौन सुपुरुषरत्न हो सकता है? तुम्हें छोड़कर और कौन बुधाधिपति हो सकता है? इस कार्य गति को भला और कौन जान सकता है?

घत्ता—इस प्रकार सज्जन की प्रशंसा कर विभीषण ने हनुमान् को अपने पौरुष से सुरेन्द्र को कंपित करने वाले विद्याधर राजा रावण से जाकर मिलवाया।

(11)

दशानन को प्रणाम कर तरुणियों के हृदय का अपहरण करने वाला कामदेव हनुमान् श्रेष्ठ आसन पर जाकर बैठ गया।

(10) 1. P णिवबलइं । 2. P कालकयंतु । 3. AP हणुवंतु ।

पुरि मग्गउ लग्गउ मज्झु रणि
तं णिसुणिवि सुट्ठु⁴ दुग्गुच्छियउं
णउ⁵ हसियउं देव पई मणियउं
सूय⁶ सीय वसुंधरि देइ जइ
सो लिहियउं तुह रुवु वि पुसइ⁷
हरि केव वि⁸ अम्हइ उवसमहुं

किं⁹ अच्छइ तहिं हिंडंतु वणि ।
दूएण राउ णिब्भंछियउ ।
केसवजंपियउं णायणियउं ।
परमत्थे इच्छइ संधि तइ ।
णियभायइ उवरोहे सहइ ।
लंकाउरि पेय अइक्कमहुं ।

10

घत्ता—मुइ मुइ एह तूय¹⁰ सुहिणेहे¹¹ कहइ कइइउ ॥

रावण वहइ पइ रणरंगि जणइणु कुइउ ॥ 13 ॥

14

हेला—ताव निकुंभ कुंभ खरदूषणा विरुद्धा ॥

हणुहणुसहदारुणा¹ मारणावलुद्धा ॥ 14 ॥

कोवारुणयण भणंति भइ
मयरद्वय ध्रुव लज्जइ रहिउ
खज्जोएं कि रवि ठंकियउ
कि भमरें गरुड झडणियउ
जेणेहुउं वोल्लहि मुख तुहुं

गोवाल बाल ददमूह जइ ।
कि झंखहि णं जरेण गहिउ ।
कि सायर गरलें² पंकियउ ।
कि दहमुहु अण्णें चंपियउ³ ।
फोडिज्जइ तेरउ दुट्ठ मुहुं ।

5

युद्ध कर ले और नगरी माँग ले । वह वन में व्यर्थ क्यों घूम रहा है ? यह सुनकर उसे अत्यन्त धृणा हुई । उसने राजा की भर्त्सना की कि मैंने तुम से हँसी नहीं की, जैसा कि तुमने मान लिया है । तुमने अभी लक्ष्मण का कहना नहीं सुना—यदि वह वास्तव में संधि चाहता है तो श्री, सीता और धरती दे वह तुम्हारे लिखित रूप को भी मिटा देता लेकिन अपने भाई के अनुरोध पर लक्ष्मण को हम लोगों ने किसी प्रकार शान्त कर रखा है और लंका नगरी पर आक्रमण नहीं किया ।

घत्ता—‘तुम इस स्त्री को छोड़ दो, छोड़ दो’, हनुमान् कहता है—‘हे रावण क्रुद्ध लक्ष्मण तुम्हें युद्ध में मार डालेगा’ ।

(14)

इतने में निकुंभ कुंभ और खरदूषण विरुद्ध हो गए । मारने के लोभी वे मारो-मारो शब्द से कठोर हो रहे थे ।

क्रोध से लाल-लाल आँखों वाले भट कहते हैं—हे गोपालबाल, ददमूह और जड़ कामदेव (हनुमान्), निश्चित रूप से तुम लज्जा से रहित हो, बुढ़ापे से ग्रस्त तुम क्या कहते हो ? क्या खद्योत सूर्य को ढाँक सका है ? क्या समुद्र विष से पंकिल हुआ है ? क्या भ्रमर गरुड को झपट सका है ? क्या रावण दूसरे के द्वारा चाँपा जा सकता है ? तुम मूर्ख हो । जिसने यह कहा है—हे दुष्ट, तेरा

4. AP कहि अच्छइ । 5. P सुद्धुगुं । 6. A जणहसियउ । 7. AP सिय । 8. AP लुहइ । 9. A विषभइ ।

10. AP तिय । 11. सुहिणिहे ।

(14) 1. हणहणसहें । 2. AP गरलें । 3. AP चंपियउं ।

तुह एककु सहाउ बीय पिसुणु	सुग्गीउ बालिपावियवसणु ।	
ते लक्खण राम दसाणणहु	जइ कमि पडंति पंचाणणहु ।	
तो हरिणा इव चुक्कंति कहि	वाएण जंति गिरिवर वि जहि ।	10
तहि पत्तलु दलु पइ किं थविउं	जइ पयजुयलउं देवहु णविउं ।	
तो रामहु तुम्हहं तं सरणु	णं तो आयउं एवहि मरणु ।	

घत्ता—हणुएं बोल्लिउं रणु धरि बोल्लंतहं चंगउं ॥

भडकलयलकलहि पइसंतहि कंपइ अंगउं ॥४॥

15

हेला—धणुजुत्ता भडा वि गज्जंति जेम मेहा ॥

तेम ण ते भिडंति वरिसंति सवणदेहा ॥छ॥

चिर रिक्खपंतिसंणिहणहहि	रत्तउ हयग्गीउ सयंपहहि ।	
सरु ससरि तिविट्ठें समरि हउ	मुउ सत्तमणरयहु णवर गउ ।	
जिह सो तिह तुहुं वि अणंनदसु	लग्गणसरकडिठयसुहिररसु ।	5
दहवयण मरेसहि आहयणि	रइ किं ण करहि मेरइ वयणि ।	
सीहा इव कुडिलचडुलणहर'	ता उट्ठिय खग हलमुसलकर ।	
गज्जंतु एंतु तिणसमु गणिउ	मारुइणा सुहुडसत्थु भणिउ ।	

मुख फोड़ दिया जाना चाहिए । तुम्हारा एक ही सहायक है, और उधर बालि से दुःख पाने वाला सुग्रीव चुगलखोर है । वे राम और लक्ष्मण यदि दशानन की चपेट में पड़ते हैं, तो सिंह से मृगों की तरह किस प्रकार बच सकते हैं ? जहाँ हवा से बड़े-बड़े पेड़ गिर जाते हैं वहाँ पत्तों और दलों को क्या स्थापित किया गया ? यदि तुमने देव के चरण-कमलों को नमन किया है, तो राम ही तुम्हारे लिए शरण है, नहीं तो तुम लोगों का इस समय मरण आ गया ।

घत्ता—हनुमान् ने कहा कि घर में युद्ध की बात करते हुए अच्छा लगता है । योद्धाओं की कल-कल में प्रवेश करने वालों का शरीर काँप जाता है ।

(15)

धनुषों से युक्त सुभट भी मेघों की तरह गरजते हैं लेकिन वे उस प्रकार सप्रण देह (व्रण सहित शरीर, सजल शरीर) नहीं भिड़ते, सजल मेघ की तरह बरसते हैं । बहुत प्राचीन समय में नक्षत्र पंक्ति के समान नखों वाली स्वयंप्रभा में अनुरक्त अश्वग्रीव कोलाहल से युक्त युद्ध में त्रिपृष्ठ के द्वारा मारा गया था और मरकर सीधे सातवें नरक में गया था । जिस प्रकार वह उसी प्रकार काम के वशीभूत होकर लक्ष्मण के तीरों से जिसका रक्त रूपी रस खींचा गया है, ऐसे तुम दशप्रदान युद्ध में मरोगे । तुम मेरे वन में प्रेम क्यों नहीं करते ? तब कुटिल और चंचल नखों वाले सिंहों के समान, हल और मूसल हाथ में लेकर विद्याधर उठे । गरजकर आते हुए उन्हें, उसने तिनके के बराबर समझा । हनुमान् ने सुभट-समूह से कहा—पास आते हुए

(15) 1. °बवल°; P °बदुल° ।

दुक्कह सयलहं सीसइं खुडमि तडिदंडु व पहुउणरि पडमि ।
 ता भासिउ मग्गपयासणेण अंतरि पइसेवि विहीसणेण ।
 हम्मइ ण दूउ जंपउ विरसु जाणेसहुं पोरिसु कणयकसु ।
 असिसंकडि धणुणुणरवमुहलि रिउहवकारणमारणतुमुलि ।

10

घत्ता—राए भासियउं मा मेरउ विहि विहरेज्जसु ॥

राहवलवखणहं संदेसउ एम कहेज्जसु ॥15॥

16

हेला—सरणं सुरवरस्स¹ पइसरइ जइ वि कामं ॥

तो वि अहं हणामि² सहुं किंकरेहिं रामं ॥ छ॥

धुवु पावमि भुविखउ कालकलि³ तिलमेत्तइं खंडइं देमि⁴ वलि ।
 लवखणहु सुलवखणु अवहरमि बंदिग्गहिं पुहुइदेवि⁵ धरमि ।
 णयरिउ मंदिरणिज्जियससिउ गेण्हिवि कोसलवाणारसिउ⁶ ।
 भडरुहिरमहासमुद्धि तरमि सुग्गीवहु गीवभंगु करमि ।
 खलणीलहु नीलउं सिरु लुणमि कुमुयहु कुमुयप्पएसु वणमि ।
 दसरहदसप्राणइं णिट्ठवमि जणयहु जिउ जमपुरि पट्ठवमि
 कुंदहु कुंदाहइं अट्ठियइं जाणेज्जसु एवहिं णिट्ठियइं ।

5

तुम सबके मैं सिर काट लूँगा और विद्युद् दंड की तरह स्वामी के ऊपर गिरूँगा । तब भीतर प्रवेश करते हुए मार्ग का प्रकाशन करने वाले विभीषण ने कहा—बुरा बोलने वाला भी दूत मारा नहीं जाता, पौरुष को स्वर्ण की तरह दल कर जाना जाएगा । तलवारों से व्याप्त धनुष और डोरियों के शब्द से मुखर शत्रुओं की हुंकार और प्रहारों से संकुल (युद्ध में) ।

घत्ता—राजा ने कहा कि मेरे कर्त्तव्य को गोपनीय मत रखो । राम और लक्ष्मण से मेरा सन्देश इस प्रकार कहना—

(16)

यदि कामदेव (हनुमान्) देवेन्द्र की भी शरण में चला जाए तो भी मैं अनुचरों के साथ राम का वध करूँगा । मैं निश्चित रूप से भूखे काल रूपी यम को प्राप्त करूँगा । और तिल के बराबर टुकड़े कर उसे बलि दूँगा । लक्ष्मण की सुलक्षणा का अपहरण करूँगा और पृथ्वीदेवी को बंदी-घर में रखूँगा । अपने भयनों से चन्द्रमा को जीतने वाली अयोध्या और वाराणसी नगरियों को ग्रहण कर, योद्धाओं के रक्त के महासमुद्र में तिरा दूँगा । सुग्रीव की ग्रीवा भंग करूँगा । दुष्ट नील के नीले सिर काटूँगा । कुमुद को नाभि प्रदेश में आघात पहुँचाऊँगा । दशरथ के दसों प्राणों को नष्ट कर दूँगा । और जनक के प्राणों को यमपुर भेज दूँगा । कुंद की कुंद से आहत हड्डियों को तुम इस समय नष्ट हुआ जानो । मैं नल की जाँघों रूपी मलिका से बसा निकालूँगा । और

2. AP वि रहेज्जसु ।

(16) 1. AP सुरवस्स । 2. P हणेमि । 3. P कालु कलि । 4. AP देवि । 5. A छुहिंवि वे वि ।

6. AP वाराणसिउ । 7. A ^०पाण विणिट्ठवमि; P ^०पाण वि णिट्ठवमि ।

कङ्कमि जंघाणलवस णलहु	ढोइवि ⁸ छुहियहु ढंढरउलहु ।	10
हणुमंत ⁹ तुज्झु हणु गिद्ध जिह	भक्खंति हणमि संगामि तिह ।	
जज्जाहि मित्त ¹⁰ मोक्कल्लिउ	ता पावणि णहयलि चल्लियउ ।	
ता जित पइट्ठ विहीसणहु	को चुक्कइ कम्महु ¹¹ भीसणहु ।	
परमेसरु अद्धधरत्तिवइ	मारेव्वउ लक्खणेण णिवइ ।	
तहु दुम्मणु मुहुं अवलोइयउं	अप्पउं पहुणा पोमाइयउं ।	15

घत्ता—सभरह एतु खल मह ते कुमुणियदप्पहु¹² ॥

पुष्पयंत गयणे किं¹³ संमुहुं थंति विडप्पहु ॥16॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्यभरहाणुमणिए
महाकविपुष्पयंतविरहए महाकव्वे हणुमंतद्वयगमणं¹⁴
णाम चउत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥74॥

भूखे भूत-कुल को भूखा, हे हनुमान्, तुम आकाशमार्ग लें, मैं तुम्हें संग्राम में इस प्रकार मारूँगा, कि जिससे गिद्ध खा सकें। हे मित्र जाओ-जाओ, मैंने छोड़ दिया। हनुमान् आकाश-मार्ग में उड़कर चला गया। तब विभीषण को चिन्ता उत्पन्न हुई कि भीषण कर्म से कोई नहीं बच सकता। परमेश्वर अर्धचक्रवर्ती हैं, राजा लक्ष्मण के द्वारा मारा जाएगा। रावण ने विभीषण का उदास मुख देखा, और स्वयं की खूब प्रशंसा की।

घत्ता—भरत के साथ आते हुए वे दुष्ट क्या मेरे सम्मुख उसी प्रकार ठहर सकते हैं, जिस प्रकार आकाश में धरती पर जातदर्प राहु के सामने चन्द्रमा।

असठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पयंत द्वारा
विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का हनुमान्-दूत-
गमन नाम का चतुर्त्तरवीं परिच्छेद समाप्त हुआ ॥74॥

8. AP जेय वि । 9. A हणवंत । 10. P मित्त तुहुं मोक्कल्लिउ । 11. A कम्मविहीसणहु । 12. AP कुमुणि क कंदप्पहो; T कंदप्पहो कामस्य । 13. A कइ संमुहु थंति; P किं सम्मु थंति । 14. AP द्वयकउजं ।

पंचहत्तरवीं संधि

पवणंजयसुयहु सभागमणि णं हरि हरिहि समावडिउ ॥
रहुवइआएसें कुइयमणु लक्खणु वालिहि अग्निभडिउ ॥ध्रुवकं॥

1

हणुएण णवेण्णिणु भणिउ रामु	भो यिसुणि भडारा हित्तरामु ।	
दहवयणु ण इच्छइ संधि देव	पर गज्जइ जिहू बीहंति देव ।	
सामहु णामें जो वेउ सामु	सो णायण्णइ वण्णेण सामु ।	5
तं णिसुणिवि रोमंच्चिउ उविदु	गलगज्जइ हसियमुहारविदु ।	
रणि मारमि दससिस् कुंभयण्णु	वणि' लोहिउ दावमि कुंभयण्णु ।	
असिधारइ दारमि कुंभिकुंभु	दलवट्टमि ज्ञ त्ति णिकुंभु कुंभु ।	
जीवावहाहं' खरदूसणाहं	दारमि' उरु रहुवइदूसणाहं ।	
पहरंति केम हत्थप्पहत्थ'	मडं मुक्कसरावलिच्छिण्णहत्थ ।	10
मारीयउ मारिहि देमि गामु	मउ णिम्मउ रणि कामु वि खगासु ।	

पंचहत्तरवीं संधि

पवनंजयपुत्र के आगमन पर, राम के आदेश से क्रुपितमन लक्ष्मण बालि से इस प्रकार भिड़ गया मानो सिंह सिंह पर टूट पड़ा हो ।

(1)

हनुमान् ने प्रणाम कर राम से कहा—हे आदरणीय देव, सुनिए, सीता का अपहरण करने वाला रावण संधि नहीं चाहता, केवल इस प्रकार गरजता है कि देवता डर जाते हैं । वर्ण से श्याम वह साम नाम के वेद को नहीं सुनता । यह सुनकर लक्ष्मण रोमांचित हो उठे । जिसका मुखरूपी कमल हँसता हुआ है ऐसा वह गरज उठता है—मैं युद्ध में रावण और कुंभकर्ण को मारूँगा । कुंभकर्ण को घावों से लाल दिखाऊँगा । तलवार की धार से हाथी के गंडस्थल को फाड़ दूँगा । शीघ्र निकुंभ और कुंभ (कुंभकर्ण के पुत्र) को चूर-चूर कर दूँगा । जीवों का अपहरण करनेवाले, राम के लिए दूषण, खरदूषण के उर को फाड़ दूँगा । मेरे द्वारा भुक्त वाणावली से छिन्नहस्त हस्त और प्रहस्त किस प्रकार आक्रमण करेंगे । मारीच को महामारी का कौर बना-

(1) 1. A वणलोहिउ । 2. AP जीवावहाह । 3. A दावमि कयरहुं; T उरु महान्वलस्थलं वा ।
4. AP हत्थावहत्थ ।

विद्ध⁵ समि⁶ इंदइइंदजालु अरिपुरु पलित्तु लम्गागिजालु ।
 पेच्छेसहुं कइययवासरेहि परबलु पच्छाइउ महु सरेहि ।
 घत्ता—मइ कुद्ध⁷ राहुव सो जियइ जो तुह पयपंकय णवइ ॥
 तुहु देव पयावपसरतसिउ⁸ रवि वि णिरंतरु णउ⁹ तवइ ॥१॥

15

2

तहि अवसरि आयउ वालिदूउ वइसारिउ कज्जालाव हूउ¹ ।
 तें वुत्तु² देव अविलंबधाम³ सीयासइवल्लह णिसुणि राम ।
 'खेयरचूडामणिबडियपाउ'⁴ अट्ठंगु णवइ तुह वालिराउ ।
 अण्णु वि विण्णवइ पहल्लवत्तु जइ इच्छहि मेरउं किकरत्तु ।
 तो णिद्धाइहि सुग्गीव हणुय रणभरु सहंति किं बालतणुय ।
 णिवडंतु कूवि तिणधारि⁵ पडइ णग्गोहविलंबि⁶ ऊद्धु चडइ ।
 गरुए सहुं जायइ विग्गहेण विहडिज्जइ हीणपरिग्गहेण⁷ ।
 तुह विरहखीण गुणवंत संत मारेप्पिणु रामणु हरमि कंत ।
 दासरहि पजपइ लंक जाव महुं समउ खगाहिउ एउ ताव ।

5

कर छोड़ूंगा ? युद्ध में किसी भी विद्याधर के मद को निर्मद कर दूँगा ? इन्द्रजीत के इन्द्रजाल को ध्वस्त कर दूँगा । जिसमें अग्निज्वाला लगी हुई है, ऐसे शत्रु पुर को जला दूँगा । देखूँगा कि मेरे तीर कितने दिनों में शत्रु सेना को आच्छादित करते हैं ।

घत्ता—मरे क्रुद्ध होने पर, हे राम, वही जीवित रहता है, जो तुम्हारे चरण-कमलों को प्रणाम करता है । हे देव, तुम्हारे प्रताप के प्रसार से अस्त सूर्य भी निरन्तर नहीं तपता ।

(2)

उसी अवसर पर बालि का दूत आया । उसे बैठाया और कार्य संबंधी बातचीत हुई । उसने कहा—जिनका तेज अतिलंबनीय है, ऐसे सीता सती के स्वामी हे राम सुनिए । जिसका चरण विद्याधरों के चूडामणियों पर आरोपित है, ऐसा बालि राजा तुम्हें आठों अंगों से प्रणाम करता है, और प्रफुल्लमुख बहू निवेदन करता है कि यदि तुम मुझे अनुचर बनाना चाहते हो तो सुग्रीव और हनुमान् को निकाल दो । वे छोटे-छोटे तिनके क्या युद्ध भार उठा सकेंगे ? कुए में गिरता हुआ तिनके को पकड़कर उसी में गिरता है । वट वृक्ष के तने का अवलम्बन लेने वाला ऊपर चढ़ता है । शक्तिशाली से विग्रह होने पर शनि का साथ लेने से (व्यक्ति) विघटन को प्राप्त होता है । तुम विरह से क्षीण गुणवान् और संत हो । मैं रावण को मार कर कान्ता को ले आऊँगा । इस पर राम उस दूत से कहते हैं—जब तक लंका है (मैं लंका में हूँ) तब तक यह विद्याधर राजा

5. A विद्धसिबि । 6. A इंदइ इंदजालु; P इंदहो इंदजालु । 7. A पयावइसरतसिउ । 8. AP णवि ।

(2) 1. AP भूउ । 2. A तो वुत्तु । 3. A अविलंबधाम । 4. A 'चूडामणि' । 5. AP 'बिड्ठपाउ' । 6. A तणुवारि; P तणधारि । 7. P णग्गोहि । 8. A क्षीण' ।

मयगिल्लगल्लु⁹ मित्तत्तहेउ करिवर¹⁰ महामेहक्खु देउ । 10
पच्छइ¹¹ जं इच्छइ तं जि करमि अहुणा तहु सुक्किउ काइ सरमि ।

घत्ता—लइ¹² इच्छउं केर महंतणिय कुंजरु ठोइवि गिरिसरिसु ॥
इय भासिवि राएं पेसियउ सहं तहु द्वएं णियपुरिसु ॥2॥

3

किलिकिलिपुरु पत्तउ दिट्ठु बालि	तेयाहिउ णं चंडसुमालि ।	
मंतं पवुत्तु भो सच्छचित्त	करि ठोइवि करि पडुसमउं जत्त ।	
तूसंति राय सुद्धं मणेण	ता भणइ बालि संथुउ अणेण ।	
जेणाहवखंधइ ¹³ भग्गएण	कायरणरमग्गविलग्गएण ।	
महुं भीएं कउ ¹⁴ किक्किधि वासु	हा रामें पोसिउ पक्खु तासु ।	5
कंडुयणि होइ पंडुरिय ¹⁵ रेह	मणगूढहुं ¹⁶ केरिय वित्ति एह ।	
जुज्जेसइ सीरि सिलिम्मुहेहि	अणउत्तु ¹⁷ वि जाणिज्जइ बुहेहि ।	
मग्गणउ धम्म गुणु मुइवि जाइ	सुग्गीवहु हणुयहु उवरि थाइ ।	
इय चित्तिवि बोल्लिउ रायमंति	भण्णइ ण देइ सो तुज्झु दंति ।	
देसइ खयरहिउ असिपहार	तोडेसइ पइं सुग्गीवहार ।	10

मेरे साथ है। मित्रता के लिए वह नद से नीले पंखवाला महाभेष धारण कर गज दे। बाद में जो वह इच्छा करेगा वह मैं करूँगा। इस समय मैं उसके उपकार की क्या याद करूँ।

घत्ता—लो गिरि के समान हाथी को लाकर मेरी आज्ञा को चाहो, यह कह कर राजा राम ने उस दूत के साथ अपना आदमी भेजा।

(3)

वह किल-किल नगर पहुँचा। उसने बालि से भेंट की। तेज से अधिक वह मानो सूर्य हो। मंत्री बोला—हे स्वच्छ चित्त तुम हाथी देकर राजा (राम) के साथ यात्रा करो, शुद्ध मन से राजा संतुष्ट होंगे। तब उसके द्वारा संस्तुत बालि बोला—संग्राम को धुरी से भागे हुए कायर मनुष्यों के मार्ग का अनुसरण करने वाले जिसने मुझसे डर कर किष्किंधा में निवास किया, राम ने उसके पक्ष का समर्थन किया। खुजली में सफेद रेखा होती है। जो मन से गूढ़ होते हैं, उनकी यही वृत्ति होती है। बलभद्र तीरों से लड़ेंगे। जो अनुवत है, वह भी पंडितों के द्वारा जाना जाएगा। मग्गपउ (याचक और तीर) धम्म (धर्म और धनुष) गुण (गुण और डोरी) को छोड़कर जाएगा तथा सुग्गीव और हनुमान् के ऊपर स्थिर होगा। इस प्रकार के कथन को सुनकर राजमंत्री कहता है कि वह तुम्हें गजवर नहीं देगा, विद्याधर राजा असि प्रहार करेगा, वह तुम्हारे सुग्गीव हार को (सुग्गीव को धारण करने वाले अच्छी ग्रीवा धारण करने वाले)।

9. A °गिल्लगिल्लमित्तत्त° । 10. AP करिवर वि महा° । 11. P पेच्छइ । 12. A लइ इच्छउ; P सहं इच्छउ ।

(3) 1. P °पुरि । 2. A खंधे । 3. A किउ । 4. P पंडुरिय । 5. A मणगूढहुं केरी; P मणगूढहुं केरी । 6. A अणउत्ति ।

धत्ता—ता स त्ति वओहर नीसरिउ आविवि^१ कण्णविवरवखरउ ॥

आहासइ वलणारायणहं रिउदुक्कयणपरंपरउ ॥३॥

4

ता चित्ताधिउ मणि रामरउ
एक्कु जि रवि अण्णु जि गिभयालु
एक्कु जि हरि अण्णु जि पक्खरालु
एक्कु जि विसि^२ अण्णु जि सविसदिट्ठि
एक्कु जि दहमुहु दुद्धरु विरुद्धु
मित्तयणु खीणु बलवंत सत्तु
विरइज्जइ एवहि कवणु मंतु
ता विहसिवि बोल्लइ वासुएउ
केसरिकिसोरु कि मृग^३ छिवंति
असमंजसु सज्जणपाणहारि
सुहउत्ताणंदियसुरवरालि^४

एक्कु जि सिहि अण्णु वि वायवेउ ।
एक्कु जि तमु अण्णु जि मेहजालु ।
एक्कु जि जमु अण्णु जि पुण्णकालु ।
एक्कु जि सणि अण्णु जि तहि मि विट्ठि ।
अण्णेक्कु तहि जि बलिपुत्तु कुद्धु । 5
पाणिट्ठु सुट्ठु हित्तउ कलत्तु ।
णउ कुसलकारि एक्कु वि जियंतु ।
कि दीव जिणंति दिणेससेउ ।
ते जगि जियंति जे पइ णवंति ।
परमेसर पच्छा कोवकारि । 10
अच्छउ रावणु ता हणमि बालि ।

धत्ता—मइ कुइइ^५ रणंगणि ओत्थरिए भीरु महागिरिकंदरहु ॥

मा चितहि राहव कि पि तुहुं सूर जंति जममंदिरहु ॥४॥

धत्ता—तब शीघ्र ही दूत निकला और आकर उसने कानों को विपरीत लगने वाले अक्षरों से युक्त शत्रु की दुर्जन शब्द-परंपरा राम और लक्ष्मण से कही ।

(4)

तब रामदेव ने अपने मन में विचार किया कि एक तो आग है, और फिर वायु का वेग ; एक तो रवि और फिर ग्रीष्मकाल । एक तो अंधकार और फिर मेघजाल ; एक तो अश्व और दूसरा कवच पहिने हुए ; एक तो यम है और दूसरे पूर्ण आयु ; फिर एक तो सांप और विष सहित दृष्टि ; एक तो शनि और दूसरे वह आंधी वर्षा है । एक तो दुर्घर रावण विरुद्ध है, और दूसरे बलिपुत्र (बालि) क्रुद्ध है । मित्रजन दुर्बल है, शत्रु बलवान् है । प्राणों के लिए इष्ट कलत्र का अपहरण कर लिया गया है । इस समय कौन-सा मंत्र करना चाहिए ? जीतने वाला और कुशल करने वाला एक भी नहीं है । तब लक्ष्मण हँसते हुए बोले—दीपक क्या दिनकर के तेज को जीत सकते हैं ? सिंह के बच्चे को क्या मृग छू सकते हैं ? वे ही जग में जी सकते हैं कि जो तुम्हारे चरणों में प्रणाम करते हैं । सज्जनों के प्राणों का अपहरण करने वाला और बाद में पश्चात्ताप करने वाला वह अनुचित है । हे परमेश्वर रावण तो रहे, पहिले मैं अपने सुभटत्व से सुरवर श्रेणी को आनंदित करने वाले बालि को ही मारूँगा ।

धत्ता—युद्ध के प्रांगण में क्रुद्ध होकर मेरे उछलने पर, डरपोंक गिरिवर की गुफाओं में और देव यम के घर में जाते हैं । हे राम, आप कुछ भी चिंता मत करिए ।

7. P आयणिवि कण्णविवरवखरउ; T सुइविवर^० ओत्थानिष्ट ।

(4) 1. P एक्क वि । 2. A विसु । 3. AP मिग । 4. A सुरवमालि । 5. A कुइइ; P कुइएण ।

5

ता पहणा पेसिउ तवखणेण
साहणु पहि¹ उप्पहि णहि ण गा²
हरि खुरखयरयह्यभाणुदित्ति
चूरियंभुर्यंग चलवित्रलियंग³
थिउ सिबिर घरेप्पिणु दुग्गमग्गु
आसोसियाइं सरिसरजलाइं
सिरणलिणारोहियणियकरेण
दुद्धरदीहरसुं डालसोंडु⁴
पडिबलु भयणयलविलग्गतालि

सुग्गीउ चलिउ सहं लक्खणेण ।
गदधइ मयत्तस गच्छंति जग्ग ।
रह⁵ चक्कधारदारियधरित्ति ।
भयकंपिय दिसमायंग तुंग ।
उब्बेइउ⁶ सससारंगवग्गु ।
णिल्लूरियाइं णवदुमदलाइं ।
अक्खिउ वालिहि केण वि चरेण ।
रामे तुम्हुप्परि पहिउ दंडु ।
आवासिउ खइरवणंतरालि ।

5

धत्ता—सुग्गीवें सेविउ सीरधरु लद्धउ सहयर चक्कवइ ॥

तं णिसुणिवि रुसिवि सण्णहिवि⁶ णिग्गउ वालि खगाहिवइ ॥ 5 ॥

6

गंभीरतूरकोलाहलाइं
अभिदृइ¹ कयरणकलयलाइं
वणवियलियपिच्छिललोहियाइं²

सुग्गीववालिखेयरबलाइं ।
सरपसरपिहियपिहुणह्यलाइं ।
पयघुलियंतावलिरोहियाइं ।

(5)

तब प्रभु राम ने तत्काल आदेश दिया । सुग्रीव लक्ष्मण के साथ चला । सेना पथ उत्पथ और आकाश में नहीं समा सकी । मद के बशीभूत होकर गजघटा प्रसन्नता पूर्वक जा रही थी । खुरों से आहत धूल से जिन्होंने सूर्य की दीप्ति को आच्छादित कर दिया है ऐसे अश्व थे । चक्र की धारा से धरती को फाड़ देने वाले रथ थे । विकल अंग वाले साँप चूर-चूर हो गए । ऊँचे दिग्गज भय से काँप उठे । दुर्गमार्ग को ग्रहण कर शिविर ठहर गया । शश और हरिण समूह उद्विग्न हो उठा । नदियों और सरोवरों का जल सूख गया । नव द्रुम के पत्ते नोच दिए गए । सिर-कमल पर अपने हाथों को आरोपित (लगाते) करते हुए किसी एक चर ने बालि से कहा—राम ने दुर्धर और दीर्घ गजों से प्रचंड सैन्य तुम्हारे ऊपर भेजा है । जिसमें आकाश के अग्र भाग में ताड़वृक्ष लगे हुए हैं, ऐसे खदिर वन के भीतर शत्रुसैन्य ठहरा हुआ है ।

धत्ता—सुग्रीव ने राम की सेवा अंगीकार कर ली है और चक्रवर्ती लक्ष्मण को सहचर के रूप में प्राप्त कर लिया है—यह सुनकर क्रुद्ध विद्याधर राजा बालि तैयार होकर निकला ।

(6)

गंभीर तूरों का कोलाहल होने लगा । सुग्रीव और बालि विद्याधरों के सैन्य भिड़ गए । युद्ध का कोलाहल होने लगा । तीरों के प्रसार से दोनों ने विशाल आकाशतल आच्छादित कर दिया । दोनों सैन्य घावों से रिसते गाढ़े खून से लाल हो गए । दोनों पैरों में व्याप्त आँतों से

(5) 1. P उप्पहि पहि । 2. AP णं णहि विलग्ग साहणसुकित्ति । 3. AP चलवलियंग । 4. P उब्बेइउ । 5. AP दीहरदुद्धर । 6. AP सण्णहिवि ।

(6) 1. A अभिदृइ । 2. A* विहलिय ।

मोडियरहाइं³ पाडियभडाइं
 लुयदडगुडाइं हयगयधडाइं
 खयपेविखराइं⁴ गयपक्खराइं
 तुटुच्छराइं बहुमच्छराइं
 वंजियपराइं पहरणपराइं
 ता तहि रणति पीणियकयति
 कंतीइ चंदु रिद्धीइ इंदु
 तें भणिउं भाइ रे रे अराइ
 पहुमाणदड्ढ⁵ खल दुब्बियड्ढ⁶

आसियणहाइं तासियगहाइं ।
 ताडियथडाइं⁴ पाडियभडाइं ।
 चुयहरिवराइं कंपियधराइं ।
 मरणिच्छिराइं खणमुच्छिराइं ।
 मयणिभभराइं हयभयभराइं⁶ ।
 सामंतकंति वेयालवंति ।
 किलिकिलिपुरिंदु धाइउ खगिंदु ।
 विज्जाहराइं मेल्लिवि सज्जाइ ।
 वज्जियगुणड्ढ⁹ सुग्गीव संढ¹⁰

5

10

घत्ता—मेल्लेप्पिणु¹¹ सेव सहुंतणिय बंधुणिबंधइ¹² तिलरिणइं ॥

पइसरिवि सरणु भूगोयरहं जीवेसहि भणु कह दिणइं ॥6॥

7

मा पावहि आह्वि पाणणासु
 तं वयणु सुगिवि सुग्गीउ चवइ
 तो लक्खणु भूगोयरु णिरुत्तु

जज्जाहि पाव किक्किधवासु ।
 पइं फेडिवि जइ मइ णाहि थवइ ।
 अह णं तो पइं णिप्फलु पउत्तु¹ ।

अवरुद्ध हो उठे । रथ मुड़ने लगे, ध्वज फटने लगे । दोनों आकाश में व्याप्त हो गए और ग्रहों को पीड़ित करने लगे । छिन्न हो गए हैं दृढ़ लगाम जिनके ऐसे घोड़ों और हाथियों की घटाओं वाले दोनों दल अस्त हो उठे । थोड़ा गिरने लगे । दर्शक नाश को प्राप्त होने लगे । कवच गिरने लगे । श्रेष्ठ अश्व च्युत होने लगे । दोनों सैन्य धरती कंपाने लगे, अप्सराओं को संतुष्ट करने लगे । दोनों मत्सर से भरे हुए थे । दोनों मरण की इच्छा कर रहे थे, दोनों क्षण-क्षण में मूर्च्छा को प्राप्त हो रहे थे, दोनों शत्रु को प्रवंचित करने वाले थे, दोनों प्रहरणों में तत्पर थे । दोनों मद से परिपूर्ण थे । जिसने कृतांत को प्रसन्न किया है, जो सामंतों से कांत और बैतालों से युक्त है, ऐसे उस युद्ध के बीच, कांति से युक्त चन्द्रमा और ऋद्धि से युक्त इन्द्र के समान किलकिलपुर का राजा विद्याधरेन्द्र बालि दौड़ा । उसने भाई से कहा—रे शत्रु, विद्याधरों और अपनी जाति को छोड़कर, स्वामी के मान से दग्ध दुष्ट दुर्विदग्ध गुण-ऋद्धि से शून्य हे सुग्गीव,

घत्ता—मेरी सेवा, बंधु के संबंध और स्नेह के ऋण को छोड़कर, तथा मनुष्यों की सेवा में प्रवेश कर बता तू कितने दिन जीवित रहेगा ?

(7)

युद्ध में अपने प्राणों का नाश मत कर । हे पाप, किष्किंधा नगरी चला जा । यह वचन सुनकर सुग्गीव कहता है—यदि तुम्हें नष्ट कर, मुझे स्थापित नहीं करता तो लक्ष्मण निश्चित रूप से भूगोचर है, नहीं तो तुमने निष्फल कथन किया । फिर वे दोनों विद्याबल से एक

3. AP फाडियधयाइं मोडियरहाइं । 4. AP तासिय³ । 5. A "पेक्खराइं । 6. A हियभय⁶ । 7. A "दड्ढ ।

8. A दुब्बियड्ढ । 9. A गुणड्ढ । 10. A संढ । 11. मेल्लिवि सेवा । 12. AP बंधुणिबंधइं ।

(7) 1. A णिरुत्तु ।

ते बे वि लम्मा विज्जाबलेण	पुणु हुयवहेण पुणु पुणु जलेण ।	
पुणु तरुवरेण पुणु मारुएण ²	पुणु फणिणा पुणु विणयासुएण ।	5
जुज्झिय बेणिण ³ वि पुणु भणइ जेट्ठु	मइ कुइइ रक्खइ कवणु इट्ठु ।	
ता भासइ तहि राहवकणिट्ठु	तुहं ण मुणहि सिट्ठु अणिट्ठु विट्ठु ।	
हउं विट्ठु देउ दसरहकुमारु	हउं विट्ठु सदुट्ठुद्वियकुठारु ।	
णउ ⁴ दिण्ण हत्थि रे देहि घाय	तुह एव्वहि कुडा रामपाय ।	

घत्ता—जइ जिनवरु सुमरिवि संतमणु चरहि सुदुद्धरु तवचरणु ॥ 10

तो चुक्कइ भट्टु रणि वहरि तुहं जइ पइसहि रामहु सरणु ॥7॥

8

ता हसिउ पवलेण ¹ बलिरायपुत्तेण	संगामपारंभपन्नभारजुत्तेण ।	
भूयरणरिदस्स किं तस्स फिर धामु	तुहं गणिउ जगि केण अण्णेक्कु सो रामु ।	
जइ अत्थि सामत्थु ता मेरुगिरित्तुगु	मइ जिणिवि रणरंगि अवहरहि मायंगु ।	
अक्खवसि ² किं मुख्ख पक्खिदवरपक्ख	किं कुणसि मइ कुइइ सुग्रीवि परिरक्ख ³	5
रत्तोवलित्तेहि दरिसियपहारेहि	गुणधम्ममुक्केहि वम्मावहारेहि ।	
मारणकइच्छेहि दुज्जणसमाणेहि	ता बे वि उत्थरिय विष्फुरियबाणेहि ।	
कोडीसरत्तेण ⁴ णिव्वूढगावाइ	छिण्णाइ चावाइ जमभउहभावाइ ।	

दूसरे से भिड़ गए। फिर आग से, फिर जल से, फिर तरुवर से, फिर पवन से, फिर नाग से, फिर गरुड़ से दोनों लड़े। फिर बड़ा भाई बोला—मेरे क्रुद्ध होने पर तुझे कौन इष्ट बचा सकता है? तब राम का अनुज लक्ष्मण कहता है—तू नहीं जानता कि लक्ष्मी का इष्ट और तुम्हारे लिए अनिष्ट विष्णु (नारायण) है। मैं विष्णु देव दशरथ-कुमार हूँ। मैं विष्णु (गरुड़) हूँ, दुष्टों के लिए अस्थि-कुठार हूँ। तूने हाथी नहीं दिया। इस समय राम के चरण तुझ पर क्रुद्ध हैं।

घत्ता—यदि तू जिनवर का स्मरण कर शांत मन हो अत्यन्त दुर्धर तप का आचरण करता है और राम को शरण जाता है, तभी तू शत्रुयुद्ध में मुझसे बच सकता है।

(8)

इस पर संग्राम के प्रारंभ का प्रभार उठाने में संलग्न बलि राजा का पुत्र बालि हँस पड़ा। उस भूचर (मनुष्य) राजा की क्या शक्ति? तुम्हें और एक उस राम को जग में कौन गिनता है? यदि तुझ में सामर्थ्य है तो युद्ध में मुझे जीतकर, सुमेरु पर्वत के समान ऊँचे महागज का अपहरण कर ले। हे मूर्ख, तू विद्याधर पक्ष पर आक्षेप क्यों करता है? सुग्रीव के प्रति मेरे कुपित होने पर तू उसकी रक्षा क्यों करता है? तब वे दोनों मान से अनुरंजित, प्रहार को प्रकाशित करने वाले, गुण धर्म से रहित, भर्म का छेदन करनेवाले, मारने की इच्छा रखने वाले, विस्फुरित बाणों से युद्ध के लिए उछल पड़े। लक्ष्मण ने घम के समान भाव वाले और गर्व का निर्वाह करने

2. AP मारुवेण । 3. AP दोणि । 4. AP णो दिण्णु ।

(8) 1. बालेण । 2. A अक्खवसि । 3. A परपक्खु; P परक्खु । 4. A कोडीसरत्तेहि ।

अण्णाइं गहियाइं अण्णाइं मुक्काइं चिघाईं रुद्वयंदेहिं⁵ लुक्काइं⁶ ।
 धाव्रंत वेव्रंत सरभिण्ण हिलिहिलिय अंतावलीखलिय महिवीठि रुलुधुलिय⁷ ।
 गयघायकडयडिय रह पडियजोत्तार भड भीम थिय बे वि संगामकत्तार⁸ । 10
 अब्भिट्ट ते बालि लक्खण महावीर थिरहत्थ सुसमत्थ सुरगिरिवराधीर⁹ ।
 तडिदंडसरलेहिं तरलेहिं खम्भेहिं संचरणपइसरणणीसरणमग्गेहिं¹⁰ ।
 खणखणखणतेहिं उग्गयफुलिगेहिं जिमिजिगियधारापरज्जियपयंगेहिं¹¹ ।

धत्ता—रणसरवरि हयमुहफेणजलि सोणियधाराणालचलु ॥

असिचंचुइ¹² लक्खणलक्खणिण तोडिउ बालिहिं सिरकमलु ॥४॥ 15

9

फोडिवि रणि वइरिहिं सिरकरोडि किलिकिलिपुरेण¹ सहं गामकोडि ।
 दिण्णो सुग्गीवखगाहिवासु एवड्डु फुरणु भणु भुवणि कासु ।
 मेत्तेलेप्पिणु² लक्खणु लच्छिधामु³ सुपसण्णु महाजसु जासु रामु ।
 गहियइं णियकुलच्छिधइं वराइं⁴ सीहासणछत्तइं चामराइं ।
 पुरवरि घरि मंडलि णिहिय भिच्च बहुबुद्धिवंत णिब्भिच्च सच्च । 5

वाले धनुषों को छिन्न-भिन्न कर दिया । दूसरे धनुष छोड़ दिये गये, दूसरे ग्रहण कर लिये गये । पताकाएँ रौद्र अर्धचन्द्र वाणों से लुप्त हो गयीं । तीरों से छिन्न-भिन्न होकर वे दौड़ते-काँपते हुए मूर्च्छित हो गये । आते खिसक गयीं और महीपीठ पर व्याप्त हो गयीं । गदाओं के आघात से कड़कड़ाते हुए रथ और सारथि गिरने लगे । भयंकर युद्ध करने वाले दोनों योद्धा स्थित थे । स्थिर हाथ, समर्थ, ऐरावत के समान धीर, बालि और लक्ष्मण दोनों महावीर भिड़ गए । विद्युद्-दंड की तरह सरल और तरल, संचरण प्रविशन और निःसरण के मार्गों से युक्त, खन-खन-खन करती हुई, चिनगा-रियाँ उड़ाती हुई, जिग-जिग चमकती हुई धारा से सूर्य को पराजित करती हुई तलवारों से वे दोनों भिड़ गए ।

धत्ता—जिसमें घोड़ों के मुखों का फेन रूपी जल है, ऐसे युद्ध रूपी सरोवर में रक्तधारा रूपी कमलदंड से चंचल, बालि के सिर रूपी कमल को लक्ष्मण रूपी सारस ने तलवार रूपी शीव से तोड़ दिया ।

(9)

युद्ध में शत्रुओं के सिर के कपाल तोड़कर उस (लक्ष्मण) ने किलिकिलिपुर नगर के साथ करोड़ों गाँव विद्याधर राजा सुग्रीव को दिए । बताओ इतना बड़ा शौर्य लक्ष्मण को छोड़कर किसका है कि जिसके ऊपर लक्ष्मीधाम, महायशस्वी राम प्रसन्न हैं ? सुग्रीव ने अपने कुल के श्रेष्ठ चिह्न सिंहासन छत्र और चपर ग्रहण कर लिए । नगर और घर में अत्यन्त बुद्धिमान, सच्चे और विश्वसनीय अनुचरों को स्थापित कर दिया । महामेघ गज पर आरुढ़ होकर राजाओं

5. AP रुद्वयंदेहिं । 6. A मुक्काइं । 7. AP हय धुलिय । 8. AP °कत्तार । 9. A °धराधीर । 10. A संचरण° । 11. A पराजिय° । 12. AP असिधाराचंचुइ लक्खणेण ।

(9) 1. P किलिगिलि° । 2. A मत्तेलेप्पिणु । 3. P लच्छिधामु । 4. A चडाइं ।

आरुहिवि महाधणवारणिदु⁵
संपत्तु जणदणु पुण वि तेत्थु
तद्दु पायपणइ सीसें करेवि

सहुं सुग्गीवेण णरिदचंदु ।
णिवसइ वणंति बलहहु जेत्थु ।
लक्खणु सुग्गीव चवंति बे वि ।

धत्ता—महिरूढउ वारियसूरकर कामिणिबेल्लिविलासधर ॥

तुहुं देव पयावहुयासणिण हेलइ दड्डउ वालितरु ॥9॥

10

10

ता पिसुणमरणसंतोसिएण
जित्ताहवेण सहुं माहवेण
किक्किधपुरहु दिण्णउं पयाणु
महिणहयराहं रिउरोहिणीउ
मंडलिय मिलिय वियलियसगव्व⁵
णहु दीसइ णउ छायउ धएंहं
करताडिय गज्जइ गमणभेरि
उणिण्हिय रामणगिलणमारि
करिमयच्चिक्खिल्लद्रहि⁴ णिमण्णु

मेल्लिवि तं उववणु ववसिएण ।
सुग्गीवे हणुवे राहवेण ।
संघट्टउं¹ पहि जाणेण जाणु ।
चलियउ चउदह अवखोहिणीउ ।
दिस पत्तहि छत्तहि छइय सव्व ।
हरिचरणपहयधूलीरएहि ।
भडहियवइ वड्डइ वड्डिखेरि ।
गोविद कडक्खइ लच्छिणारि ।
संदणसंदाणिउ³ वहइ सेण्णु ।

5

में श्रेष्ठ लक्ष्मण सुग्रीव के साथ वहाँ पहुँचे जहाँ वन के भीतर राम थे । सिर से उनके पैरों में प्रणाम कर लक्ष्मण और सुग्रीव दोनों ने कहा—

धत्ता—धरती पर प्रसिद्ध, सूरकर (सूर्य किरण, शूरवीरों के हाथ) का प्रतिकार करनेवाला, स्त्रियों रूपी लताओं का विलास धारण करने वाला बालि रूपी वृक्ष, हे देव, तुम्हारे प्रताप रूपी आग से खेल-खेल में जल गया ।

(10)

तब दुष्ट के मरण से संतुष्ट और उद्यमी राम ने उस उपवन को छोड़ दिया । युद्धों को जीतने वाले माधव, सुग्रीव और हनुमान् के साथ राम ने किष्किंधा नगर के लिए प्रयाण किया । रास्ते में यान से यान टकरा गए । मनुष्यों और विद्याधरों की शत्रु को रौंधने वाली चौदह अक्षी-हिणी सेनाएँ चलीं । अपना गर्व छोड़कर वे मिल गए । पत्रों और छत्रों से सभी दिशाएँ आच्छादित हो गईं । हवजों और घोड़ों के पैरों से आहत धूलिरज से आच्छादित आकाश दिखाई नहीं देता । हाथों से आहत रणभेरियाँ बज उठीं । योद्धा के हृदय में शत्रु का क्रोध बढ़ने लगा । रावण को निगलने वाली मारि जाग उठी । लक्ष्मी रूपी नारी लक्ष्मण पर कटाक्ष फेंकने लगी । हाथियों के मद के कीचड़ में निमग्न रथ को रथ से बाँधकर सैन्य खींचने लगा ।

5. P महाधणुवारणिदु ।

(10) 1. AP संघट्टउ । 2. A पहु । 3. AP सुगव्व । 4. AP दहि । 5. A संदणि संदाणिए; P संदणसंदाणिए ।

घत्ता—हरिणीले कुंदे परियरिउ खगसारंगकिराइयउ ॥

किक्किधसिहरि नियवंसधर रामे रामु व जोइयउ ॥१०॥

11

पइसंतहि हलहरकेसवेहि।
जहि निवसइ सो सुग्रीउ खयर
तोरणदुवारि सुपसत्थियाउ
णरचित्तसारधणसामिणीउ।
हलि^१ धवलउ कालउ कवणु रामु
कि एहु^२ जि एहु ण एहु एहु
वररुवालुद्धइ जुजियाइ
जणवयणयणइ कसणइ सियाइ
घरु आया कहि लब्धंति इहु
सिरपणमण्णहणविलेवणेहि
अविचित्तियसाहसकिसिनण्ण
सुग्रीवे^३ बेणिण वि सामिसाल
तहि दियह जंति किर कइ वि जांव

अवरेहि मि बहुभूगोयरेहि ।
अवलोइउ तं किक्किधणयर ।
दहिअवखयमंगलहत्थियाउ ।
बोल्लंति परोण्यर कामिणीउ ।
बिहि रुवहि कि^४ थिउ देउ कामु । 5
दीसइ वण्णंतरभिण्णदेहु ।
अच्चंतपलोयणरजियाइ ।
णं हरिबलतणुछायंक्रियाइ ।
णियमंदिर पडिवत्तीइ दिहु ।
देवंगहि निवसणभूसणेहि । 10
भावे^५ मंमाणिय रामकण्ह ।
खलबलगलथल्लणबाहुडाल" ।
संपत्तउ वासारत्तु तांव ।

घत्ता—किष्किधा पहाड़ को राम ने (अपने) समान देखा जो हरि नील (लक्ष्मण और नील, इन्द्रनील मणि) और कुंद (कुंद, पुष्प विशेष) से घिरे हुए खग, सारंग (विद्याधर और धनुष, पक्षी और हरिण) से शोभित तथा नियवंश (कुटुम्ब, वासों) को धारण करने वाला था ।

(11)

प्रवेश करते हुए बलभद्र और नारायण तथा दूसरे-दूसरे अनेक मनुष्यों ने, उस किष्किधा नगर को देखा जहाँ विद्याधर सुग्रीव निवास करता था । तोरण वाले दरवाजों पर, अत्यन्त प्रशस्त, जिनके हाथों में दही अक्षत और मंगल द्रव्य हैं, ऐसी मनुष्यों के चित्त रूपी श्रेष्ठ धन की स्वामिनी स्त्रियाँ आपस में बातचीत करने लगीं । हे सखी, राम कौन हैं, गोरे या काले ? क्या कामदेव ही दो रूपों में स्थित हो गया है ? क्या यही हैं ? यह नहीं यह हैं । अलग-अलग वर्ण से भिन्न शरीर दिखाई देते हैं । सुन्दर रूप के लोभी और भूखे, अत्यन्त देखने से रंजित, लोगों के मुख काले और सफेद हो गए । सच है कि राम और लक्ष्मण के शरीर की कांति से साथ अंकित हो घर आये हुए इष्ट जन कहाँ मिलते हैं ? इसलिए उन्होंने गौरव के साथ उन्हें देखा । सिरों के प्रणामों, स्नानों और विलेपनों, दिव्य वसनो और आभूषणों से सुग्रीव द्वारा अर्चितनीय साहस और कीर्ति के प्यासे, दुष्ट सेना की गर्दनिया देने वाले हाथों रूपी डालों वाले दोनों स्वामी-श्रेष्ठों का सम्मान किया गया । जब तक वहाँ उनके कुछ दिन बीतते हैं, तब तक वर्षा ऋतु आ गई ।

(11) 1. केसकहलहरेहि । 2. A °धणमाणिणीउ । 3. A हरि । 4. A थिउ किउ देउ । 5. A एहु । 6. °मल्लत्थण° ।

घत्ता—घणगयवरि तडिकच्छंक्रियइ चडिउ धरेप्पिणु इंदधणु ॥

वरिसंतु सरहि पाउसणिवइ णं गिभें सहं करइ रणु ॥11॥

15

12

कायउलइ तरुघरि संठियाइ
सरवर संजाया तुच्छणलिण
णच्चंति मोर मज्जंति कंक
चल चायय तण्हाहय खइंति
पवसियपियाउ दुहसल्लियाउ
दिसपसरियकेयइकुसुमरेणु³
वरिसंतें देवें भरिउ देसु
एक्कहि मिलियाइ दिसाणणाइ⁴
अवलोइवि रामु विसायगरथु

हंसइ सरमुयणुकंठियाइ¹ ।
दिसभाय² वि णवकसणअमलिण ।
पंथिय वहंति मणि गमणसंक ।
उत्तरंतीण जणलण पितंति ।
महमहियउ जाइउ फुल्लियाउ ।
चिक्खल्ले⁴ तोसिय किडि करेणु ।
जलु थलु संजायउं णिव्विसेसु ।
पप्फुल्लकयंबइ⁵ काणणाइ⁶ ।
थिउ णियकओलि संणिहियहत्थु ।

5

घत्ता—घणु गज्जउ विज्जु वि बिप्फुरउ णउउ सिंहंडि वि मूढमइ ॥

विणु सीयइ पावसु⁷ राहवहु भणु कि हियवइ करइ रह ॥12॥

13

पुणु सरउ पवण्णु सच्चंदहासु
विमलासउ कुवलयभेयकारि

वाणासनकयरिद्धीपयासु ।
बहुबंधुजीवदोसावहारि¹ ।

घत्ता—बिजली रूपी कच्छा (बरत्र, रस्सी) से अंकित मेघरूपी गज पर आरूढ़ इन्द्रधनुष लेकर पावस रूपी राजा मानों तीरों से बरसता हुआ ग्रीष्म के साथ युद्ध कर रहा है ।

(12)

काककुल वृक्ष रूपी धरों में बैठ गए । हंस सरोवरों को छोड़ने के लिए उत्सुक हो उठे । सरो-
वर कमलों से हीन हो गए । दिशाएँ भी काले बादलों से मलिन हो गईं । मयूर नाचते हैं, बगुले डुब-
कियाँ लगाते हैं । प्यास से व्याकुल चंचल चातक चिल्लाने लगे और मेघों का पानी पीने लगे । प्रेषित-
पतिकाएँ दुःख से पीड़ित हो उठीं । जुही की लताएँ महकने लगीं । केतकी कुसुम पराग दिशाओं
में प्रसरित होने लगा । गज और सुअर कीचड़ से प्रसन्न हो उठे । मेघराज के बरसने पर देश
(जल से) भर गया । जल और स्थल निर्विशेष हो गए । दिशाओं के मुख एकाकार हो गए । काननों
में कदम्ब के पुष्प खिल गए । विषादग्रस्त राम उसे देखकर अपने गाल पर हाथ रखकर बैठ गए ।

घत्ता—मेघ गरजा, बिजली चमकी और मूढ़मति मोर नाच उठा । बताओ वह पावस राम
के हृदय में सीता के बिना कैसे प्रेम उत्पन्न कर सकता है ?

(13)

फिर चन्द्रमा की कांति के साथ शरद् ऋतु रावण के समान आ गई जो मानो रावण के
समान, वाणासन (वृक्ष विशेष, धनुष) की ऋद्धि को प्रकाशित करनेवाली, विमल आशयवाली,
कुवलय (कमल, पृथ्वीमंडल का) भेदन करनेवाली, अनेक बंधु जीवों के दोषों का अपहरण करने

(12) 1. A सरमुअणु¹ । 2. A विसभीय वि णं कसण² । 3. AP दिसि पसरिउ । 4. A चिक्खल्ले ।

5. AP ³कलंबइ । 6. P पाउसु ।

(13) 1 PA ³जीवबंधु³ ।

परिसंतापियपोमंतरंगु
 णउ कच्चइ रामहु बट्टमाणु
 ता सुग्गीवें वुत्तउ पहाणु
 मेलावहि सीयारामकामु
 वसुसयसंखा वर" दुण्णिरिक्ख
 वरत्ती" कौनकाजालहत्थ
 कयरयणकिरणपरिहवविसुज्ज"
 पडिविज्जावारणि पुज्जणिज्ज
 संमेयमहीहरि सिद्धवेत्ति
 गुरुयणविहीइ आराहियाउ

णं रावणु दावियदुक्खसंगु ।
 पियविरहिउ किच्छे धरइ प्राणु ।
 केसव णिज्जायहि मंतज्ञाणु ।
 ता जाइवि सीयारामधामु ।
 चउदिसहि णिउंजिवि देहरक्ख ।
 उच्चारिवि थुइमंगल पसत्थ ।
 सिवघोसमहामुणिपडिमपुज्ज ।
 कण्हे साहिय पण्णत्ति विज्ज ।
 सुग्गीवें हणुवेण वि पवित्ति ।
 णाणाविहविज्जउ" साहियाउ ।

5

10

घत्ता—अण्णेवकहिं अण्णहि गिरिसिहरि" भरहि भरेण पसिद्धियउ ॥
 पणवत्तिउ आयउ देवयउ पुष्पकयंतरुहरिद्वियउ ॥ 3 ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमणिए
 महाकविपुष्पकयंतरविरहए महाकव्वे वालिणिहणणं
 रामलक्खणविज्जासाहणं णाम पंचहत्तरिमो
 परिच्छेओ समत्तो ॥ 75 ॥

वाली, पद्म (कमल, राम) के अंतरंग को संतापदायक और दुःख का साथ दिखाने वाली थी ।
 वर्तमान शरद्वृत्तु राम के लिए अच्छी नहीं लगती । प्रिया से विरहित वह बड़ी कठिनाई से
 प्राण धारण करते हैं । तब सुग्रीव ने प्रधान (राम) से कहा—हे राम, मंत्र का ध्यान करिए ।
 वह सीता और राम की कामता को मिलवा देगा । तब पृथ्वी में आराम स्थान पर जाकर, आठ
 सौ दुर्दर्शनीय देह वाले, भाले और तलवार लिये हुए श्रेष्ठ वीर रक्षकों को चारों दिशाओं में
 नियुक्त कर, प्रशस्त स्तुति मंगल का उच्चारण कर, जिसने रत्नकिरणों से सूर्य का पराभव किया
 है ऐसे शिवघोष महामुनि की प्रतिमा की पूजा की तथा प्रतिविद्या का निवारण करने वाली
 पूजनीय प्रज्ञप्ति विद्या को लक्ष्मण ने सिद्ध कर लिया । पवित्र सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर पर सुग्रीव
 और हनुमान् ने भी गुरुजनों की विधि से आराधित नाना प्रकार की विद्याएँ सिद्ध कीं ।

घत्ता—भरतक्षेत्र के अद्वितीय गिरिशिखर पर दूसरों ने स्मरण (आराधना) से विद्याएँ
 सिद्ध कीं । सूर्य और चन्द्रमा की कांति से समृद्ध देवियाँ प्रणाम करती हुई आई ।

श्रेष्ठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त इस महापुराण में, महाकवि पुष्पक द्वारा
 विचरित तथा महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का बालि-निधन
 एवं राम-लक्ष्मण-विद्या-साधन नाम का पंचहत्तरवाँ
 परिच्छेद समाप्त हुआ ।

छहत्तरिमी संधि

राहवलखणाहि जयजयघोसेण जयाणउं ॥
उप्परि दहमुहहु आरुसिवि दिण्णु पयाणउं ॥ ९ ॥

1

मलयमंजरी¹—उट्ठिओ रउदो विविहत्तूरसदो भग्गवइरिधीरो² ॥
चलियसाहणाणं³ दुग्गमाहणाणं⁴ कलयलो गहोरो ॥ १० ॥
संचल्लंति⁵ रामि महि कंपइ धरभरणमिउ ण फणिवइ जंपइ ॥
गयपयकुडिय⁶ कुहिणि मयपंके दुग्गम भावइ कयजणसंके ॥
रहरहंगगइदारियविसहर महिहर दलिय मलिय मय वणयर ॥
पवणवसेण वलिय⁷ धिलुलियधय हयमुहफेणसलिलपसमियरय ॥
वरभड्ढडचुण्णीकयमहिहह सेण्णाउण्ण सगयणासामुह ॥
सोसिय सरि सर णिसुडिय जलयर असिविप्फुरणगसिय ससिदिणयर ॥ 10

छहत्तरवीं संधि

राम और लक्ष्मण ने जय-जय घोष के साथ दशमुख पर क्रुद्ध होकर जयशील प्रस्थान किया ।

(1)

जिसने शत्रु का धर्म नष्ट कर दिया है, ऐसा विविध तूरों का शब्द तथा चलती हुई सेनाओं और अश्व-वाहनों का गंभीर कल-कल हुआ ।

राम के चलने पर सेना काँप उठती है । धरा के भार से नमित नामपति कुछ नहीं बोलता । हाथी के पैरों से क्षुब्ध मार्ग लोगों को शंका उत्पन्न करने वाली मद-पंक से दुर्गम प्रतीत होता है । रथों के चक्रों की गति से विषधर कुचले गए । पहाड़ चूर हो गए । मृग और वन-धर मर्दित हो गए । हवा के कारण ध्वज मुड़ गए और फट गए । घोड़ों के मुख के फेन रूपी जल से धूल शांत हो गई । ओष्ठ योद्धाओं की घटाओं से महीरह (वृक्ष) चूर्ण-चूर्ण हो गए । आकाश सहित दिशाओं के मुख सेना से अपरित हो गए । नदियों और सरोवरों का पानी सूख गया । जल-

(1) 1. AP मलयमंजरी नाम । 2. AP 'वइरिधीरो' । 3 P has कयपसाहणाणं before चलिय; K gives कयपसाहणाणं in margin and in second hand । 4. A संचल्लंतरामें । 4. AP 'कुडिय'; K gives खुडिता वा as p । 6. AP चलिय ।

रसिय भएण णाइं रयणायर
देसु विलंघिवि रणरहसुभभडु
आवासिउ संचारिमभवणहि
असियसियारुणपीयलहरियहि

धिय देविद विसंठुल कायर ।
खंधावारु धरिवि जलणिहितडु ।
कंताकंतहि रहरसरमणहि ।
सोहइ बहुदूसहि वित्थरियहि ।

धत्ता—सिमिह⁷ सुहावणउं परतरणीसोहाखंडणु⁸ ॥

मेहणिकामिणिहि णं पंचवण्णु⁹ तणुमंडणु¹⁰ ॥॥॥

2

भलयमंजरी—रयणकंतिकंतं मयरकेउवंतं विजयलच्छिवासं ॥

सायरस्स पीरं णं विमुक्कमेरं रोहिउं¹ दसासं ॥छ॥

गज्जिउ परवलु दुवरु दिट्ठउं
हणुमतेण तरुणिकमणीए
रामु रामरमणीउं² रमाहरु
अच्छइ सायरतीरि णिसणणउ
पज्जणु अहिणवणउह (णी)नणु
विणविउंसु³ वरखयरपडुत्तणु
फार लच्छि देव वि घरि⁴ किकर

चारएहि दहवयणहु सिट्ठउं ।
सहु णियभायरेण सुंगीवे ।
खगपसाहियसयलवसुंधरु ।
अज्जु कल्लि डुककइ आसणणउ ।
तं गिसुत्तिगवि विणवइ विहीसणु ।
भुवणभायणिम्मलजसकित्तणु⁴ ।
कवणु गहणु तुह किर पायड णर ।

5

धर नष्ट हो गए । तलवारों के विस्फुरण से चन्द्रमा और दिनकर प्रस्त हो गए । समुद्र मानों भय से चिल्ला रहा था । देवेन्द्र ठगा हुआ और कायर रह गया । युद्ध के उत्साह से उद्भट उसने देश का उल्लंघन कर समुद्र के तट पर पड़ाव डाला । चलते हुए घरों में उन्हें ठहराया गया, कान्ताओं से सुन्दर, रतिरस से रमण, काले सफेद अरुण पीले और हरे अनेक विस्तृत तम्बुओं से वह शोभित था ।

धत्ता—शत्रु-स्त्रियों के सौभाग्य का खंडन करनेवाला वह सुहावना शिविर ऐसा प्रतीत होता था मानो अरती रूपी कामिनी का पंचरंगा शरीरमंडन हो ।

(2)

रत्नों की कांति से सुन्दर, मकरध्वजों से युक्त, विजय रूपी लक्ष्मी के निवास, सागर का जल ऐसा ज्ञात होता है मानों मर्यादाहीन रावण को अवरुद्ध कर दिया गया हो ।

शत्रु-सैन्य गरजा, वह कठोर दिखाई दिया, दूतों ने जाकर रावण से कहा—स्त्रियों के लिए सुन्दर लक्ष्मी को धारण करने वाले तथा अपने खड्ग से समस्त वसुंधरा को सिद्ध करने वाले राम हनुमान्, अपने छोटे भाई और सुग्रीव के साथ समुद्र के किनारे ठहरे हुए हैं । आज या कल में वह निकट आ जाएंगे । यह सुनकर अभिनव मेघ के समान स्वर वाला सज्जन विभीषण निवेदन करता है—एक तो विनमि वंश, श्रेष्ठ विद्याधर, संपूर्ण पृथिवी पर निर्मल कीर्ति, प्रचुर लक्ष्मी, घर में देव अनुचर, फिर वे प्राकृत नर तुम्हारा क्या ग्रहण कर पाते हैं ? आते या न आते हुए उनका

7. AP सिमिह. 8. AP खंडणउं । 9. A पंचजण्णु । 10. AP मंडणउं ।

(2) 1. A रोहिओ । 2. A रमणीयरमाहरु । 3. AP विणविउंसुंधर । 4. A भवणभाविणिम्मल^०; P भुवणभाइ णिम्मलु । 5. A वर किकर ।

एंतु ण एंतु^६ होंतु बलदप्पिय संगरि तुहु कहवालझडप्पिय । 10
 णिहिल जंति तिमिरु व दिवसयरहु पइ होंतें कहि दिहि रिउणियरहु ।
 एक्कु जि दोसु णवर परमेसर जं पइ बाहिय परणारिहि कर ।

घत्ता—पूरइ तित्ति ण वि रइ पसरइ वंछइ संगहु ॥

परवहुत्तमणु परि वडइ दिणेहि णियंगहु ॥ 2॥

3

मलयमंजरी—मयणवणियचित्तो परपूरंधिरत्तो मरइ साणुअंधो ॥

पडइ णरयरंधे^१ सत्तमे तमंधे बद्धकम्मबंधो ॥छ॥

विसहरसुरणरविरइयसेवहु	धीरहु वसुसंखाबलएवहु ।	
हरिवाहिणिवेज्जारह्वाहहु	भीमगयाहलमुसलसणाहहु ।	
वज्जावत्तसरासणहत्थहु	दिज्जउ ^३ घरिणि ^४ देव काकुत्थहु ।	5
चक्कपसूइ ण चंगउं दावइ	लक्खणु वासुएउ महं भावइ ।	
अण्णहु ^६ किक्किधेसु ण रप्पइ	अण्णहु किं रणि वालि समप्पइ ।	
अण्णहु मारुइ किं घरु आवइ	किं पण्णत्तिविज्ज परिधावइ ^५ ।	
अण्णहु पंचयण्णु किं वज्जइ	अण्णु एव किं लच्छिइ छज्जइ ।	
अण्णे धरणिधेणु किहु वज्जइ	मारुडविज्ज ण अण्णहु सिज्जइ ।	10

बल खंडित हो जाएगा । युद्ध में तुम्हारी तलवार से वे आहत होंगे । वे तुम से उसी प्रकार चले जाएंगे जिस प्रकार सूर्य से अन्धकार हट जाता है, आपके होते हुए शत्रुसमूह में धीरज कहाँ ? हे परमेश्वर, परन्तु केवल एक दोष है कि तुमने परस्त्री का हाथ जो पकड़ा ।

घत्ता—तृप्ति पूरी नहीं होती और रति प्रसारित होती है, संग्रह की वांछा करती है । इस प्रकार परस्त्री में अनुरक्त मन अपने ही शरीर के अंगों पर पड़ता है ।

(3)

काम में आसक्त चित्त और परस्त्री में रक्त, पुत्र-कलत्रादि से सहित जिसने कर्म बांधा है ऐसा मनुष्य तमांध नामक सातवें नरक में जाता है । विषधर-सुर और मनुष्यों के द्वारा जिनकी सेवा की जाती है, ऐसे धीर आठवें बलदेव लक्ष्मण-सेना और विद्याधर, सेना का संचालन करने वाले भयंकर गदा, हल और मूसलों से सनाथ, जिनके हाथ में वज्रावर्त वनुष है ऐसे राम को, हे देव, उनकी गृहिणी दे दीजिए । चक्र की प्रभूति (उत्पत्ति) मुझे अच्छी नहीं लगती । लक्ष्मण और वासुदेव मुझे अच्छे लगते हैं । किष्किंधा का राजा किसी दूसरे से अनुराग नहीं करता । क्या युद्ध में बालि किसी दूसरे के लिए समर्पण करता ? हनुमान् क्या किसी दूसरे के घर आता है और क्या प्रज्ञप्ति विद्या दौड़ती है ? किसी दूसरे से पांचजन्य बजता है ? लक्ष्मी से क्या कोई दूसरा शोभित होता है ? किसी दूसरे के द्वारा धरती रूपी धेनु क्या बाँधी जाती है ? मारुड विद्या किसी दूसरे के लिए सिद्ध नहीं हो सकती । परवधू इह लोक और परलोक में पराभव करने वाली होती

6. यंतु । 7. AP णवर दोसु ।

(3) 1. A णरदरंधे । 2. A °विज्जाहुर° । 3. A दिज्जइ । 4. AP देव घरिणि । 5. A अण्णु वि ।

6. A परिधावइ ।

परवहु इह पर परिह्वगारी
केवलिभासिउ देव न चुकइ

अण्णु वि जाणइ धूय^१ तुहारी ।
ऐहि बलहुं मा गियइ न बुझइ ।

धत्ता—अपइ दहवयणु भो^२ जाहि जाहि जइ भीयउ ॥

पूरइ आहयणि भडु कुंभयणु महु बीयउ ॥३॥

4

मलयमंजरी—रे विहीसणुत्तं किं तए अजुत्तं मुयसु महिणिवासं^३ ॥

हीणदीणवेसो चरणघुलियकेसो जाहि रामपासं ॥छ॥

हउं किं^४ पुणु परिवाडि^५ न जाणमि

जा^६ न समिच्छइ सा णउ माणमि ।

एण मिसेण दंतपहविमलइ

खुडमि रामलक्खणसिरकमलइ ।

तणुसीयइ^७ दंतहं^८ मलु फिट्ठइ

विणु सीयइ महु किं ण पयट्ठइ^९ ।

5

ता पणवंतु थंतु हेट्ठामहु

कसणाणणु णं गब्धिणिउररुहु ।

छेउ णिहालिउ बंधुसणेहहु^{१०}

णिगाउ बंधवु गउ णियगेहहु ।

मंतिमईहि मंतु अवलोइउ

भायरेण मणु णिच्छइ ठोइउ ।

एउं^{११} रहंणु खगिदणिसुंभउं

जायउं^{१२} णाइ कुलीरहु डिभउं ।

हा रावणु जियंतु णउ पेक्खमि

परहु जंति णियकुलसिरि रक्खमि ।

10

बलवंतइ विवक्खि असहायहं

तप्पएसुं^{१३} भल्लारउ रायहं ।

इय चितंतु णिसिहि णीसरियउ

दिट्ठु समुह्णु तेण जलभरियउ ।

है । और फिर जानकी तुम्हारी कन्या है । हे देव, केवलजानी का कहा हुआ कभी चूकता नहीं । जब तक तुम्हारी नियति नहीं पहुँचती, तब तक आप बलभद्र के लिए सीता देवी सौंप दें ।

धत्ता—तब रावण कहता है—अरे तुम डर गए हो तो जाओ-जाओ, युद्ध में मेरा दूसरा योद्धा कुम्भकर्ण काम में आएगा ।

(4)

रे विभीषण, तूने अनुचित बात क्यों कही ? तू इस धरती का निवास छोड़ दे । हीन-दीन वेश में पैरों तक अपने केश फैलाए हुए तू राम के पास जा ।

मैं क्या फिर परिपाटी नहीं जानता ? जो स्त्री मुझे नहीं चाहती, उसे मैं नहीं मानता । इस बहाने दांतों की प्रभा से विभल राम और लक्ष्मण के सिर-कमलों को काट लूंगा । तूण की सीक से दांतों का मल नष्ट हो जाएगा । बिना सीता के मेरा क्या नहीं होगा । तब प्रणाम करता हुआ विभीषण अपना मुख नीचा करके रह गया । गर्भिणी के उरोजों की तरह उसका मुख काला हो गया । उसने भाई के प्रेम का अन्त पा लिया । भाई निकलकर अपने घर चला गया । मंत्रियों की बुद्धि से उसने मंत्र का अवलोकन किया कि भाई ने निश्चित रूप से अपना मन दे दिया है । हा रावण, मैं तुम्हें जीवित नहीं देखूंगा । फिर भी दूसरे के यहाँ जाती हुई अपनी कुललक्ष्मी की रक्षा करूँगा । विपक्ष के बलवान होने पर असहाय राजाओं का उसमें प्रवेश कर लेना अच्छा है । यह विचार करते हुए वह रात्रि में निकला, और उसने जल से भरा हुआ समुद्र देखा ।

7. P धीय । 8. A हो जाहि ।

(4) 1. A मह णिवासं । 2. AP पुणु किं । 3. A पडिवाडि । 4. A जो । 5. A तणे सीयए ।

6. AP दसणहं । 7. A पइट्ठइ । 8. A बंधमणेहहु । 9. A एहु । 10. A जोयउ । 11. P तप्पवेसु ।

घत्ता—झिझइ चंद्र जइ तो सायरजलु¹² ओहटइ ॥
पडिवण्णउं गुरुहुं आवइकालि ण फिटइ ॥4॥

5

मलयमंजरी—जइ वि णिच्चवको देहए ससंको तो वि एस चंदो ॥
सायरस्स इटो माणसे पइटो कंतियाइ रंदो ॥छ॥

हउं पुणु खलु चुक्कउ मज्जायहि	बंधुवइरि कि जायउ मायहि ।	
इय जूरंतु जाम णहि वच्चइ	ता रामहु विसारि संसुच्चइ ।	
देव विहीसणु दंसणु मग्गइ	तुह चरणारविंदु ओलग्गइ ।	5
पेक्खु पेक्खु णहि आयउ बट्टइ	जिह पडिवण्णु णेहु णोहटइ ।	
तिह हरि ¹ करि तुहुं बेणिण वि पत्थिय	तेण दसासवित्ति अवहत्थिय ।	
ता रामें सुग्गीवहु पेसणु	दिण्णउं आणहु तुरिउ विहीसणु ।	
गय ते तहि ² सो वि सुपरिक्खिउ	णिह णिब्भच्चु भिच्चु ओलक्खिउ ।	
आणेप्पिणु दाविउ हलधारिहि	पणविउ दाणविंदकुलवइरिहि ।	10
तें संमाणिउ रावणभायह	किउ संभासणु सहरिसु सायर ।	

घत्ता—चित्तु चित्ति मिलिउं जगि पर वि बंधु हियणारउ ॥

बंधु जि पर हवइ जो णिच्चु जि वडिठयवइरउ ॥5॥

घत्ता—यदि चन्द्रमा क्षीण होता है, तो समुद्र का जल कम होता है। बड़े लोगों की स्वीकृति (शरण) आपत्तिकाल में नष्ट नहीं होती।

(5)

यद्यपि यह हमेशा वक्र रहता है, इसके शरीर में शशांक है फिर भी यह चन्द्र है, सागर का इष्ट, मानस में प्रविष्ट और कान्ति से सुन्दर।

परन्तु मैं दुष्ट हूँ। मर्यादा से चूका हुआ, एक ही माँ से पैदा हुआ मैं भाई का शत्रु कैसे हुआ? इस प्रकार पीड़ित होता हुआ जब वह आकाश में जा रहा था कि इतने में दूत राम के लिए सूचना देता है—हे देव, विभीषण आपके दर्शन चाहता है, वह आपके चरणों से आ लगा है। देखिए-देखिए वह आकाश में आया हुआ है। जिस प्रकार स्वीकार किया प्रेम कम नहीं होता, उसी प्रकार लक्ष्मण और आप दोनों को उसकी प्रार्थना स्वीकार हो। उसने रावण की वृत्ति का तिरस्कार किया है। तब राम ने सुग्रीव के लिए आदेश दिया कि विभीषण को शीघ्र ले आओ। वे लोग वहाँ गए और उन्होंने उसकी खूब परीक्षा ली और उसे अत्यंत निर्भीक व्यक्ति पाया। लाकर, उन्होंने राम से उसकी भेंट करवाई। उसने दानवेन्द्र कुल के शत्रु को प्रणाम किया। उन्होंने (राम ने) भी शत्रु के भाई का स्वागत किया तथा हर्ष और स्नेह के साथ उससे बात-चीत की।

घत्ता—चित्त से चित्त मिल गया। दुनिया में हित करने वाला पराया भी अपना बंधु हो जाता है, और नित्य शत्रुता बढ़ाने वाला भाई भी दुश्मन हो जाता है।

12 A सायर जलु । 13. P adds वि after कालि ।

(5) 1. AP करि हरि । 2. AP तहि जि सो ।

6

मलयमंजरी—पुरिससोकखगाही अहियदेहवाही¹ तिक्वदुक्खवेल्लि ।।

कुणइ कह² वि आयं सुण्णरणजायं ओसहं सुहेल्लि³ ।।छ।।

रावणरज्जमाणुवित्थिण्णउं
गय कइवय वासर तहि जइयहुं
दे आएसु⁴ देव णउ अक्कमि
भीमें वाणररुवे वड्ढमि
भंजमि वणइ लवलिललंबइ⁵
ता दसरहसुएण परबलहर
कामरुवधर णावइ सुरवव
वाणरविज्जइ वाणर होइवि
गयणबिलगदेह गिरिपहरण
पुंछवलयवलइयतरुवरसिल
छिब्बरणास⁶ दीहदंताणण
धाइय पत्त दसासहु पट्टणु

रामे तासु⁷ तिवायइ दिण्णउं ।
हणुएं दुत्त हलाउहु तइयहुं ।
एवहि लंकहि संमुहु दुक्कमि । 5
डहमि वरइ भइभंडणु⁸ कइमि ।
फलणवियंगइ पल्लवतंबइ ।
अरिकरिदंतवट्टदीहरकर⁹ ।
तासु सहाय दिण्ण विज्जाहर ।
सयल वि गय लंकाउरि जोइवि । 10
बुक्करंत वग्गिय मग्गियरण ।
चरणचारचावियधरणीयल ।
पिंगलणयण छोहमीसावण ।
मारइणा जोइउ णंदणवणु ।

(6)

तीव्र दुखरूपी लता अहितकर देहव्याधि है, पुरुष के सुख को नष्ट करनेवाली, इसकी शून्य वन में सुखय यह औषधि किसी प्रकार करो ।

रावण राज्य का मान विस्तृत है । राम ने तीन बार उसे वचन दिया है । जब (वहाँ रहते हुए) कई दिन बीत गए तब हनुमान् ने राम से कहा—हे देव, आदेश दोजिए, मैं नहीं ठहर सकता । इस समय मैं लंका के सम्मुख जाऊँगा । भयंकर वानर रूप में अपने को बढ़ाऊँगा, घरों को जलाऊँगा । योद्धा रूपी वर्तनों को निकालूँगा । लवली लता से अवलंबित फलों से झुकी हुई शाखाओं वाले पल्लवों से लाल-लाल बनों को नष्ट करूँगा । उस अवसर पर राम ने शत्रुबल का अपहरण करने वाले, शत्रु-गजों के दाँतों से अपने लम्बे दाँत घिसने वाले, यथेच्छ रूप धारण करने वाले, जैसे देव हों ऐसे विद्याधर उसकी सहायता के लिए दिए । सभी विद्याधर वानर-विद्या से वानर होकर, लंका को लक्ष्य बनाकर गए । उनके शरीर आकाश से लगे हुए थे । गिरि प्रहरण करते, बुक्कार करते हुए, क्रुद्ध और युद्ध करते हुए, अपनी पूँछों से तरुवर और चट्टानों को मोड़ते हुए, पैरों के संचार से धरती को प्रकंपित करते हुए, चिपटी नाक और लम्बे दाँतों वाले, पीले नेत्रों वाले और क्रोध से एकदम भयंकर वे दौड़े और रावण-नगर पहुँच गए । हनुमान् ने नंदनवन को देखा ।

(6) 1. A °देववाही । 2. A दुक्खमल्ली; P दुक्खवेल्लि । 3. AP कहि वि । 4. A सुहेल्ली । 5. AP तासु वि वायइ । 6. P देहाएसु । 7. P भइभंडणु । 8. A बिल्लदललंबइ; P लवलिललंबइ । 9. P °करिकंत° । 10. AP छिब्बर° ।

घत्ता—हरिकररुहवणिजं आलङ्गसुरहिणवचंदणु ॥

15

वणु महु आवडइ णं लच्छिहि केरउं जोव्वणु ॥6॥

7

मलयमंजरी—रुढबालकंदं देवदारुमंदं सूरकिरणवारं ॥

दिण्णकुसुमवासं दिव्वमिहुणवासं जणियमयणसारं ॥छ॥

इंदसरासणेण घणल्लमिव णीलत्तमाल्लणिद्धयं ।

वणमंजणसुएण लंगूलं चउहि वि दिसहि रुद्धयं ॥1॥

सुरकरिसोडचंडभुयदंडवलेण^१ चलेण पेल्लियं ।

5

मोडियमहिरुहोहसंघट्टणचुयचंदणरसोल्लियं ॥2॥

‘करमरकडहकुडयकडयडरवडड्ढावियविहंगयं’ ।

भग्गणवल्लफुल्लपल्लवदलगयगुमुगुमियभिगयं ॥3॥

‘णिविडवडालिवंदणुम्मूलणविहड्ढावियरसायलं’ ।

णिग्गयसविसफरुसफुक्कारभयंकरसमणिफणिउलं ॥4॥

10

चूरियचारचूयचवच्चिचिणिसमिलवलीलवंगयं^२ ।

‘पायाहयपलोट्टचंपयचयदलवड्डियकुरंगयं’ ॥5॥

दलियलयाणिताभणिण्णसिगहुरउरुययररइसुहं ।

घत्ता—(वह कहता है) मुझे यह नंदन वन लक्ष्मी के यौवन के समान दिखाई देता है कि जो विष्णु के नाखूनों से व्रणित है (जो हाथी के नखों से व्रणित है) और जिसमें सुरभित चंदन (चंदनवृक्ष) लगा हुआ है ।

(7)

जो छोटी-छोटी जड़ों से अवरुद्ध था, देवदारु वृक्षों से पूर्ण, सूर्य की किरणों का निवारक, कुसुमों से आवासित, दिव्य मिथुनों का निवास और काम के श्रेष्ठतत्त्वों से अधिष्ठित था; नील तमाल वृक्षों से कांतियुक्त वह ऐसा लगता था मानो इन्द्रधनुष से युक्त मेघ समूह हो । उस वन को अंजनी के पुत्र ने अपनी पूँछ से चारों ओर से अवरुद्ध कर लिया । ऐरावत हाथी की सूँड के समान भुजदंड के चंचल बल से उसे प्रेरित किया । मोड़े गए वृक्षों के समूह के संघर्ष से उत्पन्न च्युत चंदन रस से जो आर्द्र हो उठा; जहाँ करमर कटभ और कुटज वृक्षों पर होने वाले कटकट शब्द से पक्षी उड़ा दिए गए हैं, छिन्न नव पुष्प और लताओं के दलों पर भ्रमर गुनगुना रहे हैं, जिसमें सघन वट वृक्षावलि एवं रक्त चंदन वृक्षों के उन्मूलन से पृथ्वीतल विधटित हो गया है, जिसमें निकलती हुई अपने विष की कठोर फूत्कार से मणि सहित नागकुल भयंकर हो उठा है, जिसमें अचार, आम्र, चव, चिचिणी और शाल्मलिफुली और लवंग लताएँ चूरित हो चुकी हैं, पैरों के प्रहार से धरती पर गिरे हुए चम्पक वृक्षों के समूह से हरिण समूह पिचल गया है, दलित लतानिवासों में जहाँ सुरों और विद्याधरों का रति सुख नष्ट

(7) 1. AP ‘छडसुं डभुयं’ । 2. A करमरकुडयकडय; P करमरकुहडकुडयकडय^० । 3. AP ‘कडयडसरउड्डा’ । 4. A णिविडियडालि^०; P णिविडवडालि^० । 5. AP ‘रसालयं’ । 6. AP ‘चविचिचिणि’ । 7. AP ‘चंपयरपदलं’ । 8. P वड्डियं^० ।

सुकटिणकरतलपुमुसुमूरियकीलागिरिगुहामुहं⁹ ॥6॥
 पविमलमणिसिलायलुत्थल्लणदिग्गयजवखकंतयं । 15
 सरवाबोणिबद्धविद्ध सियकीलासलिलजंतय ॥7॥
 हयविस्थिण्णसाहिसाहानुयअहुमहुविदुतंबयं¹⁰ ।
 पडियकचित्थभग्गकिणरकरवीणालभगतुंबयं ॥8॥
 दूहद्धरियविद्धविमूलुज्झियविवरणिणीणसावयं ।
 पडिरवतसियरसियविवियाणणवाणरविरइयावयं¹¹ ॥9॥ 20
 खंडियतुंगमड्डसिहहड्डियहंसविमुक्कसहयं¹² ।
 णिवडियणालिएरसालामलफलमालाविमहयं ॥10॥
 धल्लियसुक्ककक्खसंधट्टसमुग्गयजलणजालयं ।
 दड्डपियंगुपिगडच्छलियफुल्लिगपलित्ततमालतालयं¹³ ॥11॥
 मुक्कतिसूलसेल्लसरधोरणि सव्वलभिडिमालयं¹⁴ । 25
 धाइयभिडिभंगभीसावणभिडिउज्जाणवालयं ॥12॥
 घत्ता—विज्जाणिम्मियहि अइभीमहि मायारक्खहि¹⁵ ॥
 पावणि वेडियउ रावणणंणवणरक्खहि ॥7॥

8

मलयमंजरी—संगरम्मि कुद्धा पमयएहि¹ रुद्धा वूढवीरमाणा ॥

मारिया अणेया जित्तहरिणवेया रक्खसा पलाणा ॥छ॥

हो चुका है, जहाँ अत्यन्त कठोर प्रहारों से क्रीड़ागिरि के गुहामुखों को चूर-चूर कर दिया गया है, जो विशाल मणिमय चट्टानों पर उछलते दिग्गजों और यक्षों से सुन्दर है, जिसमें सरोवर और वापियों में लगे हुए कीड़ा सलिल यंत्र ध्वस्त हो चुके हैं, जो आहत बड़े-बड़े वृक्षों की शाखाओं से च्युत प्रचुर मधु बिंदुओं से ताम्र है, जहाँ गिरते हुए कपित्थों(कैथ) से भग्न किन्नरों के कर में वीणा की तुम्बी लगी हुई है, जहाँ दूर तक उखड़े हुए वृक्षों की जड़ों से नीचे गिरे हुए विवरो में पक्षी-शायक लीन हैं, जहाँ प्रतिशब्द से त्रस्त और चिल्लाते हुए विकसित-मुख वानर चक्कर काट रहे हैं, जो खंडित ऊँची और मंदित शिखर से उड़ते हुए हंसों के द्वारा मुक्त शब्दों से युक्त है, जो गिरे हुए नारियलों की शाखाफल-मालाओं से विमदित है, जहाँ दग्ध प्रियंगु लता के उछलते हुए पीले स्फुलिंगों से तमाल और ताल वृक्ष प्रदीप्त हैं; जो छोड़े गए त्रिशूल सेल, तीरपंकित, सखल और गोकनी से युक्त है, जिसमें दौड़कर भृकुटि भंग से भयावह उद्यानपालों से भिडंत हो गई है।

घत्ता—विद्यानिर्मित अत्यन्त भयंकर मायावी राक्षसों और रावण के नन्दन वन के रक्षकों द्वारा हनुमान् घेर लिया गया।

(8)

युद्ध में क्रुद्ध, वानरों द्वारा अवरुद्ध, वीरता का दर्प करनेवाले, हरिण का वेग जीतने

9. A °खरतलपु° । 10. P omits बहु । 11. AP रसियतसिय । 12. A सिंहहड्डिय° । 13. AP omit तमाल । 14. A °भिडिमालयं । 15. AP अइभीमहि ।

(8) 1. A एम एहि रुद्धा ।

अवर वि आया मायाणिसियर
कुडिल बद्धगच्छर इच्छियकलि
गुंजापुंजरत्तणेत्तुभड²
दीहदीहजीहादललालिर³
ताहे रणंगणि दावियइंडहि
सरपुंखहि भमरेहि⁴ व मंडिय
जिह वेल्लिउ तिह अंतइ छिण्णइ
जिह ताडहलइ तिह रिउसीसइ
जिह उज्जाणहु णट्टइ चक्कइ
जिह सर तिह विद्धसिय रिउसर
घरि घरि चडिय जलंतहि पुंछहि
दड्डइ णायरभवनसहासइ

लउडिमुसुंडिकुं तकंपणकर ।
जलियजलणजालाकेसावलि ।
दाढाचंडतुंड पललंपड ।
परबलघोलिर हूलिर सुलिर ।
लग्गा बलिमुह गिरिसिलखंडहि ।
जिह कणि तरु तिह ते रणि खंडिय ।
जिह पत्तइ तिह पत्तइ⁵ भिण्णइ ।
पाडियाइ धरणीयलि भीरुइ ।
तिह रिउरहवरि⁶ भगइ चक्कइ ।
लंकाणयरि पड्डा वाणर ।
णीसारियउ जलणु पिगच्छहि ।
जालाहार व धाहामीसइ ।

5

10

घत्ता—लग्गउ वहरिपुरि हुयवहु हणुवतें घित्तउ ॥

15

राहवकोवसिहि णं दुण्णयत्तणेण पलित्तउ ॥४॥

वाले अनेक राक्षस मारे गए और अनेक भाग खड़े हुए। दूसरे मायावी निशाचर लकुटि-मुसुंडी-कोंत से काँपते हुए हाथवाले, कुटिल मत्सर से भरे हुए, लड़ाई की इच्छा रखनेवाले, जिनकी केशावली आग की ज्वालावली से जल रही थी, जो गुंजाफल के समान लाल-लाल नेत्रों से उद्भट थे, दाँतों से प्रचंड मुखवाले, मांस के लंपट, लम्बी-लम्बी लपलपाती हुई जीभवाले, शत्रु सेना में चक्कर देने वाले, शूल वाले और हूलने वाले थे। तब युद्ध के प्रांगण में उनके धड़ों को गिराने वाले पहाड़ के शिलाखंडों से सहित वे वानर भिड़ गए। भ्रमरों के समान तीरपुंखों से वे शोभित हो उठे। जिस प्रकार वन में वृक्ष खंडित हो जाते हैं, उसी प्रकार वे युद्ध में खंडित हो गए। जिस प्रकार लताएँ, उसी प्रकार उनकी आँतें छिन्न-भिन्न हो गईं। जिस प्रकार पत्ते उसी प्रकार उनके बाहन नष्ट हो गए। जिस प्रकार ताड़ वृक्ष के फल, उसी प्रकार शत्रु के भयंकर सिर धरती पर गिरने लगे। जिस प्रकार उद्यान से पशु-पक्षी भाग जाते हैं, उसी प्रकार शत्रुओं के श्रेष्ठ रथों के चक्र टूट गए। जिस प्रकार सरोवर उसी प्रकार शत्रु नष्ट हो गए। वानर लंका नगरी में घुस गए। अपनी जलती हुई पूंछों से वे घर-घर पर चढ़ गए। पीली आँखों वाले उन्होंने आग निकाली और चिल्लाहट से भरे हजारों नागर-भवनों को भस्म कर दिया, ज्वाल-माला की तरह।

घत्ता—हनुमान् के द्वारा प्रक्षिप्त आग शत्रुनगरी में जा लगी मानो राघव की क्रोध रूपी आग अन्यायरूपी ऋण से जल उठी हो।

2. AP 'जेतरसुब्बइ'। 3. AP जीहवीह'। 4. भमरिहि ण; P भमरहि ण। 5. AP पत्तइ K पत्तइ and gloss वाहतानि। 6. A रिउ रहे रहे; P रिउं रहवरे।

9

मलयमंजरी—छइयकेउसोहो णयणचारुहो^१ जणियलोयवसणो ॥

चडइ गयणि धूमो रावणस्स भीमो दुज्जसो व्व कसणो ॥छ॥

धूमंतरि जालोलिउ जलियउ

णं णवमेहमज्झि विज्जुलियउ ।

पुणु वि ताउ सोहंति पईहउ

णं चामीयरतरुवरसाहउ ।

संदाणियसीमंतिणिदेहउ

सिहिणा पसरियाउ णं बाहउ । 5

घरसिरकलसु वलंतें^२ छित्तउ

सरिउणिवासु व पउलिवि धित्तउ ।

सहयह छंदगामि णउ मुणियउ

घउ परिचोलमाणु किं हुणियउ ।

उग्गु ण सज्जणपक्खु विहावइ

उड्ढगामि किह^३ पइ संतावइ ।

गमणें जासु होइ काली गइ

तहु किर किं^४ लब्धइ सुद्धी मइ ।

वरमंदिरजडियइ माणिककइ

डहइ^५ अछेयपहापइरिक्कइ^६ । 10तेयवंतु^७ परसेउ ण इच्छइ

सइं जि पट्ठणु विहवहु वंछइ ।

डज्झंतहि चंदणकप्पूरहि

पउरसुरहिपरिमलवित्थारहि ।

रयभमरइ^८ उक्कोइयमयणइ

वासियाइ सयलइ दिसवयणइ ।

जिणवरवेसणिसेहकयत्थइ^९

दड्ढइ मउदेवंगइ वत्थइ ।

(9)

रावण के भयंकर अपयश की तरह काला धुआँ आकाश में चढ़ता है। छादितकेतुशोभ (ध्वज की शोभा को आच्छादित करने वाला, ग्रह विशेष को तिरस्कृत करने वाला), धुएँ के भीतर ज्वालाखली इस प्रकार जल उठी मानो नवमेघ के भीतर बिजली चमक उठी हो। फिर वह लम्बी ज्वाला इस प्रकार शोभित होती थी मानो स्वर्ण-वृक्ष की शाखा हो। स्त्रियों के शरीर को पकड़ने वाली आग ऐसी मालूम होती थी, मानो उसने अपनी बाँह फैला दी हो। जलती हुई उससे गृहकलश गिर पड़ा मानो उसने अपने शत्रु (जल) के निवास रूप (घड़े) को जला कर फेंक दिया हो। उसने स्वच्छंदगामी अपने मित्र (वायु) को भी कुछ नहीं समझा। क्या (वायु से) आंदोलित ध्वज को इसलिए होम दिया? उग्र सज्जन पक्ष भी अच्छा नहीं लगता। उर्ध्वगामी होते हुए भी वह, दूसरों को क्यों सताती है? जिसके चलने में गति काली हो जाती है, उससे शुभ गति किस प्रकार पाई जा सकती है? वह निरन्तर प्रभा से परिपूर्ण श्रेष्ठ प्रासादों में विजडित माणिक्यों को भस्म करने लगी। जो तेजवाला होता है वह दूसरे के तेज को नहीं चाहता। वैभव की प्रभुता वह स्वयं चाहता है। प्रचुर सुरभि परिमल विस्तारवाले, जलते हुए चंदन-कपूर से युक्त, भ्रमरों से व्याप्त काम-कुतूहल उत्पन्न करनेवाले समस्त दिशा-मुख सुवासित हो उठे। जिनवर के वेष (दिगम्बरत्व) का निषेध करने वाले मृदु कोमल वस्त्र जल गए।

(9) 1. P चारुणेहो । 2. चंडंतें; P वलवतें, bnt K वलतें ज्वलता । 3. A कि पइ । 4. AP कहि । 5. A परबलु पेक्खिणि णवइ थक्कइ । 6. P परिथक्कइ । 7. P तेयमंतु । 8. A रइभवणइ । 9. A जिणवरभवणणिसेह^१; P जिणवरवेसणिसे^२ । 10. P सरियइ ।

धत्ता—घरदुवार जलइ वरपोमरायविष्फुरियउं ॥
जालापल्लवेहि णं दीसइ तोरणु भरिवउं¹⁰ ॥ ३॥

10

मलयमंजरी—दहमुहस्स कम्मं मुक्कणायधम्मं जाणिउं व कुद्धो ॥
उत्कटबाणजालं मृगइ णं विसालं सिहिं सिहासमिद्धो ॥ ४॥

होमदध्वरासिउ सपत्तउ	तिलजवघयकप्पासहिं तित्तउ ¹ ।	
हुहुरंतु णं संति पघोसइ	दिज्जउ ² रामहु सीय महासइ ।	
होउ ³ संधि जीवउ महिमाणु	भुंजउ लच्छि अविग्घ ⁴ दसाणणु ।	5
एत्तहि अग्निजाल पवियंभइ	एत्तहि बाणरविदु णिसुंभइ ।	
माय ण पुत्तहंडु संमगइ ⁵	जणु हल्लोहलिहुउ कहिं णिग्गइ ।	
भवणारोहणु करिवि अभगउ	णं वइसाणरु जोयहुं लगउ ।	
केत्तिय लंकाउरि मइ दड्ढी	णं विडेण कामिणि दुवियड्ढी ।	
बाहिरपुरवरु एम डहेप्पिणु	कित्तिमणिसियरणियरु वहेप्पिणु ।	10
चलिउ ⁶ पढीवउ पावणि तेत्तहि	णिवसइ ससिविरु ⁷ राहुउ जेत्तहि ।	

धत्ता—उत्तम पद्मराग मणि से विस्फुरित गृहद्वार जल गया । ज्वाला रूपी पल्लवों से वह ऐसा प्रतीत होता था मानो तोरण बँधा हुआ हो ।

(10)

क्रुद्ध अग्नि ने रावण के धर्म और न्याय से मुक्त कर्म को जान लिया । शिखाओं से समृद्ध वह मानो विशाल उत्कट बाणज्वाला छोड़ रही थी ।

तिल जो घृत और कपास से परिपूर्ण होम द्रव्य-राशि प्राप्त हो गई जो मानो हुहुर-हुहुर कर शांति घोषित करती है कि महासती सीता राम को दी जाए और संधि हो जाए । मही को मानने वाला वह दशानन जीवित रहे और अविघ्न भाव से धरती का उपभोग करे । यहाँ अग्निजाल बढ़ रहा था । यहाँ वानर समूह नाच कर रहा था । माँ अपने पुत्र रूपी वर्तन का आलिंगन नहीं करती । लोग हड़बड़ा कर कहीं भी चले जा रहे थे । भवनों का आरोहण कर अभग्न आग मानो यह देखने लगी कि मैंने कितनी लंका नगरी जलाई है । मानो विट ने ध्यक्षि-चारिणी कामिनी को देखा हो । बाहर पुरवर को इस प्रकार जलाकर तथा कृत्रिम (मायावी) निशाचर समूह को नष्ट कर हनुमान् वायस चला जहाँ पर शिविर सहित राम ठहरे हुए थे ।

(10) 1. A सित्तउ । 2. दिज्जहो । 3. A होइ । 4. A अविग्घु । 5. AP सामगइ । 6. A चलिउ । 7. A ससिवस; P ससिवह ।

धत्ता—भरहे लखणेण सहं सीरपाणि अवलोइउ ॥
तेणंजणहि सुउ सियपुष्पयंतु पोमांइउ ॥10॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिण्ण
महाकव्यपुष्पयंतविरइए महाकव्वे णंदणवणमोडणं लंकाडाहं⁸
णाम सत्तत्तरिणो परिच्छेदो सम्पत्तो ॥१७॥

धत्ता—भरत ने लक्ष्मण के साथ राम को देखा। उन्होंने सूर्य और चन्द्रमा के समान अंजना-
पुत्र (हनुमान्) की प्रशंसा की।

बेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा
विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य में नंदन-वन मोड़ने
और लंकादाह नाम का छिहत्तरवां परिच्छेद समाप्त हुआ।

सतहत्तरिमो संधि

वणु भंजिवि^१ पुरवरु णिड्डहिचि हणुइ^२ णियत्तइ जयसिरिकामे ॥
अज्ज वि जि लोअह लयरवइ पुच्छिउ एम विहीसणु रामे ॥ध्रुवकं॥

1

हेला—सो तेलोक्ककंटओ^३ सहइ कि पराणं ॥

धणुगुणरववियंभियं विलसियं सराणं ॥छ॥

ता भणइ विहीसणु भयणिरीहु
तो करि कुरंग कि तहि^४ चरंति
महिबइ^५ लंकहि जइ होतु देव
तें जाणिउं^६ तुहुं बालिहि कयंतु
जसु भाइ अणंतु अणंतधामु
इय चित्तिवि होइवि सुइसरीरु
आइच्चपायमहिहरि दसासु
अच्छइ विज्जासाहणपयत्तु^७

जइ गिरिवरकंदरि वसइ सीहु ।

5

कायर तहु गंधेण जि मरंति ।

जीवंत एंति तो भिच्च केंव ।

रइवइसुग्गीवसहायवंतु ।

सो विज्जइ विणु कहिं जिणमि रामु ।

इंदइ णियरक्ख^८ करेवि धीरु ।

10

थिरु विरण्णिणु अट्ठोववासु ।

णेरंतरु ज्ञाणारूढचित्तु ।

सतहत्तरवीं संधि

वन को भगत कर, पुरवर को जलाकर हनुमान् के निवृत्त होने पर, विजयश्री की कामना रखने वाले राम ने विभीषण से इस प्रकार पूछा कि विद्याधर आज भी क्यों नहीं आया ?

(1)

त्रिलोक के लिए कंडक स्वरूप बट दूसरों (शत्रुओं) के तीरों सहित धनुष-प्रत्यंचा के शब्द से विकसित चेष्टा को क्या सहन कर सकता है ? तब निष्प्रह विभीषण कहता है, कि यदि भय से निरीह सिंह गिरिवर की गुफा में निवास करता है तो क्या हाथी और हरिण वहाँ विचरण कर सकते हैं ? वे कायर तो उसकी गंध से ही मर जाते हैं । हे देव, यदि राजा लंका में है तो अनुचर जीवित कैसे लौट सकते हैं ? उसने जान लिया कि तुम बालि के लिए यम हो, तथा हनुमान् और सुग्रीव तुम्हारे सहायक हैं । जिसका भाई लक्ष्मण अनंतधाम है ऐसे उस राम को मैं विद्या के बिना कैसे जीत सकता हूँ । यह विचार कर तथा पवित्र शरीर होकर, वीर इन्द्रजीत को रक्षक बनाकर रावण आदित्यपाद पर्वत पर आठ उपवास कर विद्याओं की सिद्धि में प्रयत्नशील तथा

(1) 1. P भुंजिवि । 2. हणुवणियत्तइ । 3. तिल्लोक्क^०; P तइलोक्क^० । 4. A तहिं किम चरंति ।

5. AP जइ महिवइ. लंकहि होतु । 6. P तो जाणिउं । 7. AP णियरक्खणु करिवि । 8. P 'साहणि ।

तं णिसुणिवि आठत्ताहवेण
धाइय ते दुव्वर विग्घकारि

विज्जाहर पेसिय राहवेण ।
हलमुसलसवालतिसूलधारि^१ ।

घत्ता—णहि जाइवि दिणयरचरणगिरि मायावाणरेहिं कयरावहिं ॥
वेढिउ विष्णु व जलहरहिं गज्जणसीलहिं दरिसियचावहिं ॥॥॥

15

2

हेला—धीरणीलवण्णया छण्णगयणभाया ॥

आहूया घणाघणा सुक्कधीरणाया^१ ॥छ॥

वाओलिधूलिबहलंधयारु^२
णिबडिय तडि फोडिय गिरिखयालु
जलु^३ थलु महियलु जलभरिउ सयलु
दरिसिउ मंदोयरिकेसगाहु
बंघवसिरकमलइं तोडियाइं
कुद्धउ दसासु झाणाउ ठलिउ
इंदइणा कहिउं खगेसरासु
णीसेसु वियंभिउ एहु ताव

गडगडिय^३ पडिय पाहाणफारु ।
वरिसाविउ तक्खणि मेहजालु^४ ।
पइ ढोइउ आयसवलणियलु । 5
भइ कुंभयण्णु फणिबद्धबाहु ।
वच्छयलइं विउलइं फाडियाइं ।
कहिं चंदहांसु पभणंतु चलिउ ।
परमेसर खगमायाविलासु ।
तुहुं णिययणियमपबधट्ठु जाव । 10

ध्यान में निरन्तर आरुढ़चित्त होकर स्थित है । यह सुनकर युद्ध को प्रारंभ करने वाले राघव ने विद्याधर भेजे । विघ्न करने वाले एवं मूसल, तलवार और विशूल धारण किए हुए दुर्धर विद्याधर दौड़े गये ।

घत्ता—आकाश में जाकर कोलाहल करते हुए मायावी बानरों ने आदिशम्भु गिरि को उसी प्रकार घेर लिया जिस प्रकार इन्द्रधनुष का प्रदर्शन करते हुए गर्जनशील मेघों के द्वारा विध्याचल घेर लिया जाता है ।

(2)

भयंकर और नीले रंगवाले आकाश भाग को आच्छादित करने वाले, धीरे शब्द करते हुए वे घनीभूत मेघ हो गए ।

चक्रवात की धूल से जिसमें बहल अंधकार है, ऐसे पत्थरों (ओलों) से प्रचुर मेघ गड़गड़ा कर बरसने लगे । बिजली गिरी और विघटित हो गई । मेघ ने तत्क्षण मेघजाल की वर्षा की । जल थल महीथल समस्त जल से भर गए । मंदोदरी के पैरों में लोहे की शृंखला डाल दी । फिर दिखाया मंदोदरी के बालों का पकड़ा जाना और कुम्भकर्ण के हाथों को साँपों से बाँधा जाना । भाईयों के तोड़े गए सिरकमल और फाड़े गए विशाल वक्षस्थल । (यह देखकर) दशानन क्रुद्ध हो उठा । ध्यान से टल गया । चन्द्रहास कहाँ है ? यह कहता हुआ चला । इन्द्रजीत ने विद्याधर राजा से कहा—हे परमेश्वर, यह विद्याधरों की माया का विलास है । यह समस्त फैलाव (माया का) तब तक के लिए है जब तक तुम अपने नियम से भ्रष्ट नहीं होते । तब राजा ने

9. A सबानतिसूल^१ ।

(2) 1. AP 'वीर' । 2. P वाउधूलियबहल^२ । 3. गयघडिय^३ । 4. P मोहजालु । 5. A जलथल-
णहयल जलभरिय ।

ता राएं विज्जादेवयाउ
आयाउ^६ ताउ पंजलियराउ

णिज्झाइयाउ णिहियावयाउ^७ ।
पेसणु महंति पणभियसिराउ ।

घत्ता—भणु दसकंधर धरणिधर हरहुं जीउ अरिवरहु सणामहुं ॥
अम्हई बलवतहं हरिबलहं तसहुं^८ णवर रणि लक्खणरामहुं ॥2॥

3

हेला—ता भणियं महेसिणा जाह जाह तुम्हे ॥

णियभुयजुयसहायया संगरम्मि अम्हे ॥छ॥

सबकहुं सीरिहि लच्छीहरासु
एत्तहि इंदइ अब्भडिउ ताहं
आवट्टइ लोट्टइ जायमण्णु
दरमलइ थोट्टदुग्घोट्टथट्ट^१
परिखलइ^२ बलइ हणु भणइ हणइ
रुंभइ थंभइ तरवारिधार
सीसबकइ फोडइ तडयडत्ति
असिवरइ खलंतइ खणखणंति^३
पइसरइ तरइ कीलालवारि

किं वसणि दीणु भण्णइ परासु ।
मायावियाहं साहामयाहं ।
संघट्टइ फुट्टइ वइरिसेणु ।
सूडइ^४ विसट्ट पडिभडमरट्ट ।
उल्ललिवि मिलइ रिउंसिरइं लुणइ ।
णिहणइ^५ विहणइ पवरासवार ।
मुसुमूरइ छत्तइं कसमसंति ।
कडियलकिंकिणिउ^६ झुणुझुणंति ।
पडिवक्खहु पाडइ पलयमारि^७ ।

5

10

(रावण) ने आपत्तियों का नाश करनेवाली विद्याओं का ध्यान किया । अंजलियाँ बांधे हुए वे विद्याएँ आईं, और सिर से प्रणाम करती हुई आज्ञा की प्रशंसा करने लगीं (माँगने लगीं) ।

घत्ता—हम लोग केवल प्रसिद्ध लक्ष्मण और राम की सेनाओं से युद्ध में डरते हैं । हे राजन्, बताओ किस महाशत्रु के जीव का अपहरण करें ?

(3)

तब दशानन ने कहा, तुम लोग जाओ-जाओ । अपनी दोनों भुजाएँ हैं, जिनकी सहायता से संग्राम में मैं ऐसा हूँ । क्या संकट में लक्ष्मी को धारण करने वाले लक्ष्मण और राम से दीन वचन कहे जाएँ ? यहाँ इन्द्रजीत उन मायावी वानरों से चिढ़ गया । क्रुद्ध वह शत्रुसेना को घुमाता है, चूर-चूर करता है, उससे भिड़ता है और नष्ट कर देता है, समर्थ और दुर्धर छटा को कुचल देता है । विशिष्ट शत्रुसेना के गर्व का नाश कर देता है । परिस्खलित होता, मुड़ता, 'मारो-मारो' कहकर मारता, उछलकर मिल जाता और शत्रुओं के सिर काट डालता । तलवार की धार को रोक देता और स्तंभित कर देता । प्रबल घुड़सवारों को नष्ट कर चूर-चूर कर देता । तड़-तड़ कर शिरस्त्राणों को तोड़ देता । कसमसाते छत्रों को चूर-चूर कर देता । गिरती हुई तलवारें खनखनाने लगती हैं, कटितलों की किकिणियाँ रुनझुन करने लगती हैं । वह रक्त के जल में प्रवेश करता और तिर जाता । शत्रु-पक्ष पर प्रलय मारि मचा देता । अपने गर्व का निर्वाह

6. A वणदेवयाउ । 7. P आइयउ । 8. P तसहुं धरणी सहं लक्खण^६ ।

(3) 1. A 'दुग्घट्ट' । 2. AP साडइ । 3. AP पडिखलइ । 4. P णिहणइ । 5. AP खलखलंति ।

6. AP किकिणियउ रुणुरुणंति । 7. A पडयमारि ।

इंदइ गिरत्थ कयवूढगव्व

आयासथलि गय पमय⁸ सव्व ।घत्ता—विहुरि वि धीरु अविसण्णमणु⁹ ण चलइ कि पि सुहडहंकारहु ॥लंकेसरु लंकहि गंपि थिउ खंधु समोडिडवि¹⁰ गुररणभारहु ॥3॥

4

हेला—कयरिउविग्घविठ्ठभमा कमियगगणभाया¹ ॥

आया राममंदिरं विविहखयरराया ॥छ॥

ता इच्छियणियणाहसिवेणं

हणुमंतं सुग्रीवणिवेणं ।

गिरिसंमेयसिहरसिद्धाओ²

अणिमाइहि रिद्धिहि रिद्धाओ ।

विज्जाओ परसाहणियाओ

केसरिखगवइवाहिणियाओ ।

5

दिण्णाओ दुल्लंघबलाणं

वीराणं³ गोविदबलाणं ।

पण्णत्तीए रइयं जाणं

रयणमयं मणहारि विमाणं ।

कूडकोडिसंघट्टियचंदं

दिव्वं⁴ कइवयजोयणहंदं ।भित्तिणिरुवियचित्ति⁵ सुरुवं⁶

बद्धसिणिद्धिचिधचंदोवं ।

रणझणंतमणिकिकिणिजालं⁷

हेममयं तोरणसोहालं ।

10

णाणाबिहुदुवाररमणीयं

पारंभियसुरसुंदरिणीयं ।

आयण्णिमणरखयरासीसो

अवखययहेदेवणियसोसे ।

करने वाला इन्द्रजीत निरस्त्र हो उठा । सारे वानर आकाश-तल में चले गए ।

घत्ता—संकट में भी धीर, अविषण्णमन वह अपने सुभट होने के अहंकार से जरा भी विचलित नहीं होता । लंकेश्वर लंका में जाकर स्थित हो गया, अपने कंधों पर भारी रण-भार को उठाने के लिए ।

(4)

जिन्होंने शत्रुओं में विघ्न का विभ्रम उत्पन्न किया है और आकाश भाग का उत्संघन किया है ऐसे विविध विद्याधर राजा राम के घर आए ।

अपने स्वामी का कल्याण चाहने वाले हनुमान् और सुग्रीव राजा ने, समेदशिखर पर्वत पर सिद्ध की गई अणिमादि ऋद्धियों से संपन्न एवं दूसरों को सिद्ध करनेवाली सिंहवाहिनी गरुड़ वाहिनी आदि विद्याएँ अलंघनीय बलवाले वीर लक्ष्मण और राम को दे दीं । प्रज्ञप्ति विद्या द्वारा यान और रत्नमय सुन्दर विमान रचा गया जिसकी शिखरपंक्ति चन्द्रमा से संधर्षित थी । वह दिव्य और कितने ही योजन विशाल था । जो दिवालों पर बनाए गए चित्रों से सुन्दर था, जिसमें सिन्धु ध्वज चंदोबा बँधा हुआ था, मणियों की किकिणियों का सुन्दर जाल जिसमें रुनझुन-रुनझुन कर रहा था, जो स्वर्णमय तोरणों से सुन्दर था, नाना प्रकार के द्वारों से जो शोभनशील था, जिसमें सुन्दर देवगीत प्रारंभ किए गए थे, ऐसे उस विमान में मनुष्यों और विद्याधरों के आशीर्वादों को सुननेवाले तथा अक्षत दही दूध से अंचित सिर वाले राम,

8. A पवय । 9. ण विसण्णमणु । 10. AP समोडिडि ।

(4) 1. AP गयणं 2. AP⁹सिहरि सिद्धाओ । 3. AP धीराणं । 4. A दिव्वा रुइ⁹ । 5. A भित्तिणिरुविय । 6. AP वित्तसरुव । 7. AP रुण्णंत⁹ ।

तत्पारूढो देवो रामो
दरिसियहयमुसलंकुसपासं
चलियं गगणे खयराणीयं
णाणहरणविहसियदेहं

हरि⁸ हरिसिल्लो अंजणसामो ।
भूगोयरसेणं णीसेसं ।
सामिकज्जि परिछेइयजीयं ।
गयवरदंतवियारियमेहं ।

15

घत्ता—संदाणिय णहि⁹ ससिदिवसयर पेत्तापेल्लि¹⁰ जाय¹¹ खगरायहं ॥
धयछत्तचलंतहं चामरहं हरिकरिरहवरभडसंघायहं ॥4॥

5

हेला—णवणित्तिससंणिहे णहयले चलंतं ॥

मयगलमयजले¹ बलं दीसए वहंतं ॥छ॥

करिछाहिहिं जलकरिवर विलग
धावन्ति मयर पलगिलणकाम²
सीमंतिणिपडिरुवइं णियन्ति
उज्जलमोत्तियभायणधरेहिं
गज्जइ समुद्द वाहरइ णाइ
सायर लंधिवि परिहरिवि संक
किउ कलयलु रणपडहइं³ हयाइं

जलणर णरवरपडिबिबभग्ग ।
अस सुसुमार गंभीरथाम ।
जलदेवयाउ सीसइं धुणंति ।
पवणुद्ध यवलवीईकरेहिं ।
मरुक्कपियंगु भयवसु व थाइ ।
वेडिय विज्जाहरणिवहिं लंक ।
भीरुहं⁴ चित्तइं विहडिवि गयाइं ।

5

लक्ष्मण तथा प्रसन्न हनुमान् आरूढ़ हो गए । जिसमें घोड़ों, मूसलों, अंकुशों और पासों का प्रदर्शन किया गया है ऐसा मनुष्यों का निःशेष सैन्य चला । आकाश में स्वामी राम के लिए प्राणों की बाजी लगाने वाली, नाना अस्त्रों से अलंकृत शरीर वाली और गजवरों के दांतों से मेघों को विदीर्ण करने वाली विद्याधरों की सेना चली ।

घत्ता—आकाश, सूर्य, चन्द्रमा स्थित रह गए । विद्याधर राजाओं के चलते ही ध्वजों, छत्रों, चामरों, घोड़ों, हाथियों, रथवरों और योद्धाओं से संघात से रेलपेल मच गई ।

(5)

नव कृपाण की तरह कांतिवाले आकाश में चलता हुआ तथा मदगज के मदजल में बहता हुआ सैन्य दिखाई दे रहा था ।

गजों के प्रतिबिम्बों से जलगज लग गए । जलमानुष नरवरों के प्रतिबिम्ब से भग्न हो गए । मांस खाने की इच्छा से मगर दौड़ रहे थे । मत्स्य और शिशुमार गंभीर शक्तिवाले थे । स्त्रियों के प्रतिबिम्बों को देखकर जलदेवियां अपना सिर धुनने लगतीं । उज्जवल मोती रूपी पात्रों को धारण करने वाले तथा हवा से कंपित चंचल लहरों रूपी हाथों से समुद्र गरज रहा था, मानो उसे निमंत्रण दे रहा हो । हवा से प्रकंपित शरीर वह ऐसा लगता जैसे भयभीत हो । लंका छोड़कर, समुद्र को पार कर, विद्याधर राजाओं ने लंकानगर को घेर लिया । उन्होंने कोलाहल किया और युद्ध के नगाड़े बजवा दिए । कायरों के चित्त भग्न हो गए । सातों पाताल थर्रा उठे । उन्मार्ग

8. P omits हरि । 9. A °णहससि° । 10. AP पेत्तावेत्ति । 11. P जाइ ।

(5) 1. मयरायले जले; P मयरायलजले । 2. A °गलिण° ।

सत्त वि पायालइं थरहरंति उम्मगलम सायर तरंति । 10
 विसहर भयरसवस विमु मुयंति कुंचियकर दिसकरि कुक्करंति ।
 दित्तइं णक्खत्तइं कलदलंति झुल्लंतइं णहि एक्कहि मिलंति ।

धत्ता—वाइत्तयसइसमुच्छलेण संखोहणु जायउ तेल्लोवकहु ॥

किं जाणहुं णहि तडि तडयडिय पडिउ विबु समियंकहु अक्कहु ॥ 5

(6)

हेला—ता भुवणुत्तुरडिणिवडणे¹ किं हुओ णिघोसो ॥

आहासइ दसाणणो गाढजायरोसो ॥ छ ॥

भायर किं सुम्मइ घोरु णाउ किं उड्डइ धूलीरयणिहाउ ।
 दीसइ महिमंडलु महिहरेहि² णहयलु संछण्णउं णहयरेहि ।
 ता विहसिवि पभणइ कुं णयण्णु अववरिउं देव पडिक्खसेणु । 5
 हा हरि आढत्तउ जंबुएहि³ वइवसु जीवहि जीवियचुएहि ।
 सेरिहु मयमत्ततुरंगमेहि⁴ पक्खिवइ खलियउ उरजंगमेहि ।
 किं तुज्झु वि उप्परि एंति⁵ सत्तु किं तुहुं वि समिच्छहि परकलत्तु ।
 लइ कुक्कउ⁶ दीसइ विहिविहाणु भिडु एवहि पीडिवि रणि किवाणु ।
 तं णिसुणिवि भणिउं दसाणणेण जीवतं मइ पंचाणणेण । 10

में लगे हुए वे उसमें बहने लगे । सांप भय के कारण विष उगल रहे थे । अपनी सूंड टेढ़ी कर दिग्गज चिंघाड़ रहे थे । चमकते नक्षत्र आकाश से गिर रहे थे । आंदोलित वे आकाश में एक हो रहे थे ।

धत्ता—वाद्यों के शब्दों के उठने से तीनों लोकों में संक्षोभ फैल गया । क्या जाने आकाश में बिजली तड़तड़ा कर गिरी अथवा चंद्र सहित सूर्य का बिम्ब गिर पड़ा !

(6)

जिसे अत्यन्त क्रोध उत्पन्न हुआ है, ऐसा रावण पूछता है—क्या एक दूसरे पर स्थित भुवनों के गिरने का यह निर्घोष हुआ है ?

हे भाइयो, यह घोर नाद क्यों सुना जाता है ? धूल का यह समूह क्यों उड़ रहा है ? मही-मंडल महीधरों से और आकाशतल नभचरों से क्यों आच्छन्न है ? तब कुंभकर्ण हँसकर कहता है—हे देव, शत्रु की सेना आ पहुँची है । खेद है कि हरिणों ने सिंह को आक्रांत किया है और यम को जीवन से च्युत जीवों ने । मदमत्त अश्वों द्वारा महिष घेर लिया गया है । साँपों ने गरुड़ को स्थलित कर दिया है । क्या तुम्हारे ऊपर भी शत्रु आ सकता है ? क्या तुम भी परस्त्री की इच्छा करते हो ? लो विधि का विधान पूरा होता दिखाई दे रहा है ! लो अब युद्ध में कृपाण को पीड़ित कर भिड़ो ! यह सुनकर रावण ने कहा—मुझ सिंह के जीते जी शत्रु रूपी मृग मिलकर क्या कर लेंगे ?

3. A¹ रणतूरई । 4. P भीरहुं । 5. A बुक्करंति; P कुक्कुवंति ।

(6) 1. A 'तकडिणिवडणे; P 'त्तुरडिणिवडणे । 2. A महियलेहि; P महियरेहि । 3. A मयमत्तु । 4. हुंति । 5. कुक्क ।

अरिहरिण मिलेष्पिणु किं करंति
धवः पावउ भुविश्वय पलयमारि

असिणहरस्रडणिय⁶ धुउ मरंति ।
पहणाविय लहुं संणाहभेरि ।

घत्ता—विरसंतई नरकरयलहयई तूरई णाई कहंति दसासहु ॥

राहवहु सीय णउ दिण्ण पई कि उक्कंठिउ वडवसवासहु ॥6॥

7

हेला—कंचणकवयसोहिओ णवतमालवण्णो ॥

संभारायराइओ णं घणो रवण्णो ॥छ॥

संणज्झमाणु रिउतासणेण
असिविज्जुइ विमलइ विष्फुरंतु
भडु को वि णिहालइ वाणपत्तु
भडु को वि पलोवइ तोणजुम्मु
भडु को वि मुयइ संणाहभारु
कासु वि पइसरइ ण पुलइयाण
किं घणुणा कयवहुसंकएण
भडु को वि भणइ हउं कोंतवाहु
मायंगकुं भु णिहिकुं भु⁷ जेव

भडु सोहइ दिव्वसरासणेण ।
जीविययरु जीवणु जणहु दितु ।
लइ एयहु एवहि रिउ जि पत्तु ।
णं रणसिरिऊरुजुयलु¹ रम्मु ।
किं कासु वि रुच्चइ लोहसारु² ।
सो³ फुट्टइ रिउणु व सुयणसंगि ।
चरणेण वि आहववंकएण ।
कोंतें वाहमि⁴ रिउरुहिरवाहु⁵ ।
हउं फोडमि अज्जु गयाइ तेव ।

5

10

मेरी तलवार रूपी नख के सपट्टे में पड़कर वह निश्चित रूप से नाश को प्राप्त हो जाएगा । शूखी महामारी तृप्ति को प्राप्त होगी । उसने शीघ्र प्रस्थान की रणभेरी बजवा दी ।

घत्ता—मनुष्यों के हाथों से आहत और बजते हुए तूर्य मानो रावण से कह रहे हैं कि तुमने राम की सीता नहीं दी, तुम यम के निवास के लिए उत्कंठित क्यों हो ?

(7)

स्वर्णकवच से शोभित नव-तमाल वृक्ष के समान वर्णवाला रावण ऐसा लगता था मानो संध्याराग से शोभित सुन्दर वन हो । शत्रु को त्रास देनेवाले दिव्य धनुष से तैयार होता हुआ वह सुभट शोभित हो रहा था । विमल तलवार रूपी बिजली से चमकता हुआ तथा मेघ की तरह जीवन (यासवृत्ति और जल) देता हुआ कोई योद्धा बाणपुंख देखता है कि लो इससे अभी शत्रु प्राप्त हुआ । कोई सुभट तरकस युग्म को इस प्रकार देखता है मानो रणलक्ष्मी का सुन्दर उरयुगल हो । कोई योद्धा कवचभार को छोड़ देता है । क्या किसी को भी लोहभार अच्छा लगता है ? किसी के पुलकित शरीर में वह (कवच) प्रवेश नहीं करता, सुजन का संग होने पर वह दुष्ट की तरह नष्ट हो जाता है । बहु (बहुत, वदू) की आशंका करने वाले धनुष से क्या ? युद्ध में वक्र चलने वाले चरण से क्या ? कोई सुभट कहता है कि मैं कोंत धारण करता हूँ, कोंत से मैं शत्रु के रुधिर को प्रवाहित करूँगा । निधियों के घड़ों की तरह मैं आज गदा से गजकुंभों को फोड़ूँगा । कोई सुभट

6. Ad °णहर° । 7. A धुउ; P धउ; K घव and gloss तृप्तिम् ।

(7) 1. P °उरुजुयरम्मु । 2. AP लोहभार । 3. A थाहमि । 4. A °वाहु । 5. A कुंभणिहि ।

भडु को वि भणइ महिघत्तियाइ^१
अवरु वि करिरयणहं देमि हत्थु

दक्खालमि धूलइ मोत्तियाइ ।
णियणिवरिणमेत्तावणसमत्थु ।

धत्ता—दहवयणहु णिच्च विरत्तियहि को वि भणइ हियवउं संतावमि ॥
अणरसियहि सीयहि तणिय तणु राहवरत्तकुसुं भइ रावमि ॥7॥

15

8

हेला—आरूढा महासवारवाहिया तुरंगा ॥

कंचणसारिसज्जिया^२ चोइया मयंगा ॥छ॥

पवणपहयविलंबियघयवडं^३
सयडचक्कचिक्करणपडिरवं
विप्फुरंतकरवालधारयं
पणवतुणवञ्जल्लरिमहासरं^४
चलियधूलिमइलियदिसासुहं
इंदचंदणाइंदतासणं^५
णिग्गयं वलं बहलकलयलं
दुमुदुमंतरणहसमदलं^६

विविहजाणजंपाणसंकडं ।
बद्धरोसभडभिउडिभइरवं ।
हणु भणंत दुक्कासवारयं ।
चित्तछत्तछण्णंवरंतरं ।
पलयकालकालगिसंणिहं ।
णं कयंतरायस्य सासणं^७
रहियणहयलं पिहियमहियलं ।
जाययं च पडिसुहडगोदलं ।

5

10

कहता है—धरती पर पड़े हुए स्थूल मोतियों को मैं आज दिखाऊँगा और फिर मैं अपने राजा के शृण को छुड़ाने में समर्थ गजरत्नों को दूँगा ।

धत्ता—कोई कहता है—नित्य विरक्त (विशेष रूप से रक्त) रावण के हृदय को मैं सताऊँगा और अरसिक (अरक्त) सीता के शरीर को राघव के लाल कुसुंभ रंग से रंजित करूँगा ।

(8)

महान् अश्वारोहियों द्वारा संचालित अश्व चल पड़े (आरूढ़ हो गए) । स्वर्ण की काठी से सज्जित हाथी प्रेरित कर दिये गए । जिसमें हवा से आहत ध्वजपट अवलंबित है, जो विविध धानों और जंपानों से व्याप्त है, जिसमें गाड़ियों के चकों के चिक्कार का प्रतिशब्द हो रहा है, जो बद्धरोष योद्धाओं की भ्रुकुटियों से भयंकर है, जिसमें तलवारों की धाराएँ विस्फुरित हैं, मारो-मारो कहते हुए अश्वारोही पहुँच रहे हैं, जिसमें प्रणव तुणव व झल्लरी का महाशब्द हो रहा है, जिसमें चित्र-विचित्र छत्रों से आकाश आच्छादित है, जिसमें उड़ती हुई धूल से दिशामुख मैले हैं, जो प्रलयकाल की कालाग्नि के समान है, जो इन्द्र, चन्द्र और नागेन्द्र के लिए आस दायक है मानो यमराज का शासन हो, जिसमें अत्यन्त कोलाहल हो रहा है, जिसने आकाशतल को आच्छादित कर लिया है और पृथ्वी को ठक लिया है, जिसमें युद्ध के मृदंग डम-डम बज रहे हैं, जिसमें प्रतिभटों की तुमुल हर्षध्वनि हो रही है । तलवारों के आघात से जहाँ सिर छिन्न हो चुके

6. P महिघत्तियाइ ।

(8) 1. P 'सारसज्जिया' । 2. AP 'पहयपविलंबिय' । 3. A पवणणय' । 4. AP 'दणुइंदतासणं' ।

5. P गसणं । 6. A 'मंदलं' ।

खगगघायविच्छिन्नसीसयं
कोतकोटिसंघट्टपेल्लियं
विचलियंतगुप्पंतचरणयं⁷

हुंकरंतभूभंगभीसयं⁸
वणगलंतकीलालरेल्लियं ।
हयमयासणीदिण्णकरणयं⁹ ।

घत्ता—पणीविधररह्वरामभयवइ सीयाकारणि अमरिसपुण्णइ ॥

अभिभट्टइ गिरितरुवरकरइ मायावाणरणिसियरसेण्णइ ॥8॥

15

9

हेला—भसमुग्गरमुसंडिहि¹ णिहयरवरंगं ॥

जायं दंडसंजुयं दूरमुक्कभंगं ॥छ॥

रहिएहि² रहिय तुरएहि तुरय
पायालहि वरपायाल खलिय
हरिखुरखणित्तखउ³ णं मरंतु
आयासचडिउ⁴ णं पुहइमाणु⁵
चवलेण सुद्धवंसहु कएण
दीसइ पंडुरु⁶ कविलंगु केव

रण रुद्ध एंत⁷ दुरएहि दुरय ।
कमसंचालेण⁸ धरित्ति दलिय ।
उट्टिउ धूलीरउ पय धरंतु ।
संताविर⁹ तें पिहिउ भाणु ।
णिवडंतु णिवारिउ णं धएण ।
छत्तारविदि मयरंदु जेव ।

5

हैं, जो हुंकार करते हुए भूभ्रंगों से भयंकर है, जो कोत परम्परा के संघट से प्रेरित है, जिसमें घावों से रिसते रक्त की धाराएँ हैं, जहाँ गिरी हुई आँतों में पैर उलझ रहे हैं, तथा अरव और गजों के आसनों पर शस्त्र रखे हुए हैं ऐसा सैन्य निकल पड़ा ।

घत्ता—जिन्होंने राघव और रावण के चरणों में प्रणाम किया है, जो अमर्ष से भरी हुई थीं, गिरि तथा तरुवर जिनके हाथों में हैं, ऐसी मायावी वानरों और राक्षसों की सेनाएँ सीता के कारण युद्ध में भिड़ गई ।

(9)

इस, मुद्गर और मुसंडि शस्त्रों के द्वारा जिसमें श्रेष्ठ मनुष्यों के अंग आहत हुए हैं तथा जो विघटन से मुक्त है, ऐसा दंडयुक्त युद्ध हुआ ।

रथिकों (सारथियों) से रथिक, तुरगों से तुरंग और गजों से गज आते हुए अवरुद्ध कर लिए गए । पैदल सैनिकों के द्वारा पैदल सैनिक स्खलित (पराजित) कर दिए गए । पैरों के संचालन से धरती दलित हो गई । घोड़ों के खुरों रूपी खनित्रों द्वारा खोदा गया धूल समूह पैरों से लगता हुआ उठा मानो आकाश में जाते हुए पृथ्वी के प्राण हों । संतापकारी होने से उस धूल ने सूर्य को ढक लिया । शुद्ध वंश के कारण, चंचल ध्वज ने (अपने ऊपर) जमती हुई धूल का निवारण किया । सफेद और कपिल अंगवाली वह ऐसी लगती है जैसे छत्रों रूपी अरविन्दों का

7. P भीमयं । 8. AP विचलियंतं । 9. P गयसिणी⁰ ।

(9) 1. A भसमुसलमुसंडिहि णिहिय⁰ । 2. A रहएहि । 3. AP यंत । 4. AP ⁰संचारेण । 5. A णं खउ मरंतु । 6. AP आयासि चडिउ । 7. AP ⁰माणु । 8. A संताउ करंतु विणिहिउ भाणु; P संताव करंतें पिहिउ भाणु । 9. P पंडुर ।

खुप्पइ¹⁰ मयथिप्पिरि करिकवोलि¹¹ भणु को ण¹² विलगइ दाणसीलि ।
 महुर पडिवक्खीहुयउ तासु किं पिच्छे फेडइ चियदिसासु । 10
 जंपाणि गवक्खहि पइसरंतु पररमणिथणत्थलि मंद¹³ थंतु ।
 रउ¹⁴ भावइ महु¹⁵ णं बीउ जारु तें छाइउ दहमुहवहुवियारु¹⁶ ।
 असिसलिलि णिलीणु ण¹⁷ पंकु होइ चमराणिलेण उल्ललिवि जाइ ।
 मउडगि पडंतु जि कुंडलासु धावइ मेहु व रविमंडलासु ।
 मइलइ मंडलियहं उरएसु ठंकइ सियहारावलिविलासु । 15

घत्ता—रयमेलउ मइलिवि भुवणयलु कलिकालेण समाणउ ॥

करिगिरिवणणिज्जरवियलियहि¹⁸ सोणियजलवाहिणियहि लीणउ ॥9॥

10

हेला—जा कोट्टं पलोट्टियं कवडवाणणेरेहि ॥

ता रविकित्ति णिग्गओ सहं¹ सक्किरेहि ॥छा॥

तओ तेण भूमीससेणाहिवेणं पिसवकासणुम्मुक्कजीयारवेणं ।
 रहत्थेण सामत्थधत्थाहिएणं² तमोह व्व सारंगविबंकिएणं³ ।
 विहिज्जंतकंधाच्छिरं⁴ छिण्णमुंडं रसालुद्धभेडंखज्जंतहंडं⁵ । 5

मकरंद हो । वह मद से गीले हाथी के गंडस्थल पर जम जाती है । नताओ दानशील व्यक्ति से कौन नहीं लगता ? अमर उस धूल का प्रतिपक्षी (शत्रु) हो गया । क्या वह अपने पंख से दिशामुख में व्याप्त उसे हटाता है ? जंपानों और गवाक्षों से प्रवेश करता, शत्रुओं की रमणियों के स्तनतलों पर धीरे स्थित होता हुआ रज (धूल) मुझे ऐसा लगता है मानो दूसरा जार हो । उसने रावण की पत्नी के विकार को आच्छादित कर लिया । तलवार रूपी जल में लीन वह पंक नहीं होता । चमर की हवा से शिथिल होकर वह चला जाता है । भुकुटों के अग्रभाग पर पड़ता हुआ रज, कुंडलों पर इस प्रकार जाता है जैसे सूर्यमंडल पर मेघ जा रहा हो (उसे आच्छादित करने के लिए) । मंडलीक राजाओं के उरप्रदेशों को मैला करता है, उनकी श्वेत हारावलि के विलास को आच्छादित करता है ।

घत्ता—इस प्रकार रज समूह, कलिकाल के समान भुवनतल को मैला कर, हाथी रूपी पर्वत के वन-निर्झरों (व्रण रूपी झरनों, वन के झरनों) से विगलित रक्त रूपी जल की नदी में लीन हो गया ।

(10)

जब मायावी वानरों ने दुर्ग को ध्वस्त कर दिया तो (रावण का) सेनापति अर्ककीर्ति अपने अनुचरों के साथ निकला । तब रथ पर स्थित उसने, जिसमें भूपतियों के सेनाधिपति हैं, जिसमें धनुषों की प्रत्यंचा का शब्द किया जा रहा है, जिसमें कंधे और सिर छिन्न हो रहे हैं, मुंड कट चुके हैं, रस के लोभी भेरुण्ड पक्षी धड़ खा रहे हैं, जो झूलती हुई आंतों से झरते हुए रक्त से आरक्त

10. P मा खुप्पइ । 11. P करिकणेति । 12. A को वि ण लग्गइ । 13. A मंदु । 14. A णउ भावइ ।
 15. P णं महु । 16. A दहमुहमुहवियारु । 17. AP णउ । 18. "गिरिवरणिज्जर" ।

(10) 1. AP सह । 2. A भम्माहिएणं । 3. सारंगविधंकिएणं । 4. A "खण्णच्छिरं" । 5. A तुडं ।

ललंतंतवेढंतथिप्पंतरसं	सदप्पं खुरप्पोहृच्छिज्जंतछत्तं ।
भिडंतं पडंतं रसार्त्तणेत्तं	समुब्भूयपासेयधाराहि सित्तं ।
गइंदुग्गदंतग्गभिज्जंतगतं	दिसासुं विसंतं वसातुप्पलित्तं ।
गयाधट्टणुट्टुग्गिजालापलित्तं ⁶	धिरत्तेण साहारियासारमित्तं ।
समप्पंतइच्छं सरुब्भिणवच्छं	महाघायमुच्छाविणिम्मीलियच्छं ।
विरुज्जंतजुज्जंतपाइवकचंडं	सकोदंडकंडं कयं खंडखंडं ।
वराहिदमाणेहि वाणेहि रुद्धं ⁸	रणे रामएवस्य सेण्णं णिरुद्धं ⁹

धत्ता—तहुपरबलु किमिणु¹⁰ व ओसरित्तं मग्गणवन्दु धुलंतउ पेक्खइ ॥

आवरणु करइ तणु संवरइ णवउ कलत्तु व अप्पउ रक्खइ ॥10॥

11

हेला—ता विज्जाहराहिवो पउरकोवपुण्णो¹ ॥

सणद्धो महाभडो अवि य कुंभयण्णो ॥छ॥

पट्टु कुंभु णिकुंभु अमेयसत्ति	इंदइ इंदाउहु इंदकित्ति ।
इंदीवरलोयणु इंदवम्म ²	इयदेहु सूरु दुम्महु अगम्म ³ ।
महवंतु ⁴ महामहु बुहमुहक्खु	बलकेउ महाबलु धूमचक्खु ।

5

है, जो दर्प सहित है, जिसमें खुरपों के समूह से छत्र उखाड़ दिए गए हैं, जो लड़ती और पड़ती है, जिसके नेत्र रक्त से लाल हैं, जो निकली हुई प्रस्वेदधारा से सिंचित है, जिसमें शरीर गजेन्द्रों के निकले हुए दाँतों के अग्रभाग से भेद दिए गए हैं । दिशाओं में प्रवेश करती हुई, जो चर्चों रूपी घी से लिप्त है, जो गदाओं के संघर्ष से उत्पन्न आग से प्रदीप्त है, जिसने अपनी स्थिरता से श्रेष्ठ मित्रों को धैर्य बंधाया है, जो समर्पण की इच्छा कर रही है, जिसके वक्ष तीरों से घायल हैं, महान् आघातों की मूर्च्छा से जिनकी आँखें बंद हो गई हैं । जो विरद और संघर्षरत पैदल सैनिकों से प्रचंड है, ऐसी सेना को धनुष और बाण सहित उसी प्रकार छिन्न-भिन्न कर दिया, जिस प्रकार चन्द्रमा अंधकार समूह को नष्ट कर देता है । श्रेष्ठ नागों के आकार के तीरों से उसने राम देव की सेना को अवरुद्ध कर दिया ।

धत्ता—उसका शत्रुसैन्य कृपण की तरह, मग्गणविद (बाणों का समूह, याचकों का समूह) को व्याप्त देखकर हट गया । वह नववधू की तरह आवरण करती है और शरीर को ढकती है । अपनी रक्षा करती है ।

(11)

तब प्रचुर कोप से पूर्ण विद्याधर राजा रावण तैयार हुआ और महासुभट कुंभकर्ण भी ।

प्रभु कुंभ और अप्रमेय शक्ति निकुंभ, इन्द्रजीत, इन्द्रायुध, इन्द्रकीर्ति, इंदीवर लोचन, इन्द्रवर्मा, इतदेह, सूर दुर्मुख, अगम्य महवंत, महामधु, बुधमुख, बलकेतु, महाबल, धूम्रचक्षु,

6. A खुरप्पोहि; P खुरप्पोहं । 7. AP षट्ठणुत्थिणि⁷ । 8. A वराहिदमाणेहि । 9. A विरुद्धं । 10. AP किमिणु ।

(11) 1. A पवरं । 2. P इंदवम्म । 3. P अगम्म । 4. P महवंतु ।

खरदूषणु मउ हृत्थप्पहृत्थु	संगज्झइ भडयणु रणसमत्थु ।	
असिधेणु व केण वि दड्ढणिबद्ध ⁵	परसासाहारहु किर पयद्ध ⁶ ।	
रणदिक्खहि थाइवि दिट्ठिरम्म	केण वि धरियउ गुणवन्तु धम्म ।	
संघइ समाणसरकोडि केव	परलोउ महइ वायरणु जेव ।	
केण वि चित्तिवि णियनूवहु ⁷ कुसलु	रिउकणकंडणु कडिडउं मुसलु ।	10
केण वि असिवाणिइ णयण दिट्ठ	मीणा इव बेण्णि रमंति इट्ठ ।	
केण वि दरिसाविउ अद्धयंदु	थिउ धरिवि णाइं णहभायछंदु ⁸ ।	
संगामखेत्तकरणुज्जमेण	केण वि हलु गहिउ ⁹ सविक्कमेण ।	
केण वि गहियउ ¹⁰ फणिपासु सारु	सोहइ णं संगरसिरिहि ¹¹ हाइ ।	

घत्ता—मायंगनुरंगविमाणधयरहवरवाहणदूसंचारें ॥

15

संगद्ध कूद्ध जयलूद्ध भड उब्भड णिग्गय णयरदुवारें ॥11॥

12

हेला—अमरसमरभरुव्वहो थिरकिणंकखंधो¹ ॥

कुलधवल्लो धुरंधरो वहरिवाहुबंधो ॥छ॥

खरदूषण, मद, हस्त, प्रहस्त आदि युद्ध में समर्थ योद्धाजन तैयार होने लगे। किसी ने असि को घेनु की तरह मजबूती से पकड़ लिया था और उसका प्रयोग परसासाहार (दूसरों की मांसों के आहार, परशस्याहार—दूसरों के धान्य के आहार) के लिए किया। किसी ने रणदीक्षा में स्थित होकर दृष्टिरम्य डोरी सहित धनुष (गुण सहित धर्म) धारण कर लिया। वह व्याकरण के समान बाण कोटि (स्वर कोटि) को साधता है और व्याकरण के समान शत्रु (उत्तर वर्ण) का लोप चाहता है। किसी ने अपने राजा की कुशलता का विचार कर, शत्रु रूपी कर्णों को कूटने वाले मूसल को निकाल लिया। किसी ने तलवार के पानी में मत्स्यों की तरह रमण करते हुए अपने दोनों इष्ट नेत्रों को देखा। किसी ने अर्धेन्दु को बताया, जो ऐसा लगता था मानो आकाश भाग ने ही अर्धचन्द्र धारण कर रखा हो। युद्ध के क्षेत्र में उद्यम करने के लिए किसी सुभट ने अपने पराक्रम के साथ हल ग्रहण कर लिया। किसी ने श्रेष्ठ नागपाश ले लिया जो मानो युद्धलक्ष्मी के हार की तरह शोभित था।

घत्ता—हाथी, घोड़ा, विमान-ध्वज और रथ श्रेष्ठ वाहनों से, जिसमें चलना मुश्किल है ऐसे नगरद्वार से क्रुद्ध संनद्ध और जय के लोभी वे उद्भट सुभट निकले।

(12)

जो देवयुद्ध का भार उठाने में समर्थ है, जिसका कंधा स्थिर और घर्षण चिह्नों से युक्त है, जो कुल-धवल है, धुरंधर है, जो शत्रुओं के बाहुओं को बाँधने वाला है, जो रत्नों से निमित्त

5. A दड्ढणिबद्ध । 6. AP पयद्ध । 7. AP ^०णिवहु । 8. AP णहभाइ चंदु; K णहभायचंदु but gloss सादृश्यं; T णहभायछंदु नभोभागसादृश्यं । 9. P गहिउ विक्कमेण । 10. AP लइयउ । 11. A संगरि ।

(12) 1. AP थिरु ।

रयणमिन्द्र दिग्गजनिधिरधमशीरो
 विक्रमवक्रमियमहिबलयगिरिसायरो ।
 पवणवद्वसवणजमवरुणवलभंजणो 5
 असुरसुरखयरफणितरुणिमणरंजणो ।
 गरलतमपडलकालिदिजलसामलो
 सुरहिमयणाहिउच्छलिततणुपरिमलो ।
 कोवगुरुजलणजालोलिजालियदिसो 10
 सरलरत्तच्छिविच्छोहृणिज्जियदिसो ।
 वीरपरिहवपरो रद्वयरणपरियरो
 मृक्कगुणरावधनुदंडमंडियकरो ।
 णिहिलजगगिलणकालो व्व दुक्को सयं
 छत्तच्छणो महंतो जणंतो भयं ।
 कद्विणभुयफलिसयलिकं पावणो 15
 कसणघणकरिवरारुद्धओ रावणो ।
 असमपरविसमसाहसणिही णिगओ
 विमलकमलाहिसेयस्स णं दिग्गओ ।
 हरिकरिकमाहया हल्लिया मेइणी
 रणसहिरलंपड्डी णच्चिया डाइणी ।
 कुलिसकुडिलंकुरारावलीराइयं
 धगधगतं पुरो चक्कमुद्धाइयं ।

निशाचर-ध्वजों से भयंकर है, जिमने अपने विक्रम से महीबलय, गिरि और समुद्र को आक्रांत किया है; जो पवन, वैश्रवण, यम और वरुण के बल का नाश करने वाला है; जो असुर, सुर, विद्या-धर, नाग और तरुणियों के मन का रंजन करने वाला है, जो विष, तमपटल और यमुना के जल के समान दयाम है, कस्तूरीमृग के समान जिसके शरीर से परिमल उछलता है, जिसने क्रोध रूपी ज्वालावलि से दिशाओं को जला दिया है, अपनी सरल और लाल आँखों की कांति से जिसने वृषभ को विजित कर लिया है, जो वीरों के पराभव में तत्पर है, जिसने युद्ध का परिकर बना रखा है, छोड़ी गई प्रत्यंचा के शब्द वाले धनुषदंड से जिसका कर शोभित है, ऐसा महान् छत्रों से आच्छादित, भय पैदा करता हुआ, अपने बाहुफलकों के द्वारा शैलेन्द्र को कैंपाने वाला, काले मेघ के समान महागज पर बैठा हुआ रावण समस्त विश्व को निगलने वाले काल के समान स्वयं वहाँ आ पहुँचा । असम और शत्रु के लिए विषम साहस की निधिवाला वह इस प्रकार निकला मानो विमल कमला (लक्ष्मी) के अभिषेक के लिए दिग्गज निकला हो । नारायण के हाथी से आहत धरती हिल उठी । युद्ध के रक्त की लालची डायन नाच उठी । उसने कुटिल वज्रांकुरों के समान आराओं की आवली से शोभित तथा धक-धक करता हुआ चक्र सामने उठा लिया ।

धत्ता—फेडियमुहवडधुयधयवडहं दावियदूसहगयधडघायहं ॥
दलवट्टियहरिवरभडधडहं मुसुमूरियसामंतणिहायहं ॥12॥

13

हेला—विज्जाबलरउडहं जायगारवाणं ॥
वाहियरहविमदहं सदरउरवाणं ॥छ॥

जयकारियराहवरावणाहं	जयलच्छिरमणरंजियमणाहं ।
समुहागयाहं सपसाहणासं	मुत्तंतहं तोडं मि राहणाहं ।
असिणिहसणसिहिजालउ जलंति ¹	गुडपवखरपल्लाणई जलंति ।
णीवंति ताई वणरुहजलेण	केण वि पइसिवि आहवि छलेण ।
परिमुक्कसंकु पिहृपिछफारु ²	लगउ ³ णं गयवरगिरिहि मोरु ।
गंडयलि विलगउ वाणपुंखु	दीसइ णं छप्पउ दाणकंखु ।
केण वि गयणंगणि देवि करणु ⁴	ककिकुंभवीडि थिरु थविवि ⁵ चरणु ।
लोट्टिवि आरोहु णिबद्धकोहु	कडिछुरियइ ⁶ पह्णिवि धित्तु जोहु ।
अरिणरकरधल्लिय लउडिदंड ⁷	चूरिय संदण संगामचंड ⁷ ।
मणिजडिय पडिय मंडलियमउड	उच्छलिय रयणकरणियर पयड ।

धत्ता—जिन्होंने मुखपटों और उड़ते हुए ध्वजपटों को नष्ट कर दिया है, जिन्होंने दुःसह गज समूह को द्रवित कर दिया है, जिन्होंने अश्ववरो और योद्धा-समूह को चकनाचूर कर दिया है और सामंत-समूह को कुचल दिया है.

(13)

जो विद्याबल से भयंकर हैं, जिन्हें गौरव उत्पन्न हुआ है, जो हाँके गए रथों से विमर्दित हैं, जो शब्द करते हुए बाणों से भयंकर हैं,

जिन्होंने राम और रावण का जय-जयकार किया है, जिनका मन विजयलक्ष्मी के साथ रमण करने से रंजित है, आमने-सामने आई हुई, प्रसाधनों से युक्त युद्ध करती हुई ऐसी दोनों सेनाओं के तलवारों से उत्पन्न अग्नि ज्वालाएँ जलने लगती हैं, गजों और अश्वों के कवच जलने लगते हैं। उन्हें घावों से निकलते हुए रक्तजल से शांत किया जा रहा था। किसी ने छल से युद्ध में प्रवेश कर विशाल पुंख वाला तीक्ष्ण शंकु छोड़ा जो इस तरह लग रहा था, मानो गजराज रूपी पर्वत पर मयूर हो। गंडतल पर लगा हुआ तीर पुंख ऐसा प्रतीत होता था, मानो दान (मदजल) का आकांक्षी भ्रमर हो। किसी ने आकाश के प्रांगण में करण (आसन) देकर हाथी के कुंभपीठ पर अपना दृढ़ पैर स्थापित कर, तथा लौटकर, आरोहण करने वाले बद्ध-क्रोध योद्धा को कमर की छुरी से प्रहार कर नष्ट कर दिया। शत्रु-मनुष्यों द्वारा फेंके गए लकुटिदंडों ने युद्ध में प्रचंड स्पंदनों को चूर-चूर कर दिया। मणियों से विजडित मांडलीक राजाओं के मुकुट गिर गए। रत्नों का किरण समूह प्रकट रूप में उछल पड़ा। किसी के द्वारा

(13) 1. A चलंति । 2. A पिच्छभारु । 3. A उग्गउ । 4. A देवि । 5. A करि छुरियइ ।
6. P °दंडि । 7. P °चंडि ।

रघणणिम्मवियरयणियरधयभीयरो
 विक्कमवकमियमहिबलयगिरिसायरो^१ ।
 पवणवइसवणजमवहणवलभंजणो 5
 असुरसुरखयरफणितरुणिमणरंजणो ।
 गरलत्तमपडलकालिदिजलसामलो
 सुग्घिमयणाहिउच्छलियतणुपरिमलो ।
 कोवगुरुजलणजालोलिजालियदिसो 10
 सरलरत्तच्छिविच्छोहणिज्जियविसो ।
 वीरपरिहवपरो^२ रइयरणपरियरो
 भुक्कगुगरावधणुदंडमंछियवरो ।
 णिहिलजगगिलणकालो^३ व्व ठुक्को सयं
 छत्तच्छणो महंतो जणंतो भयं ।
 कट्ठिणभुयफलिसयलिदकपावणो 15
 कसणधणकरिवरारुढओ रावणो ।
 असमपरविसमसाहसणिही णिग्गओ
 विमलकमलाहिसेयस्स णं दिग्गओ ।
 हरिकरिकमाहया हल्लिया मेइणी
 रणरुहिरलंपडो णच्चिया डाइणी ।
 कुलिसकुडिलंकुरारावलीराइयं
 धगधगंतं पुरो चक्कमूढाइयं ।

निशाचर-ध्वजों से भयंकर है, जिसने अपने विक्रम से महीबलय, गिरि और समुद्र को आक्रांत किया है; जो पवन, वैश्रवण, यम और वरुण के बल का नाश करने वाला है; जो असुर, सुर, विद्या-घर, नाग और तरुणियों के मन का रंजन करने वाला है, जो विष, तमपटल और यमुना के जल के समान श्याम है, कस्तूरीमृग के समान जिसके शरीर से परिमल उछलता है, जिसने क्रोध रूपी ज्वालावलि से दिशाओं को जला दिया है, अपनी सरल और लाल आँखों की कांति से जिसने वृषभ को विजित कर लिया है, जो वीरों के पराभव में तत्पर है, जिसने युद्ध का परिकर बना रखा है, छोड़ी गई प्रत्याचा के शब्द वाले धनुषदंड से जिसका कर शोभित है, ऐसा महान् छत्रों से आच्छादित, भय पैदा करता हुआ, अपने बाहुफलकों के द्वारा शैलेन्द्र को कँपाने वाला, काले मेघ के समान महागज पर बैठा हुआ रावण समस्त विश्व को निगलने वाले काल के समान स्वयं वहाँ आ पहुँचा । असम और शत्रु के लिए विषम साहस की निधिवाला वह इस प्रकार निकला मानो विमल कमला (लक्ष्मी) के अभिषेक के लिए दिग्गज निकला हो । नारायण के हाथी से आहत धरती हिल उठी । युद्ध के रक्त की लालची डायन नाच उठी । उसने कुटिल वज्रांकुरों के समान आराधों की आवली से शोभित तथा धक-धक करता हुआ चक्र सामने उठा लिया ।

2. P विक्कमावकमिय^१ । 3. AP घोर^२ । 4. A °गल्लिण^३ ।

घत्ता—फेडियमुहवडधुयधयवडहं दावियदूसहगयघडघायहं ॥
दलवट्टिमहरिवरभडथडहं मुसुमूरियसामंतणिहायहं ॥12॥

13

हेला—विज्जाबलरउडहं जायगारवाणं ॥

बाहियरहविमडहं सदरउरवाणं ॥छ॥

जयकारियराहवरावणाहं	जयलच्छिरमणरजियमणाहं ।
समुहागयाहं सपसाहणासं	जुज्जंतहं दोहं मि साहणाहं ।
असिणिहसणसिहिजालउ जलंति ¹	मुडपकखरपल्लाणइं जलंति । 5
णीवंति ताइं वणरुहजलेण	केण वि पइसिवि आहवि छलेण ।
परिमुक्कसंकु पिहुपिच्छफासु ²	लगउ ³ णं गयवरगिरिहि मोह ।
गंडयलि विलगउ वाणपुंखु	दीसइ णं छप्पउ दाणकंखु ।
केण वि गयणंगणि देवि करणु ⁴	ककिकुंभवीदि थिर थविवि ⁵ चरणु ।
लोट्टिवि कपरोहु पिबल्लोहु	कडिछुरियइ ⁶ पहणिवि चित्तु जोहु । 10
अरिणरकरघल्लिय लउडिदंड ⁷	चूरिय संदण संगामचंड ⁷ ।
मणिजडिय पडिय मंडलियमउड	उच्छलिय रयणकरणियर पयड ।

घत्ता—जिन्होंने मुखपटों और उड़ते हुए ध्वजपटों को नष्ट कर दिया है, जिन्होंने दुःसह गज समूह को द्रवित कर दिया है, जिन्होंने अश्ववरो और योद्धा-समूह को चकनाचूर कर दिया है और सामंत-समूह को कुचल दिया है,

(13)

जो विद्याबल से भयंकर हैं, जिन्हें गौरव उत्पन्न हुआ है, जो हाँके गए रथों से विमर्दित हैं, जो शब्द करते हुए वाणों से भयंकर हैं,

जिन्होंने राम और रावण का जय-जयकार किया है, जिनका मन विजयलक्ष्मी के साथ रमण करने से रंजित है, आमने-सामने आई हुई, प्रसाधनों से युक्त युद्ध करती हुई ऐसी दोनों सेनाओं के तलवारों से उत्पन्न अग्नि ज्वालाएँ जलने लगती हैं, गजों और अश्वों के कवच जलने लगते हैं। उन्हें घावों से निकलते हुए रक्तजल से शांत किया जा रहा था। किसी ने छल से युद्ध में प्रवेश कर विशाल पुंख वाला तीक्ष्ण शंकु छोड़ा जो इस तरह लग रहा था, मानो गजराज रूपी पर्वत पर मयूर हो। गंडतल पर लगा हुआ तीर पुंख ऐसा प्रतीत होता था, मानो दान (मदजल) का आकांक्षी भ्रमर हो। किसी ने आकाश के प्रांगण में करण (आसन) देकर हाथी के कुंभपीठ पर अपना दृढ़ पैर स्थापित कर, तथा लौटकर, आरोहण करने वाले बद्ध-क्रोध योद्धा को कमर की छुरी से प्रहार कर नष्ट कर दिया। शत्रु-मनुष्यों द्वारा फेंके गए लकुटिदंडों ने युद्ध में प्रचंड स्यंदनों को चूर-चूर कर दिया। मणियों से विजटित मांडलीक राजाओं के मुकुट गिर गए। रत्नों का किरण समूह प्रकट रूप में उछल पड़ा। किसी के द्वारा

(13) 1. A चलंति । 2. A पिच्छभाह । 3. A लगउ । 4. A देवि । 5. A करि छुरियइ ।
6. P ०डि । 7. P ०चंड ।

केण वि कासु वि पविमुट्टिहयउं
गउ विथलियासु कंकालसिद्धु
उड्डेप्पिणु वच्चइ गयणमग्गु
तहि अवसरि बहुतत्तिल्लएहि⁸

सीसक्के सहुं सिरु चुण्णु कयउं ।
कासु वि लोहियरसु रसिवि गिद्धु ।
णं पोरिसु वण्णइ गंप्पि सग्गु ।
जायवि कयजणमणसल्लएहि ।

15

धत्ता—णिउ णिरगउ भरहद्धाहिवइ चारहिं रामहु कहिउ विथारिवि ॥

थिउ ता रणदिक्खहि दासरहि पुप्फयंतु जिणवरु जयकारिवि ॥13॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमणिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे राह्वरावणबलसंणहणं
णाम सत्तहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥77॥

किसी का वज्रमुष्टि से आहत शिरस्त्राण से सहित सिर चूर-चूर कर दिया गया। बेचारा कापालिक निराश होकर चला गया। जिली के रण्ड लगी रस का आश्वास लेकर गीध उड़कर आकाशमार्ग में जा रहा था, मानो स्वर्ग में जाकर उसके पौरुष का वर्णन करने जा रहा हो। उस अवसर पर अत्यन्त चिन्तायुक्त और जिन्होंने जन-मानस में शल्य पैदा कर दी है, ऐसे चरों ने जाकर,

धत्ता—राम से विचार कर कहा कि भारत का अर्धचक्रवर्ती राजा (युद्ध के लिए) निकल पड़ा है, तब राम भी पुष्पदन्त जिनवर की जयकार कर रणदीक्षा में स्थित हो गए।

इस प्रकार, त्रैलोक्य महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में, महाकवि पुष्पदन्त द्वारा रचित तथा महाभव्व भरत द्वारा अनुमत इस महाकाव्य का राघव-रावण-बल-सहनन नामक सत्तहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

8. A बहुमत्तिल्लएहि । 9. A उभयवलाभिडणं; P उभयवलाभिडणं ।

अट्टहत्तरिमो संधि

पडिभडकालाणलु जोइयभुयबलु विप्फुरंतु मच्छरि चडिउ ॥
महिक्करिणिकयग्गहु^१ पसरियविग्गहु कणहु दसासहु अग्गिडिउ ॥ ध्रुवकं॥

1

दुवई—पहय गहीर भेरि सिरिरमणीमाणियदेहलक्खणा ॥
संणज्झंति हणुव सुग्गीव महापहुरामलक्खणा^२ ॥छ॥

माणिककंसुजालविण्णासई	चंदकवयचंदियसंकासई ।	5
आणियाई कवयई रत्तुरायहु	णउ विसंति रोमंचियकायहु ।	
बाहुजुयलु पुलएण विसट्टइ	रिउसरीरबंधणई व तुट्टइ ।	
आह्वरोलहरिसपडहच्छहु ^३	उरि संणाहु दिण्णु सिरिवच्छहु ।	
माइ ण सीयहि मणि णं रावणु	फुट्टिवि ^४ गउ सयदलु णं दुज्जणु ।	

अठहत्तरवीं संधि

शत्रु-योद्धाओं के लिए कालानल, जिसने अपना बाहुबल देखा है ऐसा तथा विस्फुरित होता हुआ लक्ष्मण मत्सर से भर उठा। धरती रूपी गृहिणी के लिए आग्रह करने वाला और युद्ध का विस्तार करने वाला वह रावण से भिड़ गया।

(1)

युद्ध की भेरि बजा दी गई। जिनके शरीर-लक्षण लक्ष्मी रूपी रमणी से मान्य हैं, ऐसे महाप्रभु राम, लक्ष्मण, हनुमान् और सुग्रीव तैयार होने लगे। माणिक्यों के किरणजाल से विरचित, मयूरपंख की चन्द्रिका के आकार वाले कवच रघुराज के लिए दिए गए। वे रोमांचित शरीर में प्रवेश नहीं करते। रोमांच से उनका भुजयुगल विकसित होता है, और शत्रु के शरीर-बंधन की तरह विधटित हो जाता है। युद्ध के शब्द से उत्पन्न हर्ष को धारण करने वाले लक्ष्मण के वक्ष पर कवच पहिना दिया गया। वह उसमें उसी प्रकार नहीं समाता जिस प्रकार सीता के मन में रावण नहीं समाता। वह सैंकड़ों टुकड़ों में उसी प्रकार फट गया जैसे दल के साथ दुर्जन।

(1) 1. A महिक्करिणिकयग्गहु 2. A महपहु 3. P आह्वि रोल^० 4. A फट्टिवि 5. P णियंति ।

सुग्रीवहु गीयहु रणभरधुर	णिहिय करंति ^१ काइं किर परणर ।	10
संगज्झंतु काइं सो सुच्चइ	हणुवंतु वि वम्महु जहिं वुच्चइ ।	
तहिं ^२ जगु विधिवि मारिवि मेल्लइ	अंगउ ^३ अंगइं वइरिहिं सल्लइ ।	
दहियदोव्वसिद्धत्थयमीसिउ	सीमंतिणिकरघित्तउ सेसउ ।	
विरसिउ जुज्झडिडिमाडंबरु	बहिरिउ तेण विवरु दिसि अंबरु ।	
मत्ति विजयपव्वइ सइं माहउ ^४	अंजणगिरिकरिवरि थिउ राहउ ^५ ।	15
बलिपुत्तें तहु बलविस्थिणी	विज्ज पहरणावरणि ^६ विइणी ।	

घत्ता—सइ का वि पजंपइ किं पि ण कंपइ पिययम परबलु णिट्ठवहि ॥

हणु करिकुं भयलइं हिमकणधवलइं मोत्तियाइं महु पट्ठवहि ॥ १॥

2

दुवई—का वि पुरंधि भणइ किं बहुवें अणुदिणु हिययजूरणं ॥

णियसिरपंकएण^१ पिय फेडहि णरवइपियविसूरणं^२ ॥ छ ॥

का वि भणइ एत्तउउं करेज्जसु	पउ पच्छामुहुं णाह म देज्जसु ।	
गयपडियागयपयपरिठवणें	महइ कइंदु ण भडु भयगमणें ।	
का वि भणइ जं मइं थणमंडिउं	तं ^३ गयदंतहं समुहुं उडिडउं ।	5

सुग्रीव की गर्दन पर युद्धभार की धुरी रख दी गई। शत्रु जन क्या कर सकते थे? कवच पहनता हुआ वह क्या खेद करता है? जहाँ हनुमान् को कामदेव कहा जाता है वहाँ वह विश्व को वेध कर और मारकर ही छोड़ता है। अंगद शत्रुओं के अंगों को पीड़ित करता है। दही दूध और तिलों से मिश्रित तथा सीमंतिनियों के हाथों के द्वारा शेष (निर्मल्य) छोड़ा गया था। युद्ध के नगाड़ों का विस्तार बज उठा। उससे दिशा अंबर और विवर भर उठे। मतवाले विजयपर्वत गज पर स्वयं माधव (लक्ष्मण) और अंजनगिरि गजराज पर राम बैठ गए। बलिपुत्र (सुग्रीव) के द्वारा उनके लिए बल का विस्तार करने वाली और प्रहारों का आवरण करने वाली विद्या दे दी गई।

घत्ता—कोई एक सती कहती है, वह बिल्कुल भी नहीं कांपती कि, हे प्रियतम, शत्रुसेना को नष्ट कर दो। हाथियों के मंडस्थलों को मारो और हिमकणों के समान धवल मोती मुझे भेजो।

(2)

कोई इन्द्राणी कहती है—बहुत से क्या, हे प्रिय, प्रतिदिन का पीड़ित होना और राजा राम की प्रिया का विसूरना अपना सिरकमल देकर तुम नष्ट कर दो।

कोई कहती है—इतना करना, हे स्वामी, कि अपना पैर पीछे मत देना क्योंकि गत और प्रत्यागत पक्ष (चरण, छंद) की स्थापना से कवीन्द्र शोभित होता है। भयपूर्वक (आगे-पीछे) गमन से सुभट शोभित नहीं होता। कोई कहती है कि मैंने जोस्तन मंडित किया वह हाथी दांतों के सामने

6. A जगु तहिं । 7. A अंगउवंगइं । 8. A राहउ । 9. A माहउ । 10. A घरणि विदिणी ।

(2) 1 AP °सिरकप्पिएण । 2. A °रिणविसूरणं । 3. A णं गयं ।

किं वच्छयलु णाह् पंदेसइ	पणु आलिगणसुहुं ⁴ महु देसइ	
का वि भणइ ⁵ राणि म करि पियत्तणु	सुयरिज्जइ ⁶ पहुभूमिणियत्तणु ।	
किं पुणु महिमंडलु वित्थिण्णउं	इच्छियचायभोयसंपण्णउं ।	
देज्जसु पत्थिवचित्तणिवारउं	खम्मसलिलु वइरिहि तिसगारउं ।	
का वि भणइ पिययम पेयालइ	वसतुप्पे रिउसीसकवालइ ।	10
हउं दीवउ ओहेसमि जइयहुं	ओवाइउं ⁷ महु पूरइ तइयहुं ।	
का वि भणइ पडिण्ण वि पिंहे	महिंवि पिसल्लउ मासहु खंडे ।	
कासु वि सिद्धहु आणइ थंभिवि	पासि धरिज्जसु ⁸ वायइ रुंभिवि ।	
पइ ⁹ मुए वि हउं णडिय रइच्छइ	तं परिपुच्छिवि आवमि ¹⁰ पच्छइ ।	

घत्ता—सुहवत्तहु वंछहि णाह ण पेच्छहि चंडहि वेयालालियहि ॥ 15

कयतुट्ठिपरिग्गहु परकंठग्गहु खम्मलट्ठिपुण्णालियहि ॥2॥

3

दुवई—तुह एयं सुवंसयं पिययम पणविणं¹ विणीयं ॥

सज्जीयं सरासणं समरि हरउ वइरिजीयं ॥छ॥

पंदणवणु व णीलतालद्धउं

णरवेसें णं सई मयरद्धउ ।

दीसइ णीसरंतु रइयाहउ

अंजणगिरिकरिवरि थिउ राहउ ।

उड़ गया । हे स्वामी, क्या वक्षतल वड़ेगा और मुझे फिर से आलिगन मुख देगा ? कोई कहती है कि तुम युद्ध में पलायन नहीं करना । तुम स्वामी के भूमि के दान की याद करना । इच्छित त्याग और भोग से संपन्न विस्तीर्ण महीमंडल से क्या ? तुम राजा (राम) की चिता का निवारण करने वाला तथा शत्रुओं की व्यास बढ़ाने वाला अपना खड्गजल देना । कोई कहती है—हे प्रियतम, जब मैं प्रेतालय में शत्रु के शिर के कपाल (खण्णर) में चर्ची रूरी धी से दीप जलाऊँगी तभी मेरी याचना पूरी होगी । कोई कहती है कि पड़े हुए शरीर से भी मांसखंड से पिशाच की पूजा कर, किसी भी सिद्ध की आज्ञा से उसे स्तंभित कर, व्यंतर को वायु से रोककर अपने पास रखना । तुम्हारी मृत्यु होने पर रतिकामना से प्रवंचित मैं बाद में उससे (तुम्हारी बात) पूछने के लिए आऊँगी ।

घत्ता—हे स्वामी, सुभगत्व चाहते हो ? तुम प्रचंड वेग से चलाई गई खड्गलता रूपी वेश्या के तुष्टिपरिग्रह को करनेवाले शत्रु के कंठग्रह को नहीं देखते ?

(3)

हे प्रियतम, तुम्हारा यह सुवंश में जन्मा नमनशील विनीत सज्जित धनुष युद्ध में शत्रु का जीवहरण कर ले ।

नील और ताल वृक्षों से युक्त नंदन वन के समान वह (राम) ऐसे लगते हैं मानो मनुष्य रूप में स्वयं कामदेव हों । संग्राम रचनेवाले राम अंजनगिरि गजराज पर बैठकर निकलते हुए ऐसे

4. P आलिगण सुहुं 5. A सुयरिज्जइ । 6. उववायउ । 7. AP थविज्जसु । 8. A आइवि ।

(3) 1. A पणविंयं ।

णं णवजलहरसिहरि ससंकउ² णं अइरावइ इंदु असंकउ³ ।
 णं जंसु तिजगसिहरिपंडुरतणु धम्मालोयलीणु णं मुणिमणु ।
 कयसरसोहउ⁴ णाइ मरालउ⁵ सूरपहाहरु णाइ मरालउ⁶ ।
 सीयाकंखउ विरहुण्हे⁷ हउ⁸ दाणालित्ताणि⁹ णं दिग्गउ ।
 एत्तहि लवखणु रोसवियंभिउ णं रणसिरिणच्चणकरु उब्भिउ ।
 लच्छीललणालोलणलोहिउ पंचवण्णगरुडद्वयसोहिउ ।
 विजयमहीहरि कुंजरि चडियउ कालसलोणउ जणि आवडियउ ।
 मेहहु उवरि मेहु णं थक्कउ रिउहुं णाइ जमदूयउ दुक्कउ ।

01

धत्ता—चोइयमायंगइ चलयितुरंगइ वाहियरहइ भयंकरइ ॥

सणिहियविमाणइ¹⁰ जरजंपाणइ रोसुद्धाइयकिकरइ ॥3॥

4

दुवई—लगइ रामरामणाणंदइ बलइ रुसाविसालइ¹ ॥छ॥

णरमुहकुहरमुक्कहुंकारुदीवियबाणजालइ² ॥छ॥

मुक्कमुसलहलपट्टिससेल्लइ³ पसरियपाणिधरियधम्मेल्लइ⁴ ।

दिखाई देते हैं, मानो नव जलधर के शिखर पर चन्द्रमा हो । मानो ऐरावत महामंज पर भिक्षक इन्द्र बैठा हो । मानो त्रैलोक्य के शिखर को शुभ्रतन कर देने वाला यश हो । मानो धर्मालोक में लीन मुनि का मन हो । जिसने सरोवर की शोभा बढ़ाई है मानो ऐसा हंस हो । मानो सूर्य की प्रभा का हरण करने वाला मेघ हो । विरह की ज्वाला से आहत सीता की आकांक्षा हो । जिसकी सूइ मवजल से लिप्त है, मानो ऐसा दिग्गज हो । दूसरी ओर क्रोध से विजृम्भित लक्ष्मण था । मानो रणश्री का नाचता हुआ हाथ उठा हो, जो लक्ष्मी रूपी ललना के अवलोकन का लोभी है, और पंचरंग गरुडवज से शोभित है, जो विजयपर्वत गज पर चढ़ा हुआ ऐसा लगता है जैसे कास के समान लोगों के बीच में आ गया हो । मानो मेघ के ऊपर मेघ स्थित हो, शत्रुओं के ऊपर मानो यमदूत आ पहुँचा हो ।

धत्ता—गज प्रेरित किये गये, छोड़े चला दिये गये, भयंकर रथ हाँक दिये गये, विमान जंघान तैयार किये गये । अनुचर क्रोधित हो दौड़ पड़े ।

(4)

राम और रावण को आनंद देने वाली, क्रोध से विशाल, मनुष्यों के मुख रूपी कुहर से मुक्त हुंकार से जिसमें बाणों की ज्वाला उद्दीपित है, ऐसी दोनों सेनाएँ भिड़ गईं । मूसल, हल, पट्टिस और सेल छोड़े जाने लगे । फैले हुए हाथों से चोटियाँ पकड़ी जाने लगीं । जो कटे हुए हाथ सिर, उर

2. AP मयंकउ । 3. AP आसंकउ । 4. A कयसरिसोहउ । 5. AP वियालउ । 6. A ^०कंखउ णं उण्हालउ; P ^०कंखउ विरहु उण्हाउ । 7. A adds after this अण्णेसंसु रामु णं निग्गउ; K also has this line but scores it off. 8. दाणदिलित्ता^० । 9. AP ^०विवाणइ ।

(4) 1 P रोसविसालइ ।

लुक्करसिरउरजण्डयजुत्तइ ¹	मगणगणविच्छेदयच्छत्तइ ¹ ।	
कलिकेलासवाससंतासइ ¹	वइरिविलासहासणिष्णासइ ¹ ।	5
मायाभावगाववित्थारइ ¹	हुयवहवरुणपवणसंचारइ ¹ ।	
किलिकिलिरवसोसियकीलालइ ¹	दिसविदिसुट्टउभावेयालइ ² ।	
मिलियदलियपक्कलपाइक्कइ ³	वसकइमणिमण्णरहचक्कइ ³ ।	
अंतमिलंतथंतकायउलइ ¹	वालपूलणीलियधरणियलइ ¹ ।	
तणुवियलंतसेयसित्तंगइ ¹	पविक्खपक्खमरुहयसमसंगइ ¹ ।	10
मयगलमलणमलियधयसंडइ ⁴	हितारोहजोहकोवंडइ ¹ ।	
सुरहरधिवणधित्तखयरिदइ ¹	खग्गकंपकंपावियचंदइ ¹ ।	

घत्ता--असिदंडु लएप्पिणु देहि भणेप्पिणु परवलि परिसक्कइ वियडु ॥

फरपत्तधिहत्थउ⁵ को वि समत्थउ जुज्झभिवक्ख⁶ मग्गइ सुहडु ॥4॥

5

दुवई--को वि भडु करेहि गिहएहि कपिहि वि हुंकरत्तइ¹ ॥

कोवकइ मासगासरसियाइ¹ पिसायइ गयणि जंतइ¹ ॥छ॥

को वि सुहडु मुउ करिदंतंतरि णावइ सुत्तउ णियजसपंजरि ।

को वि सुहडु अद्धिदं मंडित¹ भूयहि रुद्धु² व णिविसु ण छंडित ।

और जानुओं से युक्त है, जहाँ तीर समूह से छत्र काट दिए गए हैं, जो यम और शंकर को संत्रास देने वाली है, जो शत्रुओं के विलास और हास का नाश करने वाली, मायाभाव और गर्व का विस्तार करनेवाली, अग्नि पवन और वरुण के पथ पर संचार करनेवाली, किलकिल धाव से रक्त का शोषण करनेवाली है, जिसमें दिशा-विदिशा में उग्र बैताल उठ रहे हैं, जिसमें समर्थ सैनिक मिलकर एक दूसरे को चकनाचूर कर रहे हैं, जहाँ रथचक्र चर्खों की कीचड़ में निमग्न हो रहे हैं, जहाँ काककुल आँतों से मिलकर स्थित हैं, जहाँ धरणीतल केश समूह से नीला है, शरीर से विगलित स्वेद से जो गीला हो गया है, पक्षियों के पंखों की हवा से जहाँ श्रम संगम दूर हो गया है, जिसमें मदमाते गजों के मदजल से ध्वज समूह भलिन हो गए हैं, जिसमें योद्धाओं के चढ़े हुए धनुष छीन लिये गए हैं, जिसमें देवविमानों के पतन से विद्याधर राजा मुग्ध हो रहे हैं, जहाँ खड्ग के कंप से चन्द्रमा प्रकंपित है (ऐसी उस युद्धभूमि में)

घत्ता—कोई विकट सुभट तलवार रूपी दंड लेकर 'दो' यह कहकर शत्रुसेना में धूमता है, धनुष हाथ में लिये हुए कोई समर्थ सुभट युद्ध की भीख माँग रहा है ।

(5)

कोई सुभट, कटे हुए हाथों पैरों के होने पर भी हुंकार करता हुआ मांस के कौर का आस्वाद लेने वाले आकाश में जाते हुए पिशाचों को ललकारता है । कोई सुभट हाथी के दाँतों के भीतर मरा हुआ ऐसा प्रतीत होता है मानो वह अपने यश रूपी पिंजड़े में सोया हुआ हो । कोई सुभट अद्धन्तु से मंडित भूतों के द्वारा रुद्र के समान, एक पल के लिए भी नहीं छोड़ा गया ।

2. दिसिदिदिसुट्टिउभा¹ । 3. P "पक्खल" । 4. P "गलचलणमलिय" । 5. AP करपत्त¹ । 6. मग्गइ जुज्झ-भिवक्खइ ।

(5) 1 P सुभडु । 2. A छंडित ।

को वि सुहृदु सिरु पडिउ ण चितइ असिवरु अरिवरकंठहु¹ घत्तइ । 5
 को वि सुहृदु रत्तइहि ण्हायउ सत्तु सिरत्थु णिएप्पिणु आयउ ।
 कायरत्तसिण हउ² ण विहिण्णउ पहरणु दीवु धरिवि उत्तिण्णउ ।
 को वि सुहृदु परिवड्ढियसाहउ³ णं पारोहएहि णग्गोहउ ।
 रिउवाणहि उच्चइउ वट्टइ प्पंखुत्तिण्णरुहिरु सिव चट्टइ ।
 कासु वि सुहृदु गुज्जु ण रक्खइ कण्णालगु गिद्धु णं अक्खइ । 10
 पइ⁴ समुद्धु⁵ पत्थिवरिणि छूउउ लोहिउ णाइ कलंतरि⁶ वूउउ ।
 देहमासु वायसहं विहितउ उत्तमपुरिसहं⁷ एउ जि जुत्तउ ।
 कासु वि अंगि रहंगु पइट्ठउ अब्भगन्धि रविबिबु व दिट्ठउ ।

घत्ता—सवहेणोसारिवि¹¹ अवर¹² णिवारिवि जुज्झि वि मड्डु देहु छिवइ ।

कासु वि सुरकामिणि लीलागामिणि माल सयंवरि सहं घिवइ ॥5॥ 15

6

धुवई—जायइ संगरम्मि वरखयरकवालचुए वसारसे ॥

णरकंकालमहुरवीणासरगाइयरामसाहसे ॥छ॥

कोई सुभट अपने पड़े हुए शिर की चिता नहीं करता और तलवार को प्रबल शत्रु के कंठ पर दे मारता है । कोई सुभट रक्त के सरोवर में नहा गया और शिरस्थ शत्रु को देखकर आ गया । कायरता के दोष के कारण मैं खंडित नहीं हुआ, (यह सोचकर) प्रहरण का दीप लेकर वह उत्तीर्ण हो गया । कोई सुभट अपनी चढ़ी हुई बाहों से ऐसा लगता है, मानो तनों से युक्त वट वृक्ष हो । शत्रुओं के वाणों के द्वारा ऊँचा किया गया वह विद्यमान है । उसके पंखों से रिसते रक्त को शिवा (सियारिन) चँट रही है । गोध किसी भी सुभट के रहस्य को सुरक्षित नहीं रखता मानो इसीलिए कानों से लगकर वह कहता है, तुम्हारा सिर राजा के ऋण में चुक गया है । रक्त मानो व्याज में रख लिया गया है, देह का मांस कौओं में विभक्त कर दिया गया है । उत्तम पुरुषों के लिए यही उपयुक्त है । किसी के शरीर में चक्र घुस गया है, जो मेघों के बीच सूर्य बिम्ब के समान दिखाई देता है ।

घत्ता—कोई देवी शपथ पूर्वक दूसरी देवी को हटाकर युद्ध में भी बलपूर्वक शरीर को छूती है । तथा लीलागामिनी वह देवकामिनी स्वयं किसी (योद्धा) को स्वयंवर में माला डालती है ।

(6)

जिसमें नरकंकालों की मधुर वीणा के स्वरों में राम के साहस का गान किया गया है, तथा जिसमें वर विद्याधरों के कपाल से व्युत चर्वों का रस है—

3. A बंहु व but gloss रुद्र इव । 4. AP अरिवरणियरहु । 5. A वण्णविहिण्णउ । 6. A °सोहउ । 7. A पंखुत्तिण्ण P पुंखुत्तिण्ण । 8. A समुद्धु । 9. AP कलंतरु । 10. AP उत्तिम° । 11. A सरवहेण । 12. P अवरउ वारिवि ।

णवर जयसिरिहरो	अरिहरिणहरिवरो ।	
कुलकमलदिणयरो	अणयजणभययरो ।	
रणियगुणधणुरवो ¹	जणियखलपरिहवो ।	5
अमियअमरिसवसो	तिजगपसरियजसो ।	
सयणुकसणियदिसो	फणि व विसरिसविसो ।	
कुड्यवडवसणिहो	सिहि व विलसियसिहो ।	
थरहरियमहियलो	धयपिहियणहयलो ।	
करकलियपहरणो	पवरबलजियरणो ।	10
दढकठिणधिरकरो ²	पडिसुहडभयहरो ।	

घत्ता—तिहुयणजूरावणु रुसिवि रावणु धाइउ रामहु संमुहु किह ॥
 णवमेहु व मेहु सीहु व सीहु दिसहत्थिहि दिसहत्थि जिह ॥6॥

7

दुवई—ता करिकरसमाणकरकडिहयगुणधणुदंडमंडलो¹ ॥
 कणयपिसवकपुंखरुइ² रंजियमाणिमयकणकुंडलो ॥छ॥

उक्खयदुक्खलवखतरुकंदहु	इंदइ इंदसरिसु गोविदहु ।	
विडविचिधु किक्किधणिवासहु	वालिकंठकंदलजमपासहु ।	
णिद्धहु णियकुलभवणपईवहु	भिडियउ कुंभयण्णु सुग्गीवहु ।	5

ऐसे उस युद्ध के होने पर केवल जयश्री का धारण करने वाला, शत्रु रूपी हरिणों के लिए सिंह, कुल कमलों के लिए दिवाकर, अविनीतजनों के लिए भयंकर धनुष और प्रत्यंघा को ध्वनित करनेवाला, अमित अमर्ष के वशीभूत, त्रिजग में प्रसारित यश वाला, अपने शरीर से दिशाओं को काला करने वाला, नाग के समान असमान्य विष (द्वेष) वाला, क्रुद्ध यम के सदृश, आग के समान विलसित शिखा वाला, महीतल को थरथराने वाला, ध्वज से नभ तले को ढकने वाला, हाथ में हथियार धारण करने वाला, प्रबल बल से शत्रु को रण में जीतने वाला, दृढ़ और स्थूल बाहों वाला, शत्रु-योद्धा का मद हरने वाला,

घत्ता—त्रिभुवन का संतापदायक रावण क्रुद्ध होकर राम के सम्मुख इस प्रकार दौड़ा जैसे नवमेघ मेघ के ऊपर, सिंह सिंह के ऊपर और दिग्गज दिग्गज के ऊपर दौड़ता है ।

(7)

तब हाथी की सूंड के समान हाथ से जिसने प्रत्यंघा और धनुष मंडल खींचा है, तथा स्वर्ण बाणों की पुंखकांति से जिसके मणिमय कर्णकुंडल रंजित हैं, ऐसा इन्द्रजीत, इन्द्र के समान जिसने सैकड़ों दुःख रूपी वृक्षों को उखाड़ डाला है ऐसे लक्ष्मण से, वृक्षध्वजी किक्किधा-निवासी बालि के कंठ रूपी प्ररोह (अंकुर) के लिए यम-पाश के समान, स्निग्ध और अपने कुल रूपी भवन के प्रदीप सुग्रीव से कुंभकर्ण भिड़ गया । मही और महीधर के संचालन में बलवान् वीर

(6) 1. AP रणियधणुगुणरवो । 2. A °धियकरो ।

(7) 1. A °मंडणो । 2. P °पुंखरुइ°

महिमहिहरचालण बलवंतहु	रणि रविकिति वीरहणुवंतहु ।
खरकिरणु व तमतिमिरणिहायहु	णलिणकेउ लगउ खररायहु ।
अंगयभहु आहंडलकेउहि	णावइ मुणिवरिहु असकेउहि ।
इंदवम्भु कुमुयहु दूसीलहु	कयबहुदूसणु दूसणु नीलहु ³ ।
संदणचलणवलणसंफेडहि	लउडिघायजज्जरियकिरीडहि ।
दंतिदंतसंघट्टणघोरहि	सेलसिलायलघित्तपहारहि ।
सब्बलमुसलकुलिसससकोतहि	भिडिवालकरवालफुरंतहि ⁴ ।

10

घत्ता—रयछइयदियंतहि भडसासंतहि जुज्जंतिहि⁵ खयरामरहि ॥
संचूरियमउडहि णिवडियसमडहि महि मंडिय धयचामरहि ॥

8

दुवई—ता लंकाहिवेण हलहेइहि¹ रिछसुपिछसज्जिया² ॥

एक्क दुवीस³ तीस पण्णास सरा सहसा विसज्जिया ॥छ॥

धरियलोह तेण ति ते गुणचुम	तज्जुम तेण ति ने मोक्खज्जुय ⁴ ।
चित्तविचित्त तेण ते चलयर	पेहुणवंत तेण ते णहयर ।
धम्मविमुक्क तेण ते हयपर	रोसवसिल्ल तेण ते दुद्धर ।
तिक्ख तेण ते वम्मुल्लूरण	सहल तेण ते आसापूरण ।

5

हनुमान से युद्ध में अर्ककीर्ति, अंधकार के समूह खरराज से सूर्य की किरण की तरह नलिनकेतु भिड़ गया। इन्द्रकेतु से भट अंगद भिड़ गया जैसे कामदेव से मुनिवरेन्द्र भिड़ जाता है। इन्द्रवर्मा दूशील कुमुद से, अनेक दूषण करने वाले दूषण से नील (भिड़ गया)। रथचक्रों के चलने और सुड़ने के धक्कों, लकुटियों के आघातों, जर्जर मुकुटों, हाथियों के दांतों के संघट्टनों से भयंकर, शैल शिलातलों पर दिए गए प्रहारों, सब्बलों, मूसलों, कुलिसों, इसों और कीतों से, चमकते हुए भिदि-पालों और करवालों से,

घत्ता—धूल से दिगंतों को आच्छादित करने वाले, युद्ध करते हुए, विद्याधरों और असुरों से संचूरित मुकुटों से, गिरे हुए रथों और ध्वज-चामरों से घरती मंडित हो गई।

(8)

तब रावण ने राम पर रीछ के बालों के पुंख से सज्जित एक दो बीस तीस और पचास तीर सहसा छोड़े। वे धरियलोह (लोभ धारण करने वाले, लोहा धारण करने वाले) थे इसीलिए वे गुणच्युत (गुण, डोरी से च्युत) थे। वे ऋजुक (सीधे) थे इसीलिए मोक्ष के लिए उद्यत थे। चित्र-विचित्र थे इसलिए चंचल थे। पेहुण (पंख) से सहित थे, इसीलिए नभचर थे। धर्म से विमुक्त थे, इसीलिए पर को आहत करने वाले थे। क्रोध के वशीभूत थे, इसीलिए कठोर थे। तीक्ष्ण (पैने) थे इसलिए मर्म का उच्छेद करने वाले थे। सफल थे, इस आशा को पूरा करने वाले

3. A लीलहु । 4. A वंसणचलण⁵ । 5. AP⁶ करवाल मुयंतहि । 6. A जुज्जंतिहि ।

(8) 1. A हलएवहि । 2. A⁷ सुपुंछ⁸ । 3. A दुतीसवीस । 4. मोक्खज्जुय ।

रयगय तेण जि ते पलचक्खर	वहियजोह तेण जि जयकंखर ।	
दीहायार णाय णं आया	पत्तदाण ⁵ जिह सयगुण जाया ।	
एत णहंतें महंत भयंकर	जिगिजिगंत पडिवक्खखयंकर ।	
बाणहि बाण हणिवि काकुत्थे	रावणु विहसिवि भणिउ समत्थे ।	10

घत्ता—णियघरिणिहि अग्गइ सयणसमग्गइ घरि बाणासणु गुणिउं जिह ॥
भड्ढहिररसारणि आहवि दारुणि को विधइ दहवयण तिह ॥8॥

९

दुवई—हो हो जाहि जाहि तुहुं णासहि धणुसिक्खाविज्जओ ॥
मा णिवडहि करालि कालाणलि लक्खणसरि परज्जओ ॥छ॥

कहि विट्ठ मुट्ठ	कहि चावलट्ठ ।	
कहि ¹ वद्ध ठाणु	कहि ¹ णिहिउ बाणु ।	5
धणुवेयणाणु	बुज्झहि ² पहाणु ।	
गुरुगेहु गं पि	अण्णवड ³ किं पि ।	
पुणु देहि जुज्झु	महुं तुहुं सुसज्झु ।	
सीयावहार ⁴	जज्जाहि जार ।	
तहि रणवमालि	सुहडंतरालि ।	
खरकरपवट्ठु	दट्ठोदट्ठु रुदट्ठु ।	10
णिट्ठवियदुदट्ठु	इंदइ पइदट्ठु ।	

थे । रजगत (वेगवाले) थे, इसीलिए मांस खाने वाले थे । योद्धाओं को मारने वाले थे, इसीलिए विजय के आकांक्षी थे । लम्बे आकार वाले वे मानो साँप हों, पात्रदान की तरह सौ गुने हो गए । आकाश के मध्य से आते हुए, महान् भयंकर चमकते हुए और प्रतिपक्ष के लिए भयंकर बाणों को बाणों से आहत कर, समर्थ राम ने रावण से हँसकर कहा—

घत्ता—रे रावण, स्वजनों से परिपूर्ण अपने घर में गृहिणी के सम्मुख जिस तरह तुमने धनुष को समझा है, भटों के रक्त रस से अरुण दारुण युद्ध में उस प्रकार कौन विद्ध करता है ?

(9)

हो हो रे रावण, तू जा-जा । धनुर्वेद शिक्षा से रहित तू जा-जा । लक्ष्मण के तीरों से पराजित तू कराल कालाग्नि में मत्त पड़ ।

कहाँ दृष्टि-मुष्टि, और कहाँ धनुर्यष्टि ? कहाँ लक्ष्य बाधा और कहाँ बाण रखा ? धनुर्वेद के ज्ञान को किसी प्रधान गुरु के घर जाकर कुछ और सीख लो । फिर युद्ध करो । मेरे लिए तुम सुमाध्य हो । सीता का अपहरण करने वाले रे जार, तू जा-जा । तब वहाँ युद्ध के कोलाहल से पूर्ण सुभटों के बीच, खरकरों से स्पृष्ट होठ चवाता हुआ, क्रुद्ध तथा दुष्टों का नाश करने वाला

5. PA पत्तदाणु ।

(9) 1. P किह । 2. A बुज्झिउ । 3. A अण्णमउ; P अण्णविउ । 4. P reads this line as: जज्जाहि जार, सीयावहार । 5. P पघट्ठु ।

ता क्रुद्धएण	धूमद्वएण ।
णं जलियजाल	णं विज्जुमाल ।
चलजलहरेण	वरिसियसरेण ।
कयआहवेण	तहु राहवेण ।
धगधगधगंति	उम्मुक्क ⁶ सत्ति ।
वच्छयलि खुत्त	रत्तावलिस ।
णं रत्त वेस	मुच्छाविसेस ।
पसवणु ⁷ कुणंति	हियवउं लुणंति ।

15

घत्ता—जं इंदइ जित्तउ कोवपमित्तउ तं दहमुहुं णं खयजलणु ॥

20

ओत्थरिउ समत्थहि णाणासत्थहि दुज्जयपडिबलपडिखलणु ॥9॥

10

दुवई—पभणइ णत्थि एण इंदइणा तुह णिहएण रणजओ¹ ॥

भो भो राम राम मई पहरहि संचोयहि महागओ ॥छ॥

हो हो एण दुइउ लज्जिउज्जइ	मुक्कत्तामिहि किह अत्ति कडिउज्जइ ।
तुहुं वेहाविउ ताराकंते	अण्णु वि मुक्कएण ² हणुवंते ।
हउं देविदेण ³ वि णउ छिप्पमि	तुम्हहि माणुसेहि कि जिप्पमि ।
जाहि जाहि जा बंधवगत्तइ	णउ णिबडंति ⁴ खुरुप्पविहत्तइ ।
जाहि जाहि जा चक्कु ण मेल्लमि	तुह सिरकमलु ण लुंत्तिवि घल्लमि ।
दप्पुभडभडवंदविमई	तं णिसुणेवि पवुत्तु वलहई ।

5

इन्द्रजीत प्रविष्ट हुआ। तब धूमध्वजी क्रुद्ध युद्ध करने वाले राम ने उस पर धक-धक करती हुई शक्ति छोड़ी जो मानो चलती हुई ज्वाला अथवा विद्युन्माला हो। रक्त से लिप्त वह वक्षस्यल पर जाकर इस प्रकार लगी, मानो लाल (परिधान में) वेश्या हो या मूच्छाविशेष हो, क्षरण करती हुई या हृदय को काटती हुई।

घत्ता—जब इन्द्रजीत जीत लिया गया, तब क्रोध से प्रदीप्त, अपने समर्थ नाना शास्त्रों से अजेय प्रतिपक्ष को स्खलित करने वाला वह दशमुख उछल पड़ा, मानो दुष्ट जन उछला हो।

(10)

रावण कहता है—तुम्हारे द्वारा इस इन्द्रजीत के मारे जाने से युद्ध विजय नहीं है। अरे राम मुझ पर प्रहार करो। अपना महागज आगे बढ़ाओ। हो हो, उसे लज्जित होना ही चाहिए, कुलस्वामी पर इसके द्वारा भला कैसे तलवार निकाली जाएगी? तारापति सुग्रीव और मूर्ख हनुमान् के द्वारा तुम प्रवंचित किए गए हो। मैं देव-देवेन्द्र के द्वारा भी स्पृश्य नहीं किया जा सकता, तुम जैसे मनुष्यों द्वारा तो कैसे जीता जाऊँगा? जब तक खुरपों से विभक्त होकर भाइयों के शरीर नहीं गिरते, जाओ-जाओ, मैं चक्र नहीं छोड़ता और तुम्हारे सिरकमल को काटकर नहीं फेंकता। यह सुनकर, दर्प से उद्भट भटसमूह का

6. A पविमुक्क । 7. AP पसरणु ।

(10) 1. AP रणजुओ । 2. P मुक्कएण । 3. A देविदेण विउ छिप्पमि । 4. AP विहडंति ।

परमणीधणसिहरणिरिक्खण मरु मरु खल अयाण दुवियनखण ।
 किं सीहेण^५ सरहु दारिज्जइ पइं मिं काइं^६ लक्खणु मारिज्जइ । 10
 रूवविसेसपरज्जियमेणइ^७ जामि जामि जइ अण्णहि जाणइ ।
 जामि जामि जइ सेव समिच्छहि महुं पयपंकथ पणविवि अच्छहि ।

घत्ता—पइं रणउहि^८ मारिवि भिच्च वियारिवि ढोइवि लंक विहीसणहु ॥
 बोल्लिउ^९ पालेसमि हउं जाएसमि सहुं सीयइ सणिहेलणहु ॥10॥

11

दुवई—ता दसकंधरेण^१ मणिकुंडलमंडियगंडएसयं ॥
 छिण्णं असिसुधाइ णवणिसियइ^२ सीयाएविसीसयं ॥छ॥

रूसिवि रामहु अगइ घित्तउ^३ पुणु सखारु खलखुहें वुत्तउ ।
 लइ लइ राहुव घरिणि तुहारी एह ण होइ कया वि महारी ।
 मुय पिय पेच्छिवि मुच्छिउ रहुवइ करपहरणु णिवडिउ ण विहावइ । 5
 सित्तउ हिमसीयलजलधारहि^४ आसासिउ चमरिहसमीरहि ।
 कह व कह व संजाउ सचेयणु^५ कण्णामुहणिहित्तथिरलोयणु^६ ।
 ताव विहीसणेण विण्णत्तउं सीयामरणु ण देव^७ णिरुत्तउं ।

विमर्दन करने वाले बलभद्र ने कहा—रे दूसरों की स्त्रियों के स्तन के अग्रभाग को घूरने वाले अपंडित अज्ञानी दुष्ट मर-मर, क्या सिंह के द्वारा शरभ विदीर्ण किया जाएगा ? तुम्हारे द्वारा तो भला क्या लक्ष्मण मारा जाएगा ? अपने रूप विशेष से मेनका को पराजित करने वाली जानकी यदि तुम दे दो तो मैं जाता हूँ । मैं जाता हूँ, जाता हूँ, यदि तुम मेरी सेवा करना मान लेते हो और मेरे चरणकमलों को प्रणाम करके बने रहते हो ।

घत्ता—तुम्हें रणमुख में मारकर, भृत्य का विचार कर, विभीषण को लंका देकर, मैं अपने कहे हुए का पालन करूँगा और सीता-देवी के साथ अपने घर जाऊँगा ।

(11)

तब, मणिकुंडल से मंडित है गंडदेश जिसका ऐसे दशानन ने सीता देवी का सिर छुरी से काट दिया और क्रुद्ध होकर राम के आगे डाल दिया और फिर उस दुष्ट क्षुद्र ने कहा—रे राघव, ले-ले अपनी गृहिणी, यह कभी भी हमारी नहीं होगी । अपनी प्रिया को मरा हुआ बेखबर राम मूर्च्छित हो गए । उनके हाथ से शस्त्र गिर गया परन्तु वह नहीं जान सके । हिम से शीतल जल धारा से सिक्त वह चामरों की हवाओं से आश्वस्त हुए । वह किसी प्रकार बड़ी कठिनाई से सचेतन हुए । उन्होंने अपने स्थिर नेत्र कन्या के मुख पर कर लिए । इतने में विभीषण ने कहा—हे

5. P °मविवि° । 6. A सिहेण । 7. AP पाव । 8. A °परिज्जिय° 9. A रणमुहि । 10. AP बोल्लिउ ।

(11) 1. AP दहकंधरेण । 2. AP असिसुधाइ मायामयसीयाएवि° । 3. P वित्तउ । 4. AP °सीययजस° । 5. AP कंतामुह° । 6. A °णिहस° 7. AP होइ ।

खयरिवेण दिट्ठनुह्याएँ
ता दहमुहेण भाइ दुम्भोल्लिउ
विणु अब्भासवसेण सरासइ
एउ ण चित्तिउ कुलविद्धं सण
हरहं¹² मिलेहि जाइँ किर लल्लं
पत्ता—आरुद्धइ¹³ करिवरि चलपसरियकरि जो आसंघइ बालतणु ॥
महिहर मेत्तेप्पिणु महि लंघेप्पिणु मरइ मणुउ सो मूढमणु ॥11॥

12

दुवई—मइ कुद्धे ण रामु किं रक्खइ भडहणहणरवालए ॥

भाइय आउ जइ सक्कहि भिडु इह समरकालए ॥छा॥

तं जिसुणेप्पिणु	पहु पणवेप्पिणु ।	
णवधणणीसणु	भणइ विहीसणु ।	
जइ पिउ जंपहि	सीय समप्पहि ।	5
जिणयजुत्तहु	दसरहपुत्तहु ।	
होसि सहोयह	तो तुहुं भायह ।	
सामि महारउ	सयणपियारउ ।	
णं तो लज्जमि	णउ पडिबज्जमि ।	10
तुज्जु सुहिसणु	दुज्जसकित्तणु ।	
होइ असारें	इट्ठें जारें ।	

देव, यह निश्चित रूप से सीता का मरण नहीं है। तुम्हारे घात के देखनेवाले मेरे भाई ने यह इन्द्र जाल दिखाया है। तब रावण ने अपने भाई (विभीषण) से कहा—तुमने अपने वंश की जड़ को उखाड़ कर डाल दिया। अब्यास के बिना सरस्वती और गोत्र की कलह से लक्ष्मी मिश्रित रूप से नष्ट हो जाती है। रे कुल के विध्वंसक दुष्ट दुर्मुख कठोर एवं दुर्दर्शनीय, तूने इसका विचार नहीं किया? दूसरों से मिलकर आखिर तूने क्या पा लिया? तूने अपने को अपने से खाया?

पत्ता—चंचल और प्रसरित सूड़ वाले हाथी के क्रुद्ध होने पर, जो पर्वत छोड़कर और धरती का उत्संघन कर बालतृण का आसरा लेता है, मूढमन वह व्यक्ति मारा जाता है।

(12)

मेरे क्रुद्ध होने पर जिसमें भटों का मारो-मारो शब्द हो रहा है, ऐसे समरकाल में क्या राम तुम्हें बचा सकता है? हे भाई आओ और जहाँ तक हो सके यहाँ से युद्ध करो। यह सुनकर और प्रभु को प्रणाम कर नवधन के समान शब्द वाला विभीषण कहता है—यदि तुम प्रिय कहते हो तो सीता को राजाके न्याय से युक्त दशरथपुत्र राम को सौंप दो। तभी तुम मेरे सगे भाई हो। तभी मेरे स्वामी और स्वजनप्रिय हो, नहीं तो मैं अपने को लज्जित मानता हूँ और अपयश के कीर्तन तुम्हारे स्वजनत्व को स्वीकार नहीं करता। असार इष्ट मित्र रहे, जिसमें धड़ घूम रहे हैं। पता-

8. AP इंद्रजालु । 9. A पई णियकुलु उम्भुल्लिउ । 10. AP धुउ । 11. A add after this: एवमेव अप्पउ संतासइ; K writes the line but scores it off. 12. AP बइरिहि । 13. A आरुद्धइ ।

(12) 1. हउं ।

भूमियकबन्धइ	निवडियचिधइ ।	
महिचुयसुयभुइ	ता तहि संजुइ ।	
कयवीराहवि	मेइणिराहवि ।	
बहुदाराहवि	लगउ राहवि ।	15
भीसणु रावणु	परभारावणु ।	
रंजियसुरसह	बे वि महारह ।	
रणभरधुरखम	बे वि सविककम ।	
पडिहरि हलहर	धवलियकुलहर ।	
बे वि महाजस	णं आसीविस ² ।	20
फणिकालाणण	णं पंचाणण ।	
हिमसमतमतणु ³	आयडिदयधणु ।	

घत्ता—कंपावियजलथल छाइयणहयल रणि मेलावियअमरयण¹ ॥

सहरिस गलगज्जिय खयभयवज्जिय णाइ दिसागय कुइयमण ॥12॥

13

दुवइ—रावण राम बे वि जुज्झति सुरोसवसा¹ महाभडा ॥

छुडु छुडु दुक्क मुक्क बाणावलि छुडु छुडु छिण्ण धयवडा ॥छ॥

छुडु छुडु णाणाजाणइं भिण्णइं छुडु छुडु धवलइं छत्तइं छिण्णइं ।
छुडु² णरसंडखंडमंडिय महि छुडु गय घट्टिय लोट्टिय³ सारहि ।

कारें गिर रही हैं, धरती पर कटी हुई भुजाएँ पड़ी हुई हैं, ऐसे उस युद्ध में—जिसने वीरों का आह्वान किया है, जो धरती की शोभा की रक्षा करने वाले हैं, जिन्होंने अनेक द्वारों की रक्षा की है, ऐसे राम के साथ रावण लग गया (भिड़ गया)। रावण भीषण था, शत्रुओं को मारने वाला था। वे दोनों महारथी सुर सभा को रंजित करने वाले थे। दोनों रणभार उठाने में सक्षम और पराक्रम से सहित थे। रावण और राम जैसे धवल मंदराचल हों। दोनों ही महायशस्वी मानो सांप हों। नाग जैसे काले मुखवाले थे। मानो सिंह थे। हिम और अंधकार के समान शरीर वाले अपने धनुष ताने हुए—

घत्ता—जिन्होंने जल-थल को कंपा दिया है, आकाश थल को आच्छादित कर दिया है, और युद्ध में देवों को इकट्ठा किया है, ऐसे वे दोनों स्वाभिमान से गरजते से हुए, क्षय भाव से रहित जैसे कुपितमन दिग्गज थे।

(13)

अत्यन्त क्रोध के वशीभूत होकर महाभट राम और रावण आपस में युद्ध करते हैं। वे शीघ्र ही बड़े और बाणावली छोड़ी। शीघ्र ध्वज छिन्न हो गए। शीघ्र ताना यान छिन्न-भिन्न हो गए। धवल छत्र कट गए। शीघ्र धरती मनुष्यों के धड़ों के खंडों से पट गई। शीघ्र ही रथ चकनाचूर

2. P आसीविस। 3. AP हिमतमतमतणु। 4. P मेलाविय²।

(13) 1. AP सरोस² 2. AP छुडु छुडु णर²। 3. A लोट्टिय²।

छुट्टु संदण मुसुमूरिवि घल्लिय	पडिमयगल ⁴ मायंगहि पेल्लिय ।	5
छुट्टु छुट्टु रामु धामु जा दावइ	जाव खगिंदु रहंगु विहावइ ।	
जाव जुज्झि वावरइ सहोयरु	तावंतरि पइट्ठु दामोयरु ।	
पभणइ णिसुणि ⁵ देव सीराउह	वीर पउम चुंनियपउमामुह ।	
राम राम रामामणहारण	सुबलामुय अरिविदवियारण ।	
हउं निक्क ⁶ कठोरपिटुकरयलु	भाइ तुज्झ ⁷ पविरोलियपरबलु ।	10
जीवमि जाम वइरिमारणविहि	जगि ⁸ रयणियरच्चिधणिवतहसिहि ।	
ताव एउ पइं पव्विच्छुरियउं	सइं करेण किं पहरणु धरियउं ।	

वत्ता—रक्खियकुलगिरिदरि हउं तेरउ हरि मुइ मुइ मइं आलद्धजउ ॥
पविखरसरणहरहि अविरलपहरहि दारमि दहमुह मत्तगउ ॥13॥

14

धुवई—ता रामेण कण्हु मोक्कल्लियउं¹ बोल्लियउं तेण दहमुहो ॥
रे अपवित्त धूर्त परणारीरत्त म थाहि संमुहो ॥छा॥

विहिदुव्विलसितं तुहुं वि महीसरु ओसरु ओसरु मा संधहि सरु ।
कुद्धइं तुह दहमुह णहईवइं राहवरायपायराईवइं ।

कर फेंक दिए गए। मदगजों के द्वारा प्रतिमदगज पीछे धकेल दिए गए। शीघ्र जब तक राम अपने धाम को दिखाते हैं और जब तक विद्याधरेन्द्र रावण चक्र दिखाता है। और जब राम युद्ध-व्यापार करते हैं, तब तक सहोदर लक्ष्मण वहाँ प्रविष्ट हुआ। उसने कहा—हे देव, लक्ष्मी का मुख चूमने वाले वीर पद्म (राम) श्री राघव, हे राम-राम, ललनाओं (स्त्रियों) के मन को हरण करने वाले, सुबला के सुत, शत्रुसमूह का नाश करने वाले हे राम, विशाल और कठोर करतल वाला-शत्रुबल का मंथन करने वाला मैं तुम्हारा भाई जब तक जीवित हूँ तब तक शत्रुओं के लिए मारणविधि एवं निशाचर-ध्वजी नृप रूपी वृक्षों के लिए आग हूँ। तो फिर अपनी प्रभा से विच्छुरित यह अस्त्र भला आपने अपने हाथ में क्यों धारण किया ?

वत्ता—जिसने कुल रूपी गिरि की घाटी की रक्षा की है, ऐसा मैं तुम्हारा सिंह हूँ। आलब्ध-जय, तुम मुझे छोड़ो-छोड़ो, वज्र और तीव्र तीर रूपी नखों और अविरल प्रहारों से मत्तगज दशमुख का विदारण मैं करूँगा।

(14)

तब राम ने लक्ष्मण को मुक्त कर दिया। उसने रावण से कहा—रे अपवित्र धूर्त, परस्त्री में रत, तू मेरे सम्मुख मत ठहर। भांग्य से दुर्विलसित तू भी महीश्वर है। हट जा-हट जा, तू शर-संधान मत कर। राजा राघव के नखों से प्रदीप्त चरणकमल तुझ पर ऋद्ध हैं। आज तेरी

4. AP पडिमयंग। 5. A देव णिसुणि 6. AP कठोर^०। 7. A परितोलिय^०। 8. A जणरथ^०।

(14) 1. A मोक्कल्लियउं।

अज्जु तुज्जु परमाउसु पुण्णउं	जिह तूयरयणु ² कुसील ण दिण्णउं ।	5
मइं मुक्काइं दसास णियच्छहि	तिह एक्कहि पहरणइं पडिच्छहि ।	
कयसमरेण गहियरिउजीवे	तं णिसुणेवि वुत्तु ³ दहगीवे ।	
तल्लरजलि कइलासु ⁴ वि जलयरु	अदुमगामि एरंडु वि तरुवरु ।	
खलसुग्गीवरामणलहणुयहं	तारकुंदकुमुयहं खगमणुयहं ।	
एयहं मज्झि तुहं मि भडु भण्णहि	तेण बप्प मइं रणि अवगण्णहि ।	10
मुइ मुइ तेरउ आउहु केहउं	महु मयंगमसयंतरु ⁵ जेहउं ।	
भणइ विहीसणु जुज्झसमत्थइं	पहु मेत्तेसइ मायासत्थइं ।	
चित्तिहि तुहं पण्णत्ति जणइण	लहु करि मायावाहण पहरण ।	

घत्ता—तं तेम करेप्पिणु भुय विहुणेप्पिणु अब्भिदुउ दहमुहहु हरि ।

कइयणवयणुत्तिहि महणपवित्तिहि णाइ समुदहु सुरसिहरि ॥14॥ 15

15

दुवई—बेण्णि वि पीयवास बेण्णि वि नीलजणगरलसामया ॥

दोहिं नि कुलिसक्कसंकुसवस चोइय मत्तसामया ॥छा॥

बे वि कुद्ध बद्धठाण मुक्क तेहिं दिव्व बाण ।

रामणेण मुक्कु णाउ लक्खणेण पक्खिराउ ।

रावणेण अंधयारु लक्खणेण मुक्क सूरु ।

5

परम आयु पूर्ण हुई । रे कुशील, जिस प्रकार तू ने स्त्रीरत्न को नहीं दिया उसी प्रकार रे दशमुख, मेरे द्वारा छोड़े गए प्रहरणों को देख और उन्हें स्वीकार कर । यह सुनकर युद्ध करने वाले, तथा जिसने शत्रु के प्राण ग्रहण किए हैं, ऐसे दशानन ने कहा—छोटे तालाब में कछुआ भी कैलाश है ! बिना पेड़ के गाँव में एरंड भी वृक्षवर है । दुष्ट सुग्रीव, राम, नल और हनुमान्, तारकुंद, कुमुद तथा विद्याधर मनुष्यों के मध्य तुम भी भट कहलाते हो ! इसीलिए युद्ध में तुम मेरी उपेक्षा कर रहे हो । छोड़ो-छोड़ो, तुम्हारे आयुध में उतना ही अंतर है जितना कि हाथी और मशक में । विभीषण कहता है—स्वामी, युद्ध में समर्थ यह रावण मायावी अस्त्र छोड़ेगा । हे लक्ष्मण, तुम प्रज्ञप्ति विद्या का चिंतन करो, तुम शीघ्र ही मायावी अस्त्र ले लो ।

घत्ता—तब उस प्रकार कर, अपनी भुजाओं को ठोक कर, लक्ष्मण दशमुख से भिड़ गया जैसे स्वरश्मिष्ठ कविजनों की उक्तियों से तथा मंथनप्रवृत्त देवपर्वत (सुमेरु) समुद्र से भिड़ जाता है ।

(15)

दोनों के पीले वस्त्र थे । दोनों ही नीलांजना और गरल की तरह श्याम थे । दोनों ने ही ध्वज के कठोर अंकुश से वशीभूत सतवाले श्याम गज प्रेरित किए ।

वे दोनों ही बद्धलक्ष्य थे । दोनों ने दिव्य बाण छोड़े । रावण ने नागबाण छोड़ा, लक्ष्मण ने गरुड़गज तीर छोड़ा । रावण ने अंधकार बाण छोड़ा, लक्ष्मण ने सूर्यबाण । रावण ने

2. AP तियरयणु । 3. AP वुत्तउ । 4. A किकलासु; T किरुलासु परेक्कः (?) अथवा किकालसु कुरुविलः (?); K records a p: अथवा किकलासु कुरुविल जीव न तु गजमत्स्यादयाः, 5. P मयंगमसयंतरु ।

(15) 1. A कुलिसक्कसंकुस

रावणेण मेरु चंडु	लक्खणेण वज्जदंडु ।
रावणेण आसु आसु	लक्खणेण सेरिहेसु ² ।
रावणेण वारिवाहु	लक्खणेण मंधवाहु ।
रावणेण चिच्चिजाल	लक्खणेण मेहमाल ।
रावणेण दंति दीहु	लक्खणेण मुक्क सीहु ।
रावणेण रक्खसिंदु	लक्खणेण खेउविंदु ।
रावणेण रत्तिणाहु	लक्खणेण मुक्क राहु ।
रावणेण मुक्कु रुक्खु	लक्खणेण दुण्णिरीक्खु ।
पज्जलंतु जायवेउ	दिग्गयगलगतुउ ।

10

घत्ता—सुरसमरसमर्थे विज्जासर्थे जेण जेण रावणु हणइ ॥
पडिक्खणीहए³ भासुररुवे तं तं लक्खणु णित्तुणइ ॥ 15 ॥

15

16

दुवई—ता धगधगधगंतु⁴ खयजलणु व खेयरलच्छिमाणणो ॥
खणि बहुरुक्खिणीइ⁵ बहुरुक्खहि उद्धाइउ दसाणणो ॥ छ ॥

गयवरि गयवरि हयवरि हयवरि	रहवरि रहवरि णरवरि णरवरि ।
खेयरि अब्भिडंति पवरामरि ³	छत्ति विमाणि जाणि धइ चामरि ।
चउहुं मि पासहि भडु भीसावणु ⁴	जलि थलि महीयलि णहयलि रावणु ।
वीसपाणिपरिभामियपहरणु	तिणयणगलतमालसंणिहत्तणु ।

5

प्रचंड मेरुवाण छोड़ा, लक्ष्मण ने वज्रदंड । रावण ने शीघ्र अश्वबाण छोड़ा, लक्ष्मण ने प्रचंड महिष बाण । रावण ने मेघबाण छोड़ा, लक्ष्मण ने पवनबाण । रावण ने अग्निबाण, लक्ष्मण ने मेघमाल । रावण ने दीर्घगज छोड़ा, लक्ष्मण ने सिंहबाण । रावण ने राक्षसेन्द्र, लक्ष्मण ने क्षेमवृंद । रावण ने कामबाण छोड़ा, लक्ष्मण ने राहु बाण । रावण ने रुक्म बाण छोड़ा, लक्ष्मण भी, जिसका तेज दिग्गजों के अग्र भाग को लग रहा है ऐसा, अग्निबाण छोड़ा ।

घत्ता—देव-युद्ध में समर्थ जिस-जिस विद्याशस्त्र से रावण आक्रमण करता, उसके प्रतिपक्षीभूत तथा भास्वर रूप उस-उस बाण से लक्ष्मण उसे नष्ट कर देता ।

(16)

तब प्रलयान्नि के समान धक-धक करता हुआ लक्ष्मी का अभिमानी, विद्याधर रावण क्षण-क्षण में बहुरुपिणी विद्या के साथ दौड़ा ।

गजवर-गजवर पर, अश्ववर अश्ववर पर, रथवर रथवर पर, नरवर नरवर पर, खेचर-प्रवर अमर, छत्र विमान यान ध्वज और चामरों पर जा भिड़े । चारों ओर भयंकर योद्धा रावण पल में जल, थल, महीतल और नभतल में था । अपने बीसों हाथों से अस्त्रों को घुमाता हुआ, शिव-कण्ठ और तमाल के समान शरीर वाला, गुंजाफलों के समान अरुण नेत्रवाला, मारो-मारो

2. A सेरिहासु; T सेरिहेसु ।

(16) 1. AP धगधगंतु । 2. AP⁰ रुक्खिणीए । 3. A पडरामरि; P पडरपवरामरि । 4. P भीसावणु ।

गुंजापुंजसरिसणयणारुणु	हणु हणु हणु भणंतु रणदारुणु ।	
अग्गइ पंच्छइ चंचलु धावइ	मणहु वि पासिउ वेणं पावइ ⁵ ।	
गयकुंभयलइ पायहिं पेल्लइ	झ त्ति दंत उम्भूलिवि बल्लइ ।	
परिभसंतकरिवरकर ⁶ वंचइ	स्किखइ ⁷ गेज्जावलिय णिलुंचइ ।	10
सारिउ कसमसंति मुसुमूरइ	अंतरसेणासणिय वियारइ ।	
विलुलियकण्णचमर अच्छोडइ	कच्छोलंबिय घंटिय ⁸ तोडइ ।	
असिणा दारइ मारइ मयगल	धिवइ णहंगणि चलमुत्ताहल ।	

घत्ता—भीमाहवचंडहिं⁹ दढभुयदंडहिं चप्पिवि हुंकरेवि धरइ ॥

करि रोहइ जोहइ करणहिं मोहइ दसणविहिण्णु¹⁰ वि णीसरइ ॥ 16 ॥ 15

17

दुवई—फोडिवि¹ आसदारसीसकइं सिरइं सकवयगत्तइं ॥

छिदिवि पक्खराउ ह्य मारिवि परियाणइं विहित्तइं² ॥ १७ ॥

गयणयलि लग्गेवि कहकहरवं हसिवि बहुरुविणी रामकेसवहं गय तसिवि ।

ता³ रक्खधयलवखणा गुलुगुलंतेहिं रिउदुज्जया लोहदढमडियदंतेहिं⁴ ।

णवजलहरेहिं व जललव मुयंतेहिं चलकण्णतालेहिं सुरगिरिमहंतेहिं । 5

कहता हुआ, युद्ध में भयंकर रावण चंचल हो आगे पीछे दौड़ता है। मन से भी अधिक वेग से वह जाता है। गजकुंभ-स्थलों को वह पैर से पेल देता है, शीघ्र ही हाथी के दांतों को उखाड़ देता है, घूमते हुए करिवरों की सूइयों से वंचित करता है, ग्रीवा से क्षुद्र घंटिका रूपी नक्षत्रों को तोड़ लेता है। कसमसाते हुए गज-पर्याणों को मसल डालता है। सेना के भीतर स्थित लोगों को विदीर्ण कर देता है। चंचल कर्ण रूपी चमरों को छिटक देता है। कच्छा (झूल) से लटकती हुई घंटियों को तोड़ डालता है। तलवार से हाथियों को विदारित कर मार डालता है और मुक्ता-फलों को आकाश में बिखेर देता है।

घत्ता—भीमयुद्ध में प्रचंड दृढ़ भुजदंडों से चांपकर और हुंकार कर वह हाथी को पकड़ता है, उसे रोकता है, देखता है, आवर्तन आदि चेष्टाओं से उसे मोहित करता है और दांतों से विभक्त होने पर भी उनमें से निकल आता है।

(17)

अश्वारोहियों के शिरस्त्राणों, सिरों और कवच सहित शरीरों को नष्ट कर, कवचों को काटकर, अश्वों को आहत कर, उनके पर्याणों को विभक्त कर देता है। आकाशतल से लगकर कहकहाकर हँसता है। इस प्रकार वह अनेक रूपों में राम लक्ष्मण को त्रस्त करके खला। तब राक्षस-ध्वजियों के समान लक्षणवाले, शत्रु के लिए अजेय वे दोनों, जिनके दांत लोहे से खूब मढ़े हुए हैं, जो मेघों के समान जलकण छोड़ रहे हैं, जो चंचल कर्णतालों से युक्त हैं, जो सुमेर

5. PA धावइ । 6. A ⁹करि वंचइ । 7. AP. रिखे । 8. AP घंटउ । 9. A भीमाउह । 10. P ⁹विहित्तु ।

(17) 1. AP तोडिवि । 2. विहित्तइ । 3. A ताररक्खय⁹; P तो रक्खय⁹ । 4. P ⁹गडिय⁹ ।

‘क्षणज्ञणियमणिकिकिणीसोहमाणेहि’ अणवरयकरडयलपरिगलियदाणेहि⁵ ।
 सोवणसारीणिबद्धुचिधेहि⁶ करणासियागहियगयणाहगंधेहि ।
 दंतगभिण्णग्गखगरहतुरेगेहि⁷ भड वे वि थिय गयणि मायामयंगेहि ।
 ता मुक्क दहमुहिण⁸ पच्छइय णहभाय विसविसम गुरुविसहरायार णाराय ।
 तप्पंजरे छूटु⁹ तेणारिविद्वणु अलिकसणु हणवसणु वीभवणु¹⁰ सिरिरमणु ।
 पुणु पहरणावरणि मणि विज्ज संभरिवि सरणियह जज्जरिवि हुंकरिवि णीसरिवि ।
 जा वीरु उत्थरिवि चप्परिवि पइसरइ स रहंगु तहिं ताम धरणीसरो सरइ ।

धत्ता—णवचंदणचच्चिउ कुसुमहि अंचिउ रयणाराकिरणोहदलु ॥

णं रावणलच्छिहि कमलदलच्छिहि करयलाउ णिवडिउ कमलु ॥17॥

18

दुवई—रुसंतेण तेण महुमहणमहासुहडे णिओइयं ॥

तं कुडिलयरचडुलतडिवलयणिहं गयणे पधाइयं ॥छ॥

ता विट्ठु णहि एंतु सहस त्ति णिवडंतु ।

धाराकरालेहि करवालसूलेहि¹ ।

झसमुसलसेल्लेहि वावलाभरलेहि ।

5

पर्वत की तरह महान् हैं, जो क्षन-क्षण करती हुई मणि रूपी किकणियों से शोभित हैं, जिनके गंड-स्थल से अनवरत मदजल झर रहा है, जिनके स्वर्ण-पर्याणों पर ऊँचे ध्वज बँधे हुए हैं, कानों के कारण भ्रमर जिन महागजों से गंध ग्रहण नहीं कर पा रहे हैं, जिनके दाँतों के अग्र भागों से विद्याधरों के रथ और अस्त्र भग्न हैं, ऐसे मायागजों से आकाश में स्थित हो गए । तब उस रावण द्वारा मुक्त, विशाल विषधर आकारवाले, विष से विषम तीर आकाश में आच्छादित हो गए । उस तीरपंजर में शीघ्र ही जब शत्रु का विदारक, भ्रमर की तरह श्याम, दुःख का नाश करने वाला भयंकर वीर लक्ष्मण, फिर अपने मन में प्रहरणावरणी विद्या का स्मरण कर, शरसमूह को जर्जर कर, हुंकार कर निकलकर, उछलकर चाँपकर प्रवेश करता है तब वह धरणीश्वर रावण चक्रे का ध्यान करता है ।

धत्ता—नव चंदन से चंचित, फूलों से अंचित, रत्नों की आराओं के किरणसमूह के दल वाला चक्र इस प्रकार गिर पड़ा मानो कमलदल के समान आँखों वाली रावण की लक्ष्मी के करतल से कमल गिर पड़ा हो ।

(18)

क्रुद्ध होते हुए रावण ने उसे महासुभट लक्ष्मण में नियोजित किया । कुटिलतर और घंचल विद्युद्वलय के समान वह चक्र आकाश में दौड़ा ।

तब वह आकाश में आता हुआ और सहसा म्रिता हुआ देखा गया । धाराओं से कराल करवालों और शूलों, झसों, मूसलों, सेलों वावलों और भालों से तथा शत्रुजनों के लिए कृतांत

5. AP ण्णुणियं । 6. A अणवरयपरिगलियकरडयलदणोहि । 7. A दंतगिणिभिण्णखग । 8. A दहवणं । 9. P छट्ठु । 10. A वीभवणु ।

(18) 1. A करवालवालेहि । 2. A मुसलसल्लेहि ।

अरिणरकयतेहि	कंपणहि कोतेहि ।	
कयकण्ठपक्षेण	गवएं गवक्षेण ।	
कुमुएण कुंदेण	चंदे महिदेण ³ ।	
सत्तुहणभरहेण	णीलेण सरहेण ।	
सुग्गीवणामेण	हणुवेण ⁴ रामेण ।	10
पडिखलिउ णउ ⁵ बलिउ	अमरत्थु संचलिउ ।	
रणसिरिहि कुंडलु व	णवरविहि मंडलु व ।	
जसवल्लरीदलु व	भुयजुयलतरुफलु व ।	
माणिकमणजडिउ	लक्खणहु करि चडिउ ।	

घत्ता—जं चक्कसमिद्धउ⁶ कण्हे लद्धउं तं णारउ णहि णच्चियउ⁷ ॥ 15
आणदरसोल्लिउ सिरिधणपेल्लिउ राउ⁸ रामु रोमंचियउ⁹ ॥ 18 ॥

19

दुवई—णिवडिय कुसुमविट्ठ कउ कलयलु हरिसिय उरयसुरणरा ॥
भामिवि चक्कु भणित्त गोविदे विमरिस णिसुणि दससिरा ॥छ॥

संदण तुरंग	मयमुइयभिग ¹ ।	
करि गलियगंड	मेइणि तिखंड ।	
असि चंदहासु	लंकाणि वासु ।	5
ससहरसमाणु ²	पुष्पयविमाणु ।	
वइदेहि देहि	मा खयहु जाहि ।	

कंपनों और कोतों के साथ लक्ष्मण का पक्ष लेने वाले गवय, गवाक्ष, कुमुद, कुंद, चन्द्र, महेन्द्र, शत्रुघ्न, भरत, सरथ, नील, सुग्रीव, हनुमान् और राम के द्वारा वह चक्र प्रतिस्खलित नहीं हुआ, वह मुड़ गया। अमरशस्त्र (चक्र) चल पड़ा। रणलक्ष्मी के कुंडल के समान, तब रविमंडल के समान, यशरूपी लतादल के समान, बाहुयुगल के तरुफल के समान, माणिक्यसमूह से विजडित वह चक्र लक्ष्मण के हाथ पर चढ़ गया।

घत्ता—जब चक्र की समृद्धि को लक्ष्मण ने धारण कर लिया तो आकाश में नारद नृत्य कर उठे। आनंदरस से उल्लेखित तथा लक्ष्मी के स्तनों से प्रेरित राजा राम भी रोमांचित हो उठे।

(19)

कुसुमवृष्टि होने लगी। कल-कल होने लगा। नाग, सुर और मनुष्य हर्षित हुए। चक्र घुमाते हुए गोविंद ने कहा—रे दशमुख, यह विशेष बात सुन ! स्यंदन, तुरंग, मद से मुदित भ्रमर जिस पर है ऐसा गलितगंड हाथी, तिखंड धरती, चन्द्रहास कृपाण, लंका निवास, चन्द्रमा के समान पुष्पक विमान और वैदेही दे दो, विनाश को प्राप्त मत होओ, राम को संतुष्ट करो, उनके चरणों में प्रणाम करो। तेज रहित अपनी पत्नी के साथ जीवित रहो। तब ओठ चाबते

3. A मयवेण । 4. A omits this foot. 5. A णह्वडिउ । 6. AP चक्कु । 7. AA णच्चिउ । 8. A रामु राउ । 9. AP रोमंचिउ ।

(19) 1. PA ^०मुइयभिग । 2. P ससहृह ।

तूसवहि रामु	करि ³ पयपणामु ।	
जीवहि अतेउ	कंतासमेउ ।	
दट्टाहरेण	असिवरकरेण ।	10
असमंजसेण	अमरिसवसेण ।	
ता भणिउं तेण	णिसियरघएण ।	
पाइक्कतणम	णिम्मक्कविणय ।	
तुम्हं वराय	किं मज्झु राय ।	
णियजीवधरणु	सुग्गीवसरणु ।	15
पइसरहु जइ वि	णुव्वरहु ⁴ तइ वि ।	
विगयावलेव	देव वि अदेव ।	
भइभिडणसंगि	महुं जुज्झरंगि ।	
किं मणिउ रामु ⁵	तुहुं हीणधामु ⁶ ।	
जज्जाहि रंक	मग्गंतु लंक ।	20
लज्जहि ण केव	हिय सीय जेव ।	
अवराउ तेव	परिचत्तसेव ⁷ ।	
रामाणियाउ	रायाणियाउ ।	
लेसमि छलेण	णियभुयबलेण ।	
इय भणिवि भीमु	दुल्लंघधामु ।	25
आबद्धकोहु ⁸	मेल्लह सरोहु ।	
आइइच्छाउ ⁹	रायाहिराउ ।	
जा ¹⁰ उगभाउ	वीसद्धगीउ ।	
ता तक्खणेण	तहि लक्खणेण ।	30
णं खयपयंगु	मुक्कउ रहंगु ।	
आयउ तुरंतु	धाराफुरंतु ।	

हुए, हाथ में तलवार लिए हुए, उस निशाचरध्वजी ने कहा—जो दुर्विनीत भानवपुत्र है क्या वह तुम्हारा बेचारा (राम) हमारा राजा होगा ? अपना जीवधारण करने वाला यदि वह सुग्रीव की भी शरण में जाए तो भी उसका उद्धार नहीं हो सकता । देव और अदेव भी, भटों की जिसमें भिड़ंत है, ऐसे युद्धरंग में अहंकार शून्य हो जाते हैं, हीनशक्ति तुम्हें और राम को मैं क्या गिनी ? रे दरिद्र जा-जा, लंका मांगते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती । रे सेवा का परित्याग करने वाले, जिस प्रकार सीता को अपहृत किया गया है, उसी प्रकार दूसरी भी रानियों को मैं अपने भुजबल और छल से ग्रहण करूँगा । यह कहकर भयंकर, राजाधिराज अलंघ्यधाम रावण क्रोध से भरकर धनुष तानकर उस भाव से शर समूह छोड़ता है । तब उसी क्षण लक्ष्मण ने क्षयकाल के सूर्य के समान चक्र छोड़ दिया । धाराओं से स्फुरित होता हुआ वह तुरंत आया ।

3. कयपयं । 4. A णउ उव्वरहु तइ वि; P णउ उव्वुरहु तइ वि । 5. P adds after this : णिण्णट्णामु, संगमक्कामु । 6. A तुहुं विण्णधामु, 7. A परिचिण्णसेव । 8. P आबद्ध । 9. AP आइइच्छाउ । 10. AP जामुण ।

अरितावणेण	तं रावणेण ।
भुयखलिउ जइ वि	बलि ¹¹ मड्ड तइ वि ।
वच्छयलि लग्गु	को किर ण भग्गु ।
णिवसिरिपमत्तु	परणारिरत्तु ।

35

घत्ता—दहवयणहु केरउ दुहुइ जणेरउ तिकखइ धारइ सल्लियउं ॥
परघरिणीमंदिरु हियउ असुंदरु चक्के फाडिवि धल्लियउं ॥ 19॥

20

दुवई—ता दहवयणि पडिइ पडियइ सुरकुसुमइ सिरि उविदहो ॥	
हउ दुंदुहि गहीरु जउ घोसिउ पसरिय दिहि सुरिदहो ॥छ॥	
ता सुहडेहि दिट्ठु रणमहियलु ¹	वणवियनियलोहियजलजंजलु ।
भग्ग रहुंग रहुहि भहुं रहुिपहि	मड्डभग्गहि वंसविरहियहि ।
चामर पडिय हंस णं सारिय	घुलिय जोह पडिजोहवियारिय ।
मोडियदंडइ छत्तइ धवलइ	दिट्ठइ णाइ अणालइ कमलइ ।
छिण्णगुणइ महिलुलियइ चावइ	णं खलचित्तइ भंगुरभावइ ।
धम्मगुणज्झिय सुद्धिइ जुत्ता	बाण रिसि व्व मोक्खु ² संपत्ता ।
दाणवंत मत्थयखणणुज्जय ³	भावइ पिसुण ⁴ सट्ठं णिरु दुज्जय ।

5

शत्रुओं को सताने वाले रावण ने यद्यपि बलपूर्वक (पकड़ना चाहा) तब भी भुजाओं से स्खलित होकर उसके वक्षस्थल से जा लगा । उससे कौन भग्न नहीं होता ? राज्यलक्ष्मी से प्रमत्त, परस्त्री में अनुरक्त,

घत्ता—दुःखों का जनक, परस्त्रियों का घर स्वरूप, तीखे शल्कों से भेदा गया, रावण का असुन्दर चित्त चक्र ने फाड़कर डाल दिया ।

(20)

रावण के धरती पर पड़ते ही लक्ष्मण के सिर पर दिव्य पुष्पों की वृष्टि होने लगी । गंभीर दुंदुभि बज उठी । जय घोषित होने लगी । देवेन्द्र का भाग्य प्रसारित होने लगा ।

उस समय योद्धाओं ने युद्धभूमि को देखा जो घावों से रिसते रक्त रूपी जल का तालाब था । रथों रथिकों, बांसों से रहित फटे हुए ध्वजाग्रों के साथ चक्र भग्न हो गए । चामर गिर गए, मानो हंस मारे गए । विदारित योद्धा और प्रतियोद्धा पड़े हुए थे । टूटे हुए दंडों वाले धवल छत्र ऐसे लगते थे मानो बिना मृणाल के कमल हों । डोर कटे धनुष धरती पर पड़े हुए थे मानो भंगुर भाव वाले दुष्टों के चित्त हों । धर्म गुण से रहित तथा सुद्धि से युक्त ऋषि की तरह बाण मुक्ति पा गये थे । अंकुश से युक्त गज ऐसे प्रतीत होते थे, मानो अत्यन्त दुर्जेय दुष्ट हों ।

11. A बलवंड्ड; P बलिवंड्ड ।

(20) 1. A रणि महियलु । 2. AP मोक्खु णं पत्ता । 3. A 'मत्थय' । 4. A पिसुणसत्थु ।

कुडिल लोहणिम्मिय पडिअंकुस दिट्ठातुरय जंत तोडियकुस । 10
 खलिणइं णिवडियाइं पल्लाणइं दिट्ठइं विहडियाइं⁶ जंपाणइं ।
 दिट्ठइं णिवकबोलकंकालइं⁷ मासमासु लेंतइं वेयालइं ।
 कण्ठमउ⁸ कौलकडिसुत्तइं⁹ दिट्ठइं दसदिसासु पविहत्तइं ।

घत्ता—भडभालविणिहियइं¹⁰ विहिणा लिहियइं अचलइं भवियव्वक्खरइं ।।
 जाइवि¹¹ गयचम्मइं¹² संदणरम्मइं¹³ कावालिउ वायइ वरइं ॥20॥ 15

21

दुवई—पडिदारणविसाणजुयपेल्लियधल्लियमत्तवारणे¹ ॥

होही रिउहुं मरणु हरिहत्थे² सीयाकारणे रणे ॥छ॥

तहिं हिडंतहिं विहिविच्छोदय धरिणिहिं णियणियपिययम जोइय ।
 काइ वि पिउ सरसयणि³ पसुत्तउ दिट्ठउ णं रणलच्छिहि रसउ ।
 काइ वि पिउ लुलियंतहिं रुद्धउ दिट्ठउ णं जमसंकलबद्धउ । 5
 खंडखंडु⁴ हुउ मुउ णोलक्खिउ काइ वि पिउ पयखंडे⁵ लक्खिउ⁶ ।
 उज्जएण⁷ पडिएण महाहवि क वि अंगुलियउ भंजइ राहवि ।
 का वि भणइ हलि जूरइ⁸ महु मणु लक्खणेण महु रंडालक्खणु ।

कुटिल, लोह से निर्मित प्रति-अंकुश तथा तर्जक (कोड़ा) तोड़कर जाते हुए अश्वों को देखा । पल्यान स्थलित होकर गिर पड़े । जंपानों को विघटित होते हुए देखा । राजाओं के कपोल कंकाल दिखाई दिए । मांस का कौर खाते हुए बेताल देखे । कटक, मुकुट, कुंडल और कटिसूत्र हसों दिशाओं में बिखरे हुए देखे ।

घत्ता—विधाता के द्वारा लिखे गए देखने में सुन्दर, चमक रहित, भटों के भालों पर स्थित, भवितव्यता के अचल श्रेष्ठ अक्षर जाकर, कापालिक पढ़ता है ।

(21)

शत्रुगजों के दंतयुगल से आहत और पतित है मत्तगज जिसमें ऐसे उस युद्ध में, सीता के कारण लक्ष्मण के हाथों शत्रुओं की मृत्यु हो गई ।

वहाँ भ्रमण करती हुई गृहिणियाँ विधाता के द्वारा वियुक्त अपने-अपने प्रियतमों को देखने लगीं । किसी ने प्रिय को शरशैया पर सोते हुए इस प्रकार देखा मानो, वह युद्ध-लक्ष्मी में अनुरक्त हो । किसी ने कटे हुए आंखजाल से रुद्ध प्रिय को इस प्रकार देखा मानो यम की सांकलों से बंधा हुआ हो । किसी के द्वारा खंड-खंड हुआ, मरा हुआ और नहीं पहिचाना गया प्रिय पड़े हुए सरल पादखंड के द्वारा महायुद्ध में पहिचाना गया । कोई प्रिय की अंगूठी को तोड़ती है । कोई कहती है—हे सखी, मेरा मन (यह देखकर) पीड़ित होता है कि मुझे लक्ष्मण द्वारा वैधव्य के लक्षण

5. A विहलियाइं । 6. A *कवाल° । 7. AP °कुंडल° । 8. P भडसाल° । 9. A जोइवि । 10. AP संदणरम्मइं ।

(21) 1. A पेल्लिवि । 2. P हरिअत्थे । 3. AP सरसयणइ सुत्तउ । 4. P खंडखंड । 5. P लक्खियउ । 6. A उज्जएण । 7. A मूरइ ।

पायडियउं एवहिं किं किज्जइ वर णियणाहें समउं मरिज्जइ ।
 का वि भणइ णिअणियइ ण याणिय पट्टणा गोत्तमारि कहिं आणिय । 10
 डज्जउ सीय सुविप्पियगारिणि खलदइवे संजोइय वइरिणि ।
 का वि भणइ उब्बसि पिउ मेल्लहि रंभि तिलोत्तमि किं पि म बोल्लहि ।
 कण्णावरु इहु⁸ णाहु महारउ अत्थक्कइ⁹ किहु होइ तुहारउ ।
 कासु वि सिक्खपयगमणविसेसें समरदिवख दक्खालिय सीसें ।
 घत्ता—ता तहिं मंदोयरि देवि किसोयरि थण अंसुयधारहि धुवइ ॥ 15
 णिवडिय गुणजलसरि खगपरमेसरि हा हा प्रिय भणंति स्यइ ॥ 2 ॥

22

दुवई—हा कैलाससेलसंचालण हा दुज्जयपरक्कमा ॥

हा हा अमरसमरडिडिमहर हा हरिणारिक्कमा ॥ ४ ॥

हा भत्तार हार मणरंजण ¹	हा भालयलतिलय णयणंजण ।	
हा मुहसररुहरसरयमहुयर ²	हा रमणीयणणिलय मणोहर ।	
हा सुहव सुरहियसिरसेहर	हा रिउरमणीकरक्कणहर ।	5
हा थणकलसविहूसणपल्लव	हा हा हिययहारि णिच्चं णव ।	
हा करफंसजणियरोमंयुय	³ आलिगणकीलाभूसियभुय ।	
पेसलवयणविहियसंभासण ⁴	हा माणंसिणिमाणविणासण ।	

प्रगट किए गए। अच्छा है, इस समय प्रिय स्वामी के साथ मरा जाए। कोई कहती है—मैं अपनी नियति नहीं जानती, प्रिय यह गोत्रमारि कहाँ से ले आये। अत्यन्त बुरा करने वाली सीता देवी में आग लगे, दुष्ट विधाता ने उस वैरिन का संयोग कराया। कोई कहती है—हे प्रिय, उर्वशी को छोड़ दो, रंभा और तिलोत्तमा के विषय में भी कुछ मत बोलो। कन्या का वर, यह मेरा स्वामी है, इस समय यह तुम्हारा कैसे हो सकता है? शिवपदगमनविशेष (शिवा के पैर के गमन विशेष, मोक्ष पद पर गमन विशेष वाले) सिर के द्वारा किसी की समर दीक्षा दिखाई जा रही थी।

घत्ता—उस अवसर पर वहाँ कुशोदरी देवी मंदोदरी अपने स्तनों को अभ्युधारा से धोती है। गिरी हुई गुणजल रूपी नदी वह विद्याधर परमेश्वरी हा प्रिय हा प्रिय कह कर रो उठती है।

(22)

हा, कैलाश पर्वत का संचालन करने वाले, हा सिंह के समान पराक्रमवाले, हा स्वामी, हा सुंदर मन्तरंजन, हा भालतल के तिलक, आँखों के अंजन, हा सुख रूपी कमल के गुणगुनाते भ्रमर, हा सुन्दर रमणीजनों के घर, हा सुभग सुरभित शिरशेखर, हा शत्रुस्त्रियों के कंगन का हरण करने वाले, हा स्तनरूपी कलश के अलंकरण पल्लव, हा हा हृदय हरण करने वाले नित्य नव, हा कर-स्पर्श से रोमांच उत्पन्न करने वाले, हा आलिगन की क्रीड़ा से भूषितबाहु, हा हा कुशल वचनों से संभाषण करने वाले और मनस्विनियों के मान का विनाश करने वाले, हा पंचेन्द्रिय

8. A पट्ट । 9. A अत्थइ कह वि; P अत्थक्कए किहु ।

(22) 1. P जणरंजण । 2. A मुहसररुह⁸ । 3. AP रमणीमण⁹ । 4. A हालिगण¹⁰ । 5. AP विहियवयण¹¹ ।

हा पंचेदियविसयसुहावह
हा लंकाहिव खेयरसामिय
हा मंदरकंदरकयमंदिर
पइं विणु जांग दसास जं जिज्जइ
हा प्रिययम भणंतु सोयाउरु
घत्ता—ता णियकुलभूसणु दुवकु विहीसणु तहिं तक्खणि सुविसण्णमइ ।
जगकाणणमाणणु भडपंचाणणु जहिं णिवडिउ लंकाहिवइ ॥22॥

23

दुवई—अप्पउ रयणकिरणविप्फुरियइ¹ छुरियइ हणइ जावहिं ॥
जीविउ विद्वंतु कयसंतिहिं मंतिहिं धरिउ तावहिं ॥छ॥
हा हा कयउं कामु मइं भीसणु
अज्जु सरासइ सत्थु ण सुयरइ
जयसिरि पत्त² अज्जु विहवत्तणु
अज्जु इंदु भयवसहु म गच्छउ
अज्जु तिप्पु णहिं तवउ दिणैसरु
अज्जु जलणु जालउ³ वित्थारउ
णेरिउ अज्जु रिछु आवाहउ
णियसणु पहणिवि रुयइ विहीसणु ।
अज्जु कित्ति दसदिसहिं ण वियरइ ।
मयउ अज्जु पहु सत्तिपवत्तणु ।
अज्जु चंदु सहं कंतिइ अच्छउ ।
अज्जु सुयउ णिच्चित्तु फणीसरु ।
वइवसु अज्जु सइच्छइ मारउ ।
दिक्करिउलु मा कासु वि वीहउ ।

विषयों के लिए सुखावह, हा प्रिय स्वजनों का मनोरथ पूरा करने वाले, हा लंकानरेश, विद्याधरों के स्वामी, हा गंधमदन पर्वतगामी देव, हा मंदराचल की कंदरा में गृह बनानेवाले, हा दिव्य पद्म सरोवर की पद्मिनी के भ्रमर दशमुख, यदि तुम्हारे बिना जग में जिया जाता है तो परम दुःख समूह को सहन करना है। हा प्रियतम कहता हुआ शोक से व्याकुल समूचा अन्तःपुर क्रंदन करता है।

घत्ता—इतने में विषण्णमति, अपने कुल का आभूषण विभीषण तत्काल वहाँ पहुँचा कि जहाँ मनुष्य रूपी मानस का मान्य भटसिंह लंकाराज पड़ा हुआ था।

23

रत्नकिरणों से चमकती हुई छुरी से जब तक वह अपने को मारता है, तब तक जीवन का नाश करने में तत्पर उसे शांति स्थापित करनेवाले मंत्रियों ने पकड़ लिया। अपने शरीर को पीटते हुए विभीषण रोता है—मैंने अत्यन्त बुरा कर्म किया। आज सरस्वती शास्त्र की याद नहीं करती, आज कीर्ति दसों दिशाओं में विचरण नहीं करती, विजयश्री आज वैधव्य को प्राप्त हो गई। शक्ति का प्रवर्तन करने वाला स्वामी आज चला गया। आज इन्द्र भय को प्राप्त न हो, आज चन्द्रमा अपनी कांति के साथ रहे, आज सूर्य आकाश में खूब तपे, आज नागराज खूब सोए, आज आग ज्वाला का विस्तार करे। यम आज स्वेच्छा से लोगों को मारे। नैऋत्य आज रोछ पर सवारी करे। दिग्गज कुल अब किसी से न डरे। आज वरुण अपनी प्रशंसा कर ले। आज पवन

6. A ⁶पोमदिदिर ।

(23) 1. A विच्छुरियइ । 2. AP अज्जु पत्त । 3. A जालावित्थारउ ।

अज्जु वरुणु अप्पाणु पसंसउ
अज्जु कुबेर कोसु मा ठोवउ
भायर पई गइ णारयठाणहु⁵

अज्जु वाउ उववणइं विहंसउ⁴ ।
अज्जु कामु अप्पाणउं जोवउ ।
अज्जु णयरि णंदउ ईसाणहु ।

10

घत्ता—पई मुइ धरणीसर खगपरमेसर सुरवर⁶ जयदुंदुहि रसउ ॥

तूय⁷ राहवचंदहु सूय⁸ गोविंदहु अज्जु णिरंकुस⁹ उरि वसउ ॥23॥

24

दुवई—अज्जु मिलंतु मच्छ मंदाइणि बहउ ससंकपंडुरा ॥

पई मुइ खेरिद कह¹ होसइ सा णवघुसिणपिजरा ॥छ॥

णारउ णार² खाल णालगविहि
रामु ण कुद्ध कुद्ध जगभक्खउ
चक्कु ण मुक्कु मुक्कु जमसासणु
वच्छु ण भिण्णु भिण्णु धरणीयलु
तुहुं णउ पडिउ पडिउ कामिणिगणु
चेट्टु ण भग्ग भग्ग लंकाउरि
हा भायर कि ण किउ णिवारिउ
लक्खण राम काई णउ मणिणय

एण ण³ हित्त हित्त परियणदिहि ।
लक्खणु ण भिडिउ भिडिउ कुलक्खउ ।
तं णउ लमाउ लग्गु हुयासणु ।
रुहिरु ण गलिउ गलिउ सज्जणबलु ।
तुहुं ण मुओ सि मुउ विहलियजणु ।
दिट्ठि ण सुण्ण सुण्ण मंदोयरि ।
किं महं तणउं वयणु अवहेरिउ ।
किं सुग्गीव हणुव अवगणिणय ।

5

10

उपवनों का ध्वंस कर ले । आज कुबेर कोश को धारण करे । आज काम अपने को देख ले । हे भाई, तुम्हारे नरक-स्थान पर जाने पर ईशान आज नगर में आनन्द मना ले ।

घत्ता—हे धरणीश्वर विद्याधरेश्वर, तुम्हारे मरने पर देववर अपनी जय डुगडुगी बजा लें । स्त्री (सीता) राघवचन्द्र के और लक्ष्मी लक्ष्मण के उर में निवास कर लें ।

(24)

आज मत्स्यों से मिलती हुई गंगा नदी चन्द्रमा की तरह सफेद होकर बहे । वह तुम्हारे बिना हे खेचरेन्द्र, नव-केशर से पिजरिल कैसे होगी ?

वह नारद नहीं आया, नाश का विधाता आया था । सीता का अपहरण नहीं किया गया, परिजनों के भाग्य का अपहरण किया गया । राम क्रुद्ध नहीं हुए, जग-भक्षक क्रुद्ध हुए । लक्ष्मण नहीं लड़ा, कुल-क्षय ही लड़ा । चक्र नहीं छोड़ा गया, यम-शासन ही छोड़ा गया । वह नहीं लगा वरन् हुताशन ही लगा । भाई भग्न नहीं हुआ, धरणीतल भग्न हो गया । रक्त नहीं गला, सज्जन-बल गल गया । तुम नहीं गिरे, कामिनीजन गिरा । तुम नहीं मरे, समस्त विकलित जन मर गया । तुम्हारी चेष्टा भग्न नहीं हुई, लंकापुरी भग्न हो गई । दृष्टि सूनी नहीं हुई, मंदोदरी सूनी हो गई । हे भाई, तुमने मेरे मना किए हुए को क्यों नहीं माना ? तुमने मेरे वचनों की अवहेलना क्यों की ? तुमने राम और लक्ष्मण को क्यों नहीं माना ? तुमने सुग्रीव और हनुमान् का अपमान क्यों किया ?

4. A विहंसउ । 5. A णारयगमणहु । 6. A सुरवइ । 7. AP तिय । 8. AP सिय 9. A णिरंकुसि ।

(24) 1. A कहि । 2. A आउ णाइ । 3. A णिहित्त ।

दुजसकारिणि णयगुणवंतहं⁴ किं ण दिण्ण पणइणि मग्गंतहं ।
 किह कुलिसु वि घुणेहि विच्छिण्णउं तुज्झु वि मरणु⁵ केव संपण्णउं ।
 हा पइं विणु मइं काइं जियंतं हा हउं कवलितुं किं ण कयंतं ।

धत्ता—कायर मग्गीसांवि अभउ पघोसांवि विजयसंखु पूरिवि लहु ॥

तामायउ लक्खणु राउ⁶ विक्खणु सुग्गीउ वि हणुएण सहुं ॥24॥

15

25

दुवई—भासितुं राहवेण दहमुहु तुहुं सोयहि किं विहीसणा ॥

जासु खगिदवदवदारम विरइयपायपेसणा¹ ॥छ॥

विलसियचंदसूरणक्खत्तइ एयहु को समाणु भुयणत्तइ ।
 एक्कु जि णवर दासु दमियारिहि जं अहिलासु गयउ परिणारिहि ।
 जइ² ण वि किउ जिणधम्मवएसणु वारिवि करुण³ खंतु विहीसणु ।
 रामाएसं जगकंपावणु चउहिं जणहिं उच्चाइउ रावणु ।
 होइ सुरिंदु वि गयगुणसारउ परयारेण सव्वु लहुयारउ ।
 कंचणमइ विमाणि संणिहियउ पेयभूसणायारु वि विहियउ ।
 उब्भिय कयलिखंभ सुहसंभइ णं मसाणघरकरणारंभइ ।

5

न्याय गुण से उचित मांगते हुए भी उन्हें अपयश करने वाली प्रणयिनी (सीता) क्यों नहीं दी ? क्या वज्र भी धनों से क्षय को प्राप्त होता है ? तुम्हारा भी मरण किस प्रकार हो गया ? हा तुम्हारे बिना मेरे जीवित रहने से क्या ! हा मुझे कृतांत ने कवलित क्यों नहीं कर लिया ?

धत्ता—कातरों को अभय वचन देकर, अभय की घोषणा कर शीघ्र विजय शंख बजाकर तब तक राजा लक्ष्मण और विचक्षण सुग्रीव भी हनुमान् के साथ आ गये ।

(25)

राघव ने कहा—हे विभीषण, तुम उस रावण के लिए अफसोस क्यों करते हो, जिसकी खगेन्द्रवृंद रूपी चारण चरणसेवा करते रहे हैं ।

चन्द्र, सूर्य और नक्षत्रों से विलसित इस भुवनत्रय में इसके समान कौन है ? शत्रुओं का दमन करने वाले उसका एकमात्र दोष है (और वह यह) कि उसकी इच्छा परस्त्री में हुई और उसने जिनधर्म के उपदेश को नहीं माना । इस प्रकार करुण विलाप करते हुए विभीषण को मनाकर, राम के आदेश से विश्व को कैपाने वाले रावण को चार लोगों ने उठा लिया । चाहे गुणगण से श्रेष्ठ सुरेन्द्र ही क्यों न हो, परस्त्री के कारण सबको हलका होना पड़ता है । उसे स्वर्णमय विमान में रखा गया । उसके शव का शृंगाराचार किया गया । केले के खम्भे उठा लिए गए । सुख का नाश करने वाले मरघट-गृह का निर्माण प्रारम्भ हुआ । उसके ऊपर वर्ण विविध दुःखरूपी लता के

4. A णिय⁰ । 5. AP केम मरणु । 6. P रामु ।

(25) 1. A विरइयणिक्खपेसणा । 2. A जेहिं ण किउ; P जइ णहिं किउ । 3. AP कलुणु । 4. A हलुयारउ ।

धरियइ उप्परि वणविचित्तइ	दुखवेल्लिपत्ताइ व छत्तइ ।	10
पविलवियउ पडायउ दीहुउ	णावइ सोयमहातरसाहुउ ।	
पसरिय चंदोवय णं खलयण ⁵	थिय बंधव काला णं णवधण ।	
बाहसलिलधारहि वरसंति व	तुरइ दहभिण्णाइ रसंति व ।	

घत्ता—हउं कट्ठे षडियउ चम्मै मडियउ परकरताडणु जं सहमि ।

णं⁶ एउं सुजुत्तउं पडहें वुत्तउं तं दसासु महिवइ महमि ॥25॥ 13

26

दुवई—एमहि तेण सुक्कु किं वज्जमि वज्जमि⁷ परणरिदहं ।

लवखणरामचंदसुग्गीवहं णीलमहिदकुंदहं ॥२६॥

रत्तउ णं विरहग्गे तत्तउ	णं सयंति वित्थारियवत्तउ ।	
बहुयउ काहलाउ तुरुत्तुरियउ	सद्दु मुयंति जीउ णं तुरियउ ।	
भणइ व संखु अणाहु ण णीवमि	परसासाऊरिउ ⁸ किं जीवमि ।	5
वंसु भणइ हउं काणणि पइसमि	छिद्वंतु मुइ सामि ण विरसमि ।	
डज्जउ मदलु कूरें गज्जइ	पहुमरणि व भोयणि णउ लज्जइ ।	
कट्ठहं मज्झि णिवेसिउ उत्तमु	परकलत्तहरणें णासिउ कमु ।	

पत्तों के समान छत्र रख दिए गए । लम्बी पताकाएँ लटका दी गई । जैसे वे लोकरूपी महावृक्ष की शाखाएँ हों । चंदोवा दुष्टजनों की तरह फैला दिया गया । बंधुजन इस प्रकार स्थित थे, मानो बाष्पजल (अश्रु) धाराओं से बरसते हुए काले तवघन हों । दुःख से आहत के समान तुर्य बज रहे थे ।

घत्ता—काठ का बना तथा चमड़े से मढ़ा गया मैं जो दूसरों के हाथ का ताड़न सहता हूँ, यह ठीक नहीं है—मानो यह पटई ने कहा, मैं रावण महीपति की पूजा करता हूँ ।

(26)

इस समय मैं उसके द्वारा छोड़ दिया गया हूँ, अब क्या बजूँ ? मैं शत्रु-राजाओं लक्ष्मण, रामचन्द्र, सुग्रीव, नील, महेन्द्र और कुंद को छोड़ देता हूँ ।

वह लाल था, मानो विरहाग्नि से संतप्त हो । मानो अपना मुँह फैलाकर रो रहा हो । बहुत से बाघ तुरतुर छोड़ते हैं, मानो जल्दी-जल्दी अपने प्राण छोड़ रहे हों । शंख कहता है कि मैं अनाथ जीवित नहीं रहूँगा । दूसरे के प्रश्वासों से आपूरित होकर क्या जीवित रहूँ ? वंश (वाँसुरी) कहती है कि मैं कानन में प्रवेश करूँगी । छिद्रों सहित होते हुए भी, मैं स्वामी के मरने पर नहीं बजूँगी । मर्दन (मृदंग) में आग लगे, यह दुष्टता से गरजता है । स्वामी के मरने पर भी भोजन से लज्जित नहीं होता । उस श्रेष्ठ को लकड़ियों के बीच रख दिया गया । परस्त्री के हरण से उसका कुलद्रुम नष्ट हो गया । आग दे दी गई । ज्वालाओं से अग्नि टेढ़ी जाती है, मानो

5. A वुज्जण । 6. A तं एउ ण जुत्तउ ।

(26) 1. P किह । 2. P omits वज्जमि । 3. P 'सासाऊरिय ।

दिण्णु हुयासु सिहालितु वंकइ
णं पवणं कडिडज्जइ लगगउ

दससिरदेहु छिवहुं णं संकइ ।
पहुउप्परि चडंतु णं भगगउ ।

10

घत्ता—जो सीयासावें¹ णियमणकोवें² दूसहविरहें जालियउ³ ॥

सो राउ हुयासें पेयपलासें जालकरगों⁴ लालियउ ॥26॥

27

दुवई—आणिदि भुउ पाँरदचूडामणि सज्जगहि समुग्गओ ॥

तहु सत्तच्चि सत्तधाउहह⁵ क्ष ति धग ति लगगओ ॥छ॥

वइरिविहंडणु कालें लद्धउ

तिहुयणकंटउ जलणें खद्धउ ॥

तासु सरीर तेण उवजीविउ

तो⁶ वि ण पोरिसेण जगु दीविउ ।

जं जामु वि तं तासु जि छज्जइ

करहचरणि कि णेउरु जुज्जइ ।

5

पहाइवि सयणहि दिण्णउं पाणिउं

दुत्थिउ बंधुविदु⁷ संमाणिउ ।

एत्थंतरि असोयवणि पइसिवि

रामाएसें देवि पसंसिवि ।

अंगंगयण लणीलविहीसहि

अंजणेयकिक्किधणरेसिहि⁸ ।

पणविवि जणयवसुंधरिधीयहि

केसवविजउ समासिउ सीयहि ।

आणिय मिलिय⁹ देवि बलहद्धु

अमरतरंगिणि णाइ समुद्धु ।

10

हेमसिद्धि णावइ रससिद्धु

केवलणाणरिद्धि णं बुद्धु ।

रावण के शरीर को छूने में सकुचाती है, मानो पवन के द्वारा वह खींची जाने लगी, मानो प्रभु (रावण) के ऊपर चढ़ती हुई नष्ट हो गयी ।

घत्ता—सीता के शाप, अपने मन के कोप और असह्य विरह से जो जला दिया गया था वह राजा (रावण) प्रेत मांस खानेवाले अनल के द्वारा ज्वाला रूपी कराग्र से सू लिया गया ।

(27)

यह जानकर कि नरेन्द्र-चूडामणि (रावण) मर चुका है, समस्त शरीर से निकलती हुई सात धातुओं का हरण करनेवाली आग उसे शीघ्र ही धक् करके लग गई ।

शत्रुओं के विघटन करनेवाले को काल ने ले लिया । त्रिभुवन के कंटक को आग ने खा लिया । उसके शरीर को उसी ने आश्रय दिया, फिर भी पौरुष से विश्व आलोकित नहीं हुआ । जिसका जो है उसको वही शोभा देता है । गौर के पैर में क्या घुँघरू बाँधा जाता है ? स्नान कर स्वजनों ने पानी दिया और दुःस्थित बंधुजनों को समाश्वस्त किया । इसी बीच अशोक वन में प्रवेश कर राम के आदेश से देवी की प्रशंसा कर अंग, अंगद, नल, नील, विभीषण, हनुमान् और सुग्रीव ने प्रणाम कर जनक और वसुंधरा की बेटी सीता को संक्षेप में राम की विजय को बताया और वे उसे ले आए । देवी बलभद्र से मिली जैसे गंगा नदी समुद्र से मिली हो, जैसे हेमसिद्धि रससिद्धि से मिली हो, केवलज्ञान सिद्धि मानो पंडित को मिली हो, परमार्थ को जानने वाले

4. A सीयासोए 5. AP तादियउ । 6. AP करगहि जालियउ; T लालित स्पष्टः ।

(27) 1. AP समग्गओ । 2. P ⁹धाहुहह । 3. A तो उण । 4. A बंधुवग्गु । 5. AP किक्किध-पुरेसिहि । 6. AP देवि मिलिय ।

दिव्यवाणि जाणियपरमत्थहु⁷
चित्तसुद्धि णं चारुमुणिदहु
णं वरमोक्खलच्छि⁸ अरहंतहु

वरकइमइ णं पंडियसत्थहु ।
णं संपुण्णकंति छणयंदहु ।
बहुगुणसंपय णं गुणवंतहु ।

वृत्ता—जं दिट्ठु समाहुउ णियपइ राहुउ तं सीयहि तणुकंचुइउ ॥

15

पुलएण विसट्ठउ उट्ठु जि फुट्ठउ पिसुणु व सयखंडई गयउ ॥27॥

28

दुवई—तोरणविविहदारपायारघरावलिसिहरसोहिए ॥

अरिवरपुरि पइट्ठु हरिहलहर धयमालापसाहिए ॥छ॥

मंदोयरि ख्यंति साहारिवि
बंधव सयण सयल हक्कारिवि
मंति महंतमंति संचारिवि
पढमजिणाहिसेउ णिव्वत्तिवि
सत्तु मित्तु मज्झत्थु वि चित्तिवि
अवणिदविणपुरलोहु⁴ विवज्जिवि

इंदइ सोयविसंठुलु¹ धीरिवि² ।
णायरणरहं संक णीसारिवि ।
विग्घकारि सयल³ वि णीसारिवि ।
होम विविहदाणाइं वत्तिवि ।
समइ सव्वसामंत णियंतिवि ।
गह बंधण जेमत्तिय पुज्जिवि ।

5

को दिव्यवाणी मिली हो, मानो पंडित समूह को श्रेष्ठ कविमति मिली हो । भव्य मुनियों को मानो चित्तशुद्धि मिली हो । मानो पूर्ण चन्द्र को सम्पूर्ण कान्ति मिली हो । मानो अरहंत को चरम मोक्ष लक्ष्मी मिली हो । मानो गुणवान् को बहुगुण संपत्ति मिली हो ।

वृत्ता—जब अपने पति राघव को लक्ष्मण के साथ देखा तो सीता की देह पर कंचुकी पुलक से विकसित होकर ऊपर-ऊपर फट गयी और दुष्ट की तरह सैकड़ों खण्डों में विभक्त हो गयी ।

(28)

जो तोरणों, विविध द्वारों, प्राकारों और गृहावलियों की शिखरों से शोभित है, ध्वजमालाओं से प्रसारित ऐसी लंकानगरी में राम और लक्ष्मण ने प्रवेश किया ।

रोती हुई मंदोदरी को ढाढस बंधाकर शोक से अस्त-व्यस्त इन्द्रजीत को धीरज देकर, समस्त स्वजनों और बांधवों को बुलाकर, नागर-नरों की शंका दूर कर, छोटे-बड़े मंत्रियों से मंत्रणा कर, समस्त विधन करनेवालों को निकाल बाहर कर, सबसे पहिले जिनेन्द्र का अभिषेक कर, होम और विविध दानों का संपादन कर, शत्रु और मित्र में मध्यस्थता के भाव का विचार कर, समस्त सामन्तों को अपने मत में नियन्त्रित कर, धरती, वन और पुर लोक को छोड़कर, ग्रह, ब्राह्मणों और नैमित्तिकों की पूजा कर, प्रवर पुरुषों के परिहास की इच्छा कर, धर्म का पालन

7. AP णं जगपरम^० । 8. A णं तिल्लोक्कलच्छि ।

(28) 1. P भोयविसंठुलु । 2. AP वारिवि । 3. AP विग्घकारि णीसेस णिवारिवि । 4. A अवणिदविणु पुरलोहु; अवणिदविणपरसोहु ।

पवरपुरिसपरिहास समीहिवि
लोयदिण्णहिथइच्छियकामें

पालिवि धम्मु अधम्महु बीहिवि ।
रामारामें⁵ राएं रामें ।

10

घत्ता—पविमगलियंभहि कंचणकुंभहि ण्हाणिवि⁶ पट्टबंधु विहिउ ॥
रणि मारिवि रावणु भुवणभयावणु रज्जि विहीसणु संगिहिउ ॥28॥

29

दुवइ—इय को करइ भिउइ¹ वि भडगोंदलि भुवणंगणमरावणं ॥
छज्जइ एम कासु णिक्कवइ वि सुहिपडिवण्णपालणं ॥छ॥

एह रुद्धि एहउं गरुयत्तणु
कोसु देसु सो तं पुरु परियणु
ताइं आयवत्तइं² पददइं
ताइं वणाइं अमरतरुगंधइं
ते असिकर दुक्करकर किकर
लंकादीउ तं जि सो जलणिहि
णिहिलइं हियवइ तणु व वियप्पिवि
मेइणिसाहणि तिजगजयाणउं

मेल्लिवि पज्जमु कासु सुयणत्तणु ।
तं पणियंगणकुलु पीवरयणु ।
आणइं जंआणइं तुद्धिचिउइं ।
ताइं जि जाउहाणनुवधिइं³ ।
ते हयवर ते गयवर रहवर ।
ते चामीयरभरिय महाणिहि ।
दहमुहाणुजायहु जि समप्पिवि ।
लक्खणरामहिं दिण्णु पयाणउं ।

5

10

कर, अधर्म से डरकर, जिन्होंने लोकहित और दीनहित के अनुकूल काम किया है, तथा स्त्रियों के लिए रमणीय राजा राम ने,

घत्ता—जिनसे पवित्र जल गिर रहा है, ऐसे स्वर्ण-कलशों से स्नान कराकर, पट्ट बांध दिया । युद्ध में भुवन-भयंकर रावण को मारकर राज्य पर विभीषण को प्रतिष्ठित कर दिया ।

(29)

ऐसा और कौन है जो योद्धाओं के कोलाहल में लड़ता है और विश्व के प्रांगण को रावण रहित करता है ! ऐसा और किसे शोभा देता है जो सज्जनों को दिए गए वचन का प्रतिपालन करता है ! यह प्रसिद्धि, यह गुरुता और सुजनता राम को छोड़कर और किसके पास है ? वह कोष, देस, वह परिजन और पुर, स्थूल स्तनोंवाला वह वैश्याकुल, वे आतपत्र और बालें, सुविचित्र यान और जंपान, कल्पवृक्षों से सुगंधित वन और राक्षसकुल के वे नृपचिह्न, तलवार हाथ में लिये हुए कठोरकर वे अनुचर, वे अश्ववर, गजवर और रथवर, वही लंकाद्वीप और वही समुद्र, स्वर्णों से भरी झुई वे महानिधियाँ, इन सबको अपने मन में तृण के समान समझकर तथा दशमुख के छोटे भाई को देकर धरती की सिद्धि के लिए राम और लक्ष्मण ने तीनों लोकों को जीतने वाला प्रस्थान किया ।

5. पुरि पइसेप्पिणु लक्खणरामें । 6. P ण्हाविवि ।

(29) 1. AP भिडेवि भड° । 2. AP °णिव° ।

घत्ता—ते रामजगद्गण दण्डयविमद्गण परिभ्रमन्ति भुवणयलइ ॥
आवाहियचलरह पावइ सभरह पुष्पकयन्त गयणयलइ ॥29॥

इय महापुराणे तिस्रदिठमहापुरिसगुणालंकारे महाभक्तभरहाणुमणिए
महाकव्यपुष्पकयन्तविरहए महाकव्वे रावणणिहणणं^३ विहीसण-
पट्टबंधो^४ णाम अट्ठहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥78॥

घत्ता—राक्षसों का दलन करनेवाले वे राम और लक्ष्मण भुवन्तल में परिभ्रमण करते हैं,
जिन्होंने जंगल वनों को ^{हुँटा है} ऐसे-...वाले सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रों सहित, आकाशतल में चल
रहे हों।

बेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित
एवं महाभक्त भरत द्वारा अनुमत महाकव्य का रावण-निघन एवं विभीषण-
पट्टबंध नाम का अठहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

एककूणासीमोसं धि

जिह्मिनि भीमु रणि पुजयत्त रावणु मयन्तत्त ॥
महि हिडंतु पहु पीठइरि^१ रामु संपत्तत्त ॥ ध्रुवकां ॥

।

गिरि सोहइ हरिणा भउ जणंतु	पहु सोहइ हरिणा महि जिणंतु ।	
गिरि सोहइ मत्तमऊरणाउ	पहु सोहइ णायमऊरणाउ ।	
गिरि सोहइ वरवणवारणेहि	पहु सोहइ वारिणिवारणेहि ।	5
गिरि सोहइ उड्ढियवाणरेहि ^२	पहु सोहइ खगधयवाणरेहि ।	
गिरि सोहइ णववाणासणेहि	पहु सोहइ भडवाणासणेहि ।	
तहि ^३ पुब्बकोडिसिल दिट्ठ तेहि	पुजिय वंदिय हरिहलहरेहि ^४ ।	
मंतिहि पउत्त भो ^५ धम्मरासि	उद्धरिय तिविद्धं एह आसि ।	
एवहि जइ लक्खणु भुयहि धरइ	तो देव तिखंडधरत्ति हरइ ।	10

उन्यासीवीं संधि

युद्ध में भयंकर दुर्जेय और मदमत्त रावण का वध कर, धरती पर भ्रमण करते हुए प्रभु राम पीठगिरि पर पहुँचे ।

(1)

गिरि सिंह से भय उत्पन्न करता हुआ शोभित है, राम हरि (लक्ष्मण) के द्वारा धरती जीतते हुए शोभित हैं । गिरि मयूर और नागों से शोभित है, प्रभु (राम) किन्नरों की सुख्यात हृदयध्वनि से शोभित हैं । गिरि उत्तम वनगजों से शोभित है, प्रभु छत्रों (वारि निवारणों) से शोभित हैं । गिरि उच्छन्नते हुए वानरों से शोभित है, प्रभु विद्याधरों तथा वानरध्वजों से शोभित हैं । गिरि बाण और आसन वृक्षों से शोभित है, प्रभु (राम) योद्धाओं और धनुषों से शोभित हैं । वहाँ उन्होंने एक पूर्वकोटि शिला को देखा । राम और लक्ष्मण ने उसकी वंदना और पूजा की । मंत्रियों ने कहा—हे धर्मराशि, यह शिला त्रिपृष्ठ के द्वारा उठाई गई थी । यदि लक्ष्मण इसे अपनी भुजाओं से उठाता है, तो हे देव, यह तीन खण्ड धरती का हरण करने

(1) P पीयनइरि । 2. A उड्ढिय^० । 3. AP सिलकोडिपुब्ब तहि दिट्ठतेहि । 4. P omits हरि^० । 5. A णं धम्मरासि ।

तं गिसुणिवि पभणइ रामु एव अज्जु वि तुम्हं मणि भंति केव ।
जांव वि रणि गिहलियउ दसासु जाव^१ वि सिरि दिण्ण विहीसणासु ।
तांव वि तुम्हं सदेहबुद्धि लइ किज्जइ सव्वहं हिययसुद्धि ।

धत्ता—जो अतुलइं तुलइ बलवंत वि रिउ विणिवायइ ॥

सो हरि कुलधवलु सिल एह कि ण उच्चायइ ॥१॥

15

2

दढकठिणथोरदीहरकरासु
विहसि वि रामे^१ लच्छीहरासु
ता भाइवयणतोसियमणेण
पविउलभुयचालिय णं धरिति^२
णं रामहु केरी विमल किति
दीसंति लोयणयणहं सुहाइ
उप्परि सीरिहि कसणायवत्तु
सोहइ सिलगु कण्हेण धरिउं
उययम्मि अरुणकिरणोहतंबु
वीरेहि वि भुवकउ सीहणाउ

दहवयणवालिजीवियहरासु ।
आएसु दिण्णु णियबंधवासु ।
उच्चाइय सिल लहु लक्खणेण ।
णावइ तिखंडमहिरायवित्ति ।
णं गिरु असज्जसाहणसमिति^३ ।
भदियभुयदंडुद्धरिउ णाइ ।
णं जयजसवेत्तिहि^४ तणउं पत्तु ।
बहुपोमरायकरजालफुरिउं ।
उययाचलभाणुहि णाइ बिम्बु ।
सउणंदउ णामे जक्खु आउ ।

5

10

वाला होगा । यह सुनकर राम इस प्रकार कहते हैं—क्या आज भी आप लोगों के मन में भ्रान्ति है ! जब उसने युद्ध में रावण का निर्दलन किया, जबकि विभीषण को लक्ष्मी प्रदान की गई, तब भी तुम लोगों में सन्देह बुद्धि है ! तो आप लोग अपने मन की शुद्धि कर लें ।

धत्ता—जो अतुलों को तौल लेता है, जो बलवान् शत्रु को भी मार गिराता है ऐसा वह श्रेष्ठ नारायण लक्ष्मण क्या यह शिला नहीं उठा सकता ? ॥१॥

(2)

दृढ, कठिन, स्थूल और दीर्घ हाथोंवाले, रावण और बालि के जीवन का अपहरण करने वाले, लक्ष्मी को धारण करनेवाले अपने भाई लक्ष्मण को राम ने आदेश दिया । तब अपने भाई के वचन से संतुष्ट मन होकर लक्ष्मण ने उस शिला को उठा लिया, मानो वह विशाल भुजाओं से चालित धरती हो, मानो त्रिखण्ड महीराज की वृत्ति हो, मानो राम की विमलकीर्ति हो, मानो अत्यन्त असाध्य साधन का परमोत्कर्ष हो । लोगों के नेत्रों को ऐसी दिखाई देती थी जैसे विष्णु द्वारा बाहुदण्ड से उद्धृत, बलभद्र के ऊपर कृष्ण-आतपत्र (छत्र) शोभित हो । मानो जय और यश रूपी लता का पत्र हो । अनेक पद्मराग मणियों के किरणजाल से स्फुरित लक्ष्मण के द्वारा उठाया गया शिलाय ऐसा शोभित होता था, मानो उदयाचल के सूर्य का अरुण-किरण-समूह से आरक्त बिम्ब हो । वहाँ वीरों ने सिंहनाद किया, वहाँ सौनन्द नाम का यज्ञ आया । उसने चक्रवर्ती के

6. AP पुणरवि सिरि ।

(2) 1. A रामु । 2. P धरति । 3. AP सवित्ति । 4. A जसजय^१ । 5. AP जालजडिड ।

चक्किहि पय वंदिवि वइरितासि तें दिण्णु तासु सउणंदयासि ।

वत्ता—लक्खणकययुइहि णरदेवहि कण्हु पउत्तउ ॥

सजलहेमघडहं अट्ठत्तरसहसें सित्तउ ॥ 2 ॥

3

संचलिउ राउ¹ अरितिमिरभाणु
कल्लोललुलिदमससु²मुभार³
हयगयवरखंधाइण्णजोह⁴
हरिणा रहु वाहिउ जलहिणीरि
धणुगुणविमुक्कु सरु सुद्धिवंतु
तें देवहु दाणवमइणासु
कुंडलजुयलउं मणिकिरणणीडु
तहिं होतउ गउ अणुजलहितीरु
केऊरमउडकंकणपवित्तु
तहिं लहिवि विणिग्गउ गउ तुरंतु
संताणमाल सेयायवस्तु
पालेप्पिणु⁵ पुणु परियलियगव्व⁶

अणुगंग⁷ पुणु वि दिण्णउं पयाणु ।
दियइहि रासु गुरसदिउत्तए ।
थिउ काणणि⁸ वल्लु⁹ दूसोहसोह ।
पायालमूलपूरणगहीरि ।
संप्रायउ⁷ मागहु पय णवंतु ।
दिण्णउ अहिसेउ जणइणासु ।
ससिकंतु हारु मणहसु किरीडु ।
साहिउ वरतणु पणवियसरीरु ।
चूडामणिकंठाहरणजुत्तु ।
सिधुहि पइसरिवि पहासु जित्तु ।
मुत्ताहलदामु मलोहवत्तु ।
साहिय वरुणासामेच्छ सव्व ।

5

10

चरणों की वन्दना कर, उसे शत्रुओं को वस्त करनेवाली सौतन्दक नाम की तलवार दी ।

वत्ता—जिन्होंने लक्ष्मण की स्तुति की है ऐसे लोगों ने उसे नारायण कहा और एकसी आठ सजल स्वर्णकलशों से उसका अभिषेक किया ॥ 2 ॥

(3)

शत्रु रूपी अंधकार के लिए सूर्य वह राजा चला । उसने गंगा के किनारे-किनारे प्रस्थान किया । कुछ ही दिनों में वह, जिसकी लहरों में मत्स्य और शिशुमार उछल रहे हैं ऐसी गंगानदी के द्वार पर पहुँचा । जहाँ योद्धा हाथियों और घोड़ों के कंधों से उतर गये हैं, ऐसा तम्बुओं से शोभित सैन्य कानन में ठहर गया । लक्ष्मण ने पाताललोक तक सम्पूर्ण रूप से गम्भीर समुद्र के जल में रथ को और धनुष की डोरी से मुक्त शुद्धिवंत तीर को चलाया । मागध पैर पड़ता हुआ आया । उसने दानवों का नाश करनेवाले देव जनार्दन का अभिषेक किया और कुण्डलयुगल मणिकिरणों का धर चन्द्रकान्त हार तथा सुन्दर मुकुट दिया । वहाँ से होता हुआ वह समुद्र के किनारे गया, और प्रणतशरीर वरतनु को सिद्ध किया । केयूर मुकुट तथा कंकणों से पवित्र एवं कण्ठाभरण युक्त चूडामणि लेकर वह शीघ्र निकला और प्रस्थान कर दिया । सिंधुनदी में प्रवेशकर प्रभास-तीर्थ को जीता । संत्राणमाला, श्वेत आतपत्र, मलसमूह से रहित मुक्तामाला को प्राप्त कर, पश्चिम दिशा के परिगलित-गर्वे समस्त स्लेच्छों को सिद्ध कर लिया ।

(3) 1. P राम । 2. AP अणुमग्गे । 3. P सुमुभार । 4. AP गयरहखंधा । 5. AP उववणि । 6. वल्लुसोह । 7. AP संपाड । 8. AP पावेप्पिणु गउ । 9. A परिगलिय ।

घत्ता—गड वेयडिदगिरि खगसेडिउ बे वि जिणेप्पिणु ॥

हयमायंगवरखेयरकण्णाउ लएप्पिणु ॥3॥

॥

पुणु वसिकिउ मुरदिसि मेच्छखंडु
गय जइयहुं दोचालीस वरिस
साहिवि तिस्रंडमेइणि दुगिज्झ
हरिबीडि णिबेसिवि वरजलेहि
मंडलियहि णं मेहहि गिरिद
जहि दिव्वइं सत्थइं संचरंति
जहि देव वि घरि पेसणु करंति
को वण्णइ हरिबलएवरिद्धि
जं विजयतिविट्ठहं तणउ पुण्णु
हो पूरइ वण्णवि काइं एत्थु

महिमंडलि हिडिवि रायदंड^१ ।
तइयहुं हरि हलहर दिव्यपुरिस ।
जयजयसइं ण पड्ड उज्झ ।
हयतूरहि गाइयमंगलेहि ।
अहिसित्त रामलवखण्णरिद ।
तहि अवसें रणि अरिवर मरंति ।
तहि अवसें णर भयथरहरंति^२ ।
वाएसिइ दिष्णी कासु सिद्धि ।
तं एयहुं^३ दोहि मि समवइण्णु ।
किं तुच्छबुद्धि जंपमि णिरत्थु ।

10

घत्ता—सेविय गोमिणिइ रइलोहइ कीलणसीलइ ॥

रज्जु करंत थिय ते बे वि पुरंदरलीलइ ॥4॥

घत्ता—वह विजयार्धगिरि गया और उसकी दोनों श्रेणियों को जीतकर; अब, गज और उत्तम विद्याधर कन्याओं को लेकर ॥3॥

(4)

फिर उसने पूर्व दिशा के म्लेच्छ खण्ड को वश में किया । भूमिमण्डल में राजदण्ड घुमाकर जब बयालीस वर्ष बीत गए तब राम और लक्ष्मण दोनों महापुरुषों ने दुर्गाह्य तीन खण्ड धरती को जीतकर जय-जय शब्द के साथ अयोध्या नगरी में प्रवेश किया । सिंहासन पर बैठकर, राम लक्ष्मण राजाओं का उत्तमजलों, आहुत तूर्यों, गाये गए मंगलों के द्वारा इस प्रकार अभिषेक किया गया, मानो मण्डलित मेघों के द्वारा गिरीन्द्र का अभिषेक किया गया हो । जहाँ दिव्य शस्त्रों का संचार होता है वहाँ युद्ध में अवश्य शत्रुप्रवर मरते हैं । जहाँ देव गण घर में सेवा करते हैं, वहाँ अवश्य मनुष्य भय से थरथर काँपते हैं । बलभद्र और नारायण की ऋद्धि का वर्णन कौन कर सकता है ? वागेश्वरी द्वारा दी गई सिद्धि किसके पास है ? जो पुण्य विजय और त्रिपुण्ड्र का था, वही पुण्य इन दोनों को प्राप्त हुआ था । वर्णन करने से वह क्या यहाँ पूरा होता है ? मैं तुच्छबुद्धि व्यर्थ क्यों कथन करता हूँ !

घत्ता—रति की लोभी कीड़ाशील लक्ष्मी के द्वारा सेवित वे दोनों इन्द्र की लीला से राज्य करते हुए रहने लगे ।

(4) 1. P राक्षचंडु । 2. A reads a as b and b as a in this line । 3. A भउ पर^०; P भउ थर^० 4. P एवहुं ।

5

सुमणोहरणामि सयावसंतिः
 सिरिसिरिहररामणराहिवेहि
 वंदेष्णिण पुच्छिउ परमधम्म
 मिच्छतासंजम चउकसाय
 एयहि ओहदुइ णाणतेउ
 बंधेण कम्म कम्मेण जम्म
 इदियसोक्खे पुणु पुणु विसालु
 मोहे मुज्झइ संसारि भमइ
 णारयतिरिक्खदेवत्तणेहि
 संसरइ मरइ णउ लहइ बोहि
 सम्मत्तु ण गेणहइ मंदमूढु
 आसंककंखविदिगिच्छवंतु

अण्णहि दिणि णंदणवणवणंति ।
 सिखगुत्तु जिणेरु दिदु तेहि ।
 जिणु कहइ उयारवियारगम्म^२ ।
 छंडंतहं सुहु रायाहिराय ।
 ए दुस्सहदुइमबंधहेउ ।
 जम्मेण दुक्खु सोक्खु वि सुरम्म ।
 संपज्जइ जीवहु मोहजालु ।
 अण्णणहि देहहि देहि रमइ ।
 बहुभेयभिण्णमणुमत्तणेहि ।
 ण कयाइ वि पावइ जिणसमाहि ।
 लोइयवेइयसमएहि छूढु^४ ।
 जइ मिच्छादिदिठ पसंस वेंतु ।

10

घत्ता---लोकतः परिहरतः तं निदानीयं तर्हि भक्तः ॥

राहव जीवगणु जगि पउरु विहुरु संपसउ ॥5॥

(5)

दूसरे दिन, जिसमें सदा वसंत रहता है ऐसे मनोहर नामक नंदन वन के भीतर उन श्रीविष्णु और श्रीराम (लक्ष्मण और राम) ने शिवगुप्त नामक जिनेश्वर के दर्शन किए। उनकी वन्दना कर उन्होंने परमधर्म पूछा। उदारविचारों से गम्य जिनेश्वर कहते हैं—राजाधिराज ! मिथ्यात्व, असंयम और चार कषायों को छोड़नेवालों को सुख होता है। इनसे ज्ञान का तेज कम होता है। ये असह्य और दुर्दम बन्ध के कारण हैं। बन्ध से कर्म होता है, कर्म से जन्म होता है, जन्म से सुरम्य सुख और दुःख होता है। इन्द्रियसुख से फिर-फिर, जीव को विशाल मोहजाल पैदा होता है। मोह से मूर्च्छा को प्राप्त होकर संसार में परिभ्रमण करता है। और फिर शरीर-धारी अन्य-अन्य शरीरों से रमण करता है। नरक, तिर्यच और देवस्व के अनेक भेदों से भिन्न मनुष्य शरीरों में संसरण करता है, मरता है। न तो ज्ञान प्राप्त करता और न कभी समाधि को पाता। मन्द-मूर्ख सम्यक्त्व ग्रहण नहीं करता। वह लौकिक और वैदिक मतों से व्याप्त रहता है। आशंका, आर्काक्षा और घृणा से युक्त जड़ मिथ्यादृष्टि की प्रशंसा करता हुआ,

घत्ता—जो भला है उसे छोड़ता है और जो निदनीय है उसका भक्त बनता है। हे राघव, जीवसमूह जग में प्रचुर दुःख को प्राप्त होता है ॥5॥

(5) 1. A सयावसंति । 2. P ओयार^२ । 3. A बहुभेय^३ । 4. AP मूढ ।

6

अणुदिणु परिणामहु जाइ लोउ	खणि आणंदिउ खणि करइ सोउ ।	
खणि खणि अण्णत्तहु ¹ जाइ केव	सिहिमहिउ तेल्लु सिहिभाउ जेव ।	
उप्पत्तिवित्तिपलएहि गत्थु	वेत्तहि अप्पउ पोग्गलपयत्थु ।	
पज्जाउ जाइ दब्बु जि पयासु	घड मउड ² सुवण्णहु णत्थि णासु ।	
जं रुच्चइ तं तहि होउ बप्प	णिज्जीवणिरण्णइ ³ कहिं वियप्प ।	5
जो मणुयलोइ सो णत्थि सग्गि	जो सग्गि ण सो पायालमग्गि ।	
जो घरि सो किं णीसेसणामि ⁴	जो गामि ण सो आरामथामि ⁵ ।	
एवत्थिणत्थिणिव्वूढसच्चु	अरहंतं साहिउ परमतच्चु ।	
जइ जग्गि सब्बत्थ वि सव्वु अत्थि	तो किं गयणंगणि कुसुमु णत्थि ।	
जइ एक्कु ⁶ जि सयलु जि जगु णियाणि	तो को णारउ को सुरविमाणि ।	10
को खंडिउ को वरइत्तु थक्कु	सामण्णु अमरु को ⁷ कवणु सक्कु ।	

घत्ता—जइ खणि खणि जि खउ सइं बुद्धे जीवहु दिट्ठउ ॥

ता चिरु महिणिहिउ वसुसंचउ केण गविट्ठउ ॥6॥

(6)

प्रतिदिन लोक परिणमन को प्राप्त होता है, क्षण में आनन्दित होता है और क्षण में शोक को प्राप्त होता है। क्षण-क्षण में वह अभ्यस्व को उसी प्रकार प्राप्त होता है जिस प्रकार आग से जलता हुआ तेल अग्नित्व को प्राप्त होता है। उत्पत्ति, वृत्ति (ध्रुवत्व) और प्रलय के द्वारा अस्त जोव अपने को (पुद्गल) पदार्थ समझता है। पर्याय होती है और स्पष्ट ही द्रव्य है। घट और मुकुट में मिट्टी और स्वर्ण का नाश नहीं होता। जहाँ जो रुचता है वहाँ बेचारा वही होता है : निर्जीव और निरन्वय (जीवन रहित, अन्वय रहित) में विकल्प कहाँ ? जो मनुष्यलोक में है, वह स्वर्गलोक में नहीं है, और जो स्वर्गलोक में है, वह नरकलोक में नहीं है। जो घर में है, क्या वह सर्वपदार्थों में है ? जो ग्राम में है, वह आराम स्थान में नहीं है। इस प्रकार जिसमें अस्ति नास्ति के द्वारा सत्य प्रतिपादित है, ऐसा परमतत्त्व अरहंत के द्वारा कहा गया है। यदि जग में सर्वार्थ भी सब है, तो आकाश के आंगन में कुसुम क्यों नहीं होता ? यदि अन्तिम समय, समस्त विश्व एक है, तो कौन नारकीय है और कौन सुरविमान में ? कौन खण्डित है और कौन पूर्ण ? सामान्य देव कौन और इन्द्र कौन ?

घत्ता—यदि स्वयंबुद्ध द्वारा जीव का क्षण-क्षण में अय देखा जाता है तो प्राचीनकाल में धरती में रखे गए धनसंचय की खोज किसने की ?

(6) 1. AP अण्णत्तहु । 2. A मउडि । 3. AP विणिण्णय । 4. AP णीसेसणामि । 5. AP आरामि । 6. AP एक्कु वि सयलु वि । 7. AP सो ।

7

जइ जाणइ सो किर वासणाइ
जइ एंजकासु तिहुवणु असेसु
सिविणोवमु जइ णीसेसु सुणु
जिणपिसुणहु णियवयणु जि कयंतु
सयलु वि संसारिउ गोरिकंतु
जो आहवि वहरिहि मलइ माणु
पुह¹ विद्धउ जेण रइवि ठाणु
विणु बत्तारें सिद्ध² तु केत्थु
अप्पउं अंबरि³ संजोयमाणु
णिच्चेयणि सुसिरि सिवत्तु थवइ
परु मोहइ सइ तमणियरभरिउ
णिवडइ⁴ रउहि घणि घणि तमंछि

तो ताइ केम्ब खणधंसणाइ ।
तो किं किर चीवरधारणवेसु ।
तो गुरु ण सीसु णउ⁵ पाउ पुणु ।
सिवु णिवकलुं णिप्परिणामवंतु ।
णच्चइ गायइ तो⁶ किं महंतु ।
धणुगुणि संधिवि अग्गेयवाणु⁷ ।
किं तासु वयणु होसइ पमाणु ।
सिद्ध⁸ तें विणु किह मुणइ वत्थु ।
कउलु वि भावइ महु मुक्कणाणु ।
पसुमासु खाइ महु सीहु⁹ पिबइ ।
इंदियवसु णिंदियसाहुवरिउ ।
णारयहणहणरवि णरयरंधि ।

5

10

घत्ता—झायहि जिणधवलु अण्णेण ण दुक्किउ जिप्पइ ॥

करयलकंतिहरु पंकेण पंकु किं¹⁰ धुप्पइ ॥7॥

(7)

यदि वह वासना (सूक्ष्म संस्कार) से उसे जानता है तो क्षण में ध्वंस को प्राप्त होनेवाली उससे यह कैसे संभव? यदि समस्त त्रिभुवन इन्द्रजाल है तो फिर चीवर धारण करनेवाले वेष से क्या? यदि निःशेष वस्तु स्वप्नतुल्य और शून्य है तो न गुरु है और न शिष्य है, और न पाप-पुण्य है। जिनवचनों के विपरीतजनों का ऐसा अपना ही कथन यम के समान है कि शिव निष्फल और परिणाम रहित है। यदि समस्त संसार गौरीकांत (शिव) मय है तो वह महान् नाचता और गाता क्यों है? जो युद्ध में शत्रुओं का मानमर्दन करता है, धनुष की डोरी पर आग्नेय बाण का संधान करता है, जिसने स्थान की रचना करने के लिए पुर का विनाश किया, क्या उसका वचन प्रामाणिक हो सकता है? वक्ता के बिना सिद्धान्त कैसा? सिद्धान्त के बिना वस्तु का विचार कैसा? स्वयं को आकाश में संयुक्त करता हुआ कौल (अभेदवादी वेदान्ती) भी मुझे ज्ञान से रहित दिखाई देता है। अचेतन आकाश में वह शिव की स्थापना करता है, वह पशुमांस खाता है, मधु और सुरा का पान करता है। दूसरों को मुग्ध करता है, स्वयं अज्ञान-अन्धकार से भरा हुआ है। इन्द्रियों के वशीभूत है, और साधुओं के चरित की निंदा करनेवाला है। वह भयंकर तमान्ध सधन रौद्र नरक में गिरता है, जिसमें नारकियों का 'मारो-मारो' शब्द हो रहा है, ऐसे नरकबिल में।

घत्ता—इसलिए तुम जिनवर का ध्यान करो। दूसरे के द्वारा पाप नहीं जीता जा सकता, करतल की कान्ति का अपहरण करनेवाला पंक, क्या पंक से ही धुल सकता है? ॥7॥

(7) 1. A णो पाउ। 2. A किं तो महंतु; P किं तो महंतु। 3. A अग्गेउ वाणु। 4. P पूरणु विद्धउ। 5. A अंतरि। 6. A मज्जु। 7. A घणवणरउहि णिवडइ तमंछि। 8. AP किह धुप्पइ।

जइ काउ सरंतहं जाइ गरलु¹
जो सेवइ गुरु पाविट्ठु दुट्ठु
सो सइ जि पाव पावहु जि सरणु
सो² गुरु जो मित्तु व गणइ ससु
सो गुरु जो मुक्काहरणवत्सु
सो गुरु जो तिणु³ कंचणु समाणु
णिच्चलखमदमसंजमसमेण
दूरज्जियदुज्जयरायरोसु
तहु धम्म अहिंसालक्षणित्तु
अहवा सो भण्णइ सूपयाह

यत्ता—मेल्लिणि विसयविसु जिणभावे हियवउ भावह ॥

पालिनि जीवदय सग्गापवग्गसुहु पावह ॥४॥

8

तइ पावेण जि जणु होइ विमलु ।
देउ वि णिट्ठह दट्ठोदु रुट्ठु ।
पइसउ ण लहइ संसारतरणु ।
सो गुरु जो मायाभाववत्तु ।
सो गुरु जो महिमागुणमहत्तु⁴ ।
सो गुरु जो णिरहुप्पण्णणणु ।
गुरुरयणु भणिउ एए कमेण ।
अरहंतु देउ परिहरियदोसु ।
मयमारउ विप्पु वि होइ भित्तु ।
जणों कहि लब्भइ सग्गदारु ।

5

9

तं णिसुणिवि परिरक्खियमयाइं
सम्मदंसणविप्फुरियएहि

धरियइ¹ रामें सावयवयाइं ।
अवरेहि मि भव्वपुंडरियएहि ।

(8)

यदि कोए का स्मरण करने से पाप जाता है, तो पाप से भी मनुष्य पवित्र हो जाय । जो (व्यक्ति) पापिष्ठ और दुष्ट गुरु की सेवा करता है, तथा निष्ठुर ओठों को चवानेवाले रुष्ट देव की सेवा करता है वह स्वयं पापी है, और पापी की शरण में पहुँचा हुआ संसार से तरण नहीं पा सकता । गुरु वह है जो मित्र और शत्रु को नहीं गिनता (भेद नहीं करता) । गुरु वह है जो माया भाव से रहित है । गुरु वह है जो आभरण वस्तुओं से मुक्त है । गुरु वह है, जो महिमा और गुण में महान् हो । गुरु वह है, जो तृण और स्वर्ण में समान है, जिसका ज्ञान अपाप से उत्पन्न हुआ है । निश्चल, क्षमा, दम, सयम और शम के इसी क्रम से मैंने गुरुरत्न कहा । जिन्होंने दुर्जय राग द्वेष को दूर से छोड़ दिया है और जो दोषों से रहित हैं, उनका धर्म अहिंसा लक्षणवाला है । पशुओं को मारनेवाला विप्र भील होता है अथवा वह हत्यारा (कसाई) कहा जाता है । यज्ञ से कहीं स्वर्गद्वार मिलता है ?

यत्ता—विषय रूपी विष को छोड़कर, जिनभाव से आत्मा का ध्यान करो । जीवदया का पालन कर स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) का सुख प्राप्त करो ।

(9)

यह सुनकर राम ने, जिसमें पशुओं की रक्षा की गई है ऐसा श्रावकव्रत स्वीकार कर लिया । सम्यग्दर्शन से विस्फुरित दूसरे भग्न्य श्रेष्ठजनों ने भी श्रावकव्रत ग्रहण किए । लक्ष्मण का हृदय

(8) 1. A गरलु । 2. A दुट्ठुदुट्ठु । 3. A omits this foot. 4. AP गुणमहिमामहंतु । 5. A तणकंचणसमाणु ।

(9) 1. P सरियइ ।

लवणहियवत्तं दुणियाणसहिउं
दसरहि^३ मुइ णिहिय णिरुद्धसयरि
गय भायर वाणारसि^४ तुरंत
रामे सुउ जायउ विजयरामु
अहिमाणणाणविण्णाणजुत्त
गोविद्धु णंदणु पुहइचंदु
अण्ण वि णं मत्तमहागइंद
गुणगणरंजियभुवणत्तएहि

तेण जि व्रउ^५ तेण ण किं पि गहिउं ।
सत्तुहण भरह साकेयगयरि ।
थिय रज्जु करंत हली अणंत ।
सीयहि रुव्वे णं देउ कामु ।
अवर वि संजाया^६ सत्त पुत्त ।
पुहइहि हयउ पुहईसवंदु ।
सुय संभूया जियरिउणरिद ।
परिवारिय पुत्तपउत्तएहि ।

5

10

धत्ता—थिय भुजंत महि गउ^७ कालु अकलियपरिवत्तउ^८ ॥

एक्कहि णिसिसमइ हरि फणिसयणि^९ पसत्तउ ॥१॥

10

पेच्छइ सिविणंतरि पयहि मलिउ
कवलेवि^१ विडप्पे तिमिरजूरु
पासायसिहरणिवडणु^२ णियंतु
अविखउ दुईसणु भायरसु
जिह वडतरुवरु चूरिउ गएण

णग्गोहु दंतिदंतद्धादलिउ ।
कड्ढिवि पायालि णिहित्तु सूरु ।
उट्ठिउ महिवइ अंगइ धुणंतु ।
ता भणइ पुरोहिउ दुक्कु णासु ।
तिह सिरिवइ भंजेव्वउ गएण^३ ।

5

छोटे निदान से युक्त था। इस कारण उसने कोई व्रत नहीं लिया। दशरथ के मरने पर, जिसमें राजा सगर प्रसिद्ध था, ऐसे साकेतनगर में शत्रुघ्न और भरत को स्थापित कर दिया गया। तब दोनों भाई तुरन्त वाराणसी चले गए। राम और लक्ष्मण वहाँ राज्य करते हुए रहने लगे। सीता से राम के विजयराम नाम का पुत्र हुआ, जो रूप में कामदेव था। गौरव, ज्ञान और विज्ञान से युक्त और भी उनके सात पुत्र हुए। रानी पृथ्वी से लक्ष्मण के पृथ्वीचन्द्र पुत्र हुआ जो पृथ्वी में और राजाओं में श्रेष्ठ था। उसके और भी पुत्र उत्पन्न हुए, शत्रु राजाओं को जीतनेवाले जो मानो मतवाले महागज थे। इस प्रकार अपने गुणों से भुवनत्रय को रंजित करनेवाले पुत्र और प्रपौत्रों से घिरे हुए—

धत्ता—धरती का उपभोग करने लगे। उनका अगणित समय बीत गया। एक रात्रि के के समय लक्ष्मण नागशय्या पर सोए हुए थे।

(10)

स्वप्न में वह देखते हैं कि वटवृक्ष हाथी के दाँतों के अग्रभाग से दलित और पैरों से कुचला गया है। राहु ने चन्द्रमा को निगल कर और सूर्य को खींचकर पाताललोक में डाल दिया है। इस प्रकार राजा प्रासाद के शिखर का पतन देखता हुआ और अपने अंगों को पीटता हुआ उठा। उसने वह दुःस्वप्न और भाईयों को बताया। उस समय पुरोहित कहता है—नाश आ पहुँचा है। जिस प्रकार गज के द्वारा वटवृक्ष नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया, उसी प्रकार लक्ष्मण रोग से मारे

2 AP वउ। 3. A दसरहसुपविहिप^०। 4. AP वाराणसि। 5. P अवर वि जाया तद्दु सत्त पुत्त। 6. P. गयउ। 7. A अहियपरिवत्तउ। 8. A फणिसयणयलि; P मणिसयणि।

(10) 1. A कवलियउ। 2. P^० णियडणु। 3. A यमेण; P मएण।

जं अबभपिसाएं गिलिउ भाणु
तं संचियचिरसुकयावसाणु⁴
जं णिवडिउं वरधवलहरसिणु
माहउ पावेसइ देव मरणु
तवचरणु चरेव्वउं पइं रउइ
तं णिसुणिवि जयभीमाहवेण⁵
अहिसिसइं जिणविबइं जलेहिं
दहिणहिं⁶ कुंभगत्तत्थिणहिं

चप्पिवि पाविउ महिविवरठाणु ।
परिपुण्णउं वट्टइ आउमाणु ।
तं ध्रुवु⁷ पोमामुहपोमभिणु ।
पइसेव्वउ जिणवरचरणसरणु ।
लंघेव्वउ भीसणु भवसमुद्दु ॥
पुरि अभयघोसु किउ राहवेण ।
दुद्धे हि धवलधाराज्जलेहिं ।
वरकामिणिकरणिम्मत्थिएहिं ।

10

घत्ता—ण्हवियइं पुज्जियइं जिणवरपडिबिबइं रामें ॥

भत्तिइ वंदियइं परिवडिउयसुहपरिणामें ॥10॥

15

11

पुरु घर परिहाणु¹ हिरण्णु धण्णु
संति वि² विरयंतहं विहुरहम्मु
पुण्णक्खइ दुक्खु दुपेक्खु देतु
कइवयदिणेहिं सुहिदिण्णसोउ
उप्पाइयबंधवहिययसल्लि
काले कवलित महिअद्धराउ

जो³ जं मग्गइ तं तासु दिण्णु ।
दुक्कउं चिरसंचिउ घोरकम्मु ।
हयपरबलु भुयबलु णिवक्खवंतु ।
लच्छीहरंगि संभूउ रोउ ।
माहम्मि मासि दिणि अंतिमिल्लि ।
णं हित्तउ कामिणिरइणिहाउ⁴ ।

5

जाएंगे । राहु के द्वारा चांपकर निगले गए सूर्य ने जो महाविवर (पाताललोक) में स्थान पाया, वह जिसमें संचित चिरपुण्य का अंत है ऐसे (लक्ष्मण की) आयु के मान का अन्त है, और जो श्रेष्ठ धवलगृह का शिखर गिरा है, उससे लक्ष्मी के मुख रूपी कमल के भ्रमर लक्ष्मण निश्चित रूप मृत्यु को प्राप्त होंगे । हे देव, आप जिनवर के चरण में प्रवेश करेंगे, भयंकर तपश्चरण करेंगे, और भीषण भवसमुद्र को पार करेंगे । यह सुनकर, भयंकर संग्राम वाले राम ने नगर में अभय घोषणा करवा दी । जल से, धवलधाराओं से उज्ज्वल दूध से, तथा उत्तम स्त्रियों के करों से निर्मित दही से,

घत्ता—जिनका शुभ परिणाम बढ़ रहा है, ऐसे राम ने जिनप्रतिमाओं का भक्तिभाव से अभिषेक किया, पूजा और वंदना की ॥10॥

(11)

पुर, घर, परिधान, स्वर्ण और धान्य, जिसने जो मांगा वह दिया । शान्ति का विधान करते हुए भी उनको दुःख का घर चिरसंचित घोर कर्म आ पहुँचा । पुण्य का क्षय होने पर कुछ ही दिनों में दुर्दर्शनीय दुःख देता हुआ, शत्रुबल का नाश करनेवाले भुजबल को क्षीण करता हुआ, सुधीजनों को शोक देता हुआ रोग लक्ष्मण के शरीर में उत्पन्न हो गया । जिसने बन्धुओं के हृदय में वेदना उत्पन्न की है ऐसे मध्य माह के अन्तिम दिन, धरती का अर्ध-चक्रवर्ती राजा लक्ष्मण काल के द्वारा कवलित कर लिया गया, मानो कामनियों का रतिसमूह ही छीन लिया गया हो ।

4. A °सुकिया° । 5. AP घुउ । 6. AP जिय° । 7. A दहिण ।

(11) 1. P परिहणु । 2. AP जं जं मग्गिउ । 3. A संतिहि । 4. AP °रयणिहाउ ।

णं नासिउ बंधवसोवखहेउ अच्छोडिउ णं रहुवंसकेउ ।
 णं मोडिउ सुरतरुवरु फलंतु उलहविउ पयावाणलु जलंतु ।
 रिउसीसणिवेसियपायपंसु उड्डाविउ जगसररायहंसु ।
 जहि रावणु तहि सो दुहपएसि⁵ उप्पण्णु चउत्थइ णरयवासि ।
 विहिणा सोसिउ⁶ गुणणिहिगहीरु सोएण पमुच्छिउ रामु वीरु ।
 सिचिउ सलिलें माणवमहंतु उम्मच्छिउ हा भायर भणंतु ।

10

घत्ता—हा दहभुहणिहण हा लक्खण हा लच्छीहर ॥

हा रयणाहिवइ हा बालिहरिणकंठीरव ॥11॥

12

धाहावइ सीय मणोहिरामु एकल्लउ छंडिउ काई रामु ।
 हा¹ हे देवर महु वेहि वाय पइ विणु जीवंतहं कवण छाय ।
 पूएप्पिणु² दड्डउं हरिसरीरु अवलंबिउ सीरें हियइ घीरु ।
 करहयसिरु हाहारउ मुयंतु संबोहिउ अंतेउरु रुयंतु ।
 लक्खणमुउ णामें पुहइचंदु सइ अहिसिचिवि किउ कुलि णरिंदु ।
 सत्ताहि जणेहि सीर पुरहि³ ण सणिच्चिउ सिरि पीडम्भुएहि ।
 लहुयारउ ताहं पयग्गि णविउ अजियंजउ मिहिलाणयरि थविउ ।

5

मानो बन्धुओं के मुख का कारण नष्ट हो गया हो, मानो रघुवंश का ध्वज ही नष्ट हो गया हो, मानो फला हुआ कल्पवृक्ष ही तोड़ दिया गया हो, मानो जलता हुआ प्रतापानल शान्त कर दिया गया हो । जिसने शत्रु के सिर पर अपने चरणों की धूल स्थापित की ऐसा विश्वरूपी सरोवर का वह राजहंस उड़ गया । जहाँ रावण है, उसी दुःख प्रदेश चौथे तरक में उत्पन्न हुआ । गुणनिधियों से गंभीर, विधाता के द्वारा शोषित राम शोक से मूर्च्छित हो गए । पानी छिड़कने पर वह मानव-महान्, 'हे भाई' कहते हुए मूर्च्छा से दूर हुए ।

घत्ता—हा दशमुख का अंत करनेवाले, हा लक्ष्मण, हा लक्ष्मीधर, रत्नाधिपति, हा बालि-रूपी हरिण के लिए सिंह ॥11॥

(12)

सीता ने चीख कर कहा—तुमने राम को अकेला क्यों छोड़ दिया ? हा देवर, मुझसे बात करो । तुम्हारे बिना जीने में कौन-सी शोभा है ? पूजा करके लक्ष्मण का शरीर जला दिया गया । राम ने अपने मन में धैर्यधारण किया । अपने हाथों सिर पीटते और हा-हा शब्द कर रोते हुए उन्होंने अन्तःपुर को सम्बोधित किया । लक्ष्मण के पुत्र पृथ्वीचंद का अपने हाथ से अभिषेक कर उसे कुल का राजा बनाया । स्थूल बाहुवाले सीतादेवी के सातों पुत्रों ने लक्ष्मी की इच्छा नहीं की । उनमें सबसे छोटा तथा चरणों में नमित अजितंजय मिथिला नगरी का राजा बनाया गया ।

5. A ⁵पयासि । 6. A सोहिउ ।

(12) 1. P हा देवर महु वे देहि वाय । 2. A जूरेप्पिणु ।

साकेयणयरि सिद्धत्थणामि वणि परिभमंतचलभसलसामि ।
सीराउहेण मयमोहणासि तवचरणु लइउ सिवगुत्तपासि^३ ।
घत्ता—तहिं रामेण सहं सुग्रीउ वि सुद्धविवेयउ^४ ॥
हणुउ विहीसणु वि पावइयउ जायणिव्वेयउ ॥12॥

13

राएं जाएं इसिसीसएण तणयहं तउ लइउ असीसएण ।
सीयापुहइहिं सुयवइहिं पाय आसंघिय भावें चत्तराय^५ ।
भुवणुट्टिउ^६ तिट्ठावज्जियाउ जायाउ ताउ तहिं अज्जियाउ ।
पत्ता वेणिण वि निम्मइयिकाम सुयकेवलित्तु हणुयंतु राम ।
इयर वि संजाया रिद्धिवंत मुणिवर निट्ठुरतवतावसंत । 5
आहुट्टसयाइ गयाइं तासु संवच्छराहं पालियवयासु ।
पंचहिं वरिसेहिं विवज्जियाइं जइयहुं तइयहुं ध्रुवु^७ निज्जियाइं ।
रामें चउकम्मइं घाइयाइं अमररि कुसुमाइं निवेइयाइं ।
उप्पण्णउं केवलु विमलणाणु दिट्ठउं तिहुयणु गयणु^८ वि अमाणु ।
खणि मुरयणु संप्रायउ^९ णवंतु^{१०} जय गंद वद्ध रहुवइ भणंतु । 10

घत्ता—एक्कु जि छत्तु तहु पोमासणु चमरइं चवलइं^{११} ॥

देवहिं निम्मियइं तारातारावइधवलइं ॥13॥

साकेत नगर के, भ्रमणशील चंचल भ्रमरों से से श्याम सिद्धार्थ नामक वन में राम ने शिवगुप्त मुनि के पास मद-मोह का नाश करने वाला तपश्चरण ग्रहण कर लिया ।

घत्ता—वहाँ राम के साथ शुद्ध विवेकी सुग्रीव, हनुमान् और विभीषण ने भी वैराग्य उत्पन्न होने से संन्यास ग्रहण कर लिया ॥12॥

(13)

राजा राम के ऋषि-शिष्य होने पर, एक सौ अस्सी पुत्रों ने भी तप ग्रहण कर लिया । सीता और पृथ्वी देवी ने भी श्रुतव्रता आर्यिका के रागशून्य चरणों का भावपूर्वक आश्रय लिया । संसार से विरक्त, तृष्णा से रहित वे दोनों वहीं आर्यिकाएँ बन गई । कामदेव का नाश करनेवाले हनुमान् और राम दोनों श्रुतकेवलित्व को प्राप्त हुए । दूसरे मुनिवर भी निष्ठुर तप का आचरण करते हुए ऋद्धियों से पूर्ण हुए । व्रतों का पालन करते हुए उनके साढ़े-तीन सौ वर्ष बीत गए । जब पाँच वर्ष शेष रह गए तब राम ने निश्चित रूप से चार घातिया कर्मों को जीत लिया । देवों ने पुष्पों की वर्षा की । उन्हें पवित्र केवलज्ञान उत्पन्न हो गया । निःसीम गगन के समान उन्होंने त्रिभुवन को देख लिया । क्षण भर में, प्रणाम करते हुए तथा हे राम आपकी जय हो, आप प्रसन्न हों और बहें—यह कहते हुए देव आए ।

घत्ता—उनका एक ही छत्र, कमलासन था । देवों ने ताराओं और चन्द्रमा के समान धवल चंचल चामर निमित्त कर दिए ॥13॥

3. AP सिवगोत्त^३ । 4. P अइसुविवेयउ ।

(13) 1. AP मुक्कमाय । 2. AP भवणुय तिट्ठाणिज्जियाउ । 3. AP ध्रुव । 4. A सयलु वि ।
5. AP संपाइउ । 6. A णमंतु । 7. AP धवलइ ।

14

मुसुमूरंतहु भववडिरिअम्मु
छसयाइं सयद्धविमीसियाइं
संभेयसिहरि सो रामभिवखु
अवर वि सुभीवविहीसणाइ
ते सयल भडारा वीयराय
सा सीय पुहुइ सा विमलगत्तु
लच्छीहृण्णरयहु णीसरेवि
भासंति एव परमत्थवाइ
हरिणा समाण नृवखयणिसीइ

जणवइ साहंतहु परमधम्म¹ ।
महियलि विहरंतहु तहु गयाइं ।
हणुवत्तें सहं संपत्तु मोक्खु ।
चारित्तवंत जे दिव्व² जोइ ।
अणुदिसणिवासि अहमिद जाय ।
पत्ताउ कप्पि कप्पामरत्तु ।
पावेसइ सिवपउ तउ चरेवि ।
संपय कासु वि णउ समउ जाइ ।
के के ण खद्ध महिरक्खसीइ ।

5

घत्ता—सुयरह³ गुरुवयणु मा लक्खणपथें वच्चह ॥

भरहणरिदयुउ सिरिपुप्फयंतु जिणु अंचह ॥14॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमणिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे मुणिसुव्वयत्तिथसंभूयहरिसेण⁴—

चक्कवट्टिरामवलएवलक्खण-⁵वासुदेवरावणपडिवासुदेव⁶—

गुणकित्तत्तं णाम एककूणासीमो परिच्छेओ

समत्तो ॥79॥

॥मुणिसुव्वयचरियं समत्तं ॥

(14)

भवशत्रु के मर्म का छेदन करते हुए, जनपदों में जिनधर्म का कथन करते हुए, और धरती-तल पर विहार करते हुए जब उनके साढ़े छह सौ साल बीत गए, तब मुनि राम सम्मेद शिखर पर हनुमान् के साथ मोक्ष को प्राप्त हुए । और भी सुग्रीव तथा विभीषण, जो चारित्र्य से संपन्न दिव्य योगी थे, समस्त आदरणीय वीतराग, अनुदिशोत्तर विमान में अहमेन्द्र हुए । पवित्र शरीर वह सीता और सती पृथ्वी कल्पस्वर्ग में कल्पामरत्व को प्राप्त हुई । लक्ष्मण नरक से निकलकर तप कर शिवपद को प्राप्त करेगा । परमार्थवादी (अध्यात्मवादी) यह कहते हैं कि संपत्ति किसी के भी साथ नहीं जाती । नृपक्षय के लिए निशा के समान भूमिरूपी राक्षसी के द्वारा हरिणों के समान कौन-कौन राजा नहीं खाए गए ?

घत्ता—इसलिए गुरुवचनों का स्मरण करो, लक्ष्मण के रास्ते मत जाओ, भरत नरेन्द्र द्वारा संस्तुत श्रीपुष्पदन्त जिनवर की अर्चा करो ॥14॥

ब्रैसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त इस महापुराण में, महाकवि पुष्पदन्त द्वारा

विरचित तथा महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का मुनिसुवत तीर्थकर

संभूत हरिसेण चक्रवर्ती, राम बलदेव लक्ष्मण वासुदेव, प्रतिवासुदेव

गुणकीर्तन नामक उन्मासीवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ।

(14) 1. P परममगु । 2. AP दिहुजोइ । 3. AP °णिव° 4. A सुमहुर; P समरुह । 5. A omits हरिसेणचक्कवट्टि° 6. AP omit °लक्खण° । 7. AP omit °रावणपडिवासुदेव° ।

असीतिमो संधि

वियसावियभुवणसरोरुहो केवलणाणकिरणधरहो ॥
पणवेप्पिणु णमिजिणविणयरहो जणमणतिमिरभारहरहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

दुवई—जेण जिया रउइ चल पंच वि वम्महमुक्कसायया ॥
भवसंसरणकरणासिद्धेयसत्ता विस्मय करसायया ॥ छ ॥

मुक्क भही णिवसंगया	समसिद्ध तवसंगया ।	5
उज्झयजीवसवासणा	विहिया जेण सवासणा ।	
जरुस सुधी पिसुणेहले	सरिसा सहले णेहले ।	
छिण्णं जेणुदामयं	आसारइयं दामयं ।	
णिच्चं वणयरकंदरे	जो णिवसइ गिरिकंदरे ।	
ण महइ धम्मं मंदयं	इच्छइ सासयमं दयं ।	10

अस्सीवीं संधि

जिन्होंने भुवनरूपी कमल को विकसित किया है, जो केवलज्ञानरूपी किरण को धारण करनेवाले हैं, जो जन-मन के अन्धकार को दूर करनेवाले हैं ऐसे नमिरूपी दिनकर को प्रणाम कर,

(1)

जिन्होंने भयंकर और चंचल, कामदेव के पाँचों तीरों को जीत लिया है, और भवसंसरण करानेवाली विषवेग के समान कषायों से विषम नृपसंगत भूमि को छोड़ दिया है, जो शम सिद्धान्त के वशीभूत हैं, जिन्होंने अपने स्वभाव को मृतकभक्षण को छोड़ने के संस्कारवाला बना लिया है, जिसकी शोभना बुद्धि निष्फल दुर्जन और सफल स्नेही जन में समान है, जिसने उद्याम आशा द्वारा रक्षित महान् वचन को तोड़ दिया है, जिसमें कंदमूल खानेवाले भील रहते हैं, ऐसी गिरि-गुफा में जो नित्य निवास करते हैं, जो धर्म में शिथिलता को महत्त्व नहीं देते, जो शाश्वत

All Mass. have, at the beginning of this samdhi, the following staza :—

लोकं दुर्जनसंकुले हतकुले तृष्णावशे गीरसे
सालंकारवचोविचारवतुरे लालित्यशीलाधरे ।
भग्नं देहि सरस्वति प्रियतमे काले कसौ सांप्रतं
कं यास्यस्यभिमानरत्ननिसयं श्रीपुष्पवन्तं विना ॥ 1 ॥

(1) 1. P बहइ ।

जम्मि थिए सुइजाणए
कि पढंति मयमारया
सइ हंसमि सगारवं
तं नमिऊण णमीसरं

जम्मजलहिजलजाणए ।
कामंधा सामारया ।
कीस कुणंति बगा रवं^१ ।
तवसिहिहुयवम्मीसरं ।

घत्ता—पुणु तामु जि चरिउ कि पि कहमि सज्जणकोऊहलजणणु ॥
कहिण्ण देण दिहि विरयण^२ सुहु उण्णज्जइ णाणतणु ॥१॥

15

2

दुवई—जंबूदीवि भरहि सुच्छायउ वच्छउ विसउ^३ बहुधणा ॥
तहि कोसंवि णयरि चउदारबिलंबियरणतोरणा ॥छ॥

घरगयमोरहंसआहरणहि
मणिबिक्कयमुत्ताहलहारहि
लोहहट्टलोहेण णिबद्धहि
बलयारा^४ णपयडियवलयहि^३
विविहधयवडुप्परियणचवलहि
मंदिरकणयकलसयणवंतहि

कुंकुमपंकपसाहियचरणहि^२ ।
दोसियदंसियचोरवियारहि ।
बिक्कमाणणाणारसणिद्धहि ।
णिच्चभुयंगसंगकयपुलयहि ।
महिलायणकमणेउरमुहलहि ।
पविमलपाणियछायाकंतहि ।

5

लक्ष्मी की इच्छा करते हैं, शास्त्रों के ज्ञाता, तथा जन्म रूपी जलधि के जलयान नमि तीर्थंकर के स्थित होते हुए; पशुओं की हत्या करनेवाले, काम से अन्धे, श्यामा में रत (मिथ्यादृष्टि) लोग क्या पढ़ते हैं ? हंस के रहते हुए बगुले भला क्या गौरवपूर्ण शब्द करते हैं ? अतः कामदेव को भस्म करनेवाले उन नमीश्वर को प्रणाम कर,

घत्ता—फिर उन्हीं का कुछ चरित कहता हूँ जो कि सज्जनों के हृदय में कुतूहल उत्पन्न करनेवाला है, जिसके कहने से भाग्य का विस्तार होता है और ज्ञानस्वरूप सुख उत्पन्न होता है ॥१॥

(2)

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में सुन्दर छायावाला और सम्पन्न वत्स नाम का देश है। उसमें, जिसके चारों द्वारों पर रत्नतोरण लटक रहे हैं ऐसी कौशाम्बी नगरी है, जो गृहस्थित मयूरों और हंसों रूपी आभरणों से युक्त है, जिसके चरण केशर-पराग से प्रसाधित हैं, जो मणियों द्वारा बेषे गए मोतियों को धारण करनेवाली है, जो दोसिय (कपड़े का व्यापारी, दोषी) व्यक्ति को वस्त्रों का विकार दिखाती है, जो लोह के हाट के लोह (लोहा, लोभ) से निबद्ध है, जो बिकते हुए नामा रसों से स्निग्ध है, जिसके बलयाकार बाजार में बलय प्रगट हैं, जो नित्य भुजंगों (भोनी लोग, कामी लोग) के साथ रोमांच करनेवाली है, जो विविध ध्वजपट रूपी उपरितन वस्त्र से चंचल है, जो महिलाजनों के चरणों के नूपुरों से मुखर है, जो मन्दिर के कनक-कलश रूपी स्तनों से युक्त है, जो स्वच्छ जल की छायाकान्ति से युक्त है, जो बंदना किए गए जिनालयों

2. A वि गारयं ।

(2) 1. AP देवु । 2. A कुंकुमपंकहि सोहिय^०; P कुंकुमपंकपसोहिय^० । 3. A बलयारोवण^० ।

वंदियधवलजिणालयसेसहि उववणि^१ णिवडियअलिउलकेसहि ।
 देउलदंतपंतिदावतिहि णयरीकामिणीहि णंदतिहि । 10
 जणि जाणिउ इक्खाउ पहाणउ पत्थिउ णामें णिवसइ राणउ ।
 सइ कलहंसवंसवीणासुणि णामेण^२ जि तहु सुंदरि पणइणि ।
 वासपवेसु^३ व पुण्णपसत्थहं सुउ सिद्धत्थु सव्वपुरिसत्थहं ।
 घत्ता—ता णरेण णरिदहु विण्णविउं विद्ध^४ सियजणदुच्चरिउ ॥
 मणहरि^५ णंदणवणि अवयरिउ^६ मुणिवर णामें आयरिउ^७ ॥2॥ 1.

3

दुवई—ता सहं सुंदरीइ सहं तणएं सहं परिवाररिद्धि ॥
 गउ णरवइ वणंतु वंदिउ मुणि मणवयकायसुद्धि ॥छ॥
 राएं भुवणंभोरुहणेसरु पुच्छिउ तच्चु कहइ परमेसरु ।
 अप्पउ एककु णाणदंसणतणु णिज्जरु दुविहु दलियदुविकयमणु^१ ।
 जोय तिण्णि गारव असुहिल्लइं जीवगईउ तिण्णि मणसत्तइं । 5
 तिण्णि^२ गुणवय चउ सिक्खावय चउ कसाय कयचउगइसंपय ।
 चउ विण्णासवयइं चउ ज्ञाणइं पंच सरीरइं पंच^३ वि णाणइं ।

के निर्माल्य से सहित है, जो उपवन में आते हुए अलिरूपी केशकुलवाली है, जो देवकुल रूपी दांतों की पंक्ति दिखानेवाली है, ऐसी आनन्द करती हुई नगरी रूपी आग्नि की लौ में देवकुल का प्रधान पार्थिव नाम का राजा था। उसकी कलहंस और वीणा के समान स्वरवाली सुन्दरी नामकी सती पत्नी थी। पुण्य से प्रशस्त सर्वपुरुषार्थों में अभिनव गृहप्रवेश के समान सिद्धार्थ नाम का पुत्र था।

घत्ता—तब किसी आदमी ने आकर राजा से निवेदन किया—जिन्होंने लोगों के दुश्चरित्र का विध्वंस कर दिया है, ऐसे आचार्य नाम के मुनिवर मनोहर उद्यान में अवतरित हुए हैं।

(3)

तब सुन्दरी के साथ, पुत्र के साथ और परिवार की ऋद्धि के साथ, राजा वन में गया। उसने मन-वचन-काय की शुद्धि से मुनिवर की वन्दना की। राजा के द्वारा पूछे जाने पर विश्व-रूपी कमल के सूर्य परमेश्वर ने तत्त्व का कथन किया—आत्मा ज्ञान-दर्शनस्वरूप है, दुष्कृत मन का नाश करनेवाली निर्जरा दो प्रकार की है। योग तीन प्रकार का है (मनोयोग, वचनयोग और काययोग)। तीन अशुभ भवं हैं। जीव की तीन गति हैं (पाणिमुक्त, गोमूत्रिका और लांगलिका)। मन की तीन शल्य हैं। गुणव्रत तीन हैं। शिक्षाव्रत चार हैं। चार गतियों को प्राप्त करानेवाली चार कषायें हैं। विन्यासव्रत चार प्रकार के हैं (नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव के भेद से)। चार ध्यान हैं, पाँच शरीर और पाँच ज्ञान हैं। पाँच महाव्रत और पाँच आचार हैं। विश्व में श्रेष्ठ

4. A उववणिवडिय^१ । 5. A तहु णामें सुंदरि पणइणि; P तहु णामें सुंदरि पियपणइणि । 6. A वासु पवेसु । 7. A मणहर^२ । 8. P आइरिउ ।

(3) 1. P दुविकयणु । 2. P तिण्णि वि गुणवय । 3. P पंच वि ।

पंच महव्वयाइं आयारइं	पंचाणुव्वयाइं जगसारइं ।	
समिदीउ पंच रइयगुणछायउ	अणियउ पंचवीस वयमायउ ।	
जे लोउत्तमणाहें ⁴ सिट्ठा	ते पंचत्थिकाय उवइट्ठा ।	10
भासियाइं पंचासवदारइं	पंचिदियइं गहीरवियारइं ।	
जीवणिकायभेय छावासय	छहव्वइं छव्विह लेसासय ।	
तच्चइं सत्त सत्त णय संसिय	सत्त वि भय रिसिणा उवएसिय ।	
कम्मइं अट्ठ अट्ठ मय कयमल	अट्ठ महीउ अट्ठ वितरकुल ।	
णव पयत्थ णव बलणारायण	धम्मभेय दह पसमुप्पायण ।	15
एयारह सावयगुणठाणइं	आरह अंगइं सत्थाणिहाणइं ।	
बारह तव तेरह चारित्तइं	चोइह पुव्वइं मुणिणा वुत्तइं ।	

घत्ता—पायालु⁵ सग्गु णरवरभुव्वणु भयवत्तेण पयासियउं ॥

जं किं पि जिणागमि लक्खियउं तं णीसेसु वि भासियउं ॥3॥

4

दुवई—राएं रायपट्टु सिद्धत्थहु भालयले णिवेसिओ ॥

णिसुणिवि चारु धम्म अरहंतहु अप्पणु तवु समासिओ ॥छ॥

लइय दिक्ख जिणवरु णवेप्पिणु	पायपुज्जगुरुपाय णवेप्पिणु ।	
सिद्धत्थु वि घरवयअइसइयउ	थिउ सम्मत्तरयणचिचइयउ ¹ ।	
जलणिहिजलवलइयजयसिरिसहि ²	भुजंतेण तेण सयल वि महि ।	5

पाँच गुणव्रत हैं। पाँच समितियाँ, जो गुणों को आश्रय देनेवाली हैं, व्रत के हिसाब से पच्चीस कही जाती हैं। लोकोत्तर स्वामी ने जिनका कथन किया है उन पंचास्तिकाय का भी उपदेश उन्होंने किया। पाँच आस्रवद्वारों और गम्भीर विचरित पाँच इन्द्रियों का कथन किया। जीवनिकाय के भेद, छह आस्रव, छह द्रव्य और छह प्रकार के लेश्याभाव, सात तत्त्व और सात नयों की प्रशंसा की। महामुनि ने सप्तभय का भी उपदेश किया। कर्म आठ और मल उत्पन्न करनेवाले आठ भेद हैं। आठ भूमियाँ और आठ व्यंतरकुल हैं। नौ पदार्थ हैं। नौ बलभद्र, नौ नारायण हैं। शांति उत्पन्न करनेवाले दस धर्म हैं। श्रावक के ग्यारह गुण और स्थान हैं। शास्त्रों का समूह बारह अंग वाला है। बारह तप, तेरह प्रकार के चरित्र हैं। चौदह पूर्वों का भी मुनि ने कथन किया।

घत्ता—ज्ञानवान् उन्होंने पाताल, स्वर्ग, नरलोक का प्रकाशन किया। जो कुछ भी जिनागम में लिखा है, उस सबका निःशेष भाव से कथन किया।

(4)

राजा ने सिद्धार्थ के भालतल पर राजपट्ट रख दिया और अरहंत का मनोज्ञ धर्म सुनकर स्वयं ने तप स्वीकार कर लिया। जिनवर को प्रणाम कर और पूज्यपाद गुरु के चरणों को नमस्कार कर उन्होंने दीक्षा ले ली। सिद्धार्थ भी गृहव्रतों में अतिशय सम्यक्दर्शन से शोभित होकर स्थित हो गया। जलनिधि जल तक विस्तृत विजयश्री की सखी धरती का भोग करते हुए उसने

4. A लोयततणाहें । 5. A पायाल ।

(4) 1. A समत्तु रयणु । 2. P ^०जवलइय^० ।

णिसुय वत्त जिह जणणु जईसरु	मुउ संणारसें णिण्णासियसरु ।	
तणयहु विणयपणयवित्थिण्णहु	ढोइवि णियकुलसिरि सिरिदिण्णहु ।	
वग्गुरवेहु गाहु मणहरिणहु	किउ तवचरणु ³ हरणु जमकरणहु ।	
तहिं जि मणोहरवणि तणुताविउ ⁴	मुणिवरु गुरु सब्भावें सेविउ ।	
सो अप्पउं जिणभावें रंजइ	लद्धउं कालि सुणीरसु भुंजइ ।	10
मउणु ⁵ करइ अहु थोवउं जंपइ	बंधमोवखु संसारु वियप्पइ ।	
विकहउ ण कहइ ण सुयइ ण सुणइ	धम्मस्साणु रिसि णिविसु ⁶ वि ण मुयइ ।	
जग्गइ इंदियचोरहु एतहुं	सीलदधिणु बलि मड्ड ⁷ हरंतहुं ।	
रत्तिदिवसु उब्भुब्भउं अच्छइ	सत्तु वि मित्तु वि सरिसउ पेच्छइ ।	
देहि णेहु किं पि वि ण समारइ	पुण्वभुत्तु मणि ⁸ ण सरइ सारइ ।	15
मलपविलित्तइ अट्टइ अंगइ	धरियइ तेणेयारहु अंगइ ।	
धीरें ⁹ सच्चु तच्चु णिज्झायउं	खाइउ दंसणु खणि उप्पाइउं ।	
सोलहु धिर हियएण धरेप्पिणु	जिणजम्मणकारणइ चरेप्पिणु ।	

धत्ता—सो अणसणु करिवि पसण्णमइ मुणि पंडियमरणेण मुउ ॥

अवराइउ ससहरकरधवल मणिविमाणि अहमिदु हुउ ॥4॥

20

जैसे ही सुना कि कामदेव का नाश करनेवाले योगीश्वर पिता संन्यासपूर्वक को मृत्यु प्राप्त हुए, विनय और प्रणय से विस्तीर्ण पुत्र श्रीदत्त को अपनी कुलश्री देकर उसने तपश्चरण ले लिया, जो मनरूपी हरिण के लिए अत्यंत बागुर का बंध और रोग का हरण करनेवाला था । उसी मनोहर उद्यान में शरीर से संतप्त गुरु की सद्भाव से सेवा की । वह स्वयं को जिनभाव से रंजित करता है, समय से प्राप्त नीरस भोजन करता है, या तो वह मीन रहता है या थोड़ा बोलता है । बन्ध, मोक्ष और संसार का विचार करता है । विकथा न वह कहता है, न सुनता है । वह मुनि एक पल के लिए भी धर्मध्यान नहीं छोड़ता । शील रूपी धन का जबरदस्ती अपहरण करने आते हुए इन्द्रिय रूपी चोरों से जागता रहता है । रात-दिन दोनों हाथ उठाए रहता है, शत्रु और मित्र को समान-भाव से देखता है । देह में वह नख के बराबर भी समादर नहीं करता । पूर्व में भोगी गई रति और लक्ष्मी को वह विल्कुल भी याद नहीं करता । मल से तिलिप्त आठों अंगों और ग्यारह अंगों को उसने धारण किया है । उस धीर ने सत्य और तत्त्व का ध्यान किया । एक क्षण में उसे क्षायिक सम्यग्दर्शन उत्पन्न हो गया । जिनजन्म की कारणस्वरूप सोलह स्थिर भावनाओं को हृदय में धारण कर और आचरण कर,

धत्ता—अनशन कर वह प्रसन्नमति मुनि पण्डितमरण से मृत्यु को प्राप्त हुआ । वह चन्द्र-किरणों के समान धवल मणिमय अपराजित विमान में अहमेन्द्र हुआ ।

3. A तवचरणु । 4. AP तवताविउ । 4. AP मोणु । 6. A णिमिसु । 7. AP मंड । 8. P रणि । 9. P धीरें ।

5

दुवई—वरणीहारहारपंडुरयर रयणिपमाणियंगओ ॥

गिण्डियारसापुहुरणिहि गयरमणीपसंगओ¹ ॥छ॥

जो नीसासवाउ कयसंखहि	मुयइ कहि मि तेत्तीसहि पक्खहि ।	
माणियअमरालयसिरिहइ	आउ जासु तेत्तीससमुइइ ।	
तेत्तियवरिससहासहि भोयणु	जो अहिलसइ सोक्खसंपायणु ।	5
सुक्कलेसु मज्झत्यु महाहिउ	तहु छम्मासकालु जइयहुं थिउ ।	
तइयहुं घरसिरिसंठियखयरिहि ²	बंगदेसि वरमिहिलाणयरिहि ³ ।	
इंदाएसें धणएं रइयहुं	विविहमहामाणिककहि खइयहुं ।	
विविहहट्टेट्टारमणीयहि	विविहमाणिणीयणसंगीयहि ।	
विविहारामहि विविहणिवासहि	विविहसिहरआलिहियायासहि ।	10

घत्ता—तहि विजयराउ णामें नूवइ⁴ णिवसइ णवणिसियासिकरु ॥

छायायरु जणसंतावहरुं णं वरिसंतउ अंबुहरु ॥5॥

6

दुवई—तहु घरि घरणि¹ देवि परमेसरि वप्पिल चारुचारिणी ॥

हिरिसिरिकंतिकित्तिदिहिलच्छिहि सेविय हिययहारिणी ॥छ॥

(5)

वह श्रेष्ठ नीहार और हार के समान धवल, एक हाथ प्रमाण देहवाला, प्रतिकार से रहित श्रेष्ठ सुख, रसनिधि और रमणी-प्रसंग से रहित था। वह तेतीस पक्षों में कभी निःश्वास वायु छोड़ता। उसकी आयु अमरालय के कल्याणों को मानने वाली तेतीस सागर प्रमाण थी। तेतीस हजार वर्ष में वह सुख को सम्पादन करनेवाले भोजन की इच्छा करता था। वह शुक्ल लेश्या-वाला और मध्यस्थ था। जब उसकी अधिक-से-अधिक आयु छह माह शेष रह गई, तब बंग देश की, जिसके गृह-शिखरों पर विद्याधरियाँ स्थित हैं, इन्द्र के आदेश से धनद के द्वारा रचित, विविध महामाणिक्यों से विजड़ित, विविध हाटों और द्यूतगृहों से रमणीय, विविध मानिनी-जनों द्वारा संगीयमान, विविध उद्यानों, विविध गृहों-शिखरों से जिसके आकाश प्रदेश आलिखित हैं—ऐसी उस मिथिला नगरी में—

घत्ता—विजय नामक नवीन तलवार अपने हाथ में लेनेवाला विजयराज नामक राजा था। मानो वह छाया करनेवाला तथा लोगों का संताप दूर करनेवाला बरसता हुआ भेघ हो।

(6)

हे देव, उसके घर में सुन्दर आचरण करनेवाली वप्पिल नाम की परमेश्वरी गृहिणी थी। जो ह्री, श्री, कान्ति, कीर्ति, धृति और लक्ष्मी द्वारा सेवित तथा हृदयहारिणी थी। सुख

(5) 1. AP °रमणीयसंगहो । 2. P खगसिरि° । 3. AP °मिहला° । 4. P णिवइ ।

(6) 1. AP घरिणि ।

सुहं सुत्ताइ ताइ अलिमालिउ
करि करडयलगलियचुय^२मयजलु^३
हरि हरिकुलिसकठिणणहहयगिरि
पसरिय परिमलमहुयरसबलिय
कुवलयदलविलसियक^४ ससह^५
अस भमिर रमिर रडववसिय
सरवरु सकमलु सरिवइ समयरु
विसहरभवणु सुमहु सयमहवरु^६ ।

रयणणियरु पहहयरवियरविडु

घत्ता—इय जोइवि सिविणय सोलह वि अक्खिउ मुद्धइ^७ णियपइहि^८ ॥

तेण वि देसावहिलोयणिण फलु वियरिउ^९ गयवरगइहि ॥१॥

7

दुवई—सयलसुरिदवन्दु गुणगणणिहि णिरुवमु णिसुणि सुंदरी ॥

होही तुज्जु पुत्तु गुरुहुं मि गुरु कामकरिदकेसरी^१ ॥छ॥

हुउ अड्डु^२ वरिसु

सरयावयासि

धरि रयणवरिसु ।

भद्वयमासि^३ ।

से सोई हुई उसने रात्रि के विरामकाल में स्वप्नमाला देखी । जिसके गण्डस्थल से मदजल चूर रहा है ऐसा हाथी, अपने तीव्र दोनों खुरों से घरतीतल को खोदता हुआ बैल, इन्द्र के वज्र के समान कठोर नखों से गिरि को आहत करनेवाला सिंह, हाथियों की सूडों के कलश-जल से अभिषिक्त लक्ष्मी, परिमल और मधुकरों से मिश्रित जुड़ी हुई आकाश में झूलती मालाएँ, जिसकी किरणें कुमुददलों को विकसित करनेवाली हैं ऐसा चन्द्रमा, आकाश धरती और दिशाओं में अन्धकार को दूर करनेवाला दिनकर, रति के लिए उद्यत-एवं कीड़ा करता हुआ भ्रमणशील मत्स्य, हरे कोपलों से आच्छादित जल से भरा घड़ा, कमल सहित सरोवर, मगर सहित समुद्र, देवपर्वत को जीतनेवाला रत्नों का सिंहासन, नागभवन, अत्यन्त विशाल इन्द्रभवन, प्रभा से सूर्य की किरणों की बिम्बा को आहत करनेवाला रत्नसमूह तथा कनक और कपिल रंग की लम्बी ज्वाला वाली आग ।

घत्ता—इस प्रकार सोलह स्वप्नों को देखकर उस मुरधा ने अपने पति से कहा । उसने भी देशवधिज्ञान के लोचन से उस गजगामिनी को फल बताया ॥६॥

(7)

हे सुन्दरी सुनो, तुम्हारा पुत्र सकल सुरेन्द्रों के द्वारा वंदनीय, गुणगण की निधि और अनूपम, गुरुओं का गुरु तथा कामरूपी करीन्द्र के लिए सिंह होगा । आधे वर्ष तक घर में रत्नों की वर्षा

2. AP °वल° । 3. P °मयडलु । 4. A °सुण्हविसिरि; P °सुण्हविथ । 5. P °वियसिययर । 6. P सयमयवरु । 7. A सुद्धइ । 8. AP णियवइहि । 9. AP विवरिउ सरवर° ।

(7) 1. P कालकरिड° । 2. A अड्डवरिसु । 3. AP अस्सणहु मासि ।

ससिधवलपक्खि ⁴	आसिणिसुरिक्खि ।	5
बीयहि जिणिंदु	जगकुमुयचंदु ।	
थितु गम्भवासि	संसारणासि ।	
आयामरेहि	चलधामरेहि ।	
सुल्लइ णहंतु	ढंकिउ दियंतु ।	
णहणिवडमाणु ⁵	वसु अप्पमाणु ।	10
जोइउ णरेहि	पणवियसिरेहि ।	
णिधभवणि ताव	णवमास जाव ।	
मुणिसुव्वयम्मि	पालियवयम्मि ।	
भद्रभावकांसि ⁶	णिग्घाणपत्ति ⁷ ।	
गय सट्ठि ⁸ लवख	वरिसहं ससंख ।	15
तइयहुं अउण्ह-	आसाढकण्ह-	
पक्खंतरालि	कयअमररोलि ।	
आणंदपुण्णि	दिम्महि पसणि ।	
अइसुरहिवाइ	दुंदुहिणिणाइ ।	
चुंयगंधसलिलि	सुरधिसकमलि ।	20
कंतीइ ⁹ कंति	दहमइ दिणंति ।	
सुहसंगमेण	जायउ कमेण ।	
तेलोककणाहु	अहयंदराहु ।	
पयपणयधणउ	वप्पिलहि ¹⁰ तणउ ।	
घत्ता—णिउ देवहि मंदरमहिहरहु पुज्जाविहि संमाणियउ ॥		25
पटुपडहभेरिमंगलरविण जयजयसइ ¹¹ ण्हाणियउ ॥7॥		

हुई। जिसमें देवों को अवकाश है इसे भाद्र माह के कृष्ण पक्ष में अश्विनी नक्षत्र में त्रितीया के दिन, संसार का नाश करनेवाले, विश्वरूपी कुमुद के लिए चन्द्र, जिनेन्द्र गर्भ में स्थित हुए। चंचल चमरोंवाले आए हुए अमरों से आकाश आन्दोलित हो उठा, दिगन्त आच्छादित हो गया। लोगों ने प्रणत सिरों से आकाश से गिरते हुए अप्रमाण धन को देखा। तब तक कि जब तक ती माह हुए, जिन्होंने व्रत का पालन किया है ऐसे मुनिसुव्रत तीर्थंकर के, संसार भावना से परित्यक्त निर्वाण प्राप्त कर लेने के बाद जब साठ लाख वर्ष बीत गए, तब आषाढ माह के, जिसमें देवों का शब्द हो रहा है, जो आनन्द से पूर्ण है, जिसमें त्रिशम्भु प्रसन्न हैं, जिसमें सुरों से अति-आहूत दुंदुभि का निनाद हो रहा है, सुगंधि जल बह रहा है, देवों द्वारा कमल बरसाए जा रहे हैं, जो कंति से सुन्दर है, ऐसे दसवीं के दिन, क्रम से शुभ संगम होने पर, त्रिलोक का स्वामी और जिसके चरणों में अहमेन्द्र प्रणत है, वप्पिला को ऐसा पुत्र हुआ।

घत्ता—देवों के द्वारा उसे मन्दराचल पर्वत पर ले जाया गया, वहाँ पूजाविधि की गई। पटु, पटह और भेरि के मंगल स्वर और जय-जय शब्द के साथ उन्हें अभिषिक्त किया गया।

4. AP ससिखीणपक्खि । 5. AP णहि णिवडमाणु । 6. A 'वत्ते' । 7. AP णिग्घाणु । 8. AP 'गय' से ससंख । 9. P कंतीसकंति । 10. AP वप्पिलहि ।

8

दुवई—पुज्जिवि ण्हविवि भणित णमिजिणवरु गुणमणिरुद्धवण्णओ¹ ॥

णाणत्तयसमेउ परमेसरु उज्जलकणयवण्णओ ॥छ॥

आणिवि ² पूण वि णिहिउ जणणहु धरि बड्ढिउ जिणु कुमारु हंस व सरि	
बड्ढिउ तवसंताउ ³ व कामहु	बड्ढिउ दाहु व इंदियगामहु ।
बड्ढिउ मेहु व कोवहुयासहु	बड्ढिउ मंतु व भवभयतासहु ।
बड्ढिउ हेउ व पवरसुहेल्लिहि	बड्ढिउ णवकंदु व दयवेल्लिहि ।
बड्ढिउ देवदेउ वररुवउ	पण्णारहधणुदेहु पहूयउ ।
दससहास वरिसहं परमाउसु	अड्ढाइज्ज ताई कीलावसु ।
थिउ कुमारु कुमरत्तणलीलइ	पट्टु णिवद्धउ वियलियकालइ ।
वरिसहं पंचसहासइ खीणइ ⁴	रज्जु करंतहु तहु बोलीणइ ।

5

10

घत्ता—ता णवघणसमइ पराइयइ सुरधणु जणकोड्डावणउं ॥

सोहइ उवरित्थु पयोहरहं णं णहसिरिउप्परियणउं ॥8॥

9

दुवई—णाच्चियमत्तमोरगलकलरवि पसरियमेहजालए ॥

पवसियपियहि¹ दीहणीसासरुहाणलधूमकालए ॥छ॥

(8)

पूजा कर स्नान कराकर, गुणरूपी मणियों की कान्ति से रमणीय, तीन ज्ञान से युक्त और उज्ज्वल स्वर्ण वर्णवाले परमेश्वर को नमि जिनवर कहा गया। उन्हें लाकर, फिर से माता के गृह में स्थापित कर दिया गया। सरोवर में हंस की तरह कुमार बढ़ने लगा। काम के संताप की तरह वह बढ़ने लगा, इन्द्रिय समूह के दाह के समान वह बढ़ने लगा। कोपरूपी हुताशन के लिए मेघ के समान वह बढ़ने लगा। भवभय के संत्रास के लिए मन्त्र के समान वह बढ़ने लगा। प्रवर सुख क्रीड़ाओं के कारण की तरह वह बढ़ने लगा। दयारूपी लता के नव अंकुर के समान वह बढ़ने लगा। सुन्दर रूपवाले देवाधिदेव बढ़ते गए और पन्द्रह धनुष प्रमाण शरीर वाले हो गए। उनकी परमायु दस हजार वर्ष की थी, उसमें ढाई हजार वर्ष क्रीड़ा में निकल गए। कुमार कौमार्य की लीला में रत हो गए। समय बीतने पर उन्हें पट्ट बांध दिया गया। पांच हजार वर्ष क्षीण हो गए, राज्य करते हुए उनका (इतना) समय चला गया।

घत्ता—तब नवघन का समय आने पर, मेघों के ऊपर स्थित, लोगों को कुतुहल उत्पन्न करनेवाला इन्द्रधनुष ऐसा शोभित हो रहा था मानो आकाश रूपी लक्ष्मी का उपरितन वस्त्र (दुपट्टा) हो ॥8॥

(9)

जिसमें मतवाले मयूर सुन्दर कण्ठ-ध्वनि से नृत्य कर रहे हैं, जिसमें मेघजाल प्रसरित हो रहा है तथा प्रवसत्पतिका के लिए जो दीर्घ निःश्वासों से उत्पन्न अग्निधूम का समय है, ऐसे

(8) 1. AP रुद्धवण्णओ । 2. A आणेण्णिणु णिहिउ । 3. तणुसंताउ । 4. AP क्षीणइ ।

(9) 1. AP पवसियमुक्कदीह^० ।

तडिबिप्फुरणफुरियपविउलणहि
छुडु जि छुडु जि बप्पीहें घोसिउ
छुडु जि कयंबगंधु² उच्छलियउ
छुडु पंथियपिययम उक्कंठिय
हरियतिणंकुरोहदिण्णाउसि⁴
श्रीआवरणकारकोइराउत
कडयकिरीडहारकुंडलधर⁵
विण्णवंति पणवंति कयायर
इह दीवंतरि पुव्वविदेहइ
दबिणणिवेदयकामुयकामहि
आयउ अम्महबाणकयंतउ

वारिपूरपेल्लियदसदिसिवहि ।
छुडु जि छुडु जि केयइवणु³ वियसिउ ।
छुडु पप्फुल्लउ मालइकलियउ ।
छुडु छुडु वायस वासपरिद्विय ।
वरिसमाणि छुडु पत्तइ पाउसि ।
वणकीलाविहारि पट्टु णिग्गउ ।
ता थिय सुरवर णहि मउलियकर ।
णिसुणि णिसुणि भो गुणरयणायर ।
तहि वच्छावइविजइ सुगेहइ ।
णयरिहि सुहलियसीमसुसीमहि ।
अवराइयहु विमाणहु होंतउ ।

5

10

धत्ता—णिज्जियमणु तवसिहितत्ततणु कम्मबंधणिण्णासयर ॥

अवराइउ णामें लोयगुरु तहि उप्पण्णउ तित्थयर ॥9॥

10

दुवई—असरिसविसमविरसविससंणिहदुक्कियजलणजलहरा ॥

आया तस्स चरणपणवणमण रविससहरसुरासुरा¹ ॥छ॥

काल में जबकि बिजलियों की चमक से विशाल आकाश चमक रहा है और सभी दिशापथ जलप्रवाहों से आपूरित हैं। चातक ने शीघ्र से शीघ्र घोषणा की, शीघ्र से शीघ्र केतकी वन खिल उठा। शीघ्र ही कदम्ब की गन्ध उछल पड़ी, शीघ्र ही मालती की कलियाँ खिल गईं। शीघ्र ही पथिक प्रियतम उत्कण्ठित हो उठे। शीघ्र ही वायस घरों के ऊपरी भागों पर स्थित हो गए। जिसने हरे-हरे तिनकों के लिए आयु प्रदान की है ऐसे बरसते हुए पावस के प्राप्त होने पर; जिसने खेल-खेल में चरण के चलाने से गज को प्रेरित किया है ऐसा राजा वन-क्रीड़ा के लिए चला। तब कटक, मुकुट, हार और कुंडल को धारण करनेवाले और हाथ जोड़े हुए देव आकाश में स्थित हो गए। किया है आदर जिन्होंने ऐसे वे प्रणाम करते हैं और निवेदन करते हैं—हे गुणरत्नाकर देव, सुनिए, सुनिए। इस द्वीप के पूर्व विदेह में सुन्दर गृहोंवाला वत्सकावती नाम का देश है। जिसमें कामुकों की कामनाएँ धन से निवेदित की जाती हैं तथा जिसकी सीमा अच्छी तरह फलित है ऐसी सुसीमा नगरी में कामदेव के बाणों के लिए यम के समान तथा अपराजित विमान से होता हुआ—

धत्ता—अपने मन को जीतनेवाला, तप की ज्वाला से संतप्त-शरीर, कर्मबन्धन का नाश करनेवाला, अपराजित नामक लोकगुरु तीर्थंकर उत्पन्न हुआ है।

(10)

असदृश विषम और विरस विष के समान दुष्कृत रूपी ज्वाला के लिए मेघ के समान, रवि, चन्द्रमा, सुर और असुर उनके चरणों में प्रणमन करने की इच्छा से आए। जिसमें अमर विला-

2. AP केइयवणु। 3. P कमलगंधु। 4. AP तणंकुरोह। 5. AP कुंडलहर। 6. A सुल्लिय⁰।

(10) 1. AP णरविसहरसुरासुरा।

अमरविलासिणिणचचणतंडवि	जंपिउ केण वि तहु सहमंडवि ।	
संपइ देहिदेहहयमयजर ²	जंबूदीवभरहि को जिणवर ।	
केवलणाणसमुग्गयणयणें	भणिउं जिणेण विणासियमयणें ।	5
वंगदेसिं सुसुभरयसुकविलहि	णववणणीलहि णयरिहि मिहिलहि ।	
उत्पण्णउ अच्छइ जगसंकर	णमिणांमं कु भावितित्थंकर ।	
पवरविमाणहु हिमयरधामहु	अवइण्णउ अवराइयणामहु ।	
भावाभावइं चित्तइं ³ जाणइ	देवविइण्णइं सुखइं माणइ ।	
धादइसंडि दीवि तउ ⁴ चिण्णउं	दोहिं मि देवत्तणु संपण्णउं ।	10
पढमि सग्गि सोहम्मि मणोहरि	रयणकिरणजालंभियसुरहरि ।	
तं गिसुणेप्पिणु मइमल धोयहुं	अम्हइं आया तुहु पय जोयहुं ।	
तं ⁵ हियउल्लइ धरिवि णरेसरु	णयरि पइट्ठु ललियगब्भेसरु ।	
तहु जिणवरहु जम्मसंबंधइं	सुयरेप्पिणु ⁶ णियभवइं सचिधइं ।	

घत्ता—चितइ वसुहाहिउ णियहियइ बुद्धु सबोहिइ बुद्धउ ॥ 15

जगि जीउ जहिं जि हुउ तहिं तहिं जि रमइ सकम्मणिबद्धउ ॥ 10 ॥

11

दुवई—हिइइ भवसमुद्धि अण्णाणविलुट्टियणाणलोयणो ॥

पुत्तकलत्तमित्तवित्तासापासणिरुद्धचेयणो¹ ॥ छ ॥

सिनियों के नृत्य का विस्तार हो रहा है, ऐसे उनके सभा-मण्डप में किसी ने पूछा—“इस समय जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में शरीरधारियों के कामज्वर को नष्ट करनेवाले कौन जिनवर हैं ? जिसने कामदेव का नाश कर दिया है ऐसे केवलज्ञान से उत्पन्न नेत्र वाले अपराजित ने कहा— बंग देश की पुष्पधूलि से अत्यन्त कपिल, नववन से नीली मिथिला नगरी में उत्पन्न, विश्व के लिए सुख देनेवाले नमि नाम के भावि तीर्थंकर हैं। चन्द्रकिरण के समान धामवाले अपराजित नाम के विशाल विमान से अवतीर्ण वह विचित्र भाव-अभावों को जानते हैं, देवों द्वारा प्रदत्त सुखों का भोग करते हैं। धातकीखण्ड द्वीप में दोनों ने तप ग्रहण किया था और दोनों ने प्रथम स्वर्ग सुन्दर सौधर्म के रत्नकिरणों के जाल से अंचित देवविमान में देवत्व प्राप्त किया था। यह सुनकर हम दोनों अपना मतिमल धोने और तुम्हारे चरणकमल देखने के लिए आए हैं। यह बात अपने हृदय में धारण कर, सुन्दर गर्वेश्वर राजा ने अपनी नगरी में प्रवेश किया। उन जिनवर के संबंधों और चिह्न सहित अपने जन्मान्तरों की याद कर—

घत्ता—राजा विचार करता है कि जानकार ही जानकार को सम्बोधित कर सकता है। यह जीव जग में जहाँ भी उत्पन्न होता है, अपने कर्म से निबद्ध होकर वहीं रमण करता है।

जिसका ज्ञानरूपी नेत्र अज्ञान से बन्द है तथा पुत्र-कलत्र-मित्र और वित्त के आशारूपी

2. AP देहि देउ । 3. AP चितइ । 4. AP वउ । 5. A तहिं हिय⁰ । 6. P सुमरेप्पिणु ।

(11) 1. A ⁰चित्तासापास⁰ ।

इय आयंतु देउ उम्मोहिउ
तणयहु वरसरीरसुहकारिणि
सुप्पहणामहु पट्टु णिबंघिवि
अमरवराहिसेउ पावेप्पिणु
सुमहिउ सयमहेण महिरुडउ
गउ आसाढमासि घणसामलि
दसमइ दिवसि मुहुत्ति पहाणइ
लइय दिक्ख तिक्खण णवत्ते
मुक्कंवरइ^१ विलुंचियकेसइ
लइयएण छट्ठे णुववासं
इंदवंदणाइंदणमंसिउ^४
वीरणयरि दत्तहु णरणहुहु
घरि पारणउं कयउं परमेसं
घत्ता—णववरिसइं दुद्ध^३ तउ चरिवि तिण्णि वि सल्लइं वज्जियइं॥

सारस्सयसुरवरहिं^२ संबोहिउ ।
दिण्ण तेण सधराधर धारिणि ।
धम्मज्ञाणु हियउल्लइ संधिवि । 5
घणु परियणु तणु जिह मिल्लेप्पिणु ।
उत्तरकुससिवियहि आरुडउ ।
अस्सिणिरिविख पक्खिससिउज्जलि ।
फलपणविइ चित्तवणुज्जाणइ ।
अत्तुरत्तरमहिमोहु मुयत्ते । 10
पट्टु आलिगिउ दिक्खावेसइ ।
सहुं सुसीलखत्तियहं सहासें ।
मणपज्जवणाणेण विहसिउ ।
वीरलच्छिसुपसाहियबाहुहु ।
सुरकयपंचच्छरियविलासें । 15
रसगंधकाससुइलोयणइं पंचिदियइं परज्जियइं ॥11॥

12

दुवई—वसुहं हिडिऊण गउ पुण रवि तं दिक्खावणं घणं ॥
कुसुमियफलियललियतरुसाहाकीलियहंसवरहणं ॥छ॥

(11)

पाश में निरुद्धचेतन यह जीव संसार-समुद्र में भ्रमण करता है यह विचार करते हुए देव मोह से दूर हो गये। लोकांतिक देवों ने आकर उन्हें सम्बोधित किया। श्रेष्ठ शरीर का शुभ करनेवाली सधराधर धरती उन्होंने अपने पुत्र के लिए प्रदान कर दी। सुप्रभ नामक पुत्र को पट्टु बाँधकर हृदय में धर्म का संधान कर, देवों द्वारा वर-अभिषेक पाकर, धन और परिजन को तूण की तरह त्यागकर, इन्द्र के द्वारा पूजित धरती पर प्रसिद्ध, उत्तर कुरु शिविका पर आरुढ़ होकर, आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की दसवीं के दिन आश्विन नक्षत्र में, फलों से विनम्र चित्र-वन उद्यान में सिद्धों को नमस्कार करते हुए; घर, पुरवर और धरती का मोह छोड़ते हुए प्रभु मुक्ताम्बर (मुक्तवस्त्र) वाली और विलुंचित केशवाली दीक्षा रूपी वेश्या के द्वारा आलिगित किए गए। छठा उपवास ग्रहण करते हुए, एक हजार सुशील क्षत्रियों के साथ; इन्द्र, चन्द्र और नागेन्द्रों के द्वारा वन्दनीय, मनुष्ययज्ञान से विभूषित, वीर नगर में वीरलक्ष्मी से सुप्रसाधित-बाहु राजा दत्त के घर, परमेश्वर ने देवी द्वारा किये गये पाँच आश्चर्य विलास के साथ पारणा की।

घत्ता—नौ वर्षों तक दुग्धर तप कर उन्होंने तीन शल्यों को छोड़ दिया। रस, गन्ध, स्पर्श, श्रुति और लोचन—पाँचों इन्द्रियों को जोत लिया गया ॥1१॥

धरती पर विहार कर वह पुनः उसी दीक्षा-वन में गए कि जहाँ कुसुमित फलित वृक्षों की

2. AP सारस्सयसुरेहिं । 3. A मुक्कंवरपविलुंचिय^० । 4. AP ^०णायंद^० । 5. AP दुष्पह चरिवि तउ ।

तहिं रिसिं तवसंतावें रीणउ	बउलमहीरुहतलि आसीणउ ।	
मगासिरइ सिसिरइ संपत्तइ	पक्खि मियंककरावलिदित्तइ ।	
तइयइ सासिणिदियहिं वियालइ	णिल्लूरियमहंततमजालइ ।	5
उप्पण्णेण णविसम्मिन्नणें	त्तिट्ठइ देवें केवलणणें ।	
सुहुमइ अवरंतरियइ ¹ दूरइ	पच्चक्खाइं सुमेयगहीरइं ² ।	
पोमालाइं पूरियगलियंगइं	गंधवण्णपरिणामवसंगइं ³ ।	
मल्लयमुरयवज्जणिहु तिहुवणु	ओरगाहणलक्खणु गयणंगणु ।	
कालु वि लक्खिउ जायपवत्तणु	अप्पउं सयणु अयणु चेयणगुणु ।	10
धम्ममाधम्मु बे वि गइठाणइं	बुज्झिय सत्ते सुद्धपमाणइं ।	
ता दसदिसिवहेहिं ⁴ आवंतहिं	जय जय जय ⁵ मुणिणाह भणंतहिं ।	
घत्ता—पूएप्पिणु वियसियसुरहियहिं कुसुमहिं कुसुमसरत्तिहरु ॥		
चउदेवणिकायहिं णमिउ णमि पसमपरिग्गहु परमपर ॥12॥		

13

दुवई—रेहइ तुज्जु णाह भुवणसयसीहासणविलासओ ॥

जस्साहोवयम्मि देविदु¹ वि बइसइ णवियसीसओ ॥छ॥

दइदउ² धणघरतिट्ठावाहिइ जगु जीवइ तुह छत्तइ छाहिइ ।
पइ दिट्ठइ पाविट्ठु वि सुज्झइ तुह वायइ मृगु³ मंदु वि बुज्झइ ।

(12)

शाखाओं पर हंस और मयूर क्रीड़ा कर रहे थे । वहाँ तप के संताप से क्षीण वह ऋषि मौलश्री वृक्ष के नीचे स्थित हो गए । वहाँ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन अश्विनी नक्षत्र में संध्या समय महान तमोजाल को नष्ट करने पर, जिसे देवता नमस्कार करते हैं ऐसे उत्पन्न हुए केवल-ज्ञान के द्वारा देव ने सूक्ष्मतर और अंतरित दूरियाँ, तथा भेदों से गंभीर प्रत्यक्षों को देख लिया । गंधवर्ण और परिणमन के बशीभूत, पूरित और गलितांग पुद्गलों को देख लिया । सकोरा और मुरज वाद्य के समान त्रिभुवन को, अवगाहनस्वरूप आकाश को, प्रवर्तनमूलक काल को, आत्मा, सशरीर जड़ और चेतन गुण को, धर्म और अधर्म—दोनों गति और ठहराव के कारण को, उन शान्त ने शुद्ध प्रमाण से जान लिया । तब दसों दिशा पथों से आते हुए, हे मुनिनाथ आपकी जय हो, जय हो' कहते हुए—

घत्ता—चारों निकायों के देवों द्वारा विकसित एवं सुरभित कुसुमों से कामदेव की पीड़ा का हरण करनेवाले प्रशांत-परिग्रह, परमपर नमि को पूजा कर, उन्हें नमन किया गया ।

(13)

हे स्वामी, तुम्हारे भुवनत्रय का सिंहासन-विलास शोभित है कि जिसके नीचे देवेन्द्र भी अपना सिर झुकाकर बैठता है । धन और तृष्णा की व्याधि से दग्ध विश्व तुम्हारे छत्रों की छाया में जीता है । आपको देख लेने पर पापिष्ठ भी शुद्ध हो जाता है । तुम्हारी वाणी से मंद पशु भी

(12) 1. P अंबरतरियइं । 2. A समेय^० । 3. AP वण्णगंधपरि^० । 4. A दसदिसिवहेण; P दसदिसिवहिं णहिं आवंतहिं । 5. P omits जय ।

(13) 1. A देविदु पइसई । 2. A दइदउधणघर^० । 3. AP मृगु ।

तुह धम्महु ण लील संपावइ
णिगुणधम्मं केत्तिवं गज्जइ
जिण तुह भामंडलवित्थारें
तुह चामरहिं चलंतहिं पेल्लिउ
रंजिय कुसुमविट्ठिरुइरंगें⁴
तुज्झु असोउ सोयणिण्णासणु

विज्जुज्जोए⁵ अंगउ दावइ ।
घणु तुह दुंदुहिरवहु ण लज्जइ ।
लोउ ण धिप्पइ मोहंधारें ।
कम्मरेणु उड्डाविवि धल्लिउ ।
महुयर मत्ता तुज्झु जि संगें ।
णंदउ णाह तुहारउ सासणु ।

10

घत्ता—जय जय परमंप्पय परमगुरु⁶ जम्मि जम्मि तुहं महु सरणु ॥
रिसिचरणमूलि सल्लेहंणिण महुं देज्जसु समाहिमरणु ॥13॥

14

दुवई—इय संधुउ जिणिदु देविदहिं सेवियघोरकाणणो ॥
ववगयकामकोहमयमोहमहातवलच्छिमाणणो ॥छ॥

देउ एक्कवीसमउ जिणेसरु
सच्चु¹ सधम्म अहम्म विचारइ
उवसंतइ पयपंकयणवियइ
तहु उप्पण्णा पुण्णमणोरहु
पुव्वधरहं पण्णास समेयइ
उहुसयाइ बारहसहसालइ
पुणु छसयाइ बारहसहसालइ

उगउ णं गयणंगणि णेसरु ।
भवसमुद्धि बुड्डंतइ तारइ ।
पियवत्तइ संबोहिणव्वियइ² ।
सुण्णहाइ सत्तारइ³ गणहर ।
चउसयाइ ससिदिणयरतेयइ ।
सिक्खुयरिसिहि समुज्जलसीलइ ।
णाणत्तयवंतहुं सुणिउत्तइ ।

5

समझ जाता है। मेघ तुम्हारे धर्म (धनुष) की लीला नहीं पा पाता इसीलिए विद्युत् के प्रकाश से अपना शरीर दिखाता है। अपने निर्गुण (डोरी रहित) धनुष से वह कितना गरजता है! घन तुम्हारे दुंदुभि के शब्द से लज्जित नहीं होता? हे जिन, तुम्हारे भामण्डल के विस्तार से लोग मोहान्धकार की गिरपत में नहीं पड़ते। तुम्हारे चलते हुए चमरों से प्रेरित कर्मधूलि उड़ाकर फेंक दी जाती है। कुसुमवृष्टि की कांति में रंगे हुए भ्रमर तुम्हारे साथ ही मत्त रहते हैं। तुम्हारा अशोक शोक का नाश करनेवाला है। हे नाथ, तुम्हारा शासन बढ़ता रहे।

घत्ता—हे परमात्म आपकी जय हो; हे परमगुरु, जन्म-जन्म में तुम मेरे लिए शरण हो; मुझे मुनिवर के पादमूल में सल्लेखना और समाधिमरण देना।

(14)

जिन्होंने घोर कानन का सेवन किया है, जो काम, क्रोध, मद, मोह से रहित और तपस्वी महालक्ष्मी को मानने वाले हैं, ऐसे जिनेन्द्र की देवेन्द्रों ने स्तुति की। इक्कीसवें जिनेश्वर देव मानो आकाश में सूर्य के रूप में उगे। वह धर्म-अधर्म का सच्चा विचार करते हैं, संसार रूपी समुद्र में गिरते हुआ को तारते हैं, प्रिय वचनों से भक्तों को सम्बोधित करते हैं। उनके पुण्य मनोरथ सुप्रभ आदि सत्रह गणधर हुए। चन्द्र और सूर्य के समान तेजस्वी पूर्वधारी चार सौ पचास थे। बारह हजार छह सौ शील से समुज्ज्वल शिक्षक मुनि थे। फिर बारह हजार छह सौ तीन ज्ञान के

4. A विज्जाजोए। 5. AP ^०रइरंगें; K records a p : रय इति पाठे रजः। 6. P परमगुरु।

(14) 1. P सच्चु सुतरु सुधम्म। 2. P संबोहइ। 3. AP गणहर सत्तारइ।

तेस्तिय केवलणाणपहायर	मुणिवरिंद तणुक्किरियायर ।	10
पंचसयाइं एक्कसहसिल्लइं	मणपज्जवणाणिहि णीसल्लइं ।	
साहहुं ⁴ सहुं सहसेण गविट्ठइं	दोसयाइं पण्णास जि दिट्ठइं ।	
जिणवरमग्गि ⁵ णिवेसियसीसहं	एक्कु सहासु महावाइसहं ।	
मंगिणिपमुहहं हयमइमइयहं ⁶	पणचालीससहस ⁷ संजइयहं ।	
एक्कु लक्खु सावयहं समासिउ	तिउणउ सो सावइहि पयासिउ ।	15
अमर असंख संख खग मृग जाहि	असहरिद्धि वाण्णज्जइ कि तहि ।	

वत्ता—दोसहसइं पंचसयाहियइं महि विहरिवि संवच्छरहं ॥

पसुसुरणरखेयरविसहरहं धम्मू कहिवि मउलियकरहं ॥14॥

15

दुवई—णभि संसेयसिहरिसिहरोवरि दूस्सज्जियणियंगओ¹ ॥

अच्छिउ मासमेत्तु णिरु णिच्चलु पडिमाजोयसंगओ ॥छ॥

किरियाछिदणु झाणु रएप्पिणु	तिणिण वि अंगइं झ ति मुएप्पिणु ।	
थियउ अजोइदेहु आसंघिवि	पंचमंतकालंत ² लंघिवि ।	
रिसिहि सहासे ³ सहुं णिव्वाणहु	गउ परमप्पउ अच्चुयठाणहु ।	5
महिमंडलि रविकिरणहि तत्तइ	तहि वइसाहमासि संपत्तइ ।	
⁴ कसणचउइसिदिवसि समायइ	णिसिविरामि छुहु छुहु जि पहायइ ।	
णिक्कलु जायउ चंदफणिदहि	पुज्जिउ देवदेउ देविदहि ।	

धारी नियुक्त थे। केवल ज्ञान के धारी भी। विक्रियाधारक मुनिवरेन्द्र भी एक हजार पाँच सौ थे। मनःपर्ययज्ञानी साधु बारह सौ पचास थे। शिष्यों को जिनवर के मार्ग में निवेशित करने वाले एक हजार वादी मुनि थे। मंगिनी को प्रमुख मानकर मतिमद को नाश करने वाली पैंतालीस हजार आर्यिकाएँ थीं। संक्षेप में एक लाख श्रावक, और तीन लाख श्राविकाएँ प्रकाशित की गई हैं। अमर असंख्यात थे। तिर्यच (खग मृग) जहाँ संख्यात थे; वहाँ अरहंत की ऋद्धि का क्या वर्णन किया जा सकता है!

वत्ता—दो हजार पाँच सौ वर्षों तक धरती पर विहार कर, हाथ जोड़े हुए पशु सुर नर विद्याधरों और नागदेवों को धर्म कहकर—

(15)

अपने शरीर का दूर से परित्याग करने वाले नमि जिनेश सम्मेदशिखर पर एक माह तक प्रतिमा योग में एकदम निश्चल रहे। वहाँ क्रिया-छेदोपस्थापना ध्यान कर तीनों शरीरों का सहसा परित्याग कर, अयोगदेह योग का आश्रय लेकर स्थित हो गए। फिर पंचम कालांतर का अतिक्रमण कर एक हजार मुनियों के साथ, वह परमात्मा अच्युत स्थान निर्वाण चले गए। भूमि-मंडल के सूर्य की किरणों से संतप्त होने पर वैशाख माह के आने पर, कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन, रात्रि का अन्त होने पर प्रभात में वह निकलंक (निष्पाप) हो गए। चन्द्र, फणेन्द्र और देवेन्द्रों

4. P सीटुहुं । 4. AP जिणवयमग्गे । 6. AP गयमयमइयहं । 7. A पंचसट्ठिसहसइं संजइयहं । 8. AP मिग ।

(15) 1. P. णियंगओ । 2. AP पंचमत्त⁰ । 3. AP सहासहि । 4. A कसिण⁰ ।

पहयतूररवपूरिजं ⁵ पहयलु	मेयथोत्तमुं ⁶ लङ्घित कलभलु ।	
उब्भिय धय रयणइं विच्छिण्णइं ⁷	दीणाणाहहं दाणइं दिण्णइं ।	10
धरिय चारुचंदोवय चामर	णच्चिय धरणिरंगि विविहामर ।	
दरिसंतेहि ⁷ तेहिं तहिं णवरस	णवचालीसभावपसरियजस ।	
छत्तीस वि दिट्ठिउ पयउंतहिं	कर चउसट्ठि तेत्थु दरिसंतहिं ।	
णच्चिवि विविहणद्वरुवें वर	सिद्धखेत्तु पणवेप्पिणु सुरवर ।	
समउ सुराहिवेण गय णहयलि	अरुण वरुण वइसक्खण सुणिम्मलि ।	15

घत्ता—हरि सुरइं समासइ जंतु णहि णियचरिएं मुणिवच्छलिण ॥

उज्जोइउ भरहु जि णमिजिणिण पुप्फयंतकिरणुज्जलिण ॥15॥

16

दुवई—दुइ⁷ णिव्वाणगमणि णमिणाहहु सासयसिवणिवासहो ॥

अवखमि चरिउ चक्किजयसेणहु सयलजणाहिरामहो ॥छा॥

जंबूदीवि एत्थु सुमहंतइं

मेरुहु उत्तरेण गुणवंतइं ।

ने देवाधिदेव की पूजा की। आहत तूर्यों के शब्दों से आकाश आपूरित हो गया। गाये गये स्तोत्रों की ध्वनि का कल-कल शब्द होने लगा। ध्वज उड़ने लगे। रत्न बिखेर दिए गए। दीन अनाथों को दान दिया गया। सुन्दर चन्द्रमा के समान चामर धारण कर लिए गए। धरती के रंगमंच पर विविध देवों ने नृत्य किया। जिनका यश उनचास भावों तक प्रसरित है ऐसे नव रसों का प्रदर्शन करते हुए, छत्तीस दृष्टियों को प्रगट करते हुए, चौसठ हाथों का प्रदर्शन करते हुए, विविध नृत्य रूप से नृत्य कर सुरवर सिद्ध क्षेत्र को प्रणाम कर देववर देवेन्द्र के साथ आकाश मार्ग से चल दिए।

घत्ता—आकाश में जाते हुए हरि देवों से संक्षेप में कहता है कि मुनियों के लिए वत्सल भाव रखने वाले, अपने चरित से सूर्य और चन्द्रमा की किरणों के समान उज्ज्वल नमि जिनेश्वर ने इस भारतवर्ष को आलोकित किया।

(16)

शाश्वत शिव में निवास करने वाले नमिनाथ का निर्वाणगमन होने पर, समस्त जनों के लिए सुन्दर, चक्रवर्ती जयसेन का मैं चरित कहता हूँ। इस जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत के उत्तर में गुण-

5. AP ⁵पूरिय-णहयलु । 6. AP विक्खिण्णइं । 7. AP read in place of this line and the three following as follows :—

चवचंदणलवंगधिरइयसल
णाहहु पयपणामु विरयंतहिं
दिण्णउ उरयसघोलिरहारहिं
अप्पीभावजायतणुसट्ठिहिं

कुसुमणिवह णहणिवडिय सभसल ।
जयजयजय अरहंत भणंतहिं ।
चूडामणिसिहिं जलणकुमारहिं ।
वदिवि वेहभप्पु परमेट्ठिहिं ।
(A वदिवि वेह भव्वपरमेट्ठिहिं)

(16) 1. A दुप ।

अस्थि खेतु नामे अइरावउं	जणधणकणगोसंपयअइरावउं ² ।	
बहुमणोज्जु ³ सिरिउरु तहि पट्टणु	अमरणयरसोहादलवट्टणु ⁴ ।	5
तहि नामे भूवालु वसुंधर ⁵	अतुलपरवकमु पवरधणुद्धरु ।	
पउमावइ नामे तहु गेहिणि	रण्ण व रविहि ससिहि णं रोहिणि ।	
तहि विओयसोएं णिच्चिण्णउ	रज्जु सुविणयंधरि सुइ दिण्णउं ।	
मणहरि वणि धम्ममुणीसपासि	लइयउं तउ पावासवविणासि ।	
जिणकहिइ विहिइ संणासु करिवि	महसुवकसग्गि हुउ अमरु मरिवि ।	10
भासुरतणु पावियअवहिणाणु	सोलहसायरजीवियपमाणु ।	
अह वच्छाविसइ विलासठाणु	कोसंबीपरवरु सुहणिहाणु ।	
तहि विजउ राउ अखलियपयाणु	णियतेओहामियसरयभाणु ।	
पिय तासु पंहकरि सुहणिवास	सूहवगुणपूरियदसदिसास ।	
वरकणयवण्ण विच्छिण्णकाय	णं सग्गाहु अच्छर ⁶ का वि आय ।	15
घत्ता—सग्गाउ चवेप्पिणु ⁷ सो अमरु ताहि गब्भि अवइण्णउ ॥		
परिओसिउ सयलु वि बंधुयणु सत्तुवग्गु अइण्णउ ⁸ ॥16॥		

17

दुवई—सोहणदिणि सुरिक्खि णवमासहि पवरोयरविणिग्गओ ॥
पुणु जयसेणु णामु तहु विहियउं णियगइविजियदिग्गओ ॥छ॥

वान् महान् ऐरावत क्षेत्र है जो जन-धन-कण और गोसंपदा से अतिक्षय्य रमणीय है। वहाँ पण्डितों के लिए सुन्दर, श्रीपुर नाम का पट्टन है जो इन्द्रपुरी की शोभा का दलन करनेवाला है। उसमें भूपाल नाम का राजा अतुल पराक्रमी और प्रबल धनुष का धारण करने वाला था। उसकी पद्मावती नाम की गृहिणी थी। वैसे ही, जैसे रवि की रण्णा और चन्द्रमा की रोहिणी। उसके वियोग शोक से विरक्त होकर, उसने अपने पुत्र विनयंधर को राज्य दे दिया। मनोहर वन में धर्ममुनीश्वर के पास, पापाश्रव का नाश करनेवाला तप ग्रहण कर लिया। जिनेन्द्र द्वारा कथित विधि से संन्यास ग्रहण कर, वह भरकर महाशुक्र स्वर्ग में अत्यन्त भास्वर-शरीर देव हुआ। अवधि-ज्ञान को प्राप्त किया है जिसने ऐसे उसकी सोलह सागर प्रमाण आयु थी। इसके बाद वत्सावती देश में विलास का स्थान तथा सुख का निधान कौशाम्बीपुर था। उसमें अस्खलित प्रमाण राजा विजय था जिसने अपने तेज से शरद्-सूर्य को तिरस्कृत कर दिया था। उसकी प्रिया प्रभंकरी थी जो सुख की घर और अपने सुभगगुणों से दसों दिशामुखों को पूरित करनेवाली थी। श्रेष्ठ स्वर्ण रंगवाली कान्तशरीर वह ऐसी लगती थी मानो स्वर्ग से कोई अप्सरा आई हो।

घत्ता—वह देव स्वर्ग से चलकर, उसके गर्भ में अवतीर्ण हुआ। समस्त बन्धु गण संतुष्ट हुआ, शत्रुगण खिन्नता को प्राप्त हुआ ॥16॥

एक शोभन दिन और सुन्दर नक्षत्र में तब माह में वह प्रवर उदर से निकला। उसका जय

2. AP गोसंपयसारउं । 3. बहुमणोज्जु । 4. P 'णवर' । 5. A गरेसरु । 6. A अछर । 7. P चएप्पिणु । 8. AP आदण्णउ ।

णिच्छिद्यतिष्णिसहस्रवरिसाउसु ¹	सत्त्वपियारउ णं णवपाउसु ।	
वरइक्खाउवंसणहससहर	बंदिणजणविहंगसुरतरवरु ।	
कणययवण्णु करसट्ठि समुण्णउ ²	सयलकलाकलावसंपुण्णउ ।	5
रज्जिणिविट्ठहु चक्कुप्पण्णउं	रविबिबु व सेवइ अवइण्णउं ³ ।	
परिसाहिय छक्खंड वसुंधर	सेव कराविय सुर वि सुदुद्धर ।	
एक्कहिं दिणि सउहयलिं वसंतें	विज्जुवडणु ⁴ मयणाउ णियंतें ।	
कारणु तें वइरग्गहु पाविउ	सव्वु अणिच्चु मणेण परिभाविउ ।	
रज्जु पढमपुत्तहिं ण वि मण्णिउं	जिह् णिवेण तिह तें अवगण्णिउं ।	10
णिरवसेसु लहुसुयहु समप्पिवि	सत्तुमित्तु सममइ संकप्पिवि ।	
केवलिवरयत्तहु ⁵ णिवणेसरु	जाउ समीवि साहु परमेसरु ।	
संमेयइ कयसंणासुत्तमु	हुयउ जयंतदेउ ⁶ लयसत्तमु ⁷ ।	

घत्ता—संणासमरणि भरहेसरहु णरसुरवरहिं अणेयहिं ॥

पुज्जाविहाणु णिव्वत्तियउं पुप्फयंतसमतेयहिं⁸ ॥17॥

15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमणिए

महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे⁹ णमितित्थयर¹⁰ जयसेणचक्कहर-¹¹

कहंतंरं णाम असीतिमो परिच्छेओ समत्तो ॥80॥

(17)

सेन नाम रखा गया । वह अपनी गति से दिग्गज को जातने वाला था । उसकी निश्चित तीन हजार वर्ष की आयु थी । नवपावस के समान वह सबका प्यारा था । वह श्रेष्ठ इक्ष्वाकुवंश के आकाश का चन्द्रमा था । बन्दीजन रूपी विहंगों के लिए कल्पवृक्ष था । उसका स्वर्ण वर्ण शरीर साठ हाथ ऊँचा था । वह समस्त कला कलाप से पूर्ण था । राज्य में बैठे हुए उसे चक्ररत्न उत्पन्न हुआ, मानो सूर्य बिम्ब ही अवतीर्ण होकर उसकी सेवा कर रहा था । उसने छह खंड धरती सिद्ध की । दुर्धर देवों से उसने सेवा करवाई । एक दिन सौधतल पर बैठे हुए उसने आकाश से विजली को गिरते हुए देखा । इस कारण से उसे वैराग्य उत्पन्न हो गया । उसने मन में सब कुछ अनिरय समझा । प्रथम पुत्र ने भी राज्य को नहीं माना, जिस प्रकार पिता ने, उस प्रकार पुत्र ने, उसकी अवहेलना की । अपने छोटे पुत्र को समस्त राज्य देकर, शत्रुमित्र में समबुद्धि कर, वह नृपसूर्य केवली वरदत्त के पास जाकर, साधु हो गया । सम्मेदशिखर पर उत्तम संन्यास ग्रहण कर वह वैजयन्त अहमेन्द्र हुआ ।

घत्ता—उस भरतेश्वर के संन्यास-मरण पर सूर्य-चन्द्रमा के समान तेज वाले अनेक नर-पतियों और देव-देवेन्द्रों के द्वारा उसका पूजा-विधान किया गया ॥17॥

श्रेष्ठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा

विरचित एवं महाभक्त्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का नमि तीर्थंकर,

चक्रवर्ती जयसेन-कन्यान्तर नाम अस्सीवीं परिच्छेद समाप्त हुआ ।

(17) 1. A वरिससहसाउसु । 2. A समुग्गउ । 3. AP उवइण्णउं । 4. AP विज्जुपडणु । 5. AP वरइत्तहु । 6. AP जयंति देउ । 7. A सयलुत्तमु । 8. AP पुप्फदत्तं । 9. AP णमिणाहुणिब्बाणमणं । 10. A omits जयसेणचक्कहरकहंतंरं । 11. P^o चक्कवट्ठि ।

NOTES

[The references in these notes are to Samdhis in Roman figures and kaṣavakas and lines in Arabic figures. T stands for Tippiṇa of Prabhacandra]

LXVIII

2. 13 पयवई आयई काणहु विषई, the sings of (coming) death or fall from heaven became manifest.

9. 3b पणियधुनंधनसंहिष, (अनंततप) or teaching of अनंततप which kept off or made ineffective the systems of heretic schools.

LXIX

1. 2 हरिहलहरगुणपोश, जं आयडं रामायण. The रामायण is the glorification of the virtues or qualities of हरि (वासुदेव) and हलहर (वसुदेव). 4a गिज्वाहमि भरहम्मलियडं, I (Poet) want to carry out the wishes of भरत, my patron. 6a सामगि न एक वि बरिष महु, I possess no material or facilities for undertaking the task of composing a रामायण. 6b किर कवण लोह विरकहहि महु, how can I compete with older poets? 7a कहराउ सयंभु, the great poet स्वयंभु who wrote on the theme of रामायण had the help of a thousand friends. 8a चउमुहु, the great poet चतुर्मुख स्वयंभु, as his name implies, had four mouths. 9a महु एकु स पि मुहु बरियडं, the poet पुष्पदन्त says that he has only one mouth as against four of चतुर्मुख, and that even this mouth is broken (खण्डित). Elsewhere पुष्पदन्त calls himself to be खण्ड or खण्डकवि, and mentions that his face or mouth was बह. 13 मुकइयसियमगि, on the path, brightened by great poets like स्वयंभु and चतुर्मुख; or on the path, i.e., सेतु, built or manifested by the good monkey, i.e. हनुमान्.

3. 1-10 These lines record some strange notions or superstitious beliefs about persons figuring in the रामायण. King ज्ञेनिक asks गौतम इन्द्रमुनि to explain to him the truth about them. They are : (1) रावण (दशमुख) has ten mouths or faces; (2) his son इन्द्रजित् was older in age than his father, or in other words, इन्द्रजित्, though a son of रावण, was born before him; (3) रावण was a demon and not a human being; (4) he had twenty eyes and twenty hands and that he worshipped god शिव with his heads; (5) रावण was killed by the arrows of राम; (6) the arms of श्रीराम, i.e. लक्ष्मण, were long and unbending (धिर); (7) सुग्रीव and others were monkeys and not human beings; (8) विभीषण is still living or is a चिरजीविन्; (9) कुम्भकर्ण sleeps for six months and feels satiated only by eating one thousand buffalos. Those that are conversant with the Hindu version of the रामायण will see that except No. 2, all other beliefs have some sort of support in the various of Hindu रामायण. About No. 2, I have not come across any support for it. But before we proceed further we have to note a basic difference in the conception of personalities of राम

and लक्ष्मण with the Hindus and the Jainas. राम, according to Hindu version and the Jain version is the elder of the two sons, राम and लक्ष्मण, of दशरथ; but राम who is the eighth वलदेव of the Jainas, has white complexion as against the dark complexion according to Hindus. On the other hand, लक्ष्मण who is the eighth वासुदेव of the Jainas, has dark complexion as against white complexion according to Hindus. Besides लक्ष्मण, being a वासुदेव with the Jainas, kills रावण who is a प्रतिवासुदेव with them. Other differences in the two versions will be noted as we proceed. 11a—b All Jain versions known to us say, as here, that व्यास and वात्सीकि are responsible for creating wrong notions about the personalities of रामायण. It is clear from this statement that Jain poets, one and all, who tried their hands on the story of रामायण, have been acquainted with the versions of व्यास and वात्सीकि, and think that they gave an altogether new interpretation of the lives of राम and लक्ष्मण.

4. 2—13 These lines mention the तृतीयभव of राम and लक्ष्मण. In the city of रत्नपुर in the मलयदेश, there was a king named प्रजापति. His queen, कान्ता by name, gave birth to a son who was called चन्द्रचूष (who is destined to be लक्ष्मण subsequently). विजय, the son of the king's minister, was a friend of चन्द्रचूष.

5. 5b कलहस्तं न चारुकरिणीह, like a young elephant (कलह, कलम) born of a beautiful she-elephant. A marchant named गोसम had a son, श्रीवत्त by name, by his wife वैश्रवणा. This श्रीवत्त was married to कुबेरवत्ता, daughter of कुबेर. 10b ती सणिहा का कुबेरवत्ताह what lady (ती, स्त्री) is comparable (सणिहा, सनिहा) to कुबेरवत्ता in beauty? चन्द्रचूष carried off this कुबेरवत्ता by force.

8. 4a सिमु चरति गहिर, the two boys, चन्द्रचूष and विजय said in deep voice, i.e., full of repentance. These two were destined to be लक्ष्मण and राम in their third subsequent birth.

9. 9a सदरुते, rashly, in haste.

10. 4b बालरिति, the young monks चन्द्रचूष and विजय. Of these चन्द्रचूष formed a निवास on seeing सुप्रभबलदेव and पुष्पोत्तम वासुदेव to enjoy prowess similar to theirs. 9—10 विजय was born in the सनत्कुमार heaven and was called सुवर्णचूष, and चन्द्रचूष was born in the कमलप्रभ विमान and was named मणिचूष.

11. 11 कुबलवर्धु वि णाहु णउ दोसायर आयउ, although king दशरथ (णाहु) was a friend (वन्धु) to the whole earth, he was not a seat or source (आयर, आकर) of faults (दोस, दोष) like the moon who is a friend of night lotuses (कुबलव) and is the maker of night (दोषा).

12. Note that राम (in former births विजय and सुवर्णचूष) is the son of king दशरथ of वागणसी (and not of अयोध्या) by his queen सुबला (and not सीतलया) and that the day of his birth is फाल्गुनकृष्णप्रयोदशी, मघा नक्षत्र (and not वैशाखकृष्ण नवमी); and that लक्ष्मण (in former birth चन्द्रचूष and मणिचूष) is the son of कैकेयी (and not of सुमित्रा) and is born on माघ शुक्ल प्रतिपद्, विशाखातिलक. It is only subsequently that king दशरथ went over to अयोध्या as mentioned in 14. 6b below.

16. 1a अं ऊजिवि, सगद्दु सयर गउ, king सगर went to heaven by performing a sacrifice. According to Jain version of the story of सगर, there is no mention of this sacrifice. 5b सिमु i.e. राम.

20. 10 विमन्, i.e., मधुविमल, the son of तृणपिपल and प्रतिपिपेकी. In 22. 3b he is called विमदिदु.

28. 10a गारुड अथ जव तिवरिस चवइ, नारद says that गज means the जव (गव) corn three years old. This is the famous explanation of गज (goat) according to Jainas.

33. 8—9 These lines mention गोस्पर्श, पिप्पलस्पर्श etc., as meritorious acts according to superstitious beliefs; but the poet says that if they secure merit, a bull who touches the body of the cow and the crow that sits on the पिप्पल tree would be gods.

LXX

1. 11 a—b ए अहम्, these two sons of yours are the eighth वलदेव and वासुदेव, as I heard in the पुराण and will occupy a place among the सलाकापुरुषs.

2. This कहवक and the two following give the history of the past life of रावण. There was in the city of मागपुर a king called नरदेव. He renounced the world and practised penance. On seeing a विद्याधर he formed a निशान that he should have the fortune similar to that विद्याधर. He was then born as a god in the सौधर्मे heaven. King सहस्रधीव of the city of विद्याधरs, got somehow displeased with his relatives, quarrelled with them and shifted to त्रिकूटगिरि. There he built the city of लंका. After him came वलधीव and पञ्चाक्षधीव. His son was पुलस्ति whose wife मेघलक्ष्मी gave birth to दशधीव. He married मन्दोदरी, the daughter of मय.

6. 7a—b The line means that मणिवती got disturbed in her meditation on the श्रीवासरमन्त्र, and thought that दशधीव, though a विद्याधर, had characteristics (विष, विज्ञ) of a demon. 8a—b मणिवती formed a निशान that he should be her father in her next birth, carry her off in the forest and die on her account. This मणिवती becomes सीता in her next birth.

8. 1b ते होंते होसइ मयर घूय, if दशधीव is alive, you (मन्दोदरी) will have another daughter. मारीच asked मन्दोदरी to abandon सीता as she was destined to bring calamity on the family.

9. 11 रामणरामहं पाई कलि, a source of quarrel between रावण and राम.

12. 3a असुरणयक, i.e., मिमिला, the city of राम's father-in-law.

13. 9a मयराउ सत कण्ठाव, Over and above सीता, राम was married to seven other girls. 10a लक्ष्मण was married to sixteen girls. Note that राम in the Jain mythology has eight wives and not one.

16. 6b जाणेवा (जातव्याः). For this form see हेमचन्द्र iv. 438.

LXXI

1. 1 कहि तं बंछणु एम भणंतु जि संवरइ, नारद wanders over the earth finding out places where there is, or has a chance of, a quarrel. This characteristic of नारद is well-known to Hindu Mythology. Here he is approaching रावण to start the quarrel.

2. 6b पर पइ जिनिवि एक्कु जसु ईहइ, but one, i.e., राम, desires to obtain fame by conquering you.

5. 6a सेलसिहरसंभासजचंडहि, with my arms, terrific in shaking the mountain peaks. This is a reference to the belief that रावण shook the कैलास mountain with his arms.

6—10. These कवचकs refer to the description of the characteristics of ladies as mentioned in कामसूत्र of वात्स्यायन.

11. 7a चंदनहि (चन्दनकी), otherwise known as सुपेणवा.

15. 2a बल्लु परिक्रम्य गिर्यतणुगंधे, a lady compares the scent of बकुल flower to see if it is similar to the scent of her body. 11a संपहि एह वि बोहलणसीली, now in this spring, this (cuckoo) also has become talkative.

18. 2a कंचुह होएप्पिण्, assuming the form of a कंचुकिन् or rather कञ्चुकिनी an old lady.

20. 1a विह्वल्लणि पुण् सिरु मुंहेप्पउं. It appears that Jainism recommends the shaving of the head by widows.

LXXII

1. 1 मुक्कवेसजइसंजम्, abandoning the restraint which a householder (वैश्याह, वेपथी, पृथ्वी) should practise, namely स्वदारसंतोष. रावण now starts in his पुष्पकविमान to carry off सीता against the rules of a Jain householder, for सीता is not his wife. He is not still aware of the fact that सीता is his own daughter. 19 विट्ठळ वेत्तु etc. रावण saw there the forest and also one more thing, viz., the bloom of youth of सीता. The next कवचक compares these two in similar terms.

4. A fine description of the movements of an antilop.

5. 5a कसणवाससोहिमणियंभो, who wore a blue or dark garment. कसवेस is called नीलाम्बर in Hindu as well as in Jain Mythology.

8. 11-12 These lines mean : If I (रावण) touch this lady who is now helpless but chaste, the lore which enables me to move through the air (सम्भारत्वारिणी विद्या) will go away from me. रावण was unwilling to dally with the unwilling सीता, as in that case he would lose all the prowess he had.

12. 4-6 These lines mention that रावण became an अर्थवक्त्रिन् about the time of the arrival of सीता at वंका.

LXXIII

1. 3 एतहि etc. Three things occurred simultaneously, viz., राम followed the deer in the forest, सीता was carried off, and the attendants of सीता were filled with grief on her account.

2. 3b—6b It appears that the Jain society recommends the wearing of red-coloured saris for widows, breaking of bracelets, and not wearing ornaments like a necklace.

5. 9a According to the Jain version, दशरथ is still living when सीता was carried off by रावण. He saw a dream just at that moment that रोहिणी, the consort of the moon, was carried off by राहु, which dream indicated that a similar calamity had befallen राम.

6. 11a जणवृक्षेण, by लक्ष्मण.
7. 4a वेणिज्ज वय, i. e., सुग्रीव and हनुमत् who were विद्याधर and not monkeys.
8. 6b हनुमत् is in Jain Mythology the 20th कामदेव and hence he is mentioned as मयस्केत (मकरकेतु) and by its synonyms. Compare 25. 9b below.
10. 3a सेस लेवि, having taken the सेवा, i. e., flowers etc, offered to the deity. When a devotee visits a temple, he takes home with him some portion of the निर्वाह्य or ashes or some article dedicated to the deity.
15. 2 पावणि, i. e., हनुमान्. 12 सुवर्णभिगारवट्ट खण्ड दिण्डि, broken earthen plate is placed as a cover to close the mouth of a golden vessel. भिगार is भंगार, known as कारी in Marathi.
22. 12a ओलम्बिय पयजुसल्लणेण, मन्वोदरी recognised सीता as her daughter by signs or marks on her feet.
24. 13b दाशरायाह, हनुमत् who was a विद्याधर, assumed the form of a monkey and stood before सीता. This explains, according to Jain Mythology, the reason for the belief that हनुमत् was a monkey.
26. 8b गृहं बहिषाजवयाहं वेमि, I shall mention certain very confidential happenings between you and राम so that you will recognise me to have come from him. This परिज्ञान is supplied in the following lines of this कवच and a few lines of the next कवच.
28. 10a-b णियकुसु वि etc. When fire burns its own race, i. e. trees or wood from which it is born, how can it forgive its enemy, i. e., water? Water is heated by fire on this account.
29. 13b णं बहमुहरमणह् कोसपाणु, as if सीता swore that she would never dally with रावण. कोसपाणु is a शपथ or विव्ध, ordeal, which one solemnly undertakes. Compare पापासप्तमसी, 448, संज्ञासप्तमं जलपूरिजं जलि विहृष्टिक्कवाममरं, गोरीम कोसपाणुज्जमं व पगहाहियं णमह.

LXXIV

4. 16 जोत्तिउ दूयभरि पुणु सी जिज घवचु, हनुमत् was again asked to go to लंका as a दूत, and the poet humourously compares him to a bull (घवल) that is yoked to a cart a second time. According to Hindu Mythology भैरव was the दूत of राम.
6. 4b तिणिज्ज वि एवउ, i. e., श्री, सीता and वसुंधरा (पृथ्वी) as mentioned in 5. 11 above, and 13. 9b below.
8. 15 बलहयउच्छुवणु, God of love bears a low made of sugar-cane.
15. 3b रसउ हयगीउ सवंपहहि, a reference to मयवर्षीय the first प्रतिवासुदेव who made love to स्वयंभारा and was killed by विष्णु the first वासुदेव of the Jain Mythology.
16. 7a नील, one of the friends of सुग्रीव; b कुम्भ, another friend of सुग्रीव. 9 and 10 mention कुन्द and नल who are allies of सुग्रीव.

LXXV

1. 8b गिक्तुं कृमु, names of रावण's followers.
2. 9b मनु सप्तमं जगद्दिश एव ताव, Let first बालि (जगद्दिश) come with me to लंका. 10b करिवर महामेहश्च देव, Let him give me the excellent elephant called महामेघ.
3. 7b अणउत्तु वि, even though it is not expressly said.
4. 1b एकु जि सिहि अण्णु जि यामदेव, there is already one calamity, viz., fire, and to add to it there comes the gust of wind. 12 मरु कुव्व, when I am angry.
6. 10b किलिकिलिपुरि, the lord of the किलिकिलिपुर. i. e., बालि.
9. 2b एवहु, कुरण्ण, such valour or activity.

LXXVI

2. 6b मज्झु कल्लि कुक्कड, will reach this place (लंका) today or tomorrow. 8a दिणविंसु, रावण was born in the विंशतिर race founded by विंशति (विंशति) who was the brother of नमि.
3. 5a वज्जावत्तलरासणहत्थहु, The name of the bow of राम is वज्जावर्त. 9a पंचयण्णु, the conch पाञ्चजन्य of वासुदेव, here of लक्ष्मण. 14 कुंमयण्णु मनु बीयड, रावण says to विभीषण that if विभीषण leaves him, he (रावण) will have कुम्भकर्ण to help him.
4. 5a तणुसीमड, by a blade of grass one cleanses one's teeth. The form तणु for तृण is irregular.
6. 10a बाणरविज्जड वणर होइवि, All विंशतिर assumed the form of monkeys and then visited लंका.
9. 9a गमणें जासु होइ काली गह, fire, the movements of which leave a black passage or smoke. अग्नि is often called धूमध्वज.

LXXVII

2. 8b चंदहामु, the sword of रावण. 14 अम्हें बलवतं हृदिबलहं तसहु, we are afraid of हरि (लक्ष्मण) and बल (राम) who are very strong.
3. 13 बिहुरि वि धीर, रावण was full of courage (धीर) even in adversity (बिहुरि, बिहुरे सति, संकटकाले सति).
6. 1 मृण्णुत्तुरिणिबणे कि हुओ गिधोसो, Is there a noise of falling of worlds standing one upon the other? There are several मृण्ड which stand one upon the other and thus form an उत्तरि, उत्तरं, as it is called in Marathi. 6b बह्वनु, god of death (यम).
9. 5-17 A fine description of the dust raised by the fight.
13. 5a असिणिहससिहिजालव, flames of fire produced from the clashing of swords. 13b सीसकें सहं सिध, head along with the crown or cap (सिरस्त्राण).

LXXVIII

1. 2 कण्हु, कृष्ण, i. e., लक्ष्मण who has a dark complexion. 15a-b विजयपर्वन् and अंजमगिरि are the names of elephants of लक्ष्मण and राम. See also 3. 4b and 3. 11a below.

5. 11a-b एहं समुद्र etc. A warrior says to another warrior, "You have given your head (as capital) in paying the debt of your master, and are using your blood as interest on the capital."

8. 3a धरियलोह तेण जि ते गुणच्य, the arrows are धरियलोह, i. e., have an iron edge or have greed (लोह, लोभ) and therefore they are गुणच्य, discharged by bow-string (गुण) or are destitute of virtues (गुण).

9. 21 ओत्परित, arrived on the scene.

10. 14 बोहिलउ पावेसमि, I shall keep my word.

11. 3b सझाह, jarring words, words mixed with salt as it were. Compare अले झारनिझेपणम्.

13. 8b बीर पडम, राम who had a white complexion similar to that of a white lotus is called पडम (पद्म) and पुराण's describing his story are called पद्मचरित, पद्मपुराण etc.

14. 8a-b ललसरजशि etc. The line records two popular sayings that in a small lake a crab is called a जलसर although the term means मकर, while in a place where there are no trees, एरण्ड becomes a big tree. Compare: निरस्तपादये देशे एरण्डोऽपि दृमायते.

15. 1 बेणि वि पीयबास, Both रावण and लक्ष्मण wore yellow garments. In Hindu mythology कृष्ण is called पीताम्बर.

16. 6a बीसपाणि, i. e., रावण, although रावण according to Jain Mythology had only two arms, still he is called बीसपाणि owing to the influence of Hindu Mythology.

18. 1 महमहणमहासुहृदे, on the great warrior who killed मयू. Note there are two प्रतिवासुदेव's, viz., मयू and मयूसुदन or महसुदन.

20. 14 भवमासविनिहयहं... भविष्यवक्त्ररहं, writings about the future of warriors which were written on their forehead. 15 जाइवि (मायित्वा), having obtained by begging.

21. 7b संकुलियत भंजह राहवि, cracking of fingers on some one indicates disrespect for him. भोटें मोडणें is found in modern Marathi. 13a कण्णावर इहु जाहु महारज, this husband of mine has married me when I was quite young; so our love is unbroken, Compare : यः कोमारहः स एक हि वरः.

23. 4a अज्जु सरासइ सत्पु ण सुयरव, today the goddess of learning (सरस्वती) will not remember or recite the शास्त्र, owing to the death of रावण. रावण is known for his learning. In Hindu Mythology he is the son of a famous sage पुलस्त्य who is a Brahmin.

24. 3a गारज गारज गारज नासणविहि, It was not गारज who arrived (and induced your mind to carry off सीता), but it was your destiny bringing death upon you that had come. Note that रावण made up his mind to carry off सीता on the mischievous advice of नारद. 12a कुल्लिमु वि घुणेंहि विच्छिणवज, even hard adamant (वज्र) was bored by insects. Death of रावण from the hand of लक्ष्मण is an unexpected as the boring of वज्र by insects.

25. 1 इहमुहु तुहु, राम says to विभीषण that he should now take the place of वामन (रावण). 6b-12b These lines describe the removal of the dead body of रावण, on a palanquin decked by columns of plantain trees, with umbrella held over it.

29. 3b मेलिवि पडम् कासु सुयणसण्ण, who but राम is so noble ?

LXXIX

2. 11b सङ्गवशासि, a sword called सौन्दर्य because it was a gift from सौन्दर्यस. Of the seven gems which a वासुदेव as अर्धवर्णिन् possesses, sword is one and it is called सौन्दर्य as the गदा is called कीमोदकी. According to Jain Mythology वासुदेव and बलदेव have seven and four marks respectively. They are given in the following verses :

असिः शङ्खो धनुश्चक्रं शक्तिर्दण्डो गदाभयत् ।
रत्नानि सप्त चक्रेण रक्षितानि मरुद्गणैः ॥
रत्नमासा हृत्तं भास्वदामस्य भुजलं गदा ।
महारत्नानि चत्वारि बभूवुर्भविमिदृते ॥

गुणभद्र—उत्तरपुराण-62, 148-149.

3. 8a तद्दि ह्येतत् गत, he went from that place. Note the use of ह्येतत् with तद्दि rather than तद्दि. Compare हेमचन्द्र, iv. 355.

6. 10b को नारद को सूरविभाषि, who will, in that case, be born in hell and who will be born in heaven ? 12 अद्द विणि विणि जि नत्त etc. This is the famous doctrine of कणिकत्त of the Buddhists. सङ्गुद्धे, by self-enlightened Buddha.

9. 6-9 These lines tell us that राम had eight sons विजयराम and others, and लक्ष्मण had several, सुशीलान्न and others, from his wife सुषिषी.

11. 4a लक्ष्मीहृदि, in the body of लक्ष्मीधर, i. e., लक्ष्मण.

LXXX

9. A fire description of the Rainy Season.

16. 7b रण्य व रविहि, the name of the sun is रण्य or रा. T says रनादेवी.



अंगरेजी टिप्पणियों का हिन्दी अनुवाद

अक्षरवर्षी सन्धि

(2) 13 आने वाली मृत्यु की सूचना अथवा स्वर्ग से व्युत्पन्न होना ।

(9) 3b अनन्ततीर्थ या अनन्तनाथ का शासन (आम्नाय) जिसने अन्य आम्नायों को निरस्त या प्रभावहीन कर दिया ।

अक्षरवर्षी सन्धि

(1) 2 वासुदेव और बलराम के गुणों की स्तुति के लिए जो रामायण काव्य हुआ । रामायण वासुदेव (लक्ष्मण) और हनुमन्त (राम) के गुणों और विशेषताओं का गौरवीकरण है । 4a भरत के द्वारा आकषित में निर्वाह करूँगा । मैं (कवि) अपने आश्रयदाता भरत की इच्छाओं को पूरा करना चाहता हूँ । 6a मेरे पास कुछ भी सामग्री नहीं । मेरे पास साधन और सुविधाएँ नहीं हैं कि मैं वह कार्य पूरा कर सकूँ । 7a कविराज स्वयम्भू । (महान् कवि स्वयम्भू) जिन्होंने हजारों मित्रों की सहायता से राम के इतिवृत्त पर काव्य की रचना की । 8a चतुर्मुख, महाकवि चतुर्मुख जैसा कि स्वयम्भू कवि का नाम बतलाया है । चतुर्मुख यानी चार मुखवाला । 9a मेरा एक मुँह है वह भी खंडित है । कवि पुष्पवंत कहता है कि उसका एक ही मुख है जब कि चतुर्मुख के चार मुख थे । इतने पर भी मेरा यह मुख खंडित है । एक अन्य जगह पुष्पवंत ने स्वयं की खंडकेवि कहा है और सिखा है कि उनका मुख बक्र (टेढ़ा) था । 13 सुकवियों द्वारा प्रकाशित मार्ग पर, उस मार्ग पर जिसे चतुर्मुख स्वयम्भू जैसे कवियों ने आलोकित किया है । मार्ग यानी सेतु जो बानर यानी हनुमान् द्वारा निर्मित है ।

(3) 3-10 ये पंक्तियाँ रामायण में आए पात्रों के बारे में विचित्र विश्वासों या धारणाओं का वर्णन करती हैं । राजा श्रेणिक गोतम इन्द्रभूति से पूछता है कि वह इनके बारे में सच बात बताए । ये हैं— (1) रावण (वणमुख) के दस मुँह थे । (2) पुत्र इन्द्रजित् उग्र में अपने पिता से बड़ा था । दूसरे शब्दों में इन्द्रजित् यद्यपि रावण का पुत्र था, परन्तु उससे पहले पैदा हुआ था । (3) रावण मनुष्य नहीं, राक्षस था । (4) उसकी बीस आँखें और बीस हाथ थे, और यह कि वह शिव की उपासना अपने सिरों से करता था । (5) रावण राम के तीरों से मारा गया । (6) श्रीरमण (लक्ष्मण) के हाथ लंबे और स्थिर थे, झुकते नहीं थे । (7) सुग्रीव और दूसरे बन्दर थे, वे मनुष्य नहीं थे । (8) विभीषण अब भी रह रहा है, या वह चिरंजीवी है । (9) कुम्भकर्ण छह माह सोता है और एक हजार भैंसे खाकर उसकी भूख शान्त होती है ।

जो हिन्दू रामायण से परिचित हैं वे पाएँगे कि क्रमांक 2 को छोड़कर, हिन्दू रामायण का दूसरी धारणाओं में काफी कुछ समर्थन है । लेकिन क्रमांक 2 में इस प्रकार का कोई समर्थन मेरे देखने में नहीं

आया। परन्तु आगे बढ़ने के पहले यह नोट कर लेना जरूरी है कि जैनों और हिन्दुओं की रामायणों में राम और लक्ष्मण के चरित्रों के बारे में मूलभूत अन्तर यह है कि दशरथ के दो बड़े बेटे थे राम और लक्ष्मण। परन्तु राम का, जो जैनों के आठवें बलभद्र हैं, रंग गौरा था जबकि हिन्दू परम्परा में वे श्याम वर्ण के थे। इसी प्रकार हिन्दू परम्परा के गौर वर्ण लक्ष्मण का, जो जैनों के आठवें वासुदेव हैं, जैन परम्परा के अनुसार रंग श्याम था। इसके सिवा, जैनों के अनुसार वासुदेव होने के कारण लक्ष्मण ने प्रतिवासुदेव रावण का वध किया, राम ने नहीं। रामायण के दोनों वर्णनों की भिन्नता भासूस होती जाएगी जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते जाएंगे। 11a-b हमें जात सभी जैन वर्णन बताते हैं कि व्यास और वाल्मीकि ही, रामायण के पात्रों के बारे में गलत धारणाएँ फैलाने के लिए उत्तरदायी हैं। इस कथन से यह स्पष्ट है कि सभी जैन कवि, जिन्होंने रामायण के कथानक पर काव्य की रचना का प्रयास किया है, रामायण और व्यास के कथानकों से परिचित हैं, और वे सोचते हैं कि उन्होंने राम और लक्ष्मण के जीवन को एक दम नया रूप प्रदान किया है।

(4) 2-13 ये पंक्तियाँ राम और लक्ष्मण के तीसरे भव का वर्णन करती हैं। मलयदेश में रत्नपुर नगर है। उसमें प्रजापति नामक राजा था। उसकी रानी कांता ने एक पुत्र को जन्म दिया, उसका नाम चन्द्रचूल था (जो आगे चलकर लक्ष्मण के रूप में होने वाला है)। विजय, जो राजा के मंत्री का पुत्र है, चन्द्रचूल का मित्र था।

(5) 5b जैसे सुन्दर हथिनी से जन्मा हाथी का बच्चा, एक सुन्दर युवा हाथी। एक गौतम नामक व्यापारी उसकी परनी वैश्रवणा से श्रीदत्त नाम का पुत्र था, श्रीदत्त का विवाह कुबेरदत्ता से हुआ जो कुबेर की कन्या थी। 10b कुबेरदत्ता के समान कौन स्त्री थी? कुबेरदत्ता से कौन स्त्री तुलनीय थी सुन्दरता में? चन्द्रचूल ने बल से कुबेरदत्ता का अपहरण कर लिया।

(8) 4a दोनों बालकों (चन्द्रचूल और विजय) ने गंभीर ध्वनि में कहा—पश्चात्ताप के स्वर में। वे दोनों तीसरे जन्म में लक्ष्मण और राम होने वाले हैं।

(9) 9a तेजो है या जलवी में।

(10) 4b छोटे मुनि (चन्द्रचूल और विजय)। इनमें से चन्द्रचूल ने, सुप्रभ बलदेव और पुण्योत्तम वासुदेव का वैभव देखकर यह निदान किया : मैं भी उनके समान शक्ति को प्राप्त करूँ। 9-10 विजय सनत्कुमार स्वर्ग में उत्पन्न हुआ जहाँ उसका नाम सुवर्णचूल था। चन्द्रचूल कमलप्रभ विमान में उत्पन्न हुआ और उसका नाम मणिचूल हुआ।

(11) यद्यपि राजा दशरथ पूरी धरती के मित्र थे, लेकिन दोषों के आकर नहीं थे। चन्द्रमा के समान, जो कुमुदिनियों का मित्र होता है और रात्रि का जनक होता है।

(12) नोट कीजिए कि राम (पूर्व जन्म के विजय और स्वर्णचूल) वाराणसी के (अयोध्या के नहीं) राजा दशरथ के पुत्र हैं, जो सुबला रानी से (कौसल्या से नहीं), कालमुन कृष्ण त्रयोदशी, मघा नक्षत्र (शुक्ल नक्षत्र नहीं) में हुए और लक्ष्मण (पूर्वजन्म का चन्द्रचूल और मणिचूल) कैंकेयी का पुत्र है (सुमित्रा का नहीं) और माघ शुक्ल प्रतिपदा को विशाखा नक्षत्र में उसका जन्म हुआ। यह इसके अनन्तर ही हुआ कि राजा दशरथ अयोध्या गये जिसका कि 14 (6b) में वर्णन है।

(16) 1a राजा सगर यज्ञ करके स्वर्ग पहुँचते हैं। सगर की जो कहानी जैनों में प्रचलित है, उसमें यज्ञ का उल्लेख नहीं है। 5b सिसु अर्थात् राम।

(20) 10 पिगलु अर्थात् मधुपिगल—तृणपिगल और अतिथिदेवी का पुत्र।

(28) नारद अज का अर्थ तीन वर्ष का जो (यव)करते हैं। जैनों के अनुसार यह अज का प्रसिद्ध अर्थ है।

(33) 8-9 ये पंक्तियाँ गोस्पशी, पिप्पलस्पर्श आदि का वर्णन करती हैं, अन्धविश्वासों के अनुसार। परन्तु कवि का कहना है कि यदि ऐसे लोग पुण्य की योग्यता पाते हैं तो नैल जो गाय का स्पर्श करता है, और कौआ जो पीपल के पेड़ पर बैठता है, दोनों को देव होना चाहिए।

सत्तरवीं सन्धि

(1) 11a-b ये तुम्हारे दोनों पुत्र आठवें बलदेव और वासुदेव हैं। जैसा कि मैंने पुराणों में सुना है, ये शलाकापुरुषों में स्थान पाएँगे।

(2) यह कड़वक और इसके बाद के दो कड़वकों में रावण की पूर्व जन्मों की कथा कही गई है। नागपुर नगर में नरदेव नाम का राजा था। उसने संसार का त्याग कर तपस्या की। एक विद्याधर को देखकर उसने निदान किया कि उसका भाग्य भी उस विद्याधर के समान हो। वह सौधमें स्वर्ग में इन्द्र हुआ। विद्याधरों के नगर का राजा सहस्रग्रीव अपने संबंधियों से नाराज हो गया। वह सगड़ा करके, त्रिकूट पर्वत पर चला गया। वहाँ उसने लंका नगर का निर्माण किया। उसके बाद शलग्रीव आया, और तब पंचाशद्ग्रीव। उसका पुत्र पुलस्ति था, जिसकी पत्नी मेघलक्ष्मी ने दशग्रीव को जन्म दिया। उसने मंदोदरी से विवाह किया जो नय की कन्या थी।

(6) 7a-b इस पंक्ति का अर्थ है कि मणिवती विचलित हो गई जब वह बीजाक्षर मंत्र का ध्यान कर रही थी। उसने सोचा कि रावण यद्यपि विद्याधर है, राक्षस के चिह्न रखता है। 8a-b मणिवती ने यह निदान किया कि वह अगले जन्म में उसका पिता हो। वह उसे जंगल में ले जाए, और वह उसके कारण मृत्यु क प्राप्त हो। यही मणिवती अगले जन्म में सीता बनती है।

(8) 1b उसके होने पर दूसरी कन्या होगी। यदि रावण जीवित रहता है, तुम्हें (मन्दोदरी को) दूसरी कन्या होगी। मारीच ने सीता के परिस्थान की बात कही क्योंकि उसके कारण परिवार पर निश्चित रूप से संकट आएगा।

(9) 11 राम और रावण के बीच कलह का कारण।

(12) 3a राम के ससुर का नगर मिथिला।

(13) 9a राम ने सात दूसरी कन्याओं से विवाह किया, 10a लक्ष्मण ने सोलह दूसरी कन्याओं से विवाह किया। ध्यान दीजिए; जैन पौराणिक परंपरा में राम की एक नहीं, आठ पत्नियाँ थीं।

(16) 6b जाणेवा (जातव्या) इस रूप के लिए देखिए हेमचन्द्र iv. 438.

इकहत्तरवीं सन्धि

(1) नारद धरती पर परिभ्रमण करते हैं—यह जानने के लिए कि कहीं लड़ाई हो रही है या लड़ाई होने का अवसर है। नारद की यह विशेषता हिंदू पौराणिक परंपरा में ज्ञात है। यहाँ वह लड़ाई कराने के लिए रावण के पास पहुँच रहा है।

(2) 6 b परन्तु एक अर्थात् राम यश प्राप्त करना चाहते हैं आपको जीतकर।

(5) 6a अपनी भयंकर भुजाओं से, जो पर्वत-शिखरों को हिला सकती हैं। यह संदर्भ उस विश्वास से संबद्ध है कि रावण ने कैलाश पर्वत को हिला दिया था है अपनी भुजाओं से।

- (6-10) यह कड़वक वास्व्यायन कामसूत्र के अनुसार स्त्रियों की विशेषताओं का वर्णन करता है ।
 (11) 7a चन्द्रनखी या फिर शूर्पणखा ।
 (15) 2a एक स्त्री बहूज की गंध की तुलना करती है कि क्या वह उसकी देह की गंध के समान है । 11a इस वसंत में कोयल भी बातूनी हो गई है ।
 (18) 2a कंचुकी के रूप को धारण करते हुए । या फिर कंचुकिनी—एक वृद्धा ।
 (20) 1a इससे लगता है कि जैनधर्म की विधवाओं के सिरों के मुण्डन का अनुमोदन करता है ।

बृहत्तरवीं सन्धि

(1) 1 उन प्रतिबंधों का परिस्थान करते हुए, जिसका गृहस्थ को पालन करना चाहिए । जैसे स्वदारसंतोष । रावण अब सीता की पुष्पक विमान में ले जाता है । यह जैन गृहस्थ धर्म के प्रतिकूल है, क्योंकि सीता इसकी पत्नी नहीं है । उसे अभी तक इस तथ्य की जानकारी नहीं है कि सीता उसकी लड़की है । 1a रावण ने देखा कि यहाँ वन है, और भी एक चीज—सीता के यौवन का पुष्प । अगले कड़वक में इन दोनों की तुलना है ।

(4) हिरण की गति का एक सुन्दर चित्रण है ।

(5) 5a जो नीले या काले वस्त्र पहनते हों । बलदेव नीलाम्बर कहे जाते हैं, जैन और हिंदू—दोनों पुराणों में ।

(8) 11-12 इन पक्तियों का अर्थ है कि यदि मैं (रावण) इस स्त्री को छूता हूँ, जो असहाय है पर शीघ्र संपन्न है तो वह विद्या जो मुझे आकाशाल में घुमाती है, छोड़ देगी । सीता की इच्छा के विरुद्ध रावण कुछ नहीं करना चाहता था क्योंकि ऐसी स्थिति में विद्या उसे छोड़ देती ।

(12) 4-6 ये पक्तियाँ बताती हैं कि रावण अर्धचक्रवर्ती है ।

तिहत्तरवीं सन्धि

(1) 3 तीन चीजें एक साथ हुई—राम ने वन में मृग का पीछा किया, सीता का अपहरण हुआ, और सीता की रक्षा करने वालों को गम्भीर दुःख हुआ सीता के अपहरण के कारण ।

(2) 3b-6b ऐसा प्रतीत होता है कि जैन समाज अनुमोदन करता था कि विधवा स्त्री को साज साड़ी पहनना चाहिए, चूड़ियाँ फोड़ देना चाहिए और हार बगैरह नहीं पहनना चाहिए ।

(5) 9a जैन पुराणों के अनुसार, दशरथ जीवित हैं, जब रावण के द्वारा सीता का अपहरण किया जाता है । दशरथ ठीक उसी समय एक स्वप्न देखते हैं कि चन्द्र की प्रेमिका रोहिणी को राहू ले जा रहा है । इससे यह संकेत मिलता है कि राम पर भी इस प्रकार का संकट आना चाहिए ।

(6) जनार्दन अर्थात् लक्ष्मण के द्वारा ।

(7-8) 4a सुग्रीव और हनुमत् जो कि जैन विद्या के अनुसार विद्याधर थे, वानर नहीं । हनुमत् बीसवें कामदेव हैं । इसलिए उसका वर्णन मकरकेतु के रूप में है ।

(10) 3a फूल आदि लेकर प्रतिमा को अर्पित किए । जब भक्त मंदिर जाता है, तो वह उसका

थोड़ा भाग अपने साथ घर ले जाता है, निर्मात्य का भाग जो प्रतिमा को अर्पित किया जाता है।

(15) 2 जैसे स्वर्णभांड पर छप्पर का ढक्कन दिया जाए। भिगार भू'भार हारी के रूप में ज्ञात है।

(22) 12a मंदोदरी ने सीता को अपनी कन्या के रूप में पहचान लिया उसके पैरों के चिह्नों से।

(24) 13b हनुमत् ने, जो विद्याधर था, बानर का रूप धारण कर लिया और सीता के सामने खड़ा हो गया। यह इस बात को स्पष्ट करता है कि जैन पुराण विद्या के अनुसार, यही कारण है कि जिससे हनुमान् को बानर समझा गया।

(26) 8b मैं आपके और राम के बीच की गुप्त बातें बताऊँगा जिससे आपको विश्वास हो जाएगा कि मैं राम की तरफ से आया हूँ। बाद की पंक्तियों में आभोजन के कुछ चिह्न हैं, कुछ दूसरे कड़क की पंक्तियों में हैं।

(28) 10a-b अब भाग अपनी ही जाति को जला बेती है, वृक्ष और लकड़ी कि जिनसे उसका जन्म होता है, तब यह अपने शत्रुओं को कब अमा करेगी? यही कारण है कि आग जल को गरम करती है।

(29) 13b सीता प्रतिज्ञा करती है कि रावण के साथ समय नष्ट नहीं करेगी। कोशपान एक शपथ है, जिसे कोई गंभीरता से लेता है।

चतुस्रवीं सन्धि

(4) 16 हनुमान् से दूत बनकर फिर लंका जाने के लिए कहा गया। कवि व्यंग के साथ उसकी बल से तुलना करता है जिसे दुबारा गाड़ी में जोता गया हो। हिन्दू पुराण विद्या के अनुसार राम का दूत अंगद था।

(6) 4b अर्थात् श्री, सीता और वसुधरा (पृथ्वी)।

(8) 15 प्रेम के देवता कामदेव इक्षुबंध का धनुष रखते हैं।

(15) 3b अश्वघ्रीव का संदर्भ जो पहला वासुदेव है जिसने स्वयंप्रभा से प्रेम किया और जो प्रथम वासुदेव त्रिपुण्ड्र के द्वारा मारा गया।

(16) 7a नील सुग्रीव के मित्रों में से एक था। b सुग्रीव का एक अन्य मित्र कुमुद था। कुन्द और नल सुग्रीव के ही नाम हैं।

पञ्चहस्तवीं सन्धि

(1) 8b रावण के अनुयायियों के नाम।

(2) 9b पहले बालि को लंका खाने बीजिए। 10b वह मुझे महामेघ नाम का हाथी दे।

(3) 7b तथापि दबाव से नहीं कहा गया।

(4) 1b एक आपत्ति पहले से है यानी आग और इसे बढ़ाने के लिए हवा की सहायता रही है। 12 अब मैं कुछ होता हूँ।

(6) 10b किलकिलपुर का स्वामी यानी बालि।

(9) 2b शक्ति का इतना बड़ा विस्तार।

छिहत्तरवीं सन्धि

(2) 6b आजकल में यह लंका पहुँचेगा । रावण विद्याधर जाति में उत्पन्न हुआ था जो नमि के भाई विनमि को प्राप्त हुआ ।

(3) राम के धनुष का नाम वज्रावर्त था । 9a लक्ष्मण के के धनुष का नाम पांचजन्य था । 14 रावण विभीषण से कहता है कि यदि विभीषण उसे छोड़ देता है तो वह (रावण) कुम्भकर्ण की सहायता लेगा ।

(4) 5a तृण की सीक से जोई अपने दाँतों को साफ करता है । तृण के लिए तणु, तणु प्रयोग अनियमित है ।

(6) 10a सब विद्याधरों ने वानर का रूप बनाया और तब लंका की सीर की ।

(9) 9a अग्नि जिसकी गति काली धूँझ रेखा का विसर्जन करती है अर्थात् धूँझध्वज ।

सप्तहत्तरवीं सन्धि

(2) 8b चंदहासु—रावण की तलवार । 14 हम हरि (लक्ष्मण) और बस (राम) से डरते हैं । वे बहुत शक्तिशाली हैं ।

(3) 13 रावण संकटकाल में भी पूरा धैर्य बनाए रखता था ।

(6) 1 क्या यह एक के ऊपर एक गिर रहे भुवनों की आवाज है ? ऐसे कितने ही भुवन होते हैं जो एक के ऊपर एक आधारित हैं जिसे मराठी में उतरंड कहा जाता है । 6b वश्यसु—यम ।

(9) 5-17 युद्ध से उठी हुई धूलि का एक सुन्दर चित्रण ।

(13) 5a तलवारों के परस्पर घर्षण से निकलती हुई चिंगारियाँ । 13b शिरस्त्राण ।

अष्टहत्तरवीं सन्धि

(1) 2 कृष्ण अर्थात् लक्ष्मण जिनका रंग काला है । 15a-b विजयपर्वत और अंजनगिरि, लक्ष्मण और राम के हाथियों के नाम हैं ।

(5) 11a-b एक सैनिक दूसरे सैनिक से कहता है, तुमने अपने स्वामी का ऋण चुकाने में अपना सिर दे दिया है और अपना रक्त उसका व्याज चुकाने में दे रहे हो ।

(8) 3a तीर लोह या लोभ धारण करते हैं इसीलिए वे डोरी से व्युत अथवा गुणों से व्युत होते हैं ।

(9) 21 दृश्य पर उपस्थित हुआ ।

(10) 14 मैं अपने शब्दों पर कायम रहूँगा ।

(11) 3b कटु शब्द खार युक्त । तीखे शब्द ।

(13) 8b राम जिनका रंग गीरा है, सफेद पद्म के समान । इसलिए वे पद्म कहलाए । उनके चरित का वर्णन करने वाले पुराणचरित कहलाये पद्मचरित, पद्मपुराण आदि ।

(14) 8a-b यह पंक्ति दो कहावतों को अंकित करती है—झील में कर्कट भी जलचर कहलाता है यद्यपि इसका अर्थ मगर है । जहाँ वृक्ष नहीं होते वहाँ एरंड भी बड़ा पेड़ कहलाता है ।

(15) 1 रावण और लक्ष्मण दोनों के पीतवसन हैं। हिन्दू पुराणों में कृष्ण को पीताम्बर कहा गया है।

(16) 6a बीसपाणि अर्थात् रावण। यद्यपि जैन पुराणों के अनुसार रावण के वो हाथ हैं फिर भी उसे बीस हाथों वाला कहा जाता है। यह हिन्दू पुराणों का प्रभाव है।

(18) 1 उस वीर योद्धा पर जिसने मधु को मारा। नोट कीजिए, प्रतिष्ठासुदेव दो हैं—मधु और मधुसूदन।

(20) 14 योद्धाओं के भविष्य के बारे में लिखते हुए जो कि उनके मस्तिष्क पर लिखा हुआ था। 15 जाइवि—यह उसने माँगकर प्राप्त किया है।

(21) 7b अंगुलियों को तोड़ना किसी पर उसके प्रति अनादर को सूचित करता है। बोटें मोड़ें—यह प्रयोग आधुनिक मराठी में मिलता है। 13a मेरे इस पति ने मुझसे उस समय विवाह किया जब मैं बिलकुल छोटी कन्या थी। तुलना कीजिए—'यः कौमारहरः स एव हि वरः'।

(23) 4a आज सरस्वती, विद्या की देवी, शास्त्रों को याद नहीं करेगी या उनका वाचन नहीं करेगी, रावण की मृत्यु के कारण। हिन्दूपुराणों के अनुसार रावण पुलस्त्य का पुत्र था। पुलस्त्य ऋषि ब्राह्मण थे।

(24) 3a वह नारद नहीं था जो आ पहुँचा, वह तो दुर्देव था जो तुम्हारे ऊपर भीत लाया था। (नारद ने रावण को सीता की प्राप्ति के लिए भड़काया।) रावण ने नारद की कपटपूर्ण सलाह से ही सीता के अपहरण का निश्चय किया था। 12a धुन के द्वारा वज्र भी जीर्ण हो गया। लक्ष्मण के हाथों रावण की मौत उसी तरह असंभव लगती थी जिस प्रकार धुनों से वज्र का काटा जाना।

(25) 1 तुम्हें दशमुख का स्थान ग्रहण करना चाहिए। 6b-12b इन पंक्तियों में रावण की शव-यात्रा का वर्णन है।

(29) 3b राम के सिवा और कौन उदार है ?

उप्यासोर्वी संधि

(2) 11b तलवार का नाम सोनंदक है, क्योंकि वह सोनंदयक्ष का दान है। अर्द्धचक्री बासुदेव के सात रत्नों में से एक तलवार भी है जिसे सोनन्दक कहते हैं, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार गदा को कौमोदकी। जैन पुराणों में बासुदेव और बलदेव के क्रमशः सात और चार चिह्न होते हैं। गुणभद्र के 'उत्तरपुराण' (62/148-149) में उनका उल्लेख इस प्रकार है—

असिः शंखो धनुस्त्रक शक्तिर्बन्धो गदाभक्तः ।
रत्नानि सप्त चक्रेषु रक्षितानि भद्रवर्णः ॥
रत्नमालां हृतं नास्त्वद्वाचस्य मुशलं गदा ।
महारत्नानि क्षत्रवारि बभूवुर्भाविभिर्भूतेः ॥

(3) 8a वह उस स्थान से चला गया । ध्यान रखें कि 'तहां' की अपेक्षा 'तहिं' के साथ 'होतउ' का प्रयोग किया गया है । हेमचन्द्र iv 355 से तुलना करें ।

(6) 10 b उस स्थिति में कौन नरक में पैदा होगा और कौन स्वर्ग में ? 12 यह बौद्धदर्शन का क्षणिकवाद सिद्धान्त है । स्वयंभुव के द्वारा ।

(a) 6-9 ये पंक्तियाँ हमें बताती हैं कि राम के विजयराम आदि आठ पुत्र थे, और लक्ष्मण के उनकी पत्नी पृथिवी से पृथ्वीचन्द्र आदि अनेक पुत्र थे ।

(11) 4b लच्छीहरंगि अर्थात् लक्ष्मीधर (लक्ष्मण) की देह में ।

गारुडी ३० संवि

(9) वर्षा ऋतु का सुन्दर वर्णन ।

(16) 7 b सूर्य की पत्नी का नाम रण्ण या रत्नादेवी था ।